कम्युनिस्ट और युवा

[क्रांतिकारी शिक्षा : एक अध्ययन]

लेखक

यू० ए० सोर्पाचेव, यू० एम० बिलमोव,
ए० एस० क्रासिलनिकोव, ए० जी० सात्यशेव,
वी० पी० मोश्यांगा, पी० एन० रेशेतोव एवं
वाई० आई० पनपेव

सम्पादक

यू० एन० पांकोव, यू० एफ० खार्लामोव एवं
वी० ए० अक्स्योनोव

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

COMMUNIST AND THE YOUTH

A Study of Revolutionary Education

का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक :
रजनीकांत पंत

दिसंबर 1985 (RPPH 7)

मूल्य : 10.00

भारती प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 द्वारा मुद्रित तथा रामपाल द्वारा
राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि०, जयपुर की ओर से प्रकाशित।

अनुक्रम

प्रस्तावना

मई व जून 1968 मे सारे पेरिस की आँखें 'लेनिन भवन' की ओर टिकी हुई थी। गर्मी के उन प्रारंभिक महीनो मे वह 'छात्र गणतंत्र' का ऐसा स्थल बन गया था जिसकी राजधानी थी सोर्बो, और विश्वविद्यालय का भवन, उसके विचार-विमर्श का केंद्र, जहाँ नवीन सामाजिक परिवर्तन पर चौबीसो घटे गरमागरम बहस चलती रहती थी। माइक्रोफोन पर कब्जा करने हेतु झगड़ा होता था और अधिकाश वक्ताओं ने कारखानों, विश्वविद्यालयों और कार्यालयों मे स्वामत्त-शासन के लिए विभिन्न सूत्र सूत्रबद्ध किये। विश्वविद्यालय वाले सभी फ्रांसीसी नगरों मे छात्रो के स्वशासन-केंद्रों की स्थापना की गई।

इन घटनाओं में भाग लेने वाले कुछ लोगों का सोचना था कि यूरोपीय समाजवादी क्रांति का आरंभ हो चुका है। 27 मई, 1968 को छात्रों के एक पर्चे में लिखा था—"महान फ्रांसीसी समाजवादी क्रांति के लिए आगे बढ़ो, जो पूरब से पश्चिम तक ससार के स्वरूप को बदल देगी!" इस प्रकार के ही नही, बल्कि 'विश्व क्रांति' की माँग के निर्भीक नारे छात्र-प्रेक्षागृहों व विश्वविद्यालय की इमारतो की दीवारों मे चमक रहे थे।

1968 के 'छात्र उत्तेजना से भरे ग्रीष्म-काल' ने पूँजीवादी विश्व के लगभग 50 देशो को प्रभावित किया। बुर्जुआ प्रकाशकों ने इन घटनाओं से तात्कालिक लाभ उठाने के अवसर को जाने न दिया एवं इन घटनाओ से संबंधित हर बात को, यहाँ तक कि 'विद्रोहियों' की बोलचाली भाषा की शब्दावली व भित्तिचित्रों के संकलन तक को प्रकाशित कर डाला। बुर्जुआ जन-संचार माध्यमों ने छात्र-झड़पो को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। और शीघ्र ही नये 'चिंतन वर्ग' के आरंभ की तथा 'युवा क्रांति' नामक नवीन युग के उदय की भविष्यवाणी करने वाले गंभीर 'अध्ययनों' को पश्चिम के प्रकाशकों ने पेश किया। जिस तथ्य ने इसे और भी लुभावना बना डाला वह था समय-समय पर छात्र-विद्रोह की निरंतर बढ़ती हुई तूफानी लहरें, विशेषकर अमेरिकी विश्वविद्यालयों के परिसर मे।

इस छात्र-असंतोष को, इसकी सीमाओं को छठे दशक के युवकों की राजनीतिक जागरूकता व अपने सामाजिक हक के दावे की शक्ति व महत्व को कम आँकना

गलत होगा। परन्तु छात्रों की यह कार्यवाही, जिसने अपने उभार के समय अत्यंत प्रभाव डाला था। कुल मिलाकर, स्वतःस्फूर्त व अव्यवस्थित थी। मुख्यतः अराजकतावादी, ट्रोट्स्कीवादी व अति वामपंथी तत्वों के नेतृत्व में, छात्र-विद्रोह का रंग छद्म-क्रांतिकारी का था।

परन्तु क्रांतिकारी शक्तियों के पक्ष में युवा स्वयमेव नहीं आयेगा। ऐसा वे करें इसके लिए प्रगतिशील शक्तियों एवं विशेषकर कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों को प्रतिदिन के कार्य में, सदैव प्रयत्नशील, उद्यमशील होना पड़ेगा। तथा वस्तुगत व आत्मपरक घटक एक विशेष भूमिका अदा करते हैं।

वर्तमान के युवाओं की बढ़ती हुई सामाजिक गतिविधि के वस्तुगत कारण सर्वप्रथम, सामाजिक व राजनीतिक संबंधों एवं विज्ञान, तकनीक, शिक्षा प्रणाली, जन-संचार माध्यमों आदि के मूल परिवर्तनों में होने वाली क्रांतिकारी प्रक्रियाओं में हैं।

अपने बढ़ते हुए आर्थिक, वैचारिक व राजनीतिक संकट के साथ पूंजीवादी विश्व मे इजारेदारी की सर्वशक्ति और बुर्जुआ जीवन-पद्धति के दिवालिएपन के विरुद्ध युवा आक्रोश तेज होता जा रहा है। युवजन सच्चे आदर्शों व मूल्यों, जिनसे वे जी सकें, तथा इन्हें प्राप्त करने के क्रांतिकारी मार्गों की खोज कर रहे हैं।

युवाओं की सामाजिक गतिविधि की बढ़ती हुई व्यापकता व गहराई हेतु वस्तुगत परिस्थितियों के साथ आत्मपरक घटक भी समान रूप में महत्वपूर्ण है: अर्थात्, युवाओं में सही सैद्धांतिक व राजनीतिक झुकाव, युवाओं द्वारा एक चेतन व संगठित प्रवृति के विरोध को सिखाने में कम्युनिस्ट पार्टी व युवा लीग की क्षमता, तथा उन्हें एक वास्तविक क्रांतिकारी भावना में शिक्षित करने की उनकी क्षमता।

शिक्षा समग्र रूप में ऐतिहासिक व सामाजिक विकल्प है। लेनिन ने शिक्षा को, सभी सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों में अन्तर्निहित, सामाजिक जीवन का एक सामान्य व निरंतर विकल्प माना।[1] साथ ही, मूर्तरूप में शिक्षा ऐतिहासिक, वर्गीय प्रकृति की होती है जिसका निर्धारण किसी भी समाज के आर्थिक, राजनीतिक व अन्य संबंधों से होता है।

शत्रुतापूर्ण वर्गीय समाज में सत्ताधारी वर्ग, उस समाज में अधिकारिक रूप में मान्य शिक्षा प्रणाली की अन्तर्वस्तु, उद्देश्यों, स्वरूपों व माध्यमों को निर्धारित करते हैं। हालांकि, यह अन्य वर्गों को, जो शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न हैं,

1. देखें: वी० आई० लेनिन, "ब्राट द 'फ्रैंड्स ऑफ द पीपुल' आर एण्ड हाउ दे फाइट द सोशल-डेमोक्रेट्स", 'कलेक्टेड वर्क्स' जिल्द-1 प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1972, पृ० 155

है।"[1]

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने शिक्षण-प्रक्रिया तथा समाज के क्रांतिकारी रूपांतरण के मध्य घनिष्ठ अंतःसंबंध की ओर संकेत किया। उन्होंने शैक्षणिक-प्रक्रिया को राजनीतिक चरित्र का माना और कहा कि समाज के क्रांतिकारी वर्ग—अपने हरावल दस्ते कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में श्रमिक वर्ग—को शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

इस बिंदु पर 'क्रांतिकारी शिक्षा' व 'कम्युनिस्ट शिक्षा' के विचारों के मध्य सह-संबंध को स्पष्ट करना चाहिए। जैसे, एक बुर्जुआ समाज में क्रांतिकारी शिक्षा का, युवाओं के प्रगतिशील हिस्से को एक मार्क्सवादी विश्व दृष्टिकोण, वर्गीय चरम-चेतना तथा इन युवजनों में क्रांतिकारी व्यवहार व क्रांतिकारी गतिविधि की शिक्षा देना ही प्राथमिक रूप में मुख्य प्रश्न है। लेनिन ने लिखा, "जनसमूह की असली शिक्षा उनके स्वतंत्र राजनीतिक व विशेषकर क्रांतिकारी संघर्ष से अलग नहीं की जा सकती है। सिर्फ संघर्ष ही शोषित वर्ग को शिक्षित करता है। सिर्फ संघर्ष ही इसे इसकी शक्ति की मात्रा को स्पष्ट करता है, इसके क्षितिज में विस्तार, इसकी क्षमताओं को सुदृढ़ता, इसके मस्तिष्क में स्पष्टता, इसकी संकल्प शक्ति में सुदृढ़ता लाता है।"[2] इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि क्रांतिकारी संघर्ष के दौरान ही जनसमूह की शिक्षा की अति सक्रिय प्रक्रिया होती है।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की विजय के पश्चात एवं एक समाजवादी समाज के निर्माण के आरंभ के साथ ही कम्युनिस्ट शिक्षा सामान्य अवस्था व राजनीतिक महत्व की बनी। सामाजिक शिक्षा के समूचे चरित्र में एक आधारभूत परिवर्तन था जो समाजवाद व कम्युनिज्म का एक घटक बन गया। सार व उद्देश्यों में कम्युनिस्ट शिक्षा क्रांतिकारी शिक्षा है। हालांकि अब यह न सिर्फ श्रमिक वर्ग, तमाम युवजनों के प्रगतिशील हिस्से के लिए बल्कि श्रमिक जनों के व्यापक स्तर, समूची युवा पीढ़ी के लिए एक राजनीतिक, क्रांतिकारी, शिक्षा का प्रश्न बन गया

1. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'मैनीफेस्टो ऑफ कम्युनिस्ट पार्टी', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 6, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1975, पृ० 502
2. वी० आई० लेनिन, 'लैक्चर्स ऑन द 1905 रेवोल्यूशन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1976, पृ० 241

है। इस प्रक्रिया में श्रमिक वर्ग व इसके हरावल दस्ते, कम्युनिस्ट पार्टी को नेता, संगठनकर्ता व संपूर्ण श्रमिक जनों के शिक्षक के रूप में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करनी है। परिणामतः यह सामाजिक शिक्षा की अधिक उन्नत व अधिक पूर्ण प्रणाली है।

इस प्रकार, जहाँ तक उनके राजनीतिक प्रकृति का प्रश्न है, 'क्रांतिकारी' एवं 'कम्युनिस्ट' शिक्षा की अवधारणाएँ आंशिक रूप में संबंधित हैं। साथ ही, 'कम्युनिस्ट शिक्षा' की तुलना में 'क्रांतिकारी शिक्षा' एक व्यापक अवधारणा है, इसमें न सिर्फ एक समाजवादी समाज में कम्युनिस्ट शिक्षा है, बल्कि ग़ैर-समाजवादी सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों में जन-साधारणों और विशेष रूप से युवाओं की राजनीतिक शिक्षा के पूर्ववर्ती रूप भी हैं। परिणामतः, न सिर्फ श्रमिक वर्ग की पार्टी द्वारा बल्कि विकासशील देशों, विशेषकर समाजवादी रुझान वाले देशों की क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों द्वारा भी युवकों की क्रांतिकारी शिक्षा की बात की जा सकती है। अनेक उदाहरणों में, विशेषकर समाजवाद के निर्माण के संक्रमण काल के दौरान, कम्युनिस्ट शिक्षा के प्रारंभिक अवस्था के रूप में 'समाजवादी शिक्षा' शब्द का उपयोग करना सही है।

इसी प्रकार युवाओं की शिक्षा में न सिर्फ विकसित समाजवाद के अन्तर्गत सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का, बल्कि समाजवाद के निर्माण के दौरान बिरादराना पार्टियों के अनुभव, समाजवादोन्मुख देशों, तथा पूँजीवादी देशों के भी इस क्षेत्र में ठोस अनुभव की जाँच करते हुए प्रस्तुत पुस्तक युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा की सामान्य समस्याओं, विशेषकर क्रांतिकारी गतिविधि की प्रक्रिया में शिक्षा और वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा जैसी मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन करेगी।

प्रस्तुत पुस्तक का आधारभूत उद्देश्य, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों व मार्क्सवादी-लेनिनवादी रीतिविज्ञान, के आधार पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी व बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों का युवाओं, उनकी क्रांतिकारी शिक्षा, समकालीन क्रांतिकारी प्रक्रिया में उनकी सामाजिक व राजनीतिक गतिविधि तथा उनकी भूमिका के विकास के लिए संघर्ष के समृद्ध अनुभव का अध्ययन व सामान्यीकरण करना है।

इससे आगे बढ़ते हुए लेखकगण के समक्ष निम्न कार्य हैं :

—युवाओं की समस्याओं के विश्लेषण का मार्क्सवादी-लेनिनवादी रीतिविज्ञान, युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा के लिए लेनिनवादी कार्यक्रम, तथा क्रांतिकारी युवा आंदोलन पर कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन के सिद्धांतों का चरित्रांकन करना;

—युवा मस्तिष्कों के लिए, उन्हें क्रांतिकारी प्रक्रिया में सक्रिय रूप में

सबद्ध करने के लिए सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के संघर्ष का ऐतिहासिक अनुभव तथा विकसित समाजवाद के एक समाज में उनकी कम्युनिस्ट शिक्षा के अनुभव का सामान्यीकरण करना,
—समाजवादी समुदाय के देशों की बिरादराना पार्टियों ने किस तरह रचनात्मक रूप में इस अनुभव का उपयोग किया;
—विकासशील देशों में प्रजातान्त्रिक शक्तियों, तथा समाजवादोन्मुख देशों की क्रांतिकारी-प्रजातान्त्रिक पार्टियों का युवा पीढ़ी के क्रांतिकारी शिक्षा में अनुभव का अध्ययन करना;
—पूँजीवादी विश्व में युवजनों का सामाजिक व आर्थिक स्तर, और पूँजीवाद के सामान्य संकट के तीव्रतर होने के दौरान उनके राजनीतिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन करना;
—पूँजीवादी देशों में युवजनों के सामाजिक, आर्थिक, नागरिक व राज-नीतिक अधिकारों के लिए, उनके वैचारिक व राजनीतिक रुझान के लिए कम्युनिस्ट पार्टियों के संघर्ष के अनुभव का सामान्यीकरण करना;
—बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक के अन्त व आठवें दशक के आरंभ में इन देशों के युवाओं की गतिविधियों में नवीन प्रवृत्तियों का अध्ययन करना एवं प्रजातांत्रिक युवा लीग की रणनीति को लागू करने और कम्युनिस्ट युवा आंदोलन को संगठित करने, प्रजातांत्रिक युवा आंदोलन की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को प्राप्त करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टियों के संघर्ष का विश्लेषण करना;
—उन तरीकों व साधनों जिनसे बुर्जुआजी युवाओं की चेतना को विकृत करता है, का भंडाफोड़ करना; युवाओं के बुर्जुआ, पैटी-बुर्जुआ, सुधार-वादी व अतिवादी अवधारणाओं की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना;

युवाओं को अपने पक्ष में करने का संघर्ष आधुनिक विश्व में वैचारिक संघर्ष का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। वर्तमान व भविष्य के वर्ग-संघर्ष का परिणाम युवा किसके साथ है अधिकतर इसी पर निर्भर करेगा।

अध्याय : 1

युवाओं की क्रान्तिकारी शिक्षा पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचार

मार्क्सवादी शोध के किसी भी विषय के समान युवाओं व युवा आंदोलन की समस्याओं के अध्ययन में ऐतिहासिकता का सिद्धांत, यथा, अनुसंधानाधीन समस्याओं का ठोस ऐतिहासिक विश्लेषण, तथा प्रतिबद्धता का सिद्धांत यथा, वर्गीय आधार पर सामाजिक परिघटना का मूल्यांकन, अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं।

किसी भी प्रक्रिया के अध्ययन में ऐतिहासिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिकता या ऐतिहासिक पद्धति का सिद्धांत वास्तविक वैज्ञानिक ज्ञान के लिए, घटनाओं के वास्तविक सार के लिए एक अनिवार्य शर्त है। वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापकों के विचार में यह शर्त प्राकृतिक और सामाजिक दोनों ही विज्ञानों पर लागू होती है।[1] इनेसा आर्मण्ड को लिखे एक पत्र में लेनिन ने ऐतिहासिकता के सिद्धांत के सार की रूपरेखा प्रस्तुत की : "मार्क्सवाद की समूची भावना, उसकी समूची प्रणाली की माँग है कि प्रत्येक प्रस्थापना को (अ) केवल ऐतिहासिक रूप में, (ब) केवल दूसरों के संबंध में, (स) केवल इतिहास के ठोस अनुभव के संबंध में, समझा जाना चाहिए।"[2] क्रांतिकारी प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका व स्थान का जब विश्लेषण हो तब एक ठोस ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है, अर्थात् किसी भी समाज में विद्यमान उत्पादन के तरीके तथा इस पर आधारित विकसित सामाजिक संबंधों के चरित्र को ध्यान में रखना होगा।

प्रत्येक सामाजिक घटना के निर्धारण में वर्गीय दृष्टिकोण या प्रतिबद्धता मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण का दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण रीति-वैज्ञानिक सिद्धांत है। इस सिद्धांत की माँग के अनुसार शोध की प्रत्येक घटना की वर्गीय प्रकृति, वर्गीय बुनियाद व वर्गीय अंतर्वस्तु स्पष्ट हो तथा प्रगतिशील व सर्वाधिक

संगत क्रांतिकारी वर्ग-सर्वहारा वर्ग व उसकी वास्तविक क्रांतिकारी विचारधारा के दृष्टिकोण से उसका मूल्यांकन हो।

1. 'युवा' एवं 'युवा आंदोलन' की अवधारणा का विश्लेषण

अपनी नीति के सफल क्रियान्वयन हेतु वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों ने युवा-पीढ़ी की ओर ध्यान देने को महत्त्वपूर्ण माना। उन्होंने युवाओं की सकारात्मक व नकारात्मक प्रवृत्तियों, शोषित के प्रति उनके विशेष प्रेम, तथा नवीन, महान के लिए अपने खून व जान तक दे देने में उनकी तत्परता, जवानी का ऐसा बेकाबू जोश जिस पर मानवजाति की नियति काफी सीमा तक निर्भर करती है, की ओर ध्यान दिया।[1]

साथ ही मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने इंगित किया कि 'युवा' की अवधारणा समाज की सामाजिक व वर्गीय ढांचे के साथ अभिन्न संबंध में ही परखी जा सकती है। उन्होंने युवा के अस्तित्व को वर्गों व सामाजिक समूहों के बाहर, 'सामान्य रूप में' नहीं माना।

इस आधार पर, मार्क्स व एंगेल्स ने श्रमिकों की युवा पीढ़ी पर विशेष ध्यान दिया। अपने आरम्भिक ग्रंथों (1844) में कार्ल मार्क्स ने 'सर्वहारा की उदीयमान पीढ़ी' संज्ञा का सर्वप्रथम प्रयोग किया।[2] बाद में उन्होंने लिखा कि "श्रमिक वर्ग का अधिक प्रबुद्ध हिस्सा पूर्णरूपेण समझता है कि इसके वर्ग का, और इसीलिए सम्पूर्ण मानव जाति का भविष्य श्रमिकों की उदीयमान पीढ़ी के निर्माण पर निर्भर है।"[3] कार्ल मार्क्स की 'पूंजी' के प्रथम भाग तथा फ्रेडरिक एंगेल्स की 'इंग्लैण्ड में श्रमिक-वर्ग की दशा' के अनेकों पृष्ठ युवा श्रमिकों की सामाजिक दशा एवं उनके शोषण के विशेष तरीकों पर विश्लेषण को समर्पित हैं। पूंजीवादी उत्पादन में युवा श्रमिकों के निर्दयतापूर्ण शोषण के तरीकों को स्पष्ट करते हुए उन्होंने श्रमिक वर्ग के शारीरिक व आध्यात्मिक विकास में इसके दुखद परिणामों को दर्शाया, तथा उन्होंने पूंजीवाद के अंतर्गत सबसे अधिक दलित, श्रमिक जनों के इस हिस्से की सुरक्षा के लिए विशेष तरीकों के विकास की मांग की।

---

1. देखें फ्रेडरिक एंगेल्स, 'इमरमान'स् मेमोर बिलीन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 2, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, 1975, पृ० 168-69
2. देखें कार्ल मार्क्स, 'क्रिटिकल मार्जिनल नोट्स ऑन द आर्टिकल', द किंग ऑफ प्रशा एण्ड सोशल रिफोर्म। बाई ए प्रशियन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 3, 1975, पृ० 197
3. 'द जनरल कौंसिल ऑफ द फर्स्ट इंटरनेशनल, 1864-1866', प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1974, पृ० 345

क्रांतिकारी आदोलन मे युवजनों या अन्य वर्गों व सामाजिक स्तर और विशेषकर छात्रों की भागीदारी पर अत्यधिक ध्यान दिया। एंगेल्स का विश्वास था कि उनमें से "बौद्धिक-श्रम के सर्वहारा का उदय होगा जो आने वाली क्राति मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए शारीरिक श्रम से सम्बद्ध अपने श्रमिक भाइयों के साथ एक ही कतार में कंधे-से-कंधा मिलाकर खड़ा होगा।"[1]

क्षमतावान क्रांतिकारी शक्ति के रूप में छात्र समुदाय के विश्लेषण मे मार्क्सवाद के संस्थापकों द्वारा अपनाया वर्ग दृष्टिकोण भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। छात्र समुदाय की सामाजिक विषमता एवं बुर्जुआ समाज में प्रमुख वर्गों व राजनीतिक प्रवृत्तियों पर उनकी निर्भरता को उन्होंने समझा। क्रांतिकारी घटनाओं के विकास एवं विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के अनुभव में इस निर्भरता का कारण ढूंढा जा सकता है। एंगेल्स ने पूर्वानुमान किया कि विशेष स्थितियों मे यहाँ तक कि बुर्जुआ जो भी "आंदोलन में अत्यन्त उपयोगी होने वाले युवाओं"[2] को पैदा करेगा।

छात्र-समुदाय की सामाजिक विषमता तीव्र वर्ग-संघर्ष के काल मे विशेष रूप में प्रकट होती है। मार्क्स व एंगेल्स ने दर्शाया कि 1848 की क्राति मे जर्मनी मे छात्रों के प्रजातान्त्रिक तबके ने विद्रोहियों के साथ शामिल होकर एवं श्रमिकों के साथ होकर सरकारी सेनाओं से लोहा लिया। परन्तु, साथ ही, फ्रांसीसी जनता के विशेषाधिकारी स्तर के वंशजों ने मोर्चाबन्दी के उस ओर के बुर्जुआ नेशनल गार्ड का साथ दिया और पेरिस के श्रमिकों पर गोलियाँ चलायीं।[3]

मार्क्स व एंगेल्स ने प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष मे सर्वहारा के पक्ष में छात्रजनों को ले जाने को कम्युनिस्ट पार्टियों की प्रमुख आवश्यकता माना। 1865-1866 की शरद ऋतु में पेरिस एकेडमी पर छात्र असंतोष पर मार्क्स को लिखे एक पत्र पर एंगेल्स ने टिप्पणी करते हुए लिखा: "यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि पेरिस के छात्र, चाहे उनके मस्तिष्क में जो कुछ भी अव्यवस्था हो रही हो, श्रमिकों

---

1. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'आन डेन इंटरनातिसियो नालेन कांग्रेस सोतिसयालिश्टिशेर स्ट्यूडेन्टेन', मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के, 22, डीएट्स फेरलाग, बर्लिन, 1963, पृ० 415
2. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'द लेट बूचरी एट लीपज़िग—द जर्मन वर्किंग मैन्स मूवमेंट', **कलेक्टेड वर्क्स**, जिल्द 4, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1975, पृ० 647
3. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'आर्टिकल्स फ्रोम द नोए राईनिशेत्सा इटुंग, जून-नवम्बर 7, 1948', **कलेक्टेड वर्क्स**, जिल्द 7, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को 1977, पृ० 144

का पता ले रहे हैं।"[1]

साथ ही मार्क्सवाद के संस्थापकों ने श्रमिकों के मुकाबले छात्रों द्वारा ने
के दावे के खतरे, विशेषकर क्रांतिकारी विप्लवों के दौरान, के प्रति चेतावनी
दी। जैसाकि एंगेल्स ने संकेत किया कि एक क्षीण समाजवादी परदे के साथ छ
अपनी शिक्षा पर मिथ्याभिमान करते हुए श्रमिकों के प्रति थोड़ा-बहुत तिरस्क
का भाव रखते हैं तथा श्रमिकों की पार्टियों के लिए 'विचारक' व 'नेता' होने
दावा करते हैं। पॉल लाफ़ार्ग को एक पत्र में उन्होंने लिखा : "वे बुर्जुआ विश
विद्यालय को एक प्रकार का समाजवादी सेन्ट-साईर विद्यालय मानते हैं जो उ
पार्टी में, *यदि सेनापति का नहीं तो कम-से-कम एक अफ़सर के रूप में पद पाने*
अधिकार प्रदान करता है।"[2] इस प्रकार, जहाँ उन्होंने यह अनुभव किया
क्रांतिकारी संघर्ष में छात्रों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अपनानी चाहिए वहीं मार्क्
वाद के संस्थापकों ने उनकी क्रांतिकारी क्षमता, छात्रों की हर बात स्वीकारने त
उन पर एक ग़ैर-वर्गीय दृष्टिकोण अपनाने का विरोध किया।

युवाओं पर एक वर्गीय दृष्टिकोण अपनाने के लिए लेनिन ने सदैव कहा
उन्होंने बुर्जुआ व पैटी-बुर्जुआ कार्यकर्ताओं द्वारा युवा पीढ़ी के मध्य सामाजि
अन्तरों को छुपाने, सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष में भाग लेने से उन्हें अलग करने के सभ
प्रयत्नों का कड़ा विरोध किया। लेनिन ने *समाज के विशेष वर्गों के संघर्ष के सा*
युवा आंदोलन के अभिन्न सहयोग की जाँच की, और युवा की आयु विशेषताओं
के स्थान पर वर्ग-संघर्ष के हितों को विश्लेषण में प्राथमिकता दी। जैसा नादेझद
क्रुप्स्काया[3] ने लिखा "क्रांतिकारी युवा आंदोलन के प्रति सामान्यतः सावधान रहते
हुए ब्लादिमिर इलिच ने *श्रमिक युवकों के क्रांतिकारी आंदोलन को अत्यन्त महत्त्व*
पूर्ण महत्त्व प्रदान किया, जिनमें जोश के साथ वर्ग की अन्तःप्रवृत्ति जुड़ी हुई है;
और जब वे श्रमिक वर्ग के संघर्ष में शामिल होते हैं, तो वे अपने स्वयं के हित के
लिए लड़ते हैं व उस संघर्ष में बढ़ते व मज़बूत होते हैं।"[4]

अति अग्रणी व क्रांतिकारी वर्ग के साथ ये सम्बन्ध, सर्वहारा के साथ उनके

---

1. 'एंगेल्स अन मार्क्स इन लंडन, मैनचेस्टर, जनवरी, 1866', मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के, 31, डीएट्ज़स फ़ेरलाग, बर्लिन, 1965, पृ० 167
2. 'एंगेल्स अन पॉल लाफ़ार्ग इन ल पेर', मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के, 31, डीएट्ज़स फ़ेरलाग बर्लिन, *1967*, पृ० *450*
3. एन० के० क्रुप्स्काया (1869-1939)—लेनिन की पत्नी व सोवियत राज्य व पार्टी कार्यकर्त्ता। शिक्षण-शास्त्र व पार्टी के इतिहास की विशेषज्ञ।
4. एन०के० क्रुप्स्काया, 'लेनिन एबाउट यूथ', यूनीकोमुनिस्ट, संख्या 1, 1935, पृ० 16

एक से वर्ग-हित व लक्ष्य, ये सब क्रांतिकारी आंदोलन में श्रमिक युवाओं को नेतृत्व-कारी स्थान प्रदान करते हैं। लेनिन ने श्रमरत युवाओं की क्रांतिकारी गतिविधि को समूचे सर्वहारा आंदोलन का एक मूर्तरूप व उसका एक भाग माना। और क्रांतिकारी पार्टी को प्रमुख रूप से श्रमरत युवाओं की भर्ती के द्वारा स्वयं को मज़-बूत बनाने का उनके आह्वान के सबल कारण भी हैं, क्योंकि यह 'अग्रणी वर्ग के युवाओं की पार्टी'[1] होगी।

लेनिन ने श्रमरत युवा कृषकों पर बहुत अधिक ध्यान दिया, जिन्हें उन्होंने श्रमरत किसानों का एक अंग माना, और परिणामतः क्रांतिकारी संघर्ष में श्रमिक वर्ग के घनिष्ठतम मित्र के रूप में लिया। अपने लेख 'कृषि कार्य में बालश्रम' में लेनिन ने जर्मनी व आस्ट्रिया में कृषि कार्य में लगे बच्चों व किशोरों की कठोर परिस्थितियों का एक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया, और इस आधार पर यह महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला कि श्रमरत कृषकों व उनकी युवा पीढ़ी के लिए 'वेतन-मज़दूरों के वर्ग-संघर्ष में शामिल होने के अलावा''अन्य कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है।"[2]

लेनिन ने रूसी किसानों के मध्य हो रही प्रक्रियाओं पर पूरी नज़र रखी। युवा स्विस समाजवादियों को दिए एक भाषण में लेनिन ने कहा कि वे यह देखकर खुश हैं कि "रूसी गाँवों में एक नए प्रकार का किसान-वर्गीय चेतना वाला युवा किसान दिखाई दे रहा है", जो शहरों में क्रांतिकारी आंदोलन में लगे व्यक्तियों से मिलता है, अखबार पढ़ता है, अपने गाँव में आंदोलनात्मक कार्य करता है और बड़े ज़मींदारों, पादरियों व ज़ारशाही अधिकारियों के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करने वाले बोल्शेविक नारों की व्याख्या करता है। लेनिन का विश्वास था कि ग्रामीण युवाओं में श्रेष्ठ जनों के द्वारा की गयी यह गतिविधि कृषक समुदाय को क्रांतिकारी आंदोलन में धीरे-धीरे खींच लाने में मदद करती है।[3]

श्रमरत युवाओं की क्रांतिकारी क्षमता के मार्क्सवादी विश्लेषण का आधार उनके सामाजिक-आर्थिक, कानूनी व राजनीतिक स्तर का विस्तृत व गम्भीर अध्ययन है। यद्यपि श्रमरत युवा का शोषण क्रूरता के साथ होता था फिर भी मार्क्सवाद के संस्थापकों ने विराट पैमाने में पूँजीवादी उत्पादन में उनके जुड़े रहने

---

1. वी०आई० लेनिन, 'द क्राइसिस ऑफ मैन्शेविज़्म', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 11, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1972, पृ० 355
2. वी० आई० लेनिन, 'चाइल्ड लेबर इन पीज़ेन्ट फार्मिंग', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 19, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को 1973, पृ० 212
3. देखें : वी० आई० लेनिन, 'लेक्चर ऑन द 1905 रिवोल्यूशन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 243

परिवर्तनवादी व सच्चे क्रांतिकारी बुर्जुआ युवा…जब कभी क्रांति के नवीन विप्लव या नवीन प्रहार का चिन्ह देखते हैं तब वे आजादी के लिए गंभीरतापूर्वक संघर्षरत एकमात्र जन के रूप में सर्वहारा की ओर सहज रूप में प्रवृत्त होते हैं।"[1] उन्होंने सर्वहारा को जार की सरकार की मनमानी के विरुद्ध प्रजातांत्रिक छात्रों की कार्यवाहियों को पूर्णरूपेण समर्थन देने का अनुरोध किया। लेनिन ने संकेत किया कि निश्चित ऐतिहासिक परिस्थितियों के अंतर्गत, विशेषकर जब श्रमिक वर्ग अच्छी तरह संगठित व विकसित न हो, तब युवा छात्र मुक्ति आंदोलन और कुछ विशेष परिस्थितियों के अन्तर्गत 'विद्यालय के अतिरिक्त राजनीतिक असन्तोष की किसी भी अभिव्यक्ति' में नेतृत्वकारी स्थान ले सकते हैं।[2]

छात्रों ने 'निर्णायक संघर्ष में आह्वान करने वाली की भूमिका' अदा की, यह कहते हुए लेनिन ने माना कि इस संघर्ष की विजय हेतु सर्वहारा जनों का एक विप्लव आवश्यक है, तथा सिर्फ श्रमिक वर्ग की मैत्री तथा नेतृत्व से ही उनकी क्रांतिकारी पहल पूर्णरूपेण व्यक्त हो सकती है। उन्होंने छात्रों द्वारा की जाने वाली लड़ाई को खुली छूट देने का सख्त विरोध किया और छात्रों की कार्यवाही को श्रमिक वर्ग के राजनीतिक संघर्ष के साथ समन्वित करने पर बल दिया।

रूसी क्रांतिकारी आंदोलन में रूसी युवा छात्रों, उनकी स्थिति व भूमिका को चित्रित करते हुए 'क्रांतिकारी युवकों के कर्तव्य' लेख में, जो स्टूडेण्ट अखबार में 1903 में प्रकाशित हुआ था, लेनिन ने इंगित किया कि छात्र "बुद्धिजीवियों में अधिक उत्तरदायी होने के कारण…सम्पूर्ण समाज में वर्ग-हितों व राजनीतिक दलबन्दियों के विकास को अत्यन्त स्पष्ट रूप में प्रतिबिम्बित व व्याख्यायित करते हैं। छात्र जैसे हैं वैसे नहीं होंगे यदि उनकी राजनीतिक दलबन्दी सम्पूर्ण समाज की राजनीतिक दलबन्दी के अनुरूप न हो।…'अनुरूप' का आशय यह नहीं है कि छात्रों के दल व समाज के दलों के मध्य शक्ति व संख्या पूर्णतया अनुपातित हो, बल्कि इसका आशय है जैसा समाज में है वैसा ही समान दलों के छात्रों में आवश्यक व अनिवार्य अस्तित्व।"[3]

हमारी राय में, यह एक सरल प्रश्न नहीं है वरन् समाज के वर्ग-विभाजन तथा इस आधार पर राजनीतिक युवा दलों व प्रवृत्तियों के उद्भव के साथ एक

---

1. वी॰ आई॰ लेनिन, 'द एजेंशन्स इन द वर्कर पार्टीज़ इन सेन्ट पीटर्स बर्ग', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 12, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1977, पृ॰ 66-67
2. वी॰ आई॰ लेनिन, 'द टास्क ऑफ द रेवोल्यूशनरी यूथ' कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 7, पृ॰ 53
3. वहीं, पृ॰ 45

द्वंद्वात्मक सह-सम्बन्ध का प्रश्न है। लेनिन ने लिखा, "यह वर्ग-विभाजन निःसंदेह राजनीतिक दलबन्दी का परम आधार है; वास्तव में अन्तिम विश्लेषण में यह इस दलबन्दी को सदैव निर्धारित करता है। परन्तु यह परम आधार सिर्फ ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया तथा इस प्रक्रिया के निर्माताओं व भागीदारों की चेतना के विकास में प्रदर्शित होता है। यह 'अन्तिम विश्लेषण' सिर्फ राजनीतिक संघर्ष द्वारा ही प्राप्त होता है।"[1]

विश्व के क्रान्तिकारी रूपान्तरण में युवाओं की भूमिका व स्थान सिद्धांततः इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस वर्ग के हितों की रक्षा करते हैं तथा अपनी नियति को किस वर्ग के साथ सम्बद्ध करते हैं। वर्ग-चेतना, जो एक विशेष वर्ग के सामाजिक प्राणी, उसके हितों व लक्ष्यों को प्रतिबिम्बित करती है, किसी भी युवा-दल के राजनीतिक आस्थाओं का आधार होती है।

समाज के वर्गीय ढाँचे के अनुरूप युवाओं की सामाजिक विषमता व उनका वर्ग-विभाजन समूचे युवा आंदोलन के सामाजिक, वैचारिक व राजनीतिक विषमता और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सामाजिक संगठन व वैचारिक-राजनीतिक दृष्टिकोणों में भिन्नता रखने वाले दलों की इसमें उपस्थिति को निर्धारित करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय युवा आंदोलन में कम्युनिस्ट युवा आंदोलन अग्रणी भूमिका अदा करता है और राष्ट्रीय स्तर पर यह भूमिका युवा कम्युनिस्ट लीग अदा करती है। इसके साथ भिन्न वैचारिक व राजनीतिक रुझान वाले युवा संगठन (सोशल डेमोक्रेट्स, वामपंथी, आमूल परिवर्तनवादी, उदारवादी व अन्य) व्यापक प्रजातांत्रिक युवा आंदोलन में भाग लेते हैं। विकासशील देशों में क्रांतिकारी-प्रजातंत्रवादी, राष्ट्रीय-प्रजातन्त्रवादी, क्रांतिकारी-प्रजातंत्रवादी और हरावल पार्टियों के नेतृत्व में क्रांतिकारी-प्रजातान्त्रिक युवा आन्दोलन विकसित और शक्तिशाली हो रहा है। अपनी सम्पूर्णता में, युवा-आन्दोलन के ये दस्ते प्रजातान्त्रिक युवा आन्दोलन का निर्माण करते हैं। विभिन्न रूढ़िवादी, अतिवादी, अतिवामपंथी, दक्षिणपंथी, आमूल परिवर्तनवादी, फासीवाद समर्थक व नव-फासीवादी संगठनों व संघों से निर्मित युवा आन्दोलन के प्रतिक्रियावादी पक्ष द्वारा इसका विरोध है।

समाजवाद व पूँजीवाद के मध्य अपने तीव्र वैचारिक संघर्ष के साथ आज के विश्व में, कम्युनिस्ट युवा पीढ़ी के राजनीतिक व वैचारिक मैत्री को अपने पक्ष में करने हेतु संघर्षरत हैं। कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियाँ युवाओं की आयु, उनकी रुचियों व भावनाओं, उनके विशिष्ट मूल्यों, आदतों व व्यवहार में व्यक्त युवाओं की सामाजिक व मनोवैज्ञानिक विशेषताओं, अर्थात् यह सब कुछ जो युवाओं

---

1. वी० आई० लेनिन, 'द टास्क ऑफ द रेवोल्यूशनरी यूथ', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 7, पृ० 46

स्तर से काफी ऊँचा उठा देते हैं।"[1]

मार्क्स व एंगेल्स ने प्रमाणित किया कि शैक्षिक सिद्धांत, शिक्षा प्रणालियाँ संस्थाएँ तथा युवा पीढ़ी को प्रभावित करने वाले स्वरूप समाज के बदलने पर बद जाते हैं। एंगेल्स ने कहा, "एक बार सर्वहारा ने सत्ता प्राप्त कर ली तब 'व्यवहारि कम्युनिज्म' की ओर पहला कदम होना चाहिए, राज्य के खर्चे की परवाह न कर हुए सभी बच्चों को सामान्य शिक्षा देना, एक ऐसी शिक्षा जो सभी के लिए समा हो तथा जब तक व्यक्ति समाज के एक स्वतंत्र सदस्य के रूप में विकसित होने लायक न हो जाय तब तक बरकरार रहे।"[2] 'कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणा-प ने माँग की "सार्वजनिक स्कूलों में सभी बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी जाय। बच्चों क कारखानों में काम करने का वर्तमान रूप खत्म किया जाय। औद्योगिक उत्पाद के साथ शिक्षा जोड़ी जाय।"[3] एंगेल्स ने इंगित किया कि पूँजीवादी श्रम-विभाज के अनोखे इकतरफेपन से वंचित श्रमोन्मुख शिक्षा कम्युनिस्ट सिद्धांतों प आधारित "समाज के समस्त सदस्यों की क्षमताओं को चहुँमुखी विकास"[4] क ओर ले जाएगी।

कार्ल मार्क्स ने कम्युनिस्ट समाज में शिक्षा प्रणाली को निर्मित करने में शिक्ष व उत्पादित श्रम के मध्य निकट संबंध को विशेष महत्त्व प्रदान किया। उन्होंने बतलाया कि श्रम पोलिटेकनिक प्रशिक्षण का आधार बन जाएगा, जिसका सा 'उत्पादन की समस्त प्रक्रियाओं के सामान्य सिद्धांतों' तथा 'सभी व्यापारों के प्राथमिक उपकरणों के प्रयोग व व्यवहारिक उपयोग'[5] को भी युवाओं से परिचित कराना है।

वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों ने जब लालन-पालन व शिक्षा को उत्पादित श्रम के साथ जोड़ा, तब उन्होंने न सिर्फ एक आर्थिक लाभ यथा, सामाजिक उत्पादन में बढ़ोत्तरी—बल्कि व्यक्तित्व के सम्पूर्ण व समरूप विकास के लिए आधार की स्थापना पर भी विचार किया। उनका विश्वास था कि यह उत्पादन

---

1. द जनरल कॉन्सिल ऑफ फर्स्ट द इन्टरनेशनल, 1864-1866, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1974, पृ० 345, 346
2. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'स्पीचेज इन एल्बर फेल्ड' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 4, पृ० 253
3. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'मैनीफेस्टो ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 6, पृ० 505
4. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'प्रिंसिपल्स ऑफ कम्युनिज्म', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 6, पृ० 354
5. द जनरल कॉन्सिल ऑफ फर्स्ट इंटरनेशनल, 1864-1866, पृ० 345

की वस्तुगत मांगों व मानव प्रकृति में निहित क्षमता से उभरता है।

मार्क्सवाद के संस्थापकों ने बुद्धि के विकास को व्यक्ति की दुरूह शिक्षा की प्रणाली में पहली प्राथमिकताओं मे एक माना। उन्होंने यह भी बतलाया कि श्रमिक जनो की क्रांतिकारी कार्यवाही का स्तर कुछ हद तक उनकी शिक्षा के स्तर पर निर्भर करता है: साक्षरता का जितना ऊँचा स्तर होगा, और ज्ञान जितना अधिक होगा पूंजीवाद के विरुद्ध और एक नवीन समाज के निर्माण हेतु संघर्ष उतना ही अधिक सचेत व सफल होगा। उन्होंने वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा, इतिहास व जुझारू क्रांतिकारी परम्पराओं को बहुत अधिक महत्त्व प्रदान किया। इसी कारण से उन्होंने यह ज़ोर दिया कि युवजनों को व्यवस्थित व नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए। कार्ल मार्क्स पर अपने संस्मरणों मे विल्हेल्म लीब नेष्ट[1] ने लिखा: "पढ़ो! पढ़ो! यह आह्वान सूत्र हम अकसर उनसे सुनते थे और इसे वह अपने उदाहरण व अपने महान मस्तिष्क के अनवरत श्रम द्वारा हमें देते थे।

"जबकि अन्य प्रवासी प्रतिदिन विश्व-क्रांति की योजना बनाते और दिन-प्रतिदिन, रात-रात-भर, अफीम के समान नारे 'कल यह आरंभ होगा!' से स्वयं को उन्मत्त करते, हम अपने समय को ब्रिटिश म्यूजियम में बिताते तथा स्वयं को शिक्षित करते और भविष्य के संघर्ष हेतु शस्त्र व बारूद की तैयारी करते···

"मार्क्स एक कठोर शिक्षक थे; वे न सिर्फ़ हमें अध्ययन हेतु प्रेरित करते, बल्कि निश्चित करते कि हम ऐसा करें।"[2]

शिक्षा के मार्क्सवादी सिद्धांत के अपने रचनात्मक विकास मे लेनिन ने युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा की एक गम्भीर व विस्तृत धारणा विकसित की। उन्होंने अनुभव किया कि युवाओं की शिक्षा की समस्याएँ सामान्य प्रजातांत्रिक आंदोलन व समाजवादी क्रांति के लक्ष्यों के साथ, समाजवाद व कम्युनिज्म के निर्माण के साथ, तथा विश्व क्रांतिकारी प्रक्रिया की आवश्यकताओं के साथ अभिन्न रूप में जुड़ी हुई हैं। अपने लेखो, भाषणों, वार्ताओं व पत्रों मे लेनिन ने युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रतिपादित किया, जो समाज की क्रांतिकारी रूपांतरण के लिए संघर्ष करेंगे, जो कम्युनिज्म के चेतन व क्रियाशील निर्माता होंगे, उन लोगों को बदलने के तरीकों व पद्धतियों को निर्धारित किया।

रूस मे 1917 की महान अक्टूबर क्रांति की विजय के पश्चात् प्राथमिक रूप मे पुन: निर्माण, या वास्तव में, सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली के निर्माण की समस्या सबसे

---

1. विल्हेल्म लीब नेष्ट (1826-1900) मार्क्स व एंगेल्स के समकालीन व निकट सहयोगी, जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के एक संगठनकर्त्ता व नेता।
2. रेमिनिसेन्सस् ऑफ मार्क्स एण्ड एंगेल्स, फॉरेन लेंगुएजेज पब्लिशिंग हाउस, मास्को, 1958, पृ० 102

बड़ी समस्या थी। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में रूस में प्रति 100 निवासियों के पीछे 3 ही छात्र थे; जबकि इटली में 8, फ्रांस मे 14 थे, इत्यादि। लेनिन ने दुःखपूर्वक लिखा: "हमारे यहाँ जनसंख्या का 22% भाग स्कूल जाने की उम्र का है और 4.7% ही स्कूल जाते हैं, जो $\frac{1}{5}$ भाग से थोड़ा ही अधिक है। इसका अर्थ है रूसी बच्चों व नवयुवकों का $\frac{4}{5}$ भाग सार्वजनिक शिक्षा से वंचित है!

"इतना बर्बर देश और कोई नहीं है जिसमें जन-समूह को शिक्षा, प्रकाश व ज्ञान के क्षेत्र में इस हद तक लूटा हो—योरोप में ऐसा कोई भी देश नहीं बचा; रूस अपवाद है।"[1] प्रगतिशील रूसी बुद्धिजीवियों द्वारा विभिन्न प्रबोधक समितियों व रविवारीय स्कूलों, श्रमिक-जनों हेतु पुस्तकालयों की स्थापना के प्रयत्नों का जारशाही अधिकारियों ने भयंकर विरोध किया।

अनिवार्य सार्वजनिक निःशुल्क शिक्षा बोल्शेविक पार्टी द्वारा युवाओं के हितों व अधिकारों की रक्षा हेतु मूलभूत भागों में एक थी। सोवियत सरकार की स्थापना से ही पुराने विद्यालय में मूल रूप से ही पुनः निर्माण का एक महान कार्य आरंभ हुआ: निःशुल्क शिक्षा का आरंभ, तथा औद्योगिक प्रशिक्षण के साथ विद्यालय की शिक्षा जोड़ना। लेनिन ने नई शिक्षा की सोवियत प्रणाली व इसकी राजनीतिक उन्मुखता के लक्ष्यों व कार्यों की एक स्पष्ट रूपरेखा निर्धारित की। उन्होंने इंगित किया कि *स्कूलों को न सिर्फ़ निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष करना है,* अपितु युवा क्रांतिकारियों को भी शिक्षित करना है तथा समाज के समाजवादी रूपांतरण हेतु एक सुदृढ़ शक्ति भी बनाना है। "शिक्षा के क्षेत्र में हमारा कार्य बुर्जुआ जी को उखाड़ फेंकने हेतु संघर्ष का एक हिस्सा है। हम सार्वजनिक रूप से घोषित करते हैं कि जीवन व राजनीति से अलग शिक्षा असत्य व पाखंड है।"[2]

लेनिन का विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति जो स्वयं को कम्युनिस्ट समझता है उसे स्पष्टतः समझ लेना चाहिए कि एक आधुनिक शिक्षा की प्राप्ति के पश्चात ही वह, चाहे पुरुष हो या स्त्री, वास्तव में पार्टी को कम्युनिज्म के निर्माण में मदद कर सकता है।

परन्तु स्कूली शिक्षा तथा राजनीति के मध्य संबंध के सिद्धांत का एक ठोस तथ्य बनने के लिए कट्टरपंथ रहित एक सचेत दृष्टिकोण या एक सीधे दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इंटरनेशनल के शिक्षकों को अपने भाषण में लेनिन ने

---

1. वी॰ आई॰ लेनिन '*द क्वेश्चन ऑफ मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन पॉलिसी*', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 19, पृ॰ 139
2. वी॰ आई॰ लेनिन, 'स्पीच एट द फर्स्ट ऑल-रशिया कांग्रेस ऑन एजुकेशन, अगस्त 28, 1918', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 28, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1977, पृ॰ 86

चेतावनी दी : "वास्तव मे, शिक्षा का पुनर्निर्माण एक आसान मसला नही है। और स्वाभाविक रूप मे, शिक्षा व राजनीति के मध्य संबंधों के सिद्धांत की गलत व्याख्या तथा इसके अधकचरे व विकृत अर्थ देने के प्रयासों जैसी गलतियाँ हुई हैं और अभी भी हो रही हैं। युवा पीढ़ी के मस्तिष्क मे राजनीति को ठूँसने के, जिसके लिए वे सही प्रकार से तैयार नही हैं, बचकाने प्रयास हो रहे हैं। निःसंदेह इस आधारभूत सिद्धांत के इतने अपरिपक्व उपयोग से हमे सदैव संघर्ष करना होगा।"[1]

क्रुप्स्काया ने इस वक्तव्य को विशेष रूप मे महत्त्वपूर्ण माना और एक टिप्पणी मे इंगित किया कि लेनिन ने जो अपनी भावना मे कम्युनिस्ट हो उस शिक्षा को एक शिक्षण प्रक्रिया मे बदलने के विरुद्ध चेतावनी दी जिसमे बच्चे रटन्त शिक्षा मे और जिसे वे नही समझते उसे ही दुहराने के लिए उन्हे मजबूर किया जाता हो, जिसमे शिक्षा सार्वजनिक क्रियाकलाप के साथ नही जोड़ी गई हो, जिसमे बच्चे साथ जीने व काम करने, हर प्रकार से एक-दूसरे को मदद करने की शिक्षा नही पाते हों, और जिसमे वास्तविक, जीवत कम्युनिज्म रूढ़िवादी तथा व्यवस्थित हो गया हो।[2]

लेनिन की पहल पर सोवियत सरकार के प्रारंभिक वर्षों मे एक एकीकृत कार्योन्मुख विद्यालय का निर्माण किया गया जिसने अकादमिक अध्ययनों व उत्पादक श्रम के मध्य घनिष्ठ संबधों को स्थापित किया तथा जिसने कम्युनिस्ट समाज के पूर्णतः विकसित सदस्यों को प्रशिक्षित किया। लेनिन ने अनुभव किया कि समाज को कम्युनिस्ट सिद्धांतों पर ढालने का, तथा युवा पीढ़ी को समाजवाद के निर्माण हेतु आवश्यक भावना सिखाने का मुख्य साधन पोलिटेक्निक शिक्षा है।

जब पहले-पहल लेनिन क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय हुए थे उस समय भी उन्होंने पोलिटेकनिक शिक्षा की भूमिका को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया था। 1897 में उन्होंने लिखा : "शिक्षा को युवा पीढ़ी के उत्पादक श्रम के साथ जोड़े बिना एक आदर्श भावी समाज की कल्पना तक नही हो सकती है : न ही बिना उत्पादक श्रम के शिक्षा व प्रशिक्षण को और न ही बिना समरूप प्रशिक्षण व शिक्षा के उत्पादक-श्रम को तकनीकी के वर्तमान स्तर व वैज्ञानिक ज्ञान की अवस्था के

---

1. वी० आई० लेनिन, 'स्पीच एट द सेकेण्ड ऑल इंडिया कांग्रेस ऑफ इंटरनेशनलिस्ट टीचर्स, 18 जनवरी, 1919', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 28, पृ० 408
2. देखें : एन० के० क्रुप्स्काया, लेनिन की यादें : लेख व भाषणों का संग्रह मास्को, 1965, पृ० 258 (रूसी भाषा में)

लिए आवश्यक स्तर तक उठाया जा सकता है।"[1]

एक जटिल दृष्टिकोण, व्यक्ति का समरूप विकास तथा युवजनों की मानसिक व शारीरिक शिक्षा का सहमेल युवाओं की शिक्षा के लिए लेनिन के कार्यक्रम के एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप हैं। क्लारा जेटकिन[2] के साथ एक बातचीत में लेनिन ने संकेत किया कि युवजनों को विशेषरूप से जीवन के आनन्द व शक्ति की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्यकर खेल-कूद, दौड़, तैराकी, घूमना, हर प्रकार के शारीरिक अभ्यास व बहुआयामी बौद्धिक रुचियाँ, सीखना, पढ़ना, पूछना आदि जहाँ तक हो सके समान रूप से संभव हो।[3]

1920 में युवा कम्युनिस्ट लीग की तीसरी कांग्रेस में दिये 'युवालीग के कार्य' पर दिये लेनिन के भाषण में युवा पीढ़ी की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा के लिए एक मौलिक कार्यक्रम दिये गये हैं। यह भाषण क्रांतिकारी योद्धाओं की युवा पीढ़ियों को शिक्षित करने की समस्याओं पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अत्यंत महत्त्वपूर्ण आधारभूत वैचारिक वक्तव्य है।

लेनिन ने कहा कि समाजवाद के निर्माण के संक्रमण काल में युवाओं का मुख्य कार्य कम्युनिज्म का अध्ययन करना है। उन्होंने इस कार्य के सार को भी स्पष्ट किया, उन्होंने क्या और कैसे पढ़ना चाहिए बतलाया, तथा आने वाले कई वर्षों के लिए युवाओं के ठोस कार्यक्रम को भी प्रस्तुत किया। लेनिन ने इस शानदार कार्यक्रम को लालन-पालन व शिक्षा की प्रणाली के एक आमूल-चूल पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के साथ जोड़ा। "केवल युवाओं के अध्यापन, संगठन व प्रशिक्षण को आमूल रूप से पुनर्निर्मित करके ही हम आश्वस्त हो सकते हैं कि युवा पीढ़ी के प्रयासों का परिणाम···कम्युनिस्ट समाज की रचना के पक्ष में जाएगा।"[4] ये शब्द युवाओं की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा के कार्यक्रम के विस्तार की ओर पार्टी के दृष्टिकोण का सार है। एक संपूर्ण परिवर्तन करना होगा, युवाओं को कम्युनिस्ट शिक्षा में शिक्षित करने हेतु एक नया रुख पैदा करना होगा। उन्होंने कहा कि नये ऐतिहासिक युग में, "जब श्रमिक व कृषक यह सिद्ध कर देंगे कि वे

---

1. वी० आई० लेनिन, 'जेम्स ऑफ नरोदनिक प्रोजेक्ट-मोंगरिंग', कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 2, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1977, पृ० 472
2. क्लाटा जेटकिन (1857-1933)—जर्मन व अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक आंदोलन की कार्यकर्त्ता
3. क्लाटा जेटकिन, 'लेनिन ऑन द वीमेन क्वेश्चन', न्यूयार्क, इंटरनेशनल, पब्लिशर्स, पृ०12
4. वी० आई० लेनिन 'द टास्क ऑफ द यूथ लीग्स' कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 31, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1974, पृ० 284

अपने स्वयं के प्रयत्नों से स्वयं की रक्षा करने व नये समाज के निर्माण में समर्थ हैं—तब वह नई व कम्युनिस्ट शिक्षा का शुभारंभ होगा।"[1] सब स्पष्टतः लेनिन ने शिक्षा के प्रश्न को देश के समक्ष सामान्य कार्यों के साथ आंगिक रूप से सम्बद्ध समझा। सर्वहारा के विजयी अधिनायकत्व के आधीन युवाओं की वर्ग शिक्षा का सार है पुरानी पीढ़ियों के साथ कार्य करते हुए नवीन समाज के निर्माण में ठोस व्यवहारिक भागीदारी के साथ प्रशिक्षण व शिक्षा को आंगिक रूप में जोड़ना। पहली बार न सिर्फ़ युवजनों के समूहों में नहीं वरन् समूची युवा पीढ़ी में एक समाजवादी, वर्ग चेतना का निर्माण करना है।

नैतिकता के प्रश्न पर वर्गीय दृष्टिकोण के लिए भी यह एक कारण है। कम्युनिस्ट नैतिकता कम्युनिज्म को मजबूत करने व पूर्णरूपेण निर्माण करने हेतु संघर्ष पर आधारभूत है। किसी व्यक्ति के नैतिक होने के लिए उसे अपनी समस्त शक्ति व ऊर्जा कम्युनिज्म हेतु संघर्ष में लगानी चाहिए। युवाओं को कम्युनिस्ट नैतिकता के सार को यहाँ लेनिन ने इस तरह समझाया : "तुम्हें स्वयं को कम्युनिस्ट बनाने का प्रशिक्षण देना चाहिए। युवा लीग का कार्य अपनी व्यवहारिक गतिविधियों को इस प्रकार संगठित करना है कि सीखने, संगठित करने, एकताबद्ध होने व संघर्ष के द्वारा इसके सदस्य स्वयं को व उन्हें जो इसके नेतृत्व की अपेक्षा रखते हैं, प्रशिक्षित कर सकें; इसे कम्युनिस्टों को प्रशिक्षित करना चाहिए।"[2] युवा पीढ़ी को कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति प्रतिबद्ध करने हेतु प्रशिक्षित करना होगा, पार्टी के निर्देशन में नैतिक, क्रांतिकारी शिक्षा देनी होगी।

लेनिन ने युवाओं को अपनी अपील के सार को स्पष्ट किया—मानवजाति द्वारा निर्मित समस्त सपदा के ज्ञान द्वारा अपने मस्तिष्क को समृद्ध करना, जिसे वे रचनात्मक व आलोचनात्मक रूप में अपना सकें। "यदि कोई कम्युनिस्ट घिसे-पिटे निष्कर्षों को पाकर, बिना गंभीर व सख्त कार्य किये तथा जिन तथ्यों को इसे आलोचनात्मक रूप में परीक्षण करना चाहिए उन्हें बिना समझे, शेखी बघारे तब वह वास्तव में शोचनीय कम्युनिस्ट होगा।"[3] उन्होंने आगे कहा—"हमें शिक्षा की पुरानी प्रणाली, पुरानी रटंत प्रणाली व पुरानी कवायद को बदलकर मानव ज्ञान के समूचे योग को ग्रहण करने की योग्यता को स्थान देना होगा और उसे इस तरीके से ग्रहण करना होगा कि कम्युनिज्म एक रटने वाला ज्ञान न हो बल्कि कुछ ऐसा हो जिस पर तुमने खुद सोचा हो, कुछ ऐसा जो वर्तमान शिक्षा के दृष्टिकोण से

---

1. वी०आई० लेनिन, 'द टास्क ऑफ द यूथ लीग्स' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1974, पृ० 294
2. वही, पृ० 290-91
3. वही, पृ० 288

को पहचानना सीखना, चाहे वो कैसा भी मुखौटा लगाए हो।

कम्युनिज़्म सीखने का अर्थ है सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होना, सार्वजनिक गतिविधियों को व्यवस्थित करने की स्वयं मे आदत डालना तथा सोवियत समाज, सोवियत जनता तथा सोवियत राज्य के हितों की रक्षा करना।

कम्युनिज़्म की शिक्षा का अर्थ है कम्युनिस्ट नैतिकता के मापदण्डो को अपनी कथनी व करनी के व्यक्तिगत उदाहरण से सुदृढ़ करना। इसका अर्थ है अपने सांस्कृतिक स्तर को निरंतर ऊँचा उठाना, अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाना और मानव सभ्यता की उपलब्धियों के ज्ञान से अपने मस्तिष्क को समृद्ध करना।

सोवियत युवजनों के लिए कम्युनिज़्म को सीखने का अर्थ है एक समर्पित सोवियत देशभक्त होना। इसका आशय है हमारे देश की शक्ति व समृद्धि को बढ़ाने हेतु अपना सब कुछ उत्सर्ग करना। इसका आशय है हमारे समाज की नैतिक व राजनीतिक एकता की रक्षा करना, हमारे देश की राष्ट्रीयताओं के मध्य मित्रता को परिपुष्ट करना तथा राष्ट्रवाद की किसी भी अभिव्यक्ति को न स्वीकारना। इसका अर्थ है अपने देश की रक्षा, अपने देश की जनता की खुशहाली व कम्युनिज़्म के लक्ष्य के लिए अपनी समूची शक्ति और यदि आवश्यक हो तो अपने प्राणों तक को न्यौछावर करने हेतु तत्पर रहना।

कम्युनिज़्म को सीखने का अर्थ है स्वयं को सर्वहारा, समाजवादी अंतर्राष्ट्रवाद की भावना मे, समाजवादी देशों की जनता के साथ बिरादराना मैत्री तथा शांति व मुक्ति के लिए जो लड़ते हैं उनके साथ एक जुझारू मैत्री की भावना मे, दुनिया भर के श्रमिकजनों के साथ वर्ग-एकजुटता की भावना मे शिक्षित करना है।

इस तरह से, कम्युनिस्ट शिक्षा एक अखण्ड प्रक्रिया है जिसमें राजनीतिक प्रबोधन, श्रम के प्रति एक कम्युनिस्ट दृष्टिकोण, युवा समूहों की वृहतर सामाजिक, राजनीतिक व श्रम गतिविधियाँ, तथा उनकी सार्वजनिक चेतना व नैतिक परिपक्वता का परिवर्तन आंगिक रूप में सम्बन्धित है।

3. युवाओं को सँवारने में सामाजिक अनुभव

युवजनों की क्रांतिकारी शिक्षा में ऐतिहासिक सामाजिक अनुभव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

विभिन्न पीढ़ियों के मध्य संबंधों का द्वंद्व मुख्यतया उनकी निरंतरता से चित्रित किया जाता है। प्रत्येक नई पीढ़ी उत्पादन के एक निश्चित स्तर, सम्पर्क के स्थापित सामाजिक स्वरूपों, सामाजिक व्यवहार के नैतिक व आचरण

संबंधी नियमों, वैचारिक व राजनीतिक मूल्यों आदि को परम्परागत रूप में प्राप्त करती है। उत्पादन के मूर्त संबंधों के ढाँचे के अंतर्गत ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिलसिला चलता है। नई पीढ़ी को किसी भी समाज में कार्यरत सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक व वैचारिक घटकों के जटिल प्रभाव के अंतर्गत रहना होता है, समाज भली-भाँति देखता है कि ये सब (घटक) नई पीढ़ी द्वारा समझे व अपनाए गए हों और इस प्रकार से ऐतिहासिक प्रगति के प्रति आश्वस्त होता है। मार्क्स ने इंगित किया कि जनता की ठोस गतिविधि "उन परिस्थितियों द्वारा जिनमें व्यक्ति अपने को पाते हैं; पूर्ववर्ती उत्पादन शक्तियों द्वारा, उनके अस्तित्व में आने के पूर्व ही विद्यमान सामाजिक स्वरूप द्वारा, जिसे उन्होंने निर्मित नहीं किया है, जो पूर्ववर्ती पीढ़ी का परिणाम है, प्रतिबद्ध है।"[1]

हालांकि, प्रत्येक नई पीढ़ी न सिर्फ पूर्ववर्ती पीढ़ियों द्वारा निर्मित भौतिक संपत्ति व सांस्कृतिक मूल्यों को उत्तराधिकार में पाती है, वरन् सामाजिक प्रगति की आवश्यकताओं के अनुरूप उनका विकास करती है। अन्यथा, ऐतिहासिक अग्रगामी गतिशीलता नहीं होगी। इसके अनुसार, एक विशेष आयु-संदर्भ द्वारा सीमित समाज के एक वर्ग (एक सामाजिक समूह) के रूप में युवा, सामाजिक विकास की वस्तुगत प्रक्रियाओं व नियमों के अनुरूप पीढ़ियों में एक हैं।

मार्क्स व एंगेल्स ने बतलाया : "इतिहास और कुछ नहीं सिर्फ पृथक पीढ़ियों का सिलसिला है जिनमें प्रत्येक सभी पूर्ववर्ती पीढ़ियों द्वारा इसे प्रदत्त सामग्रियों, पूंजी-भण्डारों, उत्पादन की शक्तियों का उपयोग करती हैं, और इस तरह, एक ओर पूर्णतया परिवर्तित परिस्थितियों में परम्परागत गतिविधि को बरकरार रखती है, और दूसरी ओर पूर्णतया परिवर्तित गतिविधि द्वारा पुरानी परिस्थितियों को बदल डालती है।"[2]

समाज का अग्रगामी विकास तथा ऐतिहासिक प्रगति की अवस्थाएँ युवा पीढ़ी से विशेष अपेक्षाएँ रखती हैं। इतिहास की एक विशेष अवस्था, उत्पादन की शक्तियों व सामाजिक संबंधों के अनुरूप स्तर की माँग है वैज्ञानिक समाजवाद अति अटल क्रांतिकारी वर्ग-सर्वहारा वर्ग की विचारधारा बन जाए। जीवन की ही परिस्थितियों के वश में आकर युवाओं में श्रेष्ठ समाजवाद में अधिक रुचि लेने लगें तथा सर्वहारा के साथ जुड़ जाएँ। परन्तु युवजनों का क्रांतिकारी

---

1. कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स, 'मार्क्स टू पावेल वसिल्येविच प एन्नेकोव इन पेरिस, 28 दिसम्बर 1846' सेलेक्टेड करेस्पोण्डेंस, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1975, पृ० 30
2. कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स, 'द जर्मन आइडोलॉजी' कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 5, पृ० 50

निरावलाप में प्रवेश एक स्वतःस्फूर्त प्रक्रिया नहीं थी, यह श्रमिक व राजनीतिक हरावल दस्ते द्वारा किए गए महान संगठनात्मक, सैद्धांति राजनीतिक कार्य का नतीजा था, विशेषकर क्रांतिकारी संघर्ष के अनुभव को युवा पीढ़ी के साथ बाँटने का परिणाम था।

अपने जन्म के क्षण से ही कोई भी युवक किसी सामाजिक गुणों के रखता है, इन्हें वह अपने लालन-पालन के समय व शिक्षा के समय प्राप्त है। अपनी छात्रकालीन रचना 'व्यवसाय के चुनाव पर एक युवक के वि पर 17 वर्षीय कार्ल मार्क्स ने लिखा : "हमारा स्वयं का तर्क यहाँ सलाहकार हो सकता, क्योंकि यह न ही अनुभव और न ही गम्भीर निरीक्षण द्वारा सः है, यह भावुकता से ठगा व स्वप्निल कल्पना से दृष्टिहीन है।" युवको सलाह देने तथा समय पर सही करने के प्रश्न पर मार्क्स ने जवाब दिया : "ह माता-पिता, जिन्होंने जीवन-पथ तय कर लिया है तथा भाग्य की कठो का अनुभव कर लिया है…" और आगे "जिस मनुष्य ने अधिकतम व्यक्ति को प्रसन्न किया है, अनुभव उसे ही प्रसन्नचित्त मनुष्य घोषित करता है।

परिणामतः, युवा पीढ़ी पूर्ववर्ती पीढ़ियों के विशेष सामाजिक अ उत्तराधिकार में पाए व अपनाए, यह सामाजिक प्रगति की प्रमुख स्थिति से एक है। लेनिन ने लिखा, "युवा श्रमिकों को दमन व शोषण के विरुद्ध व वाले बुजुर्ग योद्धाओं के अनुभव को ग्रहण करने की आवश्यकता होती है, जि बहुत सी हड़तालों को संगठित किया हो, जो क्रांतिकारी परम्पराओं में बुद्धि हों और जिनके पास व्यापक राजनीतिक दृष्टिकोण हो।"[2]

साथ ही, युवा पीढ़ी अपनी सामाजिक गतिविधि के दौरान प्राप्त अनुभव को धारक भी हो सकती है। पीढ़ियों की क्रांतिकारी निरंतरता के को स्पष्ट करते हुए लेनिन ने बतलाया कि "विरासत की रक्षा 'शिष्य' तरह नहीं करते हैं जैसे एक पुरातत्ववेत्ता पुराने दस्तावेज की रक्षा करता विरासत की रक्षा का अर्थ विरासत की सीमाओं में बँधना नहीं है।"[3] ले ने युवा योद्धाओं को एकताबद्ध संकल्प निर्मित करने के लिए प्रेरित किय

---

1. कार्ल मार्क्स—'रिफ्लेक्शंस ऑफ ए यंग मैन ऑन द चोयस ऑफ प्रोफ़ेशन' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 1 प्रोग्रेस पब्लिशर्स, 1975, पृ० 4, 8
2. वी० आई० लेनिन, 'प्रीफेस टू द रशियन ट्रांसलेशन ऑफ के० कॉट्स्की पम्फलेट, "द ड्राइविंग फोर्सेस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स ऑफ द रशियन रिवोल्यूश कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 11, पृ० 412
3. वी० आई० लेनिन, 'द हेरिटेज वी रिनाउन्स', कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 2, पृ० 526

"कठोर परिश्रम व कष्ट से आता है'''जीवन पर स्वयं अपने अनुभव की आ[वश्]यकता होती है।"[1]

युवा पीढ़ी को सँवारना व उसका समाजीकरण करना, अर्थात् उ[सके] व्यक्तित्व को निर्मित करना तथा इसे सामाजिक क्रियाकलाप में लगाना, द्वि[मु]खी प्रक्रिया है; एक ओर युवजन पूर्ववर्ती सामाजिक अनुभव का आत्मीक[रण] करता है (युवा सामाजिक प्रभाव की वस्तु हैं), दूसरी ओर युवजन प्रा[प्त] अनुभव को धीरे-धीरे रचनात्मक रूप में लागू करते हुए उसे और विकसित क[रते] हैं (ऐतिहासिक प्रक्रिया के विषय रूप में)। समाज में युवजनों के एकीकरण [की] इस प्रक्रिया के दोनों पक्ष परस्पर संबंधित व परस्पर प्रतिबद्ध हैं, यद्यपि जैसे-जै[से] व्यक्ति अधिकाधिक उम्र का होता जाता है, ऐतिहासिक प्रक्रिया के विषय के रू[प] में उसकी भूमिका बढ़ती जाती है।

युवा पीढ़ी सामाजिक विकास के वस्तुगत नियमों के अनुसार विकसित [व] व्यापक होती है। युवा पीढ़ी के समाजीकरण का ढाँचा थोड़ा बहुत जटिल होत[ा] है और बहुत से घटकों पर निर्भर करता है, जो अस्थायी ठोस ऐतिहासि[क] परिस्थितियों तथा विशेष सामाजिक-आर्थिक साथ ही राजनीतिक परिस्थितियों—इन दोनों पर निर्भर है। घर से आरम्भ होकर यह प्रक्रिया स्कूल-पूर्व बा[ल] संस्थाओं तथा स्कूलों में भी कायम रहती है। युवाओं को सँवारने व विकसि[त] करने के लिए श्रम में, सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में उनकी भागी[] दारी, अपने वातावरण (हमउम्र दोस्तों, प्रौढ़ों, सार्वजनिक व राजकीय सस्थाओं[,] जनसंचार माध्यमों आदि) के साथ वे किस प्रकार से सम्बद्ध हैं, बहुत महत्त्[व] का है।

वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति और संसार में बुनियादी सामाजिक व राज[] नीतिक परिवर्तन जैसे घटक आज की इन प्रक्रियाओं में अत्यन्त महत्त्व रखते हैं। युवा पीढ़ी के समाजीकरण के लिए सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली, जिसमें यह होता है, प्रमुख महत्त्व की है।

युवजनों की भूमिका और सामाजिक संबंधों की प्रणाली में उनका महत्व इस पर निर्भर करता है कि कितने सचेत होकर वे पूर्ववर्ती पीढ़ियों के सामाजिक अनुभव को आत्मसात करते हैं और कितनी सक्रियतापूर्वक वे अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करते हैं व नया अनुभव प्राप्त करते हैं। पूर्ववर्ती पीढ़ियों के अनुभव को युवा एक निष्क्रिय प्राप्तकर्त्ता के समान, आत्मसात नहीं करते हैं बल्कि वे विरासत में प्राप्त अनुभव को अपने समय की आवश्यकताओं व किसी

---

1. वी० आई० लेनिन, 'द टास्क ऑफ द यूथ लीग्स' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ० 296

माजिक क्षण के अनुरूप रचनात्मक तरीके से परिवर्तित, समृद्ध व विकसित
ते हैं।

एक पीढ़ी का अनुभव दूसरे से विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं की सामाजिक
राजनीतिक व्यवस्था के विकास के ठोस स्वरूपों द्वारा अलग होता है। इसलिए,
सिर्फ सामाजिक अनुभव के बारे में बल्कि सामाजिक-ऐतिहासिक अनुभव के बारे
ी कहना आवश्यक होता है। इससे युवाओं के स्तर व भूमिका का सामाजिक
ाली की प्रकृति पर, वर्ग विभिन्नता पर और ठोस ऐतिहासिक स्थिति पर
रता को अधिक पूर्णता से व्यक्त करना सम्भव होता है। विभिन्न प्रकार की
ाजिक प्रणालियो मे युवाओं का स्थान व भूमिका भिन्न होती है; उनके द्वारा
ादन, शिक्षा, राजनीतिक व सांस्कृतिक क्षमता ऐतिहासिक रूप में बदलती
ी है।

युवाओं की समस्त सामाजिक भूमिकाओ के कारणो, सम्बन्धों व प्रतिबद्धता
-ही-साथ उनके विकास की गति को गम्भीरता व सम्पूर्णता से व्यक्त करने
एकमात्र तरीका है ऐतिहासिक परिस्थिति पर विचार करना, सामाजिक
ास की विशेष अवस्था का और सामाजिक परिवर्तनों व रूपान्तरणो की मूर्त
श्यकताओं का विश्लेषण करना। यह दृष्टिकोण युवाओं की समस्याओं पर
जशास्त्रीय शोध करने को सम्भव बनाता है, जो सामाजिक विकास की प्रत्येक
था पर युवाओं के आगे बढ़ने के विशिष्ट लक्षणों व प्रवृत्तियों को स्पष्ट करता

एक ठोस ऐतिहासिक वर्ग दृष्टिकोण 'पीढी' की अवधारणा की अधिक सही
ाषा प्रस्तुत करने योग्य है। जनसांख्यिकों के अनुसार एक पीढ़ी लगभग एक
मय मे पैदा हुए लोगो का योगफल है। मानवविज्ञानी व वकील एक समान
के संदर्भ में निश्चित अवस्था के एक स्तर को पीढी कहते हैं, इतिहासकारों
ख्यिक रूप में एक पीढ़ी को लगभग 30 वर्ष का माना है (100 वर्षों में
ग तीन पीढ़ियाँ हैं), जो माता-पिता के जन्म व उनके बच्चो के जन्म का
ाल है।

फिर भी, ये परिभाषाएँ मुख्यतया अस्थायी सख्यात्मक संकेतों पर आधारित
ार्क्सवादियो के लिए एक पीढ़ी के संख्यात्मक स्वरूप को परिभाषित करना
रूप में रुचिकर है, जहाँ पीढ़ियों के बीच की सीमाएँ कालक्रमानुसार स्पष्ट
ारिक सीमातों मे नही मिलती है, बल्कि अस्थायी सामाजिक व वर्ग लक्षणों
नती है, जो आदतों, मून्यों, जीवन-शैली और यहाँ तक कि अभिरुचियों व
भूतियो को निर्धारित करती हैं।

ादि हम इस आधार सूत्र से आगे बढे कि पीढी की परिभाषा करते समय
जिक व राजनीतिक परिस्थिति पर विचार करना होगा, तब उदाहरण के

लिए द्वितीय विश्वयुद्ध की पीढ़ी, सोवियत संघ में कम्युनिज्म के निम
पीढ़ी आदि कहा जा सकता है। यहाँ युग के स्वरूप का पूर्वानुमान कि
परन्तु इन्हें सामाजिक सम्बन्धों, वर्ग-विभेद व ऐतिहासिक परिस्थिति के
साथ सम्बद्ध कर लिया गया है।

पीढ़ी की अवधारणा को अन्य आयु के समूहों के निर्देशित सिद्धान्तों
की तुलना में एक युवा आयु के समूह के एक विशेष आचरण के रूप में भी
किया जा सकता है। इस अर्थ में, यह ध्यान देना आवश्यक है कि एक
वर्गीय समाज में पीढ़ियों के सामान्य चरित्र के साथ विशेष वर्गों की पी
अन्तर करके भी देखना चाहिए, जो कुछ घटनाओं में संयुक्त रूप से भाग
इन घटनाओं की समझ में, अपने मूल्यांकन आदि में समानता दिखाते हु
की वास्तविक पीढ़ियों के समान लगते हैं। समाज में वर्ग-विभेद की
अधिकता या वर्ग वैमनस्य की जितनी तीव्रता है उतने ही अधिक ये विभेद

इस समस्या के शोध-कार्य में एक वर्ग-दृष्टिकोण दर्शाता है कि
विश्व को अपनाने का युवजनों का तरीका, जिस प्रकार से वे सामाजिक
सिक अनुभव को आत्मसात करते हैं और इसका उल्टा, सामाजिक प्रक्रि
उनका प्रभाव बुनियादी तौर पर विभिन्न सामाजिक प्रणालियों में भिन्न

मार्क्सवाद के संस्थापकों ने इंगित किया कि मानव व्यक्तित्व का
सामाजिक सम्बन्धों की एक निश्चित प्रणाली से प्रतिबद्ध होता है, "जो व
व्यक्ति के विकास की सीमा का निर्धारण करती है।"[1] उदाहरण के लिए,
परिस्थितियाँ किसी व्यक्ति को वह बना सकती हैं जो वह वैसा नहीं बनता
मनुष्य इन्द्रियों से अपना सारा ज्ञान, अनुभव आदि प्राप्त करता है, तब जो
है वह है इन्द्रियानुभव जगत को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि मनुष्य नि
वास्तविक मानवीय तत्व का अनुभव करे और इसका आदी हो तथा वह व्य
के रूप में स्वयं के प्रति जागरूक हो जाए···यदि मनुष्य वातावरण द्वारा
है तब उसके वातावरण को भी मानवीय बनाना चाहिए।"[2]

मार्क्सवाद के संस्थापकों ने संकेत किया कि एक कम्युनिस्ट समाज में
गत विकास मौलिक व स्वतंत्र बन जाता है, क्योंकि समाज के रूपान्तर
व्यक्ति स्वयं को भी रूपान्तरित करते हैं।

इस प्रकार, युवा पीढ़ियों को सँवारने का कार्य समाजीकरण की प्रक्रि

---

1. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'द जर्मन आइडोलॉजी', कार्ल मार्क्स-फ्रे
एंगेल्स, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 5, पृ० 262
2. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'द होली फैमिली', कार्ल मार्क्स, फ्रे

वाओं के समक्ष आने वाली आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं के सम्पूर्ण स्वरूप के साथ पक्की तरह से जुड़ा है। इसके द्वारा वे न सिर्फ सामाजिक-तिहासिक अनुभव को आत्मघात करते हैं बल्कि इन समस्याओं से जूझने में और धिक अनुभव प्राप्त करने मे वे कमोबेश भाग भी लेते हैं।

अत. 'शिक्षा' शब्द का व्यापक अर्थ हुआ सामाजिक सम्बन्धों की सम्पूर्ण णाली द्वारा मनुष्य पर डाला गया वह प्रभाव जो उसे सचित सामाजिक अनुभव आत्मसात कराए। शब्द के सकीर्ण अर्थ में 'शिक्षा' का आशय है मनुष्य, जो तणिक प्रक्रिया का पात्र है, पर विचारो, अवधारणाओ, परम्पराओं आदि एक निश्चित प्रणाली को उसे प्रदान करने के लक्ष्य से उद्देश्यपूर्ण प्रभाव लना। जहाँ पहले के उदाहरण मे प्रभाव का विषय समाज है वहीं दूसरे में ये श्य विशेष सगठनों व सस्थाओं और यहाँ तक कि व्यक्तियों द्वारा पूरे किये ते हैं।

समाज की शक्ति, इसका प्रभाव व भावी सामर्थ्य इस बात पर निर्भर है कि ने देश के मामलो में युवा पीढ़ी कितनी सक्रिय है और अपनी रचनात्मक सम्भा-ओं का लाभ युवा जन कितना ले सकते हैं।

4. क्रान्तिकारी शिक्षा के आधार

माजिक व्यक्तित्व सामाजिक चेतना को निर्धारित करता है, ऐतिहासिक तिकवाद के ज्ञात श्रेष्ठ सिद्धान्तों मे से एक है। उत्पादन पद्धति व तदनुकूल माजिक सम्बन्ध, सामाजिक अन्तर्विरोधो की तीव्रता व वर्ग-शक्तियो का फैलाव द जैसी वस्तुगत परिस्थितियाँ कमोबेश युवाओं की चेतना के स्तर को निर्धारित ती हैं।

इस सम्बन्ध में लेनिन का सुझाव कि युवाओं की राजनीतिक आकांक्षाओं के के लिए 'सामाजिक जीवन की वास्तविक स्थितियों'[1] को देखना चाहिए, एक वान रीतिविज्ञानी सिद्धांत है। परन्तु चेतना सामाजिक जीवन मे परिवर्तनों थ स्वयमेव व समरूप नही बदलती है। वस्तुगत घटकों के साथ-साथ आत्म-घटक भी होते हैं जो चेतना के निर्माण मे भी मददगार हैं। ये घटक वस्तुगत तियों के समरूप, उनकी माँगों व मुख्यतया उनके विकास के द्वद्व के समकक्ष ने अधिक होंगे उतनी ही अधिक पूर्णता व गम्भीरता से वे चेतना को प्रभावित और दृष्टिकोण व अवधारणाओं के एक निश्चित प्रणाली को सँवारने मे ना ही अधिक उनका प्रभाव होगा। और इसके विपरीत, वस्तुगत स्थितियो को

देखें : वी०आई० लेनिन, 'द टास्क ऑफ द रेवोल्यूशनरी यूथ' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 7, पृ० 53

कम आंकने अथवा उनकी उपेक्षा करने का परिणाम अन्तिम रूप में सामाजिक चेतना की विसंगतियों की ओर ले जाता है।

इससे स्पष्ट है कि क्यों मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने युवाओं की वैचारिक शिक्षा के साथ वर्ग-संघर्ष में सर्वहारा के पक्ष में उनकी ठोस भागीदारी को, क्रांतिकारी शिक्षा का आधार मानते हुए जोड़ा।

क्रांतिकारी सिद्धान्त की भूमिका

प्रगतिशील व वास्तविक वैज्ञानिक विचारधारा, क्रांतिकारी वर्ग, सर्वहारा की विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद सामाजिक विकास की उच्चतम आवश्यकताओं की प्राप्ति हेतु अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आत्मपरक स्थिति है। इसीलिए युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा की प्रक्रिया में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने वैचारिक शिक्षा को, एक निरन्तर क्रांतिकारी दृष्टिकोण रखने वाले योद्धाओं के रूप में युवा पीढ़ी को सँवारने को, और वैचारिक स्पष्टता व निष्ठा रखने वाले लोगों को, जो बुर्जुआ विचारधारा के साथ शक्तिशाली युद्ध करेंगे, विशेष महत्त्व प्रदान किया।

परन्तु बुर्जुआ विचारधारा के उन स्वरूपों के साथ, जो खुलेआम मार्क्सवाद के विरोधी हैं, इस विचारधारा की छुपी हुई अभिव्यक्तियाँ भी हैं, जो अक्सर दिखावटी क्रांतिकारी या मार्क्सवादी मुहावरों में छुपी रहती हैं। बहुत बार वे अति-क्रांतिकारी वाक्यों में छुपे पैटी-बुर्जुआ दृष्टिकोणों को व्यक्त करते हैं।

कार्ल मार्क्स ने पैटी-बुर्जुआ विचारक पियरे जोसेफ प्रूधों[1] के विचारों की कठोरतापूर्वक आलोचना की। उन्होंने लिखा : *"प्रूधों ने बहुत छल किया। उसका काल्पनावादियों पर इतनी धूर्तता से बरसने व पाखंडपूर्ण विरोध ने (जबकि वह स्वयं केवल एक पैटी-बुर्जुआ कल्पनावादी के सिवा कुछ भी नहीं है, जबकि फूरिये, ओवन आदि की कल्पनाओं में नई दुनिया का पूर्वानुमान व काल्पनिक अभिव्यक्ति है) सर्वप्रथम 'नव युवा प्रतिभाओं' को, छात्रों को, और फिर श्रमिकों को, विशेषकर पेरिस के श्रमिकों को आकर्षित व भ्रष्ट किया***।"*[2]

प्रूधों के विचारों से प्रभावित फ्रांसीसी युवा संगठन के प्रतिनिधियों ने फ्रांसीसी राजनीतिक समाचार-पत्र 'ल कूरियेर फ्रांसेस' में और बाद में इंटरनेशनल की सामान्य सभा की बैठकों में अपनी उपस्थिति बतलाई। मार्क्स ने टिप्पणी की, "अज्ञानी, फालतू, पाखंडी, बातूनी, अक्खड़, घमंडी, वे सब कुछ मटियामेट करने

1. पी० जे० प्रूधों (1809-1865) फ्रांसीसी पैटी-बुर्जुआ समाजवादी, अराजकतावाद का सिद्धान्तकार।
1. 'मार्क्स टू लुडविग क्यूगेलमान इन हेनोवर, 9 अक्टूबर 1866, मार्क्स, एंगेल्स, 'सेलेक्टेड करेस्पॉन्डेन्स' 1975, पृ० 172

वाले थे क्योंकि वे कांग्रेस में सख्यात्मक रूप में आये थे जिसका कोई अर्थ ही नहीं था चाहे उनके सदस्य कितनी ही संख्या में क्यों न हों।"[1]

उन्नीसवीं सदी के नवें दशक के आरम्भ में एंगेल्स ने जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक आन्दोलन में 'यंग वंस' नामक वामपंथी अराजकतावादी पैटी-बुर्जुआ विरोधी दल की दृढ़ता से आलोचना की। इस दल के मुख्य केन्द्र में छात्र व उदीयमान लेखक थे जो जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के सिद्धांतकार व नेता होने का दावा करते थे। यह दल काफी संकीर्ण विचारों का था और पार्टी की एकता के लिए एक बड़ा ख़तरा था। एंगेल्स ने इन्हें इस प्रकार से चित्रित किया: "ये सभी महोदय मार्क्सवादी हैं, किन्तु उस प्रकार के हैं···जिस पर मार्क्स ने कहा था: 'मैं केवल इतना जानता हूँ कि मैं मार्क्सवादी नहीं हूँ।' और यह काफी सम्भव है कि वह इन महाशयों के बारे में वही कहता जो हीन ने अपने नक्कालों को कहा था: 'मैंने साँप बोये थे और पिस्सुओं की फसल काटी'।"[2]

मार्क्स व एंगेल्स ने युवा क्रांतिकारियों की भौतिकवादी पद्धति के विकृतिकरण का निरंतर विरोध किया और ऐतिहासिक भौतिकवाद को 'आर्थिक भौतिकवाद' से स्थानापन्न करने के प्रयत्नों का विरोध किया, जो समस्त ऐतिहासिक घटनाओं व प्रक्रियाओं को सिर्फ आर्थिक घटकों की गतिविधि में सीमित कर देती हैं। एंगेल्स ने इंगित किया कि इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा "बीस वर्षों की अवधि के दौरान युवा पार्टी सदस्यों के कार्यों में मुख्यतया सिर्फ एक ऊँची उड़ान वाला वाक्यांश ही बना रहा।"[3]

परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि एंगेल्स का विश्वास था कि 'घमंडी छात्र', जो अपनी शिक्षा के बारे में बहुत ऊँची राय रखते हैं और श्रमिकों को हेय दृष्टि से देखते हैं, क्रांति हेतु सदा के लिए ग़ायब हो गये हैं। उदाहरण के लिए वे यह जानकर प्रसन्न हुए कि जर्मनी में, अपने आडंबरपूर्ण कार्यों के 18 माह पश्चात इनमें से कुछ 'छात्र महानुभावों ने, जो पार्टी के कार्य के दौरान असन्तुष्ट थे' फिर से अध्ययन आरम्भ कर दिया था। एंगेल्स ने लिखा कि जितना अधिक अध्ययन वे करेंगे उतने ही ज्यादा वे उन लोगों के प्रति अधिक सहिष्णु होंगे, जो वास्तव में ज़िम्मेदारी के पदों पर हैं और जो अपने दायित्वों को बड़ी ईमानदारी से पूरा करने

1. 'मार्क्स टू लुडविग क्यूगेलमान इन हेनोवर, 9 अक्टूबर, 1866, मार्क्स, एंगेल्स, 'सेलेक्टेड करेस्पोण्डेन्स', 1975, पृ० 172
2. 'एंगेल्स अन पाउल लाफारगुए', मार्क्स/एंगेल्स वेर्के, जिल्द 37, डीएट्ज़स फेरलाग, बर्लिन 1967, पृ० 450
3. 'एंगेल्स अन आगुस्ट बेबेल इन बर्लिन' मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के, जिल्द 38, डीएट्ज़स फ़ेरलाग, बर्लिन 1968, पृ० 308

ो कोशिश कर रहे हैं; उचित समय पर वे महसूस कर लेंगे कि महान लक्ष्य की
ाप्ति हेतु और इसके लिए लाखों मजबूत सैनिकों को एकत्रित करने हेतु मुख्य
ाय पर ही निरन्तर ध्यान रखना पड़ता है और टुच्चे-दोषारोपण द्वारा लक्ष्य से
र नहीं होना होता है। उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि वह 'शिक्षा', जिसे
कर वे श्रमिकों के समक्ष घमंड कर रहे हैं, अभी भी वांछनीय बनी हुई है और यह
के जिसे छात्रों ने इतनी अधिक कठिनाई से प्राप्त किया है वह श्रमिकों को स्वतः
ही सहज रूप में प्राप्त है···।"[1]

युवाओं के 'झूठे दोस्तों' की आलोचना करना, यानी उन पर प्रतिकूल प्रभाव डालने व उन्हें धोखा देने के प्रयत्नों का भंडाफोड़ करना, कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित युवा पीढ़ी की वर्ग शिक्षा के प्रमुख सिद्धान्तों में एक है।

रूस के युवा क्रांतिकारियों के बारे में मार्क्सवाद के संस्थापकों के विचार रुचिकर हैं। युवाओं को अपने पक्ष में लेने के संघर्ष में मार्क्स व एंगेल्स ने "अराजकतावाद के जनक मिखाइल बाकुनिन[2], जिन्होंने रूस के युवाओं को यहाँ तक कि बिना तैयारी किए विद्रोही कार्यवाही के लिए प्रेरित किया, के भ्रांत सिद्धांतों का निरंतर दृढ़ता से खंडन किया। उन्होंने मुक्ति के लिए विज्ञान व ज्ञान की भूमिका पर बाकुनिन के गलत दृष्टिकोण का और इस बकवास विचार का व्यंग्यपूर्वक भंडाफोड़ किया कि "एक सामूहिक स्टेंका राज़िन[3] की इस भूमिका का निर्वाह करने के लिए युवजनों को स्वयं को अज्ञानता के माध्यम से तैयार होना पड़ेगा'''इस ख्याल से कि आधुनिक विज्ञान महज सरकारी विज्ञान है। (क्या कोई सरकारी गणित, सरकारी भौतिकी या रसायनशास्त्र की कल्पना कर सकता है?)"[4]

इन विचारों के विपरीत एंगेल्स ने उन लोगों की स्थिति को अत्यन्त सहानुभूतिपूर्वक समर्थन किया जिन्होंने रूसी युवा क्रान्तिकारियों को निरन्तर अध्ययन करने, गम्भीर व दृढ़ ज्ञान प्राप्त करने, आलोचनात्मक व सही ढंग से चिंतन करने को सीखने और स्वयं को शिक्षित करने का प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया। मार्क्स व एंगेल्स ने रूसी छात्रों के मध्य मिखाइल बाकुनिन व उसके अनुयायियों

---

1. देखें : 'एंगेल्स अन कौनराड श्मिट', मार्क्स,एंगेल्स, वेर्के, जिल्द 38, डीट्ज फेरलाग, बर्लिन, 1968, पृ० 268-69
2. एम० ए० बाकुनिन (1814-1876)—अराजकतावाद के रूसी क्रांतिकारी सिद्धान्तकार।
3. स्तेपान रेज़िन (लगभग 1630-1671)—रूस में कृषक युद्ध (1670-1671) का नेता।
4. 'द [illegible] ऑफ द वर्ल्ड' इंटरनेशनल, लिटरेचर एण्ड [illegible]', प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1976, पृ० 57।

की गतिविधि के नुकसान व खतरे को स्पष्ट किया। एंगेल्स ने लिखा, "वह देश, जिसने दो डोब्रोल्यूबोव और चेर्नीशेव्स्की, दो समाजवादी उच्चस्तरीय लेखकों को जन्म दिया है, वह इसलिए बर्बाद नहीं होगा कि उसने एक बार बाकुनिन जैसा लफ़्फ़ाज और अनेक अपरिपक्व छोटे-मोटे छात्र पैदा किए हैं, जो ऊँची आवाज में लफ़्फ़ाजी करते हैं, मेढकों जैसे फुदकते हैं और अन्त में एक-दूसरे को हड़प जाते हैं। क्योंकि रूसियों की युवा पीढ़ी में भी, हम उन लोगों को जानते हैं जो विशेष सैद्धांतिक-व्यवहारिक प्रतिभा व महान शक्ति के धनी हैं, वे लोग जिनका भाषा ज्ञान सराहनीय है, वे फ्रांसीसियों व अंग्रेजों से इस बात में बढ़े हैं कि उन्हें विभिन्न देशों की गतिविधियों की अधिक गहरी जानकारी है और जर्मनों से सासारिकता में अधिक नमनीयता के कारण बढ़े हैं। वे रूसी, जो श्रमिक वर्ग के अन्दोलन को समझते हैं और जो स्वयं उसमें हिस्सा लेते हैं, जिस प्रकार का कार्य कर रहे हैं उससे सोच सकते हैं कि वे बाकुनिन की ठगी के लिए जिम्मेदारी से मुक्त कर दिए गए हैं।"[1]

19वीं शताब्दी के अन्त होने के साथ-साथ क्रांतिकारी आंदोलन का केन्द्र जर्मनी से हटकर रूस की ओर चलने लगा, जहाँ आत्मिक, राजनीतिक व आर्थिक आतंक, एंगेल्स के शब्दों में, "युवा, जिनमें राष्ट्र का सम्मान व प्रतिभा एकत्रित है, को अधिकाधिक असहनीय"[2] होने लगा था। यह प्रक्रिया रूस में युवजनों के मध्य मार्क्सवादी विचारों के प्रसार के साथ घनिष्ठ रूप में संबद्ध है। और जब मार्क्स की मृत्यु के पश्चात रूसी मार्क्सवादियों के पहले दल, 'श्रमिक की मुक्ति' की स्थापना 1883 में स्विट्जरलैंड में हुई और वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापकों के ग्रंथों का रूसी भाषा में अनुवाद व लोकप्रिय करना आरंभ हुआ तब एंगेल्स ने लिखा: "मुझे यह जानकर गर्व है कि रूसी युवाओं के मध्य में एक ऐसी पार्टी है जो मार्क्स के महान आर्थिक व ऐतिहासिक सिद्धांतों को खुले दिल से व बिना छल-कपट के स्वीकार करती है और सभी अराजकतावादियों तथा अपने पूर्वजों के कुछ विद्यमान स्लावोफिल परंपरा के साथ अपने सारे संबंध विच्छेद कर लिये हैं। और स्वयं मार्क्स भी इतने गौरवान्वित महसूस करते यदि वे कुछ और अधिक जीवित रहते। यह एक ऐसा कदम है जो रूस के क्रांतिकारी विकास के लिए बहुत अधिक महत्व का है।"[3]

---

1. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'फ्लुश्टलिंग्सलिटराटूर', मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के, जिल्द, 18, डीएट्स फेरलाग, बर्लिन, पृ० 540
2. "एंगेल्स टू वेरा ज़्वानोव्ना जसुलिच इन जिनेवा, अप्रेल, 23, 1885" मार्क्स, एंगेल्स, सेलेक्टेड करेसपोंडेंस, पृ० 363
3. वही, पृ० 361

लेनिन का यह निष्कर्ष नितांत सही था कि उन्नीसवीं शताब्दी के नवें दशक के मध्य में, मार्क्सवाद ने "रूस में क्रांतिकारी युवाओं के बहुमत के दिलो-दिमाग को जीत लिया है।"[1] साथ ही, मार्क्स व एंगेल्स की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों के समक्ष एक नया काम उपस्थित हो गया है, जैसे, न सिर्फ मार्क्सवाद पर अधिकार करना बल्कि उन अवसरवादी प्रयत्नों से बचाना भी है जो इसे संशोधित और इस प्रकार से विकृत करते हैं तथा इसको क्रांतिकारी सारतत्त्व से वंचित कर देते हैं, *साम्राज्यवाद के युग के आरंभ की नई ऐतिहासिक परिस्थितियों में इसे रचनात्मक* रूप में विकसित भी करना होगा। लेनिन की अनुपम रचना 'हम क्या करें ?' ने ऐसा करने में विशेष भूमिका निभाई। मार्क्स की इस अवधारणा कि जनसमूह के दिमाग में घर करके सिद्धांत एक भौतिक शक्ति बन जाता है, से निर्देशित होकर लेनिन ने निष्कर्ष निकाला कि "बिना क्रांतिकारी सिद्धांत के कोई क्रांतिकारी आंदोलन नहीं हो सकता है", और यह कि हरावल योद्धा की भूमिका केवल एक ऐसी पार्टी अदा कर सकती है जो सबसे अधिक प्रगतिशील सिद्धांत द्वारा निर्देशित हो।"[2]

'हम क्या करें ?' में लेनिन ने न केवल श्रमिक वर्ग के आंदोलन और उसकी राजनीतिक पार्टी के लिए क्रांतिकारी सिद्धांत के महत्त्व को विस्तार से बताया, *अपितु समाजवादी विचारधारा के उभार की उस प्रक्रिया को स्पष्ट करके सम*-झाया, जिस प्रक्रिया के द्वारा जनसमूह वैज्ञानिक समाजवाद के विचारों को स्वीकार करेंगे। उन्होंने श्रमिक वर्ग के आंदोलन में समाजवादी विचारधारा व समाज-वादी चेतना को लाने की आवश्यकता को प्रमाणित किया ताकि इसे *सुसंगठित* व उद्देश्यनियुक्त बनाया जा सके। श्रमिक वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी वैज्ञानिक समाजवाद को श्रमिक वर्ग के आंदोलन की धरती में रोपती है और इस तरह *सर्वहारा सैद्धान्तिक व राजनीतिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित तथा इसके संघर्ष को* उद्देश्यपूर्ण व विजयी बनाती है।

लेनिन के सैद्धांतिक दर्शन का युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा की समस्याओं पर, विशेषकर उनकी *समाजवादी चेतना को संवारने* में, सीधा असर होता है। अपनी समस्त उदग्र सक्रियता व योग्यता के बावजूद युवजन स्वतः किसी स्वतंत्र क्रांतिकारी विचारधारा का विकास नहीं कर सकते हैं। मार्क्सवाद का सम्पूर्ण ज्ञान और क्रांतिकारियों की पिछली पीढ़ियों के अत्यंत समृद्ध अनुभव की जानकारी उन युवाओं की वैचारिक व सैद्धांतिक परिपक्वता के लिए एकमात्र मार्ग है, जो क्रांति-

---

1. वी० आई० लेनिन, 'व्हाट इज टू बी डन ?' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द, 5 पृ० 376
2. वही, पृ० 369, 370

कारी संघर्ष में शामिल होते हैं।

मार्क्सवाद के संस्थापकों ने सैद्धान्तिक या वैचारिक संघर्ष को सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष के तीन आधारभूत स्वरूपों में से एक माना। यह उस सिद्धांत पर आधारित था जिसमें लेनिन ने वर्ग और बुर्जुआ विचारधारा की श्रमरत जन-विरोधी प्रवृत्ति का विश्लेषण किया था। "चुनाव सिर्फ एक का ही है—बुर्जुआ या समाजवादी विचारधारा। कोई मध्य का मार्ग नहीं है'''अतः, किसी भी प्रकार से समाजवादी विचारधारा को कम आंकना, उससे थोड़ा-सा भी हटने का अर्थ है बुर्जुआ विचारधारा को मजबूत करना।"[1]

बुर्जुआ विचारधारा और अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष युवाओं के मध्य विशेषकर महत्वपूर्ण है। युवा जन, अपर्याप्त राजनीतिक अनुभव व वैचारिक स्पष्टता मे कमी के कारण विभिन्न प्रकार के वैचारिक प्रभाव को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। लेनिन ने चिंता व खेद प्रकट किया कि अवसरवादी विचार व दृष्टिकोण "ऐसे युवा समुदाय पर प्रतिरोध रहित प्रभाव डालते हुए, फैशन बन गए हैं, जो आंदोलन पर आकर्षित थे लेकिन जो, अधिकाश मामलों में, मार्क्सवाद के केवल उन कुछ अंशों से परिचित हो सके थे, जो अर्थ वैधानिक रूप में प्रकाशित प्रकाशनो में प्रतिपादित किए गए थे।"[2] उन्होंने दृढ़तापूर्वक इस बात पर जोर दिया कि बोल्शेविकों को 'मार्क्सवादी सच्चाइयों में निरंतर प्रशिक्षण व प्रणालीबद्ध शिक्षण देना', 'अपने स्वयं के ज्ञान व अनुभव से लाभ लेना' सिखाना चाहिए क्योंकि युवा पीढ़ी की क्रांतिकारी शिक्षा मे जरा भी देरी मार्क्सवादी प्रवृत्ति के शत्रुओं के हितों को मदद करती है। क्योंकि "नए प्रवाह अपने निकास की तत्काल तलाश कर रहे हैं और यदि वे एक सामाजिक प्रजातांत्रिक मार्ग को नहीं पाएंगे तब वे गैर-सामाजिक प्रजातांत्रिक मार्ग की ओर तेजी से बढ़ चलेंगे।"[3]

आर एस डी एल पी की दूसरी कांग्रेस (1903) में लेनिन ने 'छात्र युवाओं के प्रति रुख पर' अपने प्रस्ताव की रूपरेखा में प्रस्तावित किया कि "उन्हें युवाओं के उन झूठे मित्रों से सावधान रहना चाहिए जो खोखली क्रांतिकारिता या आदर्शवादी शब्दों की कलाकारी में फँसाकर उन्हें वास्तविक क्रांतिकारी प्रशिक्षण से भटका देते हैं, जो क्रांतिकारी कार्य के प्रति सिर्फ एक सिद्धांतहीन व छिछले दृष्टि-

1. वी० आई० लेनिन, 'व्हाट इज टू बी डन ?' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 5, पृ० 384
2. वही, पृ० 381
3. वी० आई० लेनिन, 'न्यू टास्क एण्ड न्यू फोर्सेस', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 8, पृ० 217-219

कोण का प्रसार करते हैं।"[1] उन्होंने और आगे कहा : "ये वे झूठे मित्र हैं जो
को यह समझाने में पीछे पड़े हुए हैं कि उन्हें विभिन्न प्रवृत्तियों के मध्य
करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत हम एक अखण्ड क्रां
विश्व दृष्टिकोण को विकसित करने को प्रमुख कार्य समझते हैं और जब
स्वयं को संगठित कर रहे हों तब उन्हें अपनी समितियों में लाना एक व्यव
कार्य समझते हैं।"[2]

जब उन्होंने झूठे मित्रों की ओर इशारा किया था उस समय लेनिन क
मुख्यतः समाजवादी-क्रांतिकारियों की ओर था जो युवाओं को वैयक्तिक क
व आतंक में संलग्न होने को प्रेरित कर रहे थे। रूस में संघर्ष के अनुभव को
हुए बाद में लेनिन ने आस्ट्रिया के कुछ युवा कम्युनिस्टों को समझाया कि
आतंक द्वारा नहीं बल्कि एक योजनाबद्ध, समर्पित भावनायुक्त कार्य द्वारा
जन-समुदाय के मध्य क्रांतिकारी प्रचार व आंदोलन द्वारा छेड़ना चाहिए।[3]

युवा आस्ट्रियाई क्रांतिकारी फ्रांस कोरिट शोन्येर को एक पत्र में लेनि
वैयक्तिक आतंक की कार्यनीतियों की भ्रान्ति का पूरी तरह से भंडाफोड़ कि
अक्तूबर 1916 में आस्ट्रिया के प्रधानमंत्री की युवा सोशल-डेमोक्रेट फ्रे
एडलर के द्वारा हत्या की कोशिश से प्रेरित इस पत्र ने आस्ट्रियाई कामरे
कुछ स्पष्ट राय दी : "क्रांतिकारी कार्यनीति के रूप मे व्यक्तिगत आक्रमण
पयुक्त व नुकसानदेह हैं। केवल जन-आंदोलन ही असली राजनीतिक संघर्ष
जा सकता है।"[4]

लेनिन ने युवाओं को बार-बार ट्राट्स्कीवादी साँचे में ढले 'क्रांतिकारि
विरुद्ध चेतावनी दी, और उसकी (ट्राट्स्की की) सिद्धांतहीन स्थिति का भंड
किया : "ऐसे स्वरूप विगत ऐतिहासिक रचनाओं के उस समय के बिखरे माल
तरह हैं, जब रूस में व्यापक श्रमिक-वर्ग आंदोलन निष्क्रिय था, और जब प्र
दल के पास एक 'बड़ा सारा क्षेत्र' था जिसमें एक प्रवृत्ति, एक समूह या दल,
में एक 'शक्ति' के रूप में अन्यों के साथ संयुक्त होने की वार्ता का दिखावा
सके।

"श्रमिकों की युवा पीढ़ी को स्पष्टतः जानना चाहिए कि वे किनसे वार्ता

---

1. वी० आई० लेनिन, 'सेकेण्ड कांग्रेस ऑफ द आर एस डी एल पी, 17 जुल
(30)—अगस्त 10 (23), 1903' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 6, पृ० 469
2. वही, पृ० 507
3. देखें, वी० आई० लेनिन, 'टू फ्रॉस कोरिटशोन्येर', कलेक्टेड वर्क्स, जि
35, पृ० 238-39
4. वही, पृ० 238

रहे हैं, जब कुछ व्यक्ति उनके समक्ष अविश्वसनीय रूप से झूठे दावे पेश करते हुए आएँ, पार्टी निर्णयों···या रूस में वर्तमान श्रमिक-वर्ग के आंदोलन के अनुभव के साथ नितांत अनिच्छापूर्वक पेश आएँ।"[1] यह सब कुछ अधिक जरूरी था, क्योंकि जैसा लेनिन ने कहा, "नवीन 'भर्तियों' की बड़ी संख्या वाली सूची तैयार करना, श्रमरत लोगों के नए तबकों के आकर्षण को सिद्धांत व कार्यनीति के क्षेत्र में ढुलमुलपन, पुरानी गलतियों की पुनरावृत्तियों, पुराने विचारों और पुराने तरीकों पर अस्थायी प्रत्यागमन आदि द्वारा अनिवार्य रूप में जुड़ना चाहिए।"[2]

यह परिचायक है कि लेनिन ने दृढ़ता के साथ गैर पार्टी दृष्टिकोणों के आधार पर छात्रों के साथ शक्तियों को जोड़ने, तथा क्रांतिकारी सिद्धांतों को छोड़ने का समाजवादी-क्रांतिकारी आह्वानों को नामंजूर किया। उन्होंने जारशाही के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष के लिए आर एस डी एल पी श्रमरत-वर्ग के आंदोलन से असम्बद्ध प्रजातांत्रिक छात्र दलों के साथ सोशल-डेमोक्रेटिक छात्र संगठनों के अस्थायी समझौते को सम्भव माना, परन्तु यह समझौता सिर्फ सोशल-डेमोक्रेटिक सिद्धांतों और पार्टी के उद्देश्यों तथा वैचारिक व राजनीतिक स्थितियों की स्पष्ट परिभाषा के लिए भी प्रतिबद्धता के आधार पर होना चाहिए। उन्होंने लिखा, "पहला काम एक स्पष्ट, निश्चित, सारगर्भित, स्थितियों, मंचों और कार्यक्रमों का सुविचार परिसीमन प्राप्त करना है—और फिर उन शक्तियों को संयुक्त करना जो आस्था व सामाजिक प्रकृति के साथ आगे बढ़ सकें; उन्हें सिर्फ उस काम के लिए संयुक्त करना जिसमें सर्वसम्मति की उम्मीद की जा सके।"[3]

साथ ही लेनिन ने युवाओं के झूठे मित्रों तथा वे युवजन जो बहक गए हैं दोनों के मध्य अन्तर करने की आवश्यकता को महसूस किया। अपने लेख 'युवा इंटरनेशनल' में, जिसमें उन्होंने इसी नाम की युवा पत्रिका के कार्य का विश्लेषण किया, लेनिन ने लिखा : "निश्चय ही, युवा पत्रिका में अब भी सैद्धांतिक स्पष्टता व दृढ़ता में कमी है। सम्भवतः यह उन्हें कभी प्राप्त न हो, इसकी साफ वजह यह है कि यह पत्रिका जोशीले, उपद्रवी और जिज्ञासु युवाओं की है। फिर भी, ऐसे लोगों की सैद्धांतिक स्पष्टता की कमी के प्रति हमारा रुख बिलकुल भिन्न होना

1. वी० आई० लेनिन, 'डिसरेप्शन ऑफ यूनिटी अण्डर कवर ऑफ क्राउट फाई फॉर यूनिटी', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 20, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1964, पृ० 347
2. वी० आई० लेनिन, 'डिफरेन्सेस इन द योरोपियन लेबर मूवमेन्ट', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 16, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को 1967, पृ० 348
3. वी० आई० लेनिन, 'द क्वेश्चन ऑफ पार्टी ए फीलिएशन अमंग डेमोक्रेटिक-माइन्डेड स्टूडेन्ट्स', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 36, पृ० 210

चाहिए हमारे उस रुख से जो हमारे 'अफसरशाहों', 'समाजवादी-क्रांतिक टालस्टायवादियों, अराजकतावादियों, योरोपीय काउत्स्कीवादियों (' वादियों') आदि के दिमागों में सैद्धांतिक अव्यवस्था और दिलों में क्रांति दृढ़ता की कमी के प्रति है या होना चाहिए। एक तो हैं वे वयस्क, जो सर्वह नेतृत्व करने व शिक्षित करने का दावा करते हैं, ऐसे लोगों के विरुद्ध एक संघर्ष छेड़ना चाहिए। जबकि दूसरे हैं, युवाओं के संगठन जो खुले आम करते हैं कि वे अभी भी सीख रहे हैं, कि पार्टी के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित उनका मुख्य कार्य है। ऐसे लोगों को 'हर प्रकार की सहायता देनी चाहिए उनकी गलतियों के प्रति सहिष्णु होना चाहिए और उनसे झगड़कर नहीं मुख्यत. समझा-बुझाकर उन्हें क्रमशः सुधारने का उद्यम करना चाहिए।"[1]

द्वितीय इंटरनेशनल[2] के नेताओं के सुधारवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप क्रांतिकारी दूसरी चरम सीमा याने, 'वामपंथी' कम्युनिज्म पर पहुँच गए। ने इसे 'एक बचकाना मर्ज' युवा कम्युनिस्ट पार्टियों के निर्माण व विकास की प्र का एक स्वाभाविक परिणाम कहा। अपनी पुस्तक 'वामपंथी कम्युनिज्म— बचकाना मर्ज' में लेनिन ने इस बीमारी के लक्षण, इसकी उत्पत्ति व कारण इसके खतरे को बताते हुए यह भी बतलाया कि "इस पर किस तरह काबू पाय सकता है उन्होंने ब्रिटिश 'वामपंथियों' के 'संसदवाद-विरोध' को 'युवा कम्युनि का दृष्टिकोण कहा'''जिन्होंने कम्युनिज्म को अभी-अभी स्वीकारना आरम्भ है।"[3] उन्होंने "जर्मन वामपंथियों के भयानक क्रांतिकारी शोध कि कम्युनि को प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों में काम नहीं करना चाहिए और न वे कर हैं, कि ऐसे काम को मना करना सम्भव है, कि ट्रेड यूनियनों से अलग होना अत्यन्त लुभावने (और सम्भवतः अधिकांशतः अति युवा) कम्युनिस्टों आविष्कृत बिलकुल नई व निष्कलंक 'श्रमिकों की यूनियन' निर्मित करना आव है[4], को 'हास्यास्पद व बचकाना हरकत' कहा। उन्होंने टिप्पणी की कि सिर्फ 'भोले-भाले व बिल्कुल अनुभवहीन लोग' ही 'कोई समझौता नहीं' का नारा बु

---

1. वी० आई० लेनिन, 'द यूथ इंटरनेशनल', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 2 पृ० 164
2. द्वितीय इंटरनेशनल (1889 में स्थापित)—समाजवादी पार्टियों का अंतर्राष्ट्रीय संगठन। प्रथम विश्व युद्ध के समय इसके अवसरवादी ने साम्राज्यवादी नीति की रक्षा हेतु आगे आए।
3. वी० आई० लेनिन, 'लैफ्ट-विंग कम्युनिज्म—एक इन्फेंटाइल डिस ऑर्ड कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ० 79
4. वही, पृ० 49

कर सकते हैं।[1]

लेनिन ने मुख्यतया युवा क्रांतिकारियों को 'क्रांतिकारी लफ़्फ़ाजी की खुजली' के खतरे से आगाह किया। उन्होंने समझाया कि "क्रांतिकारी लफ्फाजी करने से हमारा तात्पर्य है किसी समय पर विद्यमान मामलों में, घटनाओं के मोड़ मे वस्तुगत परिस्थितियों के बावजूद क्रांतिकारी नारों को दुहराना। नारे प्रभावशाली, लुभावने, नशीले हैं, परन्तु उनके लिए कोई आधार नहीं है; यही क्रांतिकारी लफ़्फ़ाजी की प्रकृति है।"[2]

लेनिन समाजवाद के युवा निर्माताओं की सैद्धांतिक परिपक्वता के प्रति चिंतित रहते थे। जुलाई 1919 में पार्टी संगठनों को लिखे पत्र में उन्होंने संकेत किया कि "राज्य के प्रशासन के लिए और सर्वहारा अधिनायकत्व के कार्यों को पूरा करने के लिए नई श्रमशक्ति तेज़ी से श्रमिक व कृषक युवाओं के रूप मे उभर रही है जो नवीन व्यवस्था के नए प्रभावों को अत्यन्त ईमानदारी, सरगर्मी व आवेश से सीख व समझ रहे हैं, पुराने पूँजीवादी व बुर्जुआ-प्रजातांत्रिक पूर्वाग्रहो की भूसी को फेंक दिया है और अपने आप को पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ कम्युनिस्ट के रूप मे ढाल रहे हैं।"[3]

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने युवजनों मे समाजवादी चेतना को भरने और वैज्ञानिक समाजवाद की भावना मे उन्हे बुर्जुआ विचारधारा की किसी भी अभिव्यक्ति के प्रति असहनीयता को सिखाने के प्राथमिक महत्त्व को स्पष्ट किया। साथ ही उन्होंने क्रांतिकारी संघर्ष में उनकी सीधी भागीदारी पर युवाओं द्वारा अधिकार करने को जोड़ा।

युवजन राजनीति अथवा राजनीतिक संघर्ष से बाहर नही रह सकते हैं। जीवन स्वयं युवा पीढ़ी को राजनीति व वर्ग-संघर्ष में खींच लाता है। माध्यमिक स्कूल के अपने एक मित्र को पत्र मे एंगेल्स ने इस बात का दृढ़ता से विरोध किया कि जब चारों ओर आग लगी हो, तख्तो-ताज हिल रहे हों और वेदियाँ डगमगा रही हों तब शांत रहने व स्वयं को आदर्श राज्य में अलग रहा जाय'''। उन्होंने उन रूमानी लोगों के विषय में घृणा भरे शब्दों में लिखा जो 'राजनीति में रात की मदहोशी' लेकर जीना चाहते हैं। "हम दृढ़ कार्यवाही के निरंतर चिंतन व बौद्धि-

1. वी० आई० लेनिन, 'लैफ्ट-विंग कम्युनिज़म—एक इन्फैंटाइल डिसऑर्डर', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ० 69
2. वी० आई० लेनिन, 'द रेवोल्यूशनरी फ्रेज', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 27, पृ० 19
3. वी० आई० लेनिन, 'ऑल आउट फॉर द फाईट एगेंस्ट डेनिकिन !' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 29, पृ० 443

कतराजन्य भय की तहे-दिल से उपेक्षा करते हैं; हम स्वर्गीय जगत में जाना चाहते हैं; हम दुनियादारी के बन्धनों को तोड़ना और जीवन, क्रियाशीलता के मुकुट हेतु संघर्ष करना चाहते हैं।"[1]

मार्क्स व एंगेल्स ने युवाओं के इस क्रांतिकारी जोश की और महान कार्य करने की, इस आवेगपूर्ण जीवन में सदैव सक्रिय रहने की उनकी इच्छा को सुरक्षित रखा ताकि वे क्रांतिकारी योद्धाओं की बाद वाली पीढ़ियों के लिए एक शानदार उदाहरण बन सकें।

मार्क्सवाद के संस्थापकों के कार्य को चालू रखते हुए लेनिन ने सिखाया कि सिद्धांत का अध्ययन जीवन व संघर्ष से काफी अलग केवल साधारण शास्त्रीय अध्ययन नहीं है। एक वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण उस समय एक आस्था बन जाता है जब यह जीवन के परीक्षण से गुजरता है और जब संघर्ष के समय यह व्यक्तिगत रूप में अनुभव होता है। लेनिन ने युवा स्विस लोगों को संकेत किया कि "जन-समुदाय की वास्तविक शिक्षा उनके स्वतंत्र राजनीतिक, और विशेषकर क्रांतिकारी संघर्ष से अलग नहीं की जा सकती है। केवल संघर्ष ही शोषित वर्ग को शिक्षित करता है। केवल संघर्ष ही इसे इसकी स्वयं के सामर्थ्य की विशालता का बोध कराता है, इसके क्षितिज का विस्तार करता है, क्षमताओं को बढ़ाता है, उसके मस्तिष्क को स्पष्ट करता है, इसकी संकल्प-शक्ति को सुदृढ़ करता है।"[2]

द्वितीय इंटरनेशनल के बुर्जुआ आदर्शवादियों और सुधारकों, जिन्होंने राजनीति में युवाओं की आरम्भिक भागीदारी की निन्दा की और जिन्होंने कहा कि युवाओं के मध्य सांस्कृतिक व प्रबोधक गतिविधियाँ सीमित होनी चाहिए, उनके विपरीत लेनिन ने कहा कि एक क्रांतिकारी भावना में शिक्षित होना, क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रशिक्षित होना युवा लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि इस शिक्षा की दिशा "एक क्रांतिकारी विश्व दृष्टिकोण अपनाने के लिए जन-समुदाय को दृढ़तापूर्वक प्रशिक्षित करने की और क्रांतिकारी कार्यवाही के लिए उन्हें तैयार करने की"[3] ओर होनी चाहिए।

रूस में युवा श्रमिकों के लिए उनका हड़तालों व प्रदर्शनों में भाग लेना क्रांतिकारी शिक्षण का सबसे समृद्ध स्कूल था। संघर्ष में युवाओं को संलग्न कराने

---

1. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'सिगफ्रीड्स', कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 2, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1976, पृ० 135
2. वी० आई० लेनिन, 'लेक्चर ऑन द 1905 रेवोल्यूशन' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 241
3. वी० आई० लेनिन, 'नोट्स ऑफ ए पब्लिसिस्ट', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 33, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1976, पृ० 211

के लिए पार्टी संगठनों ने अत्यन्त साधारण कार्य जैसे, भीड़ को काबू करना, बैठकों के बारे मे जनता को सूचित करना आदि, देना आरम्भ किया। धीरे-धीरे पार्टी के काम अधिक जटिल हो गये—युवजनों को पर्चे, गैरकानूनी प्रकाशनो व अखबारो का वितरण, जुलूसों को बचाने के लिए अनेक विशेष दल का निर्माण, आदि। इस प्रकार से, युवा श्रमिको ने आवश्यक सैनिक अनुभव एकत्रित कर लिया, एक वर्ग-मन.स्थिति प्राप्त की और क्रांतिकारी शिक्षण की पहली अवस्थाओ को पार कर लिया।

लेनिन ने न सिर्फ युवा योद्धाओं की विशेषताओं, जैसे उनके साहस, उनका जवानी से भरा उत्साह, ईमानदारी, शक्ति,स्वयं का बलिदान देने की तत्परता, वर्ग-संघर्ष के विचारो और प्रजातंत्र व समाजवाद के आदर्शों को अपनाने की योग्यता, बल्कि उनकी कमियों, यथा राजनीतिक व दैनिक जीवन के अपर्याप्त अनुभव, आवश्यक ज्ञान, धैर्य, आत्म-सयम आदि की कमी, का भी उल्लेख किया है। मन-पसंद सोच मे डूबना, इतिहास के क्रम को 'अधिक तीव्र' करने का प्रयत्न और विकास की अनिवार्य अवस्थाओं को 'छोड़ने' की युवजनो की प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए लेनिन ने एंगेल्स का उद्धरण दिया : "अपनी स्वयं की अधीरता को एक सिद्धात सम्मत तर्क के रूप मे प्रस्तुत करना बचपने से भरा कितना भोलापन है।"[1]

युवाओं का क्रांतिकारी कियाकलाप में भाग लेना उन्हें अपनी कमजोरियों पर अधिक तेज़ी से काबू करने लायक बनाता है। प्रथम रूसी क्रांति (1905-1907) की अवधि के दौरान लेनिन ने 'युवा सहायकों' को 'मुख्य पदों पर पदाधिकार बनने का' प्रस्ताव किया यह स्वीकार करते हुए कि "एक बहुत सक्षिप्त व अस्थायी रुकावट के बावजूद कुल मिलाकर इसके द्वारा उद्देश्य की प्राप्ति मे बहुत फायदा होगा। मुख्य पदों पर काम करके युवजन अधिक अनुभव प्राप्त करेंगे और यदि वे कुछ त्रुटि करेंगे तो हम शीघ्र ही उसे सुधार लेंगे।"[2]

वर्ग-संघर्ष के अत्यन्त निर्णायक क्षणों में लेनिन और बोल्शेविको ने युवा क्रांतिकारियों को संघर्ष के निर्णायक मोर्चों पर लगाने का प्रयत्न किया। रूस में 1917 की फ़रवरी क्रांति के ठीक बाद जब सर्वहारा जनसेना का निर्माण हुआ था तब लेनिन ने 15 वर्ष की आयु से अधिक के युवाओं की भर्ती का प्रस्ताव रखा, क्योंकि "ऐसी जनसेना युवजनों को राजनीतिक जीवन मे खीच लाएगी और उन्हें

1. देखें : वी० आई० लेनिन, 'लेफ्ट-विंग कम्युनिज्म एन इनफैनटाईल डिसआर्डर' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ० 67
2. वी० आई० लेनिन, 'लैटर टू एस० आई० गुसेव, 4 अप्रैल 1905', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 34, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1974, पृ० 308

सिर्फ़ शब्दों द्वारा बल्कि कार्यवाही द्वारा, काम द्वारा भी शिक्षित करेगी।"[1]

लेनिन ने समाजवाद के निर्माण के दौरान युवजनों की औद्योगिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने लिखा, "बिना काम और बिना संघर्ष के कम्युनिस्ट पर्चों व ग्रंथों से कम्युनिज्म का किताबी ज्ञान पूर्णतया निरर्थक है।"[2] उन्होंने उस समय की कल्पना की जब प्रत्येक गाँव में, प्रत्येक शहर में युवजन व्यवहारतः सामान्य श्रम में निहित कार्यों को करेंगे, चाहे यह छोटा हो अथवा अति साधारण। उन्होंने यह आस्था व्यक्त की कि जैसे ही कम्युनिस्ट प्रतियोगिता का आंदोलन बढ़ेगा, जैसे ही युवा साबित कर देंगे कि वे अपने श्रम को सुसंगठित करने योग्य हैं, वैसे ही कम्युनिज्म के निर्माण की सफलता सुनिश्चित होती जाएगी।

साथ ही उन्होंने इस ओर इशारा करते हुए कि एक कम्युनिस्ट समाज सभी प्रकार के शोषकों के विरुद्ध संघर्ष में निर्मित होगा और यह कि "यह एक लम्बा काम है जो संगठन, प्रशिक्षण व शिक्षा की अपेक्षा करता है"[3] युवाओं के समक्ष कठिनाइयों को नहीं छिपाया।

अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों ने स्वीकारा कि अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि में युवाओं की भागीदारी, संघर्ष में विश्वव्यापी स्तर पर प्रगतिशील शक्तियों को लामबन्द व एकताबद्ध करना उनकी क्रांतिकारी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। एक राष्ट्र के रूप में, 'संख्या में अधिक, अधिकतम सघन जन-समुदाय' के रूप में युवा एंगेल्स के शब्दों में 'अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा की सेना की महत्वपूर्ण प्रहारक शक्ति' है।[4] लेनिन ने क्रांतिकारी युवाओं की अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता पर काफी ध्यान दिया। वे विश्वमंच पर प्रथम युवा-श्रमिकों की लीगों के काम में सीधे रूप से सम्बद्ध थे[5] और उन्होंने उनके कार्यक्रमों व स्वरूपों व कार्यपद्धति का ध्यानपूर्वक

---

1. वी॰ आई॰ लेनिन, 'लैटर्स फ्राम ए फार', कलेक्टेड वर्क्स, पृ॰ 328-29
2. वी॰ आई॰ लेनिन, 'द टास्क ऑफ द यूथ लीग्स' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ॰ 285
3. वी॰ आई॰ लेनिन, सम्पूर्ण रचनाएं, जिल्द 41, पृ॰ 532 (रूसी भाषा में)
4. एफ॰ एंगेल्स, "इन्ट्रोडक्शन टू 'द क्लास स्ट्रगल इन फ्रांस 1848 टू 1850' बाई मार्क्स", कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स सेलेक्टेड वर्क्स (3 जिल्दों में), जिल्द 1, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1976, पृ॰ 201
5. उदय हुआ ... लीग (यंग गार्ड्स) 1886 में गेंट (बेल्जियम) नगर में [illegible] की गई। इसी वर्ष ... में एक समाजवादी युवा संगठन का [illegible] 1894 में ... आस्ट्रिया में, नार्वे में 1895 में,

अध्ययन किया।

यूरोप की सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों के अधिकृत बोर्ड युवा संगठनों, जो आरम्भ में संगठनात्मक व राजनीतिक रूप में स्वतन्त्र थे, को आम तौर पर संदेह-भरी नज़र से देखते थे व इंतज़ार करो व देखो की नीति अपनाते थे। सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियों के सुधारवादी नेता, जो सत्ता हथियाने के लिए संसदीय मार्ग पर विश्वास करते थे, युवा श्रमिकों पर कोई ध्यान नहीं देते थे क्योंकि उनके मत नहीं थे। इसी कारण से इन नेताओं ने युवा लोगों के कार्य को सांस्कृतिक गतिविधियों पर ही सीमित कर रखा था।

फिर भी, युवा श्रमिकों को वर्ग-संघर्ष में शामिल करने व उन्हें विभिन्न प्रकार की राजनीतिक कार्यवाही में संलग्न करने की बोल्शेविक पार्टी का फलदायक अनुभव तथा 1905-1907 के प्रथम रूसी क्रांति में उनकी सक्रिय भागीदारी ने पश्चिम में सोशल-डेमोक्रेसी की क्रांतिकारी धारा पर काफी गहरा प्रभाव डाला। अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग आंदोलन में वामपंथी प्रवृत्तियों ने लेनिन को युवाओं की क्रांतिकारी शिक्षा के प्रश्न पर सोचने को प्रेरित किया। इन प्रवृत्तियों ने युवा दलों को जो शक्तिशाली समर्थन दिया उसने युवा श्रमिकों की लीगों को अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना के काम को आसान बनाया।

अगस्त 1907 में स्टुटगार्ट में द्वितीय इन्टरनेशनल की कांग्रेस हुई। लेनिन व रोज़ा लक्ज़म बर्ग[1] के प्रस्ताव पर कांग्रेस ने यह सिफ़ारिश की कि सभी श्रमिक पार्टियाँ युवा श्रमिकों को अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे व समाजवाद की भावना शिक्षित करने में मदद देंगी और युवकों में वर्ग-चेतना का प्रसार करेंगी। कांग्रेस के दौरान, 24 अगस्त को युवा श्रमिक लीगों की प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आरम्भ हुआ, जिसने सोशलिस्ट यूथ इन्टरनेशनल की स्थापना की। सैन्यवाद के विरुद्ध संघर्ष व समाजवादी शिक्षा पर युवा लीगों का ध्यान केन्द्रित था।

लेनिन ने युवा आंदोलन की कठिनाइयों को गम्भीरता से अनुभव किया। 1907 में लिखे एक विशेष लेख 'सैन्यवाद-विरोधी प्रचार और युवा समाजवादी

स्विट्ज़रलैण्ड व बोहेमिया में 1896 में, इटली में 1901, और स्वीडेन में 1902 में निर्मित हुए। 1903 में जर्मनी प्रथम सर्वहारा युवा संगठन बना। एक युवा श्रमिकों की लीग का निर्माण इसी वर्ष स्पेन में, 1905 में हंगरी में, डेनमार्क व फिनलैण्ड में 1906 में, अमेरिका में 1907 में हुआ और 1908 में ग्रेट ब्रिटेन में युवा श्रमिकों लिए रविवारीय स्कूलों की स्थापना की गई।

1. रोज़ा लक्ज़म बर्ग (1871-1919)—जर्मन, पोलिश व अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक-वर्ग आंदोलन की नेता।

श्रमिकों के लीग' में उन्होंने पश्चिमी यूरोपीय देशों के समाजवादी युवा लोगों की सैन्यवाद-विरोधी गतिविधियों का विस्तार से विश्लेषण किया। उन्होंने युवा सैनिकों और जबरन भर्ती हुए रंगरूटों के मध्य प्रचार के स्वरूप व तरीके पर, और युवा संगठनों को सैनिक सेवा में जबरदस्ती भर्ती किये गए अपने सदस्यों के साथ पत्र-व्यवहार से सम्पर्क करने व उन्हें भौतिक सहायता प्रदान करने की आवश्यकता पर ध्यान दिया और कहा कि जबरदस्ती भर्ती हुए सैनिकों की विदाई-समारोह को युद्ध-विरोधी प्रदर्शनों में बदल देना चाहिए, कि सैनिक टुकड़ियों में साम्राज्यवाद-विरोधी साहित्य बाँटना चाहिए, आदि। लेनिन का निष्कर्ष था कि समाजवादी युवा श्रमिकों को, अपनी चारित्रिक शक्ति व उत्साह से सेना को जनता के पक्ष में करने का हरसम्भव प्रयत्न करना चाहिए।[1] लेनिन ने युवाओं को युद्ध व सैन्यवाद के विरुद्ध, विश्व की प्रजातांत्रिक व समाजवादी युवा आंदोलन की अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता के लिए उनके संघर्ष को सक्रिय रूप में सहयोग दिया और उन्होंने सामाजिक-देशोन्माद और राष्ट्रवाद की सभी अभिव्यक्तियों की, विशेष रूप में युवाओं की, निर्ममतापूर्वक निन्दा की।

दुर्भाग्यवश, यूथ इन्टरनेशनल एक अनवरत क्रांतिकारी कार्यक्रम के साथ एकमात्र संगठित संगठन में परिपक्व नहीं हुआ। इन्टरनेशनल सोशलिस्ट ब्यूरो युवा लोगों का वास्तविक निर्देशक अंग नहीं बन सका, बल्कि यह एक सूचना-केन्द्र से अधिक नहीं था, और युवा आंदोलन में सुधारवाद के रिसकर आने को नहीं रोक पाया। यह 1914 में प्रथम विश्व युद्ध के आरम्भ से ही स्पष्ट हो जाता है, जब देशोन्माद की विशाल लहरों ने सोशलिस्ट यूथ इन्टरनेशनल के नेताओं को भी अपनी चपेट में ले लिया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने सामाजिक-देशोन्मादियों के विरुद्ध, जिन्होंने सर्वहारा के वर्ग-हितों के साथ गद्दारी की, अपने देशों की बुर्जुआजी का पक्ष लिया, अन्यायी साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान 'मातृभूमि की रक्षा करो' के नारों को युवजन स्वीकारें इसके लिए हरसम्भव प्रयत्न किया, एक अनवरत संघर्ष में सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रवाद के सिद्धान्तों की निरंतर रक्षा की। लेनिन ने समझाया कि प्रत्येक देश के प्रत्येक युवा श्रमिक का एक समान शत्रु, बुर्जुआजी है। और यदि वह साम्राज्यवादी सेना में जबरदस्ती भर्ती किया गया है और उसके हाथ में बन्दूक है तब इसे कैसे उपयोग करना है उसे सीखना चाहिए, परन्तु अपने वर्ग-भाइयों, अन्य देशों के श्रमिकों पर नहीं बल्कि अपने स्वयं के देश

---

1. देखें : वी० आई० लेनिन 'एन्टी-मिलिटरिस्ट प्रोपोगण्डा एण्ड यंग सोशलिस्ट वर्कर्स लीग्स' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 41, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1971, पृ० 207

के बुर्जुआजी की ओरताननी चाहिए।[1]

लेनिन के शब्द समस्त युद्धरत देशों के युवजनों को सम्बोधित थे और यूथ इन्टरनेशनल पत्रिका मे प्रकाशित हुए थे। लेनिन ने संसार के युवा श्रमिकों की एकजुटता का आह्वान किया और इंगित किया कि इस परिस्थिति मे संघर्ष का एकमात्र सम्भावित मार्ग है साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध मे परिवर्तित करना, साम्राज्यवादी सरकारों का तख्ता पलट देना व श्रमिक वर्ग द्वारा सत्ता हथिया लेना। लेनिन ने यह भी इंगित किया कि सतत अन्तर्राष्ट्रवादी चेतना की शिक्षा को युवजनों को अपने देश से प्रेम करने, अपने शत्रुओ से घृणा करने, अपने देश के भविष्य के प्रति चिंतित होने की शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता है। लेनिन ने वास्तविक देशभक्ति की भावना मे युवाओं की शिक्षा को 'सैकड़ों-हजारो सालों से अलग-अलग पितृभूमियों के अस्तित्व के साथ उत्पन्न अत्यन्त गम्भीर भावना'[2] के रूप मे माना। समाजवाद के लिए संघर्ष और अपने स्वयं के देश का क्रांतिकारी रूपान्तरण समस्त देशों के सर्वहारा के हितो से अलग नही है—यही श्रमिक वर्ग की वास्तविक देशभक्ति का सार है।

लेनिन का विश्वास था कि युवाओ की अन्तर्राष्ट्रवादी शिक्षा प्रथम कम्युनिस्ट युवा संगठन—रूस की युवा कम्युनिस्ट लीग—का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। रूस की युवा कम्युनिस्ट लीग (आर वाई सी एल) की प्रथम कांग्रेस के प्रतिनिधियो को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नई लीग जिसका संगठन हो रहा है विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन का सच्चा सिपाही है, और कहा कि इसे इन्टरनेशनल ब्यूरो ऑफ़ सोशलिस्ट यूथ के साथ सम्पर्क रखना चाहिए। परन्तु जिस समय आर वाई सी एल की स्थापना हुई थी तब अन्य देशो के युवा लीगों में एकता की कमी थी। उनमे से अधिकांश ने सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष मे युवाओं की स्थिति पर ग़लत रुख अपना रखा था और अपनी गतिविधियों मे गम्भीर गलतियाँ की थी। उनके बिखराव की दृष्टि से प्रगतिशील युवा संगठनों का अनुभव राष्ट्रीय सीमा को पार न कर पाया। 1919 में एक संगठित अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट युवा संगठन युवा कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल (वाई सी आई) की स्थापना हुई और स्वयं को एक युवा विभाग के अधिकारो वाले कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल[3] के साथ सम्बद्ध कर लिया।

---

1 देखें: वी०आई० लेनिन, 'द मिलिट्री प्रोग्राम ऑफ़ द प्रोलेटेरियन रेवोल्यूशन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 82-83

2. वी०आई० लेनिन, 'द वेल्यूएबल एडमीशन ऑफ़ प्रिट्रिम सोरोकिन' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 28, पृ० 187

3. वी० आई० लेनिन, 'प्रिंसिपल्स इनवोल्व्ड इन द वार इश्यू', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 153-54

वाई सी आई ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के क्रांतिकारी झण्डे के अन्तर्गत वैचारिक लोगों को एकत्रित करने के लिए, कम्युनिस्ट युवा आंदोलन के लिए अन्य कार्यों की रूपरेखा बनाई।

लेनिन ने युवा कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की स्थापना व उसे मजबूत करने, वैचारिक व राजनीतिक रूप में उसे सही ढंग से संगठित करने और क्रांतिकारी उद्यमों में सफलतापूर्वक उसे लगाने में बहुत सहयोग दिया। जर्मन कम्युनिस्टों को विशेष पत्र में यह बताते हुए कि "क्रांतिकारी होने की इच्छा रखने और क्रांति के विषय में चर्चा करने (और प्रस्ताव पारित करने) से वास्तविक क्रांति का कार्य करने तक संक्रमण बहुत कठिन, कष्टप्रद व मंद होता है", लेनिन ने जुझारू युवाओं के मनोविज्ञान की गहरी समझ को प्रकट किया और ठोस राय व सिफारिशें लिखीं। लेनिन ने लिखा कि यह "सामान्यतः एक सदय के रूप में, पूंजीवाद (या साम्राज्यवाद) के विपरीत के रूप में समाजवाद" की घोषणा करना कठिन नहीं है। यह तब अधिक कठिन होता है जब यह प्रश्न हो "एक ठोस बुराई का, अर्थात् वर्तमान उच्च जीवन स्तर, वर्तमान युद्ध के खतरे अथवा वर्तमान युद्ध के विरुद्ध ठोस 'क्रांतिकारी जन-संघर्ष' के ठोस उद्देश्य" का।

इस प्रकार, युवाओं को समान वैचारिक रुचि में ढालने के साथ-साथ *क्रांतिकारी प्रक्रिया में उनकी भागीदारी उनकी क्रांतिकारी शिक्षा का आधार है।* निरन्तर सैद्धांतिक, वैचारिक वृद्धि के महत्त्व व आवश्यकता को कम मूल्यांकन करने वाला शिक्षा का संस्कार, साथ-साथ सैद्धांतिक कार्य व ठोस व्यावहारिक उद्यम के मध्य पण्डिताऊ झड़प समान रूप में खतरनाक और हानिकारक है।

युवाओं को वैचारिक आस्था और एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण देना एक कुतुबनुमा के समान है जो राजनैतिक व वैचारिक युद्धों में एकाएक परिवर्तनों के मध्य उन्हें सही दिशा की ओर और क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए सचेत होकर संघर्ष के लिए प्रवृत्त करता है। इसके बदले में, वर्ग-संघर्ष में युवजनों की व्यवहारिक भागीदारी जीवन में एक सक्रिय नायक बन जाने का उनका आधार है और उन्हें *क्रांतिकारी सिद्धांत पर अधिकार करने व उसे रचनात्मक रूप में आगे विकसित करने में* मदद करता है।

5. युवा लोगों की संगठनात्मक स्वतंत्रता और पार्टी-निर्देशन

पार्टियों, ट्रेड यूनियनों और अन्य संस्थाओं के साथ युवजन वर्ग-संघर्ष में भाग लेते हैं। आम तौर पर यहाँ युवाओं के हितों सहित समान हितों के लिए लड़ाई [illegible] है परन्तु वर्ग-संघर्ष में युवजनों की अपनी विशिष्ट समस्याएँ और [illegible] विशिष्ट स्वरूप होते हैं, जिनके अनुसार वे स्वतंत्र रूप में काम करते [illegible] स्वतंत्र युवा संगठनों व संस्थाओं को बनाते हैं। यह युवजनों को स्वतंत्र

होने, सामाजिक परिपक्वता विकसित करने, राजनीतिक रूप मे
रचनात्मक नेतृत्व विकसित करने, सही निर्णय लेने की योग्यता पैद
इसे सम्पादित करने के लिए काम करने मे मदद देता है।

आरक्षित व सहायक शक्ति

वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापक उस शिक्षा प्रणाली के बुरी तर
थे, जिसका लक्ष्य, जैसा कार्ल मार्क्स ने कहा, "व्यक्ति को जीवनपर
लिटाए रखना" और उसे निरंतर लाड़-प्यार करना। "जैसे ही वह च
है, वह गिरना भी सीखता है और सिर्फ गिरने के द्वारा ही वह चलना स
मार्क्स व एंगेल्स का अनुभव था कि युवाओं पर विश्वास करना चाहि
जिम्मेदारी के काम करते वक्त उनमे नेतृत्व व स्वतंत्रता की भाव
करने मे उन्हे मदद करनी चाहिए। उदाहरण के लिए एंगेल्स ने लिख
तुम्हारे लिए इतनी कम उम्र में एक जिम्मेदार स्थिति पर रहना ब
है'''यह मस्तिष्क के विकास के लिए और विशेष रूप में चरित्र-नि
नितांत आवश्यक है।"[2]

युवाओं को क्रांतिकारी पार्टी की आरक्षित शक्ति के रूप मे समझ
इस आधार सूत्र से आगे बढे कि "स्पष्टतया यह युवा पीढी ही है जो
बड़ी भर्ती देती है।"[3] हालांकि, वे इस भर्ती के बारे में बहुत सख्त थे
करते थे प्रत्येक युवा पार्टी सदस्य बनने की स्थिति से काफी दूर होता
"इस वर्गच्युत बुर्जुआ युवा द्वारा पार्टी में टिड्डी दल के समान अ
खतरे से आगाह किया। यह न सिर्फ पार्टी की वृद्धि के लिए बल्कि
जिक संरचना, जुझारू कामों में लगने की इसकी योग्यता, और
भविष्य के प्रति उनकी चिन्ता की एक अभिव्यक्ति थी।

युवा पीढी के प्रति मार्क्सवादी नीति युवाओं को 'सब कुछ म
उदार चापलूसी भरी व लफ्फाजी भरी नीति से एकदम भिन्न थी।

---

1. कार्ल मार्क्स, 'प्रोसिडिंग्स ऑफ द सिक्स्थ राइन प्रोविंस एसे
   मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 1, पृ० 153
2. 'एंगेल्स अन एमिल एंगेल्स, जुन', मार्क्स/एंगेल्स, वेर्के जिल्द
   फेरलॉग, बर्लिन, 1967, पृ० 586
3. फ्रेडरिक एंगेल्स, 'डेर सोसियालिसमुस इन डाइशलान्ट',
   वेर्के, जिल्द 22, डीएट्स फेरलॉग, बर्लिन, 1963, पृ० 25
4. 'एंगेल्स अन फिलिपो तुराती', मार्क्स/एंगेल्स वेर्के, जिल्द
   फ़ेरलॉग, बर्लिन, 1968, पृ० 491

पार्टी के दृष्टिकोण में युवजनों के प्रति अधिकार भरा व गल्ती का अंतर्निहित है। मार्क्सवाद के संस्थापक पार्टी की शक्ति और इसमें भर्ती युवजनों पर आवश्यक संगठनात्मक व वैचारिक प्रभाव डालने की इस पर आश्वस्त थे।

इस प्रश्न पर मार्क्सवाद के संस्थापकों के कथन को स्वीकारते हुए बार-बार अत्यधिक खुशामद के परिणाम स्वरूप होने वाले राजनीतिक पन का विरोध किया, जिसने बचपने को *बढ़ाया ही है।* लेनिन ने चेर्नीशेव्स्की के शब्दों को उद्धृत किया : "सामाजिक कार्यों में स्वतन्त्र की आदत पाए बिना, एक नागरिक की भावना प्राप्त किए बिना, व होकर अधेड़ और फिर बूढ़ा बन जाता है, परन्तु वह एक आदमी, या व एक अच्छा चरित्रवान आदमी नहीं बन पाता। विचारों व रुचियों की चरित्र व इच्छा-शक्ति को प्रभावित करती हैं : 'विचारों की व्यापक की व्यापकता को निर्धारित करती है'।"[1]

बोल्शेविक पार्टी के निर्माण के ठीक पहले, 1902 के अन्त में व *आरम्भ में लेनिन छात्र आंदोलन का और स्थानीय सोशल-डेमोक्रेटिक* यह कितना प्रभावित है इसका विश्लेषण करने में विशेष रूप से रुचि लेने उन्होंने पार्टी की स्थानीय शाखाओं से निम्नलिखित विशिष्ट प्रश्न पूछे : से कितने सोशल-डेमोक्रेट आए हैं? क्या छात्रों का केन्द्रों, सहयोगी संगठ यन कौंसिलों से कोई सम्पर्क है? ये सम्पर्क कैसे कायम हैं? भाषणों से? वितरण में? छात्रों में व्याप्त मनोदशा और विभिन्न मनोदशाओं में परि इतिहास।"[2] जैसा इन प्रश्नों से संकेत मिलता है लेनिन छात्रों व सा प्रजातांत्रिक पार्टी के संगठनों के मध्य संबंध के प्रश्न पर अत्यन्त रुचि र उन्होंने छात्र समुदाय की *विभिन्न 'मनोदशाओं पर ध्यान* देने को, प्रचार राजनीतिक गतिविधि में छात्रों को लगाने को विशेष महत्वपूर्ण माना युवजनों व सामाजिक-प्रजातांत्रिक संगठनों के मध्य सम्पर्कों को बढ़ाने व करने तथा युवाओं पर उनके महान संगठनात्मक प्रभाव में काफी रुचि र

प्रथम रूसी क्रांति के वर्षों के दौरान लेनिन ने युवाओं को बोल्शेवि *के निर्देशन में क्रांतिकारी आंदोलन में अधिक गम्भीरता से भाग लेने* पर महत्व प्रदान किया। कार्यक्रम संबंधी 'नए कार्य व नई शक्तियाँ' (1

---

1. वी० आई० लेनिन, संपूर्ण रचनाएँ, जिल्द 29, पृ०591 (रूसी भाषा
2. वी० आई० लेनिन, 'ऑन द सब्जेक्ट ऑफ रिपोर्ट बाई कमेटीज एण *ऑफ द आर एस डी एल पी टू द जनरल पार्टी कांग्रेस',* कलेक्टेड जिल्द 6, पृ० 296

समतुल्य होगी क्रांतिकारी पार्टी की जुझारू आ
के रूप में युवा संगठनों के आधारभूत राजनीति

इसी वजह से कि जारशाही युग में, बोल्शेवि
के निर्माण को एक अहम मुद्दा नहीं समझा।
में संलग्न करने के लिए पार्टी ने ट्रेड यूनियनों,
का और पार्टी के निकटस्थ गुटों व भूमिगत पार्टी
लेनिन ने पार्टी समितियाँ पार्टी के निकट, लेकि
सभव सहायता की माँग की। उन्होंने इंगित किय
व अनिवार्य संगठनात्मक संबंधों को मानने के
क्योंकि उनके लिए विरोध की भावना रखना औ
डेमोक्रेसी के साथ सहानुभूति रखना ही काफी
दबाव में आकर पार्टी के निकट ये गुट "सर्वप्रथम
में और फिर सोशल-डेमोक्रेटिक श्रमिक-वर्ग की
रूपांतरित होंगे।"[1]

लेनिन इस आधार-सूत्र से आगे बढ़े कि अ
कानूनी, सांस्कृतिक व अन्य हितों के लिए युवा संग
तिक संघर्ष और सभी श्रमरतजनों के आधारभूत हि
चाहिए। इसके बदले में, श्रमिक वर्ग और इसके
युवाओं व इसके संगठनों को सामान्य राजनीतिक
युवा श्रमिकों व छात्रों और उनके प्रगतिशील सं
को निरंतर सुरक्षित करना चाहिए।

लेनिन का प्रगतिशील युवाओं, उनकी क्रांति
रचनात्मक शक्ति में गहरा विश्वास था। उन्होंने
सामाजिक शक्ति, क्रांति का एक सामयिक अंग, अं
के मित्र व आरक्षित शक्ति के रूप में माना। एंगेल्स
ने लिखा: "हम भविष्य की पार्टी हैं, और भविष्य
की एक पार्टी हैं, और ये सदा युवा ही हैं जो प्रवर्तक
अनुसरण करते हैं।"[2]

---

[1] ०आई० लेनिन, 'न्यू टास्कस् एण्ड न्यू फोर्सेस
० 220

[2] ०आई० लेनिन, 'द क्राईसिस ऑफ मेन्शेविज्म
० 354

सर्वहारा युवा आंदोलन के वैचारिक व संगठनात्मक सिद्धांतों को लेनिन ने अपने लेख 'युवा इंटरनेशनल' मे अत्यन्त पूर्णता से विकसित किया, जिसमे उन्होंने खुद के बूते पर काम कर रहे संगठनात्मक रूप मे स्वतंत्र युवा संगठनों की दृढ़ता के साथ वकालत की। इस विचार का आधार था, सर्वप्रथम, "आवश्यकतावश युवाओं को समाजवाद की ओर अपने बुजुर्गों की तुलना मे **एक भिन्न तरीके से, दूसरे मार्गों द्वारा, दूसरे रूप में, दूसरी परिस्थितियों में बढ़ना**", दूसरा, "क्योंकि इस मामले की प्रकृति ही ऐसी है। क्योंकि जब तक वे पूरी स्वतंत्रता हासिल नही कर लेते तब तक युवा अपने मध्य से अच्छे समाजवादियों को प्रशिक्षित करने या स्वयं को समाजवाद की ओर बढ़ने के लिए तैयार करने मे अयोग्य होंगे।"[1] इसका आशय 'युवा पार्टियों' का निर्माण नही करना था बल्कि अपने स्वयं के नियमों व अपने स्वयं की नेतृत्वकारी संस्थाओं के साथ स्वशासित संगठनों का निर्माण करना व योद्धाओं की नई पीढ़ियों के राजनीतिक प्रशिक्षण के लिए और क्रांतिकारी श्रमिक-वर्ग की पार्टियों के लिए आरक्षित शक्तियों को तैयार करने के लिए स्कूल बन जाएँगे।

क्रांतिकारी युवा लीग और इसकी गतिविधियों के लिए आधारभूत संगठनात्मक सिद्धांत ही लेनिन का प्रजातांत्रिक केन्द्रीयवाद[2] का सिद्धांत है। यह वही सिद्धांत है जो युवा संगठनों के लिए विकास के एक सहज व अपरिचित मार्ग से एक चेतन, संघर्ष के उद्देश्यों व कार्यों की वैज्ञानिक समझ, प्रजातंत्र व संगठन के सार, चेतन स्वतंत्रता और अनुशासन की ओर बढ़ने को सम्भव बनाता है। प्रजातांत्रिक केन्द्रीयवाद नेतृत्वकारी व स्वतंत्र कार्यवाही के व्यापक विकास के लिए स्वतंत्रता को अस्वीकार नही करता है बल्कि इसके विपरीत इसका पूर्वानुमान करता है।

क्रांतिकारी युवा लीगों का उदय एक प्राकृतिक घटना है। ये वर्ग-संघर्ष, समाज को आगे बढ़ाने मे रुकावट डालने वाले पुराने, गए-बीते सामाजिक व राजनीतिक ढाँचों को तोड़ डालने और एक नए, प्रगतिशील सामाजिक संबंधों को बनाने, जो उत्पादन की शक्तियों को आगे विकास हेतु स्थान प्रदान करता है, के तर्क का

1. वी० आई० लेनिन, 'द यूथ इंटरनेशनल', कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 23, पृ० 164
2. प्रजातांत्रिक-केन्द्रीयवाद—कम्युनिस्ट व श्रमिकों की पार्टियों व सार्वजनिक संस्थाओं के संगठनात्मक स्वरूप का सिद्धांत जिसका आशय है ऊपर से नीचे तक की नेतृत्वकारी अंगों का चुनाव, उनका समयबद्ध वापस-सूचित करना, अल्पमत का बहुमत के अधीन रहना, और उच्च अंगों के निर्णयों का नीचे की इकाइयों के लिए अवश्य पालनीय।

वस्तुगत परिणाम है। समस्त सामाजिक वर्ग और समूह इस प्रक्रिया में भाग लेते हैं, जिनमें युवा भी सम्मिलित हैं जिनमें क्रांतिकारी शक्ति व रचनात्मक गतिविधि की अत्यधिक आरक्षित शक्ति छुपी हुई है।

पार्टी-निर्देशन

क्रांतिकारी युवा लोगों को पार्टी-निर्देशन सर्वहारा के वर्ग-संघर्ष के नियमों द्वारा आरोपित एक वस्तुगत आवश्यकता है, जो वर्ग-शत्रु के विरुद्ध क्रांतिकारी संगठनों के युद्ध में एकमात्र नेतृत्वकारी व निर्देशन देने वाली शक्ति की माँग करता है। पार्टी का निर्देशन क्रांतिकारी युवा लोगों और सामान्य श्रमिक-वर्ग के आंदोलन के घनिष्ट सम्पर्क, वैज्ञानिक कम्युनिज्म की विचारधारा पर अधिकार करने तथा, इस तरह से, युवा आदोलन के सामूहिक चरित्र के साथ ऊँचे दर्जे की चेतना, अनुशासन व संगठन को संयुक्त करने को निश्चित करता है।

पार्टी व युवा संगठनों के मध्य संबंध और जिस तरीके से यह व्यक्त होना है, की रूपरेखा बनाते हुए लेनिन ने इंगित किया कि युवा लोगों का पार्टी-निर्देशन निश्चित रूप में कोई तुच्छ संरक्षण मात्र नहीं है। पार्टी को युवा लोगों को हर-सम्भव सहायता देनी चाहिए, परन्तु उनके लिए उनका काम करके या युवा लोगों की खुशामद करके नहीं, बल्कि उदाहरण व आस्था द्वारा उन्हें प्रभावित करके, और युवाओं की आवश्यकताओं व मामलों पर ठोस रूप में व निरंतर ध्यान देकर सहायता करनी चाहिए ताकि वे अपनी गतिविधियों को सही दिशा की ओर मोड़ सकें।

यह युवा संगठनों द्वारा हो सकने वाली ग़लतियों पर बिरादराना आलोचना का पूर्वानुमान करता है, उन्हें निषिद्ध नहीं करता। लेनिन ने एक सैद्धांतिक धारणा का निरूपण किया जिसे युवाओं के प्रति अनुभवी क्रांतिकारियों को रखना चाहिए: "हम युवा लोगों की सम्पूर्ण स्वतंत्रता के हामी हैं, किन्तु साथ ही उनकी ग़लतियों पर बिरादराना आलोचना की पूर्ण स्वतंत्रता के भी! हमें युवाओं की खुशामद नहीं करनी चाहिए।"[1] इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि युवाओं की कमजोरियों और युवा संगठनों द्वारा हो सकने वाली ग़लतियों को लेनिन ने असीम नहीं माना उनके अनुसार ये व्यावहारिक गतिविधि द्वारा दूर की जा सकती हैं। उन्होंने लिखा कि अनुभवी व परिपक्व क्रांतिकारी मार्क्सवादियों को युवा संगठनों व व्यक्तिगत युवा जुझारुओं की हरसम्भव सहायता करनी चाहिए जिन्हें उनकी त्रुटियों के प्रति अत्यन्त धैर्य रखना चाहिए, मुख्यतः समझाते हुए और न कि लड़ते-झगड़ते

---

1. वी० आई० लेनिन, 'द यूथ इंटरनेशनल', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 164

हुए उन्हें धीरे-धीरे सुधारना चाहिए।

फरवरी 1917 में रूस में बुर्जुआ-प्रजातांत्रिक क्रांति के विजय के पश्चात्, पार्टी द्वारा भूमिगत स्थिति से खुले आम बाहर आने और बुर्जुआ-प्रजातांत्रिक स्वतन्त्रताओं को हासिल करने के पश्चात युवा श्रमिकों को स्वतंत्र लीगों में संगठित करने की वास्तविक संभावना दिखाई दी। प्रथम सर्वहारा युवा संगठन पहले से ही मार्च-अप्रैल 1917 में थे, परन्तु उनमें अभी भी एक स्पष्ट वैचारिक दिशा व संगठनात्मक स्वरूप नहीं था और वे पैटी-बुर्जुआ पार्टियों द्वारा प्रभावित हो सकते थे, जो युवजनों को राजनीतिक संघर्ष को छोड़ने और अपनी गतिविधियों को विशुद्ध रूप से युवाओं की समस्याओं में सीमित करने की प्रेरणा दे रहे थे। बोल्शेविक पार्टी युवाओं को श्रमिकों के आंदोलन से कटकर अलग होने की राय नहीं दे सकते थे। नदेज्दा क्रुप्स्काया ने प्रथम सर्वहारा युवा संगठनों को संगठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। समाचारपत्र प्राव्दा ने उनकी रचना 'युवा-श्रमिकों को कैसे संगठित किया जाय' प्रकाशित की, जिसमें युवा लीग के नियमों का प्रारूप विस्तार से दिया गया था, जो लगभग सभी युवा लीगों के नियमों का आधार बना। इसने एक युवा श्रमिक संगठन के अति आवश्यक उद्देश्यों व मूलभूत कार्यों को घोषित किया : अपने सदस्यों को स्वतंत्र कर्तव्यनिष्ठ नागरिक, पूंजीवाद द्वारा शोषित व दमित सभी लोगों की मुक्ति के लिए श्रमिक-वर्ग के कतारों में उनका इंतजार कर रहे महान संघर्ष में योग्य भागीदार बनने की शिक्षा देना।

इन नियमों ने निरूपित किया कि अपने सदस्यों की राजनीतिक व क्रांतिकारी शिक्षा को युवा श्रमिकों के महत्त्वपूर्ण आर्थिक व कानूनी हितों के लिए संघर्ष के साथ कुशलतापूर्वक जोड़ना युवा लीगों के मूलभूत कार्यों में एक है। श्रमिक वर्ग के युवाओं में वर्ग-चेतना जगाना युवा लीगों द्वारा किए गए शैक्षणिक कार्य का प्रमुख उद्देश्य था। एक बात जिस पर खास जोर दिया गया वह था युवा व प्रौढ़ श्रमिकों के संगठन में एकता की आवश्यकता। क्रुप्स्काया युवा श्रमिक लीगों द्वारा एक कम्युनिस्ट पार्टी का चरित्र अपनाने के विरुद्ध थी, क्योंकि उनमें शामिल होने के लिए युवा श्रमिकों के व्यापक तबकों को लेना आवश्यक है। वे लेनिन के इन शब्दों से प्रेरित थी कि युवा लीगों को जन-संगठन व संगठनात्मक रूप से स्वतंत्र, किन्तु पार्टी के निर्देशन के अंतर्गत कार्य करना चाहिए।[1]

युवा श्रमिक लीग के लिए एक क्रांतिकारी कार्यक्रम का निर्माण बोल्शेविक पार्टी की छठी कांग्रेस द्वारा पूरा किया गया, जिसमें युवा लीगों के प्रश्नों पर बहस हुई थी। लेनिन के निर्देशनों से प्रेरित होकर कांग्रेस ने पार्टी से वैचारिक रूप में

1. देखें : एन०के० क्रुप्स्काया, 1917 का वर्ष, मास्को-लेनिनग्राद, 1925, पृ० 25 (रूसी भाषा में)

प्रतिबद्ध संगठनात्मक रूप में स्वतंत्र युवा लीगों के निर्माण का आह्वान किया। प्रस्ताव में कहा गया, "हमारी पार्टी को संगठनात्मक रूप से आधीन न होते हुए सिर्फ चेतनात्मक रूप से पार्टी से सम्बद्ध स्वतंत्र संगठनों को निर्माण करने हेतु युवाओं में प्रयास करना चाहिए।"[1] युवा लीगों की वैचारिक व राजनीतिक निर्देशन के महत्त्व पर विशेष ध्यान देते हुए कांग्रेस ने कहा कि 'युवाओं को संगठित करने पर अत्यन्त गम्भीर ध्यान देना स्थानीय पार्टी संगठनों' के लिए अति महत्त्वपूर्ण है।

कांग्रेस ने युवा आंदोलन के साथ समूचे श्रमिक वर्ग के आंदोलन की, पूंजीवाद को खत्म करने के लिए और समाजवाद के लिए श्रमिकों के वर्ग-संघर्ष की एकता व अभिन्नता पर ज़ोर दिया। क्रांतिकारी संघर्ष पर आकर्षित, परन्तु पार्टी में शामिल होने के लिए अभी तक तैयार न होने वाले युवजनों के विराट समुदाय की शिक्षा के लिए युवा लीगों का एक स्कूल होना चाहिए। औपचारिक रूप में गैर-कम्युनिस्ट संगठन, युवा श्रमिक लीग आरक्षित शक्ति थीं और पार्टी के भावी क़तारों को प्रदान किया करती थीं; वे युवा श्रमिकों की क्रांतिकारी शिक्षा में और इनकी वर्ग-चेतना को उन्नत करने में सहायक थी; उन्हें युवा पीढ़ी को समाजवाद व सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के विचारों की, बुर्जुआ विचारधारा से जोशीले रूप में लड़ने की, श्रमिक युवाओं के राजनीतिक व आर्थिक हितों की निरंतर व दृढ़तापूर्वक रक्षा करने की, और अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन का जुझारू दस्ता बनने की शिक्षा देनी चाहिए।

महान अक्टूबर क्रांति के पश्चात्, लेनिन व बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में युवा श्रमिकों व कृषकों के लीग की प्रथम अखिल-रूसी कांग्रेस (अक्टूबर-नवम्बर 1918) में रूसी युवा कम्युनिस्ट लीग (आर वाई सी एल—कोम्सोमोल) की स्थापना हुई। क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में पहले बार, एक नए प्रकार के युवा संगठन का उदय हुआ जो पार्टी की सहायक व आरक्षित शक्ति बना, जो सार में सर्वहारा और उद्देश्य व कार्यों में कम्युनिस्ट था; यह जन-समुदाय का एक स्वतंत्र संगठन था, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद व सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद के सिद्धांतों

---

1. प्रतिनिधियों की आयु-संरचना से सम्बन्धित छठी पार्टी कांग्रेस के आँकड़े निश्चित अर्थ वाले हैं। उनकी औसत आयु 29 थी। 30 प्रतिनिधि 25 वर्ष से कम के थे, जिनमें से 5 सिर्फ 18-19 वर्ष के थे। ये आँकड़े युवा कैडर, जो पुराने बोल्शेविक गार्ड के ठोस रक्षक थे, में पार्टी के विश्वास को दर्शाते हैं। देखें, आर एस डी एल पी (बो) की छठी कांग्रेस पूर्वपत्र, मास्को, गोस्पोलिटिज्डर, 1958, पृ॰ 295 (रूसी भाषा में)

पर प्रतिबद्ध था और कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन के अंतर्गत कार्य करता था।[1] कांग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम के आधारसूत्र ने लीग के मूलभूत सिद्धांतों का निरूपण किया। कम्युनिस्ट पार्टी के आदर्शों के प्रति इसकी प्रतिबद्धता और क्रांतिकारी युवाओं की क्रांतिकारियों की प्रौढ़ पीढ़ी के साथ पूर्णरूपेण वैचारिक व राजनीतिक एकता। उन्होंने वाई सी एल (यु क सी) के मूलभूत उद्देश्यों को भी निरूपित किया : कम्युनिज्म के विचारों का प्रसारण, युवाओं को क्रांतिकारी भावना में शिक्षित करना, और नवीन सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में उन्हें सक्रिय रूप में लगाना। लीग के नियमों ने कोम्सोमोल के निर्माण के लिए और इसकी गतिविधियों के लिए मूल सिद्धांत के रूप में प्रजातांत्रिक केन्द्रीयवाद के सिद्धांत को स्थापित किया।

लेनिन कांग्रेस के सम्मानित अध्यक्ष चुने गए और समापन के दिन प्रतिनिधियों के एक दल के समक्ष बोले। वे प्रत्येक बात में रुचि लेते थे—श्रम उत्पादकता को बढ़ाने में कारखाने का युवा श्रमिक कैसे मदद करता है? युवा श्रमिक व कृषक कैसे अध्ययन करते हैं? और किस प्रकार निरक्षरता उन्मूलन में मदद करते हैं? क्या युवजन बंदूकें चलाना सीख रहे हैं? क्या युवा संगठन अपने उन सदस्यों के साथ पत्र-व्यवहार करते हैं जो लाल सेना में शामिल हैं? क्या वे लाल सेना के आदमियों के परिवारों की मदद करते हैं? लीग के सदस्य मेन्शेविकों, समाजवादी-क्रांतिकारियों व अराजकतावादियों के साथ किस प्रकार संघर्ष करते हैं? अतीत के किस आदर्श व्यक्ति को युवजन सम्मान देते हैं और किसका वे अनुकरण करते हैं? लेनिन ने अधिकांश उत्तरों पर तुरंत उत्साहपूर्ण टिप्पणी की। उन्होंने युवा प्रतिनिधियों का ध्यान उनके जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की ओर आकर्षित कराया, युवा कम्युनिस्ट लीग के कार्यों का विस्तृत विवरण दिया, और उन्हें पार्टी की सक्रिय सहायता व सहयोग का वायदा किया। वार्तालाप के दौरान लेनिन ने युवा कम्युनिस्ट लीग की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों के महत्त्व और अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी युवा आंदोलन की वृद्धि पर जोर दिया।

लेनिन ने युवजनों को वास्तविक कम्युनिस्ट बनने के लिए क्या करना चाहिए

---

1. कांग्रेस के प्रतिनिधियों की पार्टी के साथ सम्बन्ध क्रांतिकारी युवा आंदोलन में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका को स्पष्ट करती है: (मताधिकार वाले) 175 प्रतिनिधियों में 88 पार्टी सदस्य थे और 33 पार्टी के साथ सहानुभूति वाले। आर वाई सी एल की पहली केन्द्रीय समिति के सभी 15 सदस्य युवा पार्टी सदस्य थे; केन्द्रीय समिति के 7 वैकल्पिक सदस्यों में 6 कम्युनिस्ट थे। कांग्रेस के प्रतिनिधि 120 युवा संगठनों के 22,000 सदस्यों का प्रतिनिधित्व करते थे।

समझाया। "युवा लीग का सदस्य होने का अर्थ है अपने श्रम व अपने प्रयत्नों को समान उद्देश्य की पूर्ति में लगाना। यही कम्युनिस्ट शिक्षा का तात्पर्य है। सिर्फ ऐसे कार्यों के दौरान ही युवक व युवतियाँ वास्तविक कम्युनिस्ट बनते हैं।"[1] पार्टी हेतु "युवजनों के मध्य से हमदर्दों को अपने पक्ष में लेने पर जोर देते हुए भी लेनिन का तकाज़ा था कि नई भर्ती वर्ग-नियंत्रित होनी चाहिए। श्रमिकों में से ही युवजन लेने चाहिए ताकि श्रमिकों द्वारा नियंत्रण हो सके।"[2] उनकी यह अपेक्षा थी कि "पार्टी की सदस्यता हेतु भर्ती होने वाले यु क ली के सदस्यों ने, प्रथम, वास्तव में गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया हो व कुछ सीखा हो, और द्वितीय, कि गम्भीर व्यावहारिक कार्य (आर्थिक, सांस्कृतिक, आदि) करने का उनका लम्बा रिकार्ड हो, यह निश्चित करने के लिए कठोर शर्तें होनी चाहिए।"[3]

इसकी संगठनात्मक स्वतंत्रता द्वारा युवा लोगों की गतिविधियों के लिए व्यापक स्वरूप प्रदान करते हुए पार्टी ने परिकल्पना की कि लीग आर्थिक, सांस्कृतिक व राज्यीय निर्माण मे विशाल पैमाने पर भाग लेगी। युवाओं की सभी समस्याओं, यथा उनकी शिक्षा, लालन-पालन, व्यावसायिक प्रशिक्षण, श्रम, दैनिक जीवन व विश्राम, का मुख्य रूप कोम्सोमोल संगठनों में उनकी सीधी भागीदारी, उनके दृष्टिकोण और उनके उपक्रमों के अनुसार सुलझाया जाएगा।

हालांकि, कोम्सोमोल की स्वतंत्रता को 'असीम' समझना ग़लत होगा। इस प्रकार की 'स्वतंत्रता' युवा संगठन को पार्टी से स्वयं को अलग व दूर ले जाती है, कम्युनिस्ट युवा आंदोलन के विकास में स्वत: प्रवृत्ति को लाती है। युवाओं के लिए संघर्ष के सहित, तीव्र वर्ग-संघर्ष के हमारे युग में कोई 'स्वामिहीन भूमि' नहीं है। इसीलिए कम्युनिस्ट युवा आंदोलन को, विशेषकर इसके संगठनात्मक ढाँचे और इसके संगठनात्मक स्वरूपों के विकास को मनमाने ढंग पर बहकने की इजाज़त नहीं दे सकते हैं।

युवा आंदोलन के लिए संगठनात्मक सिद्धांत, ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियों, परम्परा, युवा आंदोलन के स्तर व व्यापकता आदि पर निर्भर करता है। परंतु

---

1. वी॰ आई॰ लेनिन, 'द टास्कस् ऑफ द यूथ लीग्स', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 31, पृ॰ 297
2. वी॰ आई॰ लेनिन, 'स्पीचेज एट ए मीटिंग ऑफ द मास्को पार्टी कमेटी ऑन ऑर्गेनाईजिंग ग्रुप्स ऑफ सिम्पेथाई जरस्, 16 अगस्त 1918' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 28, पृ॰ 59
3. वी॰ आई॰ लेनिन, 'कमेन्ट्स ऑन द ड्राफ्ट रेवोल्यूशन फॉर द एलेवेन्थ कान्फ्रेन्स ऑफ द आर॰ सी॰ पी॰ (बी॰) ऑन द पार्टी पर्जे', कलेक्टेड वर्क्स जिल्द 42, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1969, पृ॰ 370

युवा आंदोलन का स्वरूप न सिर्फ युवाओं की वरन् कम्युनिस्ट पार्टी
का विषय है। वास्तविक स्वतंत्रता व स्वतंत्र क्रिया-कलाप तभी
सैद्धांतिक मामलों में वे पार्टी के निर्देशन पर आधारित हो। पार्टी
संगठित होने के उन तरीकों मे सहायता देती है जिन्हे वह वर्गीय क्रांति
के दृष्टिकोण से सबसे अधिक उचित समझती है।

इस प्रकार, मार्क्सवादी-लेनिनवादी रीतिविज्ञानी सिद्धातो के
युवाओ की क्रांतिकारी शिक्षा की समस्याओ के एक विश्लेषण के
नेष्कर्ष हैं—

—युवा पीढ़ी को शिक्षित करने की प्रक्रिया का निर्धारण उन
परिस्थितियों जिनके अधीन यह होती है और अनेक आत्मपरक घटक
युवजनों की चेतना व व्यवहार को सँवारते हैं, दोनो द्वारा होत
वस्तुगत व आत्मपरक घटको के मध्य एक द्वंद्वात्मक अंत.सम्बन्ध व
निर्भरता होती है;

—शिक्षा, ठोस उत्पादन प्रणाली द्वारा निर्धारित सामाजिक सम्बन्धो
प्रकृति के सहित युवाओ की समस्याओं के विश्लेषण मे एक ठोस ऐति-
हासिक दृष्टिकोण आवश्यक है और इस विश्लेषण व वास्तविक वाता-
वरण जिसमें युवा पीढ़ी रहती है, के मध्य सर्वाधिक सम्बन्ध पर भी ध्यान
रखना होगा;

—युवाओं की शिक्षा एक वर्ग और पार्टी की प्रकृति की है, इसीलिए विश्लेषण
को समाज के सामाजिक व वर्ग-ढांचे, सामाजिक अंतर्विरोधो के सार व
तीव्रता, प्रतिरोधी राजनीतिक शक्तियों और उनके कार्यों व उद्देश्यो पर
ध्यान देना होगा;

—युवजन समकक्ष वर्गों व राजनीतिक पार्टियो के, और विभिन्न राजकीय
संस्थाओं व सार्वजनिक प्रतिष्ठानो के, जो संचित सामाजिक व ऐतिहासिक
अनुभव को उन्हें संप्रेषित करते हैं तथा इसके द्वारा उनकी समझ व
समर्थन को अपने पक्ष मे लेते हैं, उद्देश्यपूर्ण प्रभाव को वस्तुगत बनाने हैं;

—एक विशिष्ट सामाजिक-जनसांख्यिकीय समूह के रूप मे युवा, अपने स्वयं
के चारित्रिक लक्षणों व आयुजन्य विशेषताओं के साथ मानव इतिहास के
नायक, सामाजिक विकास की उदीयमान शक्ति भी हैं, जो सामाजिक व
ऐतिहासिक अनुभव के संचय को व्यापक बनाने मे निश्चित योगदान देते
हैं,

—युवजनों को सार्वजनिक जीवन मे लाने, उनका समाजीकरण, समाज के
अनुकूल करना, परिपक्व नागरिक चेतना और एक निश्चित
स्तर की प्राप्ति सामाजिक व राजनीतिक

अध्याय : 2

विकसित समाजवादी समाज में पार्टी व युवा

व्यक्तियों का सक्रिय, उद्देश्यपूर्ण जीवन मे सँवारना और उनका सतुलित व सर्वांगिक विकास सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सामाजिक नीति के अति महत्त्वपूर्ण कार्यों में एक है। यह नीति एक विकसित समाजवादी समाज मे युवाओं की कम्युनिस्ट शिक्षा के सिद्धांतो के आधार पर टिकी हुई है :

—कम्युनिज्म की विजय के लिए साहसी व निस्वार्थी योद्धाओ, व्यापक रूप मे विकसित करना तथा ऊँचे दर्जे के शिक्षित लोगो की पीढ़ी को प्रशिक्षित करना, जो समाज व राज्य के मामलों को निर्देशित कर सके। युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों और तमाम युवको व युवतियो को मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात पर रचनात्मक रूप मे अधिकार करने के लिए शिक्षा देना, उन्हें वैचारिक आस्था, सामाजिक घटनाओ के प्रति वर्गीय दृष्टिकोण और पार्टी के उद्देश्य हेतु प्रतिबद्धता प्रदान करना। प्रत्येक सोवियत युवाओं को लेनिन को समझना चाहिए और जिस तरह लेनिन जिए और संघर्ष किए वैसे ही जीना व संघर्ष करना चाहिए;

—कम्युनिस्ट पार्टी के अनुभव पर, देश की क्रांतिकारी, जुझारू व श्रमिक परम्पराओ मे युवाओ को शिक्षित करना, उनमे सोवियत देशभक्ति, सोवियत सघ की जनता और सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रवाद के मध्य बिरादराना मैत्री, अपनी समाजवादी भूमि के प्रति प्रेम और अक्टूबर क्रांति की उपलब्धियो की सुरक्षा हेतु हाथो मे अस्त्र लेकर उठ खड़े होने की तत्परता को विकसित करना;

—युवकों व युवतियो को श्रम व समाजवादी सम्पति के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण प्रदान करना, सामूहिक व समाज के कार्यों के प्रति उन्हें उत्तरदायित्व का अनुभव करना, व्यक्तिगत आदर्शों और देश के महान उद्देश्यों के मध्य सीधे सम्पर्क की स्पष्ट जागरूकता को प्राप्त करना,

—युवा पीढ़ी को कम्युनिस्ट नैतिकता, सामूहिकता व साथीपन की भावना में बड़ा करना; अहंकारवाद, रूमानियत और संग्रहवाद के साथ-साथ समाजवादी समुदाय और सोवियत कानून के नियमों के उल्लघन को पूरी तरह से अस्वीकार करने की उन्हें शिक्षा देना;

—युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों व युवाओं की क्रांतिकारी सतर्कता को बढ़ाना, बुर्जुआ विचारधारा और बुर्जुआ नैतिकता को अस्वीकार करने, 'वर्ग-शांति' के थोथे नारे के साथ युवा पीढ़ी को बरगलाने हेतु साम्राज्यवादी प्रचार के प्रयत्नों को हराने और पूंजीवाद के प्रतिक्रियावादी लोक-विरोधी सार को निर्ममतापूर्वक भंडाफोड़ करने की उन्हें सदैव शिक्षा देना।

1. युवा कम्युनिस्ट लीग को पार्टी-निर्देशन

समाजवाद और कम्युनिजम के निर्माण हेतु तथा क्रांतिकारी प्रक्रिया की निरंतरता को सुनिश्चित करने हेतु वस्तुगत रूप में युवा कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल) को पार्टी-निर्देशन की आवश्यकता होती है। यह सो सं क पा और अखिल-संघीय लेनिनवादी युवा कम्युनिस्ट लीग (ए एल वाई सी एल) के समान दृष्टि-कोण, राजनीतिक मंच, तथा अन्तिम उद्देश्यो और उनके समान सामाजिक आधार पर आधारित है। सो सं क पा और यु क ली (वाई सी एल) की गतिविधियाँ घनिष्ठ रूप में परस्पर संबद्ध हैं। पार्टी कोम्सोमोल के मूल कार्यों का निर्धारण करती है, युवजनों के मध्य इसके कार्य को, विशेषकर कम्युनिस्ट शिक्षा के संचालन मे, सदस्यों के प्रश्नों का समाधान करने मे, युवा कम्युनिस्ट लीग के सक्रिय सदस्यों को प्रशिक्षित करने में, और यु क ली के संगठनों की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों से संबंधित अन्य समस्याओं के समाधान मे भी मदद देती है। दूसरी ओर कोम्सोमोल कम्युनिज़म के निर्माण के कार्य के सम्पादन में और जनता के एक ठोस दल के प्रशिक्षण में, जो पार्टी की कतारों को परिपूर्ण करेंगे, जन-समूहों व युवजनों की लामबंदी में पार्टी की मदद करता है। लियोनिद ब्रेझनेव ने इंगित किया, "यु क ली हमारा प्रतिस्थापन और पार्टी का सहायक है। आज 18 और 25 वर्ष की आयु के युवजन कल हमारे समाज के रीढ़ बन जाएँगे। उदीयमान पीढ़ी को राजनीतिक रूप में सक्रिय, समझने-बूझने वाले लोगों मे, जो कैसे काम करना है जानें और पसंद करें और अपने देश की रक्षा करने में सदैव तैयार रहे, बदलने में मदद करना यु क ली का मुख्य कार्य, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य है।"[1]

साथ ही, क्योंकि पार्टी यु क ली के कार्य को निर्देशित करती है, पार्टी यह उन कार्यों को नियंत्रित करती है, अर्थात्, कैसे यु क ली संगठन अपने उत्तरदायित्वों की पूर्ति करे इस पर नजर रखना, इसके लिए सही रास्तों को ढूंढने में उनकी मदद

1. डाक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशंस, द 26 व कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, नोवोस्ती प्रेस एजेंसी पब्लिशिंग हाउस, मास्को, 1981, पृ० 86

करना, और अपनी गतिविधियों में कमियों व त्रुटियों को दूर करने में यु क ली की मदद हेतु उपायों को अपनाना। नियंत्रण एक प्रभावशाली माध्यम है जिसके द्वारा यु क ली पर पार्टी-निर्देशन प्रभावित होता है, और इसे व्यावहारिक सहायता देने का एक महत्त्वपूर्ण तरीक़ा है।

कोम्सोमोल को पार्टी वैचारिक व संगठनात्मक कार्यों के संपादन में घनिष्ठ रूप मे सहयोग करने को तथा वैचारिक, राजनीतिक, श्रम व नैतिक शिक्षा के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने को शिक्षा देती है। पार्टी की समितियों के नेतृत्व के अंतर्गत युवाओं के लिए बनाई गई कम्युनिस्ट शिक्षा हेतु एकीकृत योजनाएँ व्यापक रूप मे प्रचलित हो गई हैं।

अनेक राजकीय प्रतिष्ठान व सार्वजनिक संस्थान युवाओं की शिक्षा से संबद्ध हैं, और पार्टी उनके प्रयासों को निर्देशित व समन्वित करती है। यह युवाओं के शिक्षण व विकास को राज्य स्तरीय महत्त्व का एक प्रश्न मानती है।

युवा पीढ़ी तथा उनके वर्तमान व भविष्य के लिए पार्टी की लेनिनवादी चिंतन सोवियत संघ के 1977 के संविधान में स्पष्टतः मूर्तरूप मे है। विकसित समाजवाद के इस संविधान में प्रश्नों का वह व्यापक क्षेत्र है जो युवा पीढ़ी के जीवन के आधारों से ही संबद्ध है। प्रत्येक सोवियत व्यक्ति को नौकरी और किसी व्यवसाय या व्यापार चुनने की, राजकीय व सार्वजनिक मामलों के व्यवस्था मे भाग लेने की, निःशुल्क शिक्षा पाने की, निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा पाने की, सामाजिक सुरक्षा की, विश्राम व मनोरंजन की, सांस्कृतिक गतिविधि में भाग लेने और वैज्ञानिक, तकनीकी और कलात्मक उद्यम मे लगने की स्वतंत्रता के अधिकार की घोषणा व गारंटी को संविधान प्रदान करता है। सोवियत संघ का संविधान समाज को प्रभावित करने वाले प्रत्येक प्रश्न के समाधान मे युवजनों की अधिक भागीदारी के लिए नए अवसर प्रदान करता है। दूसरे अन्य सार्वजनिक संगठनों के समान लेनिन यु क ली को नए संविधान के अन्तर्गत सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत मे कानून को पारित कराने मे नेतृत्व लेने का भी अधिकार है।

एक परिपक्व समाजवादी समाज मे श्रम-समुदायों मे यु क ली संगठनों को अधिक अधिकार मिले हैं, जो संविधान द्वारा सोवियत राजनीतिक प्रणाली के महत्त्वपूर्ण तत्त्व घोषित किए गए हैं। कोम्सोमोल समितियाँ युवाओं के लिए काम करने और रहने की परिस्थितियों को सुधारने तथा विश्राम व मनोरंजन को बेहतर बनाने के प्रस्तावों को पेश करते हुए कोम्सोमोल समितियाँ समुदायों के सामाजिक विकास के लिए योजनाओं को बनाने मे सहायता करती हैं। वे उत्पादन के सार्वजनिक व्यवस्थापक मण्डलों के कार्यों में सक्रियता से संबद्ध हैं, और युवा श्रमिकों की परिषदों, युवा-विशेषज्ञों की परिषदों, सार्वजनिक कैडर विभागों, सार्वजनिक डिजाइन व तकनीकी ब्यूरो तथा गुणात्मक परिषदों जैसी युवा संगठनों की गति-

विधियों को उन्नत करती हैं।

यु क ली संगठनों को उद्योगों, सामूहिक कृषि फार्मों संस्थाओं के प्रबंध से संबंधित प्रश्नों को उपयुक्त पार्टी के समक्ष उठाने व उन पर बहस करने के व्यापक अधिकार हैं। कम्युनिज्म के निर्माण के समस्त क्षेत्रों में वे पार्टी के निर्देशन को सक्रियता से लागू करते हैं।

सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस में यह कहा गया कि पार्टी का निर्देशन यु क ली की शक्ति का जीवनप्रद साधन है और इसकी समस्त सफलता की ठोस गारंटी है। पार्टी से यु क ली जनता के साथ कार्य करने के जटिल विज्ञान व कला को सीख रही है। यु क ली के नेतृत्वकारी व स्वतंत्र कार्य बढ़ते जा रहे हैं और उसमें अनुशासन मजबूत होता जा रहा है।

यु क ली समितियाँ निष्क्रियता और औपचारिकतावाद की किसी भी प्रकार की अभिव्यक्तियों को अधिक मजबूती से नष्ट कर देंगी, प्रत्येक यु क ली संगठन में एक सजीव व रचनात्मक वातावरण बनाएँगी, युवाओं के जीवन के हर पहलू के नजदीक जाने का प्रयास करेंगी, हमारी नैतिकता के उल्लंघनों के विरुद्ध संघर्ष को तीव्र करेंगी, पड़ोसियों व युवा छात्रावासों में कार्य पर अधिक ध्यान देंगी...कम्यु-निस्ट पार्टी के जुझारू आरक्षित शक्ति व एक वास्तविक सहायक के रूप में अपनी सम्मानपूर्ण भूमिका का निर्वाह लेनिन यु क ली अधिक जिम्मेदारी के साथ करती रहेगी।

विकसित समाजवाद की समूची राजनीतिक प्रणाली के समान, लेनिनवादी कोम्सोमोल भी विकास की उच्च श्रेणी तक पहुँच गया है। अपने आकार में और कार्य करने की अपनी प्रकृति में दोनों में यह एक वास्तविक जन युवा संगठन बन चुका है। जबकि दूसरे दशक के आरंभ में समस्त युवजनों का लगभग दो प्रतिशत भाग यु क ली का सदस्य था, आठवें दशक के आरंभ में इसकी सदस्यता 4 करोड़ से अधिक हो चली है अर्थात् समूची युवा पीढ़ी के आधे से भी अधिक। प्रति वर्ष [illegible] से 50 लाख नौजवान यु क ली में भर्ती होते हैं।

यु क ली की सामाजिक रचना बदल चुकी है; अब यह युवा-पीढ़ी की समस्त श्रेणियों व समूहों का एक संगठन है। सन् 1959 में इसमें 51 लाख थे, और 1982 में 1 करोड़ 40 लाख से ज्यादा सदस्य हैं—[illegible] की समस्त सदस्यता का करीबन 35 प्रतिशत। कोम्सोमोल में 20 [illegible] इंजीनियर व टैक्नीशियन, लगभग 300,000 कृषि विशेषज्ञ, [illegible] कार्मिकों और पशुधन विशेषज्ञों की कुल संख्या का 20 प्रतिशत [illegible] न चिकित्सकों का 17 प्रतिशत भाग है। कोम्सोमोल की सदस्यता [illegible] भाग उच्चतर या माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है।

[illegible] वैचारिक, राजनीतिक, श्रम व नैतिक शिक्षा ग्रहण करने वाले

युवजनों का पार्टी में प्रवेश निरंतर बढ़ता जा रहा है। 1966 और 1971 के मध्य यु क ली के 1,350,000 सदस्यों ने पार्टी में प्रवेश लिया, अर्थात् इस आबादी के नए सदस्यों के 45 प्रतिशत लोगों ने। 1976 तक पार्टी में शामिल होने वालों में अधिकांश यु क ली के सदस्य थे, जबकि 1976 और 1981 मध्य पार्टी के नए सदस्यों में 75 प्रतिशत यु क ली के थे। 1981 के आरम्भ में कम्युनिस्ट पार्टी के 14 लाख से अधिक युवा सदस्य यु क ली में सक्रिय थे, जो 1975 की अपेक्षा 465,000 अधिक थे (1966 में तो केवल 268,000 कम्युनिस्ट थे)। कम्युनिस्ट पार्टी के इन सदस्यों ने यु क ली को उच्चस्तरीय विचारधारा व संगठन, सुस्पष्टता व उत्तरदायित्व प्रदान किया।

निम्नलिखित आँकड़े भी इसी प्रकार की सूचना प्रदान करते हैं: 1 जनवरी, 1981 में कम्युनिस्ट पार्टी के 30 लाख से अधिक सदस्य 30 वर्ष की उम्र से कम थे (पार्टी की सदस्यता का 17.6 प्रतिशत), जबकि 25 वर्ष की आयु से कम सदस्य (1973 में 83,4000 की तुलना में) 1,130,000 थे।

यु क ली के सदस्य राजकीय व सार्वजनिक संगठनों के कार्य में सक्रियता से लगे हुए हैं; वे उद्योगों, सामूहिक व राजकीय कृषि-फार्मों, और वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं में शीर्षस्थ स्थानों पर हैं। यह युवजनों को जिम्मेदार अधिकारी होने, राज्य व राष्ट्रव्यापी स्तर पर चिंतन करने को सिखाता है। सो सं क पा की केंद्रीय समिति के निर्णयानुसार जन-प्रतिनिधियों[1] की सोवियतों, मंत्रालयों व विभागों, स्थानीय राज्य संस्थानों, ट्रेड यूनियनों और अन्य सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को युवाओं के विकास, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, काम करने व रहने की परिस्थितियों, विश्राम व मनोरंजन के प्रश्नों को अपने हाथों में लेना चाहिए; इस संबंध में यु क ली की समितियों को भागीदार होना चाहिए, तथा उनकी राय और नेतृत्व पर भी विचारना चाहिए। 1977 में ट्रेड यूनियन की कार्यकारिणी समितियों में 800,000 युवजन निर्वाचित हुए। 1980 में स्थानीय सोवियतों में चुने गए 757,700 व्यक्ति 30 वर्ष से कम उम्र के थे, और जन-प्रतिनिधियों की संपूर्ण संख्या के 33.3 प्रतिशत थे।

उच्चतर और माध्यमिक विशिष्ट शिक्षा के मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, रेडियो और टेलीविज़न प्रसारण की राज्य समिति, पार्टी और राज्य नियंत्रण के लिए गठित समिति और ट्रेड यूनियनों की अखिल-संघ केंद्रीय परिषद (ए यू सी सी टू यू) जैसी युवाओं की शिक्षा के लिए जिम्मेदार विभिन्न मंत्रालयों

---

1. पीपुल्स डिपुटीज़ की सोवियतें—सोवियत संघ में वैधानिक अधिकार प्राप्त संस्थाएँ जिनके माध्यम से श्रमिकों की राजनीतिक शक्ति को क्रियान्वित किया जाता है।

विधियों को उन्नत करती हैं।

यु क ली संगठनों को उद्योगों, सामूहिक कृषि फार्मों संस्थाओं के प्रबंध से संबंधित प्रश्नों को उपयुक्त पार्टी के समक्ष उठाने व उन पर बहस करने के व्यापक अधिकार हैं। *कम्युनिज्म के निर्माण के समस्त क्षेत्रों में वे पार्टी के निर्देशन को* सक्रियता से लागू करते हैं।

सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस में *यह कहा गया कि* पार्टी का निर्देशन यु क ली की शक्ति का जीवनप्रद साधन है और इसकी समस्त सफलता की ठोस गारंटी है। पार्टी से यु क ली जनता के साथ कार्य करने के जटिल विज्ञान व कला को सीख रही है। यु क ली के नेतृत्वकारी व स्वतंत्र कार्य बढ़ते जा रहे हैं और उसमें अनुशासन मजबूत होता जा रहा है।

यु क ली समितियाँ निष्क्रियता और औपचारिकतावाद की किसी भी प्रकार की अभिव्यक्तियों को अधिक मजबूती से नष्ट कर देंगी, प्रत्येक यु क ली संगठन में एक सजीव व रचनात्मक वातावरण बनाएँगी, युवाओं के जीवन के हर पहलू के नजदीक जाने का प्रयास करेंगी, हमारी नैतिकता के उल्लंघनों के विरुद्ध संघर्ष को *तीव्र करेंगी, पड़ोसियों व युवा छात्रावासों में कार्य पर अधिक ध्यान देंगी*···कम्युनिस्ट पार्टी के जुझारू आरक्षित शक्ति व एक वास्तविक सहायक के रूप में अपनी सम्मानपूर्ण भूमिका का निर्वाह लेनिन यु क ली अधिक जिम्मेदारी के साथ करती रहेगी।

विकसित समाजवाद की समूची राजनीतिक प्रणाली के समान, लेनिनवादी कोम्सोमोल भी विकास की उच्च श्रेणी तक पहुँच गया है। अपने आकार में और कार्य करने की अपनी प्रकृति मे दोनों में यह एक वास्तविक जन युवा संगठन बन चुका है। जबकि दूसरे दशक के आरंभ मे समस्त युवजनों का लगभग दो *प्रतिशत* भाग यु क ली का सदस्य था, आठवें दशक के आरंभ में इसकी सदस्यता 4 करोड़ से *अधिक हो चली है अर्थात् समूची युवा पीढ़ी के आधे से भी अधिक*। प्रति वर्ष 45 से 50 लाख नौजवान यु क ली में भर्ती होते हैं।

यु क ली की सामाजिक रचना बदल चुकी है; अब यह युवा-पीढ़ी की समस्त सामाजिक श्रेणियों व समूहों का एक संगठन है। सन् 1959 मे इसमे 51 लाख युवा श्रमिक थे, और 1982 मे 1 करोड़ 40 लाख से ज्यादा सदस्य हैं—यानि कोम्सोमोल की समस्त सदस्यता का क़रीबन 35 प्रतिशत। कोम्सोमोल में *20* लाख से अधिक इंजीनियर व टैक्नीशियन, लगभग 300,000 कृषि विशेषज्ञ; *शिक्षकों, कृषि-वैज्ञानिकों और पशुधन विशेषज्ञों की कुल संख्या का 20 प्रतिशत* भाग और समस्त चिकित्सकों का 17 प्रतिशत भाग है। कोम्सोमोल की सदस्यता *के* दो-तिहाई भाग उच्चतर या माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है।

यु क ली में वैचारिक, राजनीतिक, श्रम व नैतिक शिक्षा ग्रहण करने वाले

युवजनों का पार्टी में प्रवेश निरंतर बढ़ता जा रहा है। 1966 और 1971 के मध्य यु क सी के 1,350,000 सदस्यों ने पार्टी में प्रवेश लिया, अर्थात् इस आबादी के नए सदस्यों के 45 प्रतिशत लोगों ने। 1976 तक पार्टी में शामिल होने वालों में अधिकांश यु क सी के सदस्य थे, जबकि 1976 और 1981 मध्य पार्टी के नए सदस्यों में 75 प्रतिशत यु क सी के थे। 1981 के आरम्भ में कम्युनिस्ट पार्टी के 14 लाख से अधिक युवा सदस्य यु क सी में सक्रिय थे, जो 1975 की अपेक्षा 465,000 अधिक थे (1966 में तो केवल 268,000 कम्युनिस्ट थे)। कम्युनिस्ट पार्टी के इन सदस्यों ने यु क सी को उच्चस्तरीय विचारधारा व संगठन, सुस्पष्टता व उत्तरदायित्व प्रदान किया।

निम्नलिखित आँकड़े भी इसी प्रकार की सूचना प्रदान करते हैं : 1 जनवरी, 1981 में कम्युनिस्ट पार्टी के 30 लाख से अधिक सदस्य 30 वर्ष की उम्र से कम थे (पार्टी की सदस्यता का 17.6 प्रतिशत), जबकि 25 वर्ष की आयु से कम सदस्य (1973 में 83,4000 की तुलना में) 1,130,000 थे।

यु क सी के सदस्य राजकीय व सार्वजनिक संगठनों के कार्य में सक्रियता से लगे हुए हैं; वे उद्योगों, सामूहिक व राजकीय कृषि-फार्मों, और वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं में शीर्षस्थ स्थानों पर हैं। यह युवजनों को जिम्मेदार अधिकारी होने, राज्य व राष्ट्रव्यापी स्तर पर चिंतन करने को सिखाता है। सो स क पा की केंद्रीय समिति के निर्णयानुसार जन-प्रतिनिधियों[1] की सोवियतों, मंत्रालयों व विभागों, स्थानीय राज्य संस्थानों, ट्रेड यूनियनों और अन्य सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को युवाओं के विकास, शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण, काम करने व रहने की परिस्थितियों, विश्राम व मनोरंजन के प्रश्नों को अपने हाथों में लेना चाहिए; इस संबंध में यु क सी की समितियों को भागीदार होना चाहिए, तथा उनकी राय और नेतृत्व पर भी विचारना चाहिए। 1977 में ट्रेड यूनियन की कार्यकारिणी समितियों में 800,000 युवजन निर्वाचित हुए। 1980 में स्थानीय सोवियतों में चुने गए 757,700 व्यक्ति 30 वर्ष से कम उम्र के थे, और जन-प्रतिनिधियों की संपूर्ण संख्या के 33.3 प्रतिशत थे।

उच्चतर और माध्यमिक विशिष्ट शिक्षा के मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, रेडियो और टेलीविज़न प्रसारण की राज्य समिति, पार्टी और राज्य नियंत्रण के लिए गठित समिति और ट्रेड यूनियनों की अखिल-संघ केंद्रीय परिषद (ए यू सी सी टू यू) जैसी युवाओं की शिक्षा के लिए ज़िम्मेदार विभिन्न मंत्रालयों

---

1. पीपुल्स डिपुटीज की सोवियतें—सोवियत संघ में वैधानिक अधिकार प्राप्त संस्थाएँ जिनके माध्यम से श्रमिकों की राजनीतिक शक्ति को क्रियान्वित किया जाता है।

विधियों को उन्नत करती है।

यु क ली संगठनों को उद्योगों, सामूहिक कृषि फार्मों संस्थाओं के प्रबंध से संबंधित प्रश्नों को उपयुक्त पार्टी के समक्ष उठाने व उन पर बहस करने के व्यापक अधिकार हैं। कम्युनिज्म के निर्माण के समस्त क्षेत्रों में वे पार्टी के निर्देश सक्रियता से लागू करते हैं।

सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस में यह कहा गया कि पार्टी का निर्देश यु क ली की शक्ति का जीवनप्रद साधन है और इसकी समस्त सफलता की गारंटी है। पार्टी से यु क ली जनता के साथ कार्य करने के जटिल विज्ञान व कला को सीख रही है। यु क ली के नेतृत्वकारी व स्वतंत्र कार्य बढ़ते जा रहे हैं और उसमें अनुशासन मजबूत होता जा रहा है।

यु क ली समितियाँ निष्क्रियता और औपचारिकतावाद की किसी भी प्रकार की अभिव्यक्तियों को अधिक मजबूती से नष्ट कर देंगी, प्रत्येक यु क ली संगठन में एक सजीव व रचनात्मक वातावरण बनाएँगी, युवाओं के जीवन के हर पहलू के नजदीक जाने का प्रयास करेंगी, हमारी नैतिकता के उल्लंघनों के विरुद्ध संघर्ष तीव्र करेंगी, पड़ोसियों व युवा छात्रावासों में कार्य पर अधिक ध्यान देंगी"कम्यु- निस्ट पार्टी के जुझारू आरक्षित शक्ति व एक वास्तविक सहायक के रूप में अपनी सम्मानपूर्ण भूमिका का निर्वाह लेनिन यु क ली अधिक ज़िम्मेदारी के साथ करती रहेगी।

विकसित समाजवाद को समूची राजनीतिक प्रणाली के समान, लेनिनवादी कोम्सोमोल भी विकास की उच्च श्रेणी तक पहुँच गया है। अपने आकार में और कार्य करने की अपनी प्रकृति मे दोनों में यह एक वास्तविक जन युवा संगठन बन चुका है। जबकि दूसरे दशक के आरंभ में समस्त युवजनों का लगभग दो प्रतिशत भाग यु क ली का सदस्य था, आठवें दशक के आरंभ में इसकी सदस्यता 4 करोड़ से अधिक हो चली है अर्थात् समूची युवा पीढ़ी के आधे से भी अधिक। प्रति वर्ष 45 से 50 लाख नौजवान यु क ली में भर्ती होते हैं।

यु क ली की सामाजिक रचना बदल चुकी है; अब यह युवा-पीढ़ी की सभी सामाजिक श्रेणियों व समूहों का एक संगठन है। सन् 1959 में इसमें 51 लाख युवा श्रमिक थे, और 1982 में 1 करोड़ 40 लाख से ज्यादा सदस्य हैं—यानी कोम्सोमोल की समस्त सदस्यता का क़रीबन 35 प्रतिशत। कोम्सोमोल में 40 लाख से अधिक इंजीनियर व टैक्नीशियन, लगभग 300,000 कृषि विशेषज्ञ, शिक्षकों, कृषि-वैज्ञानिकों और पशुधन विशेषज्ञों की कुल संख्या का 20 प्रतिशत भाग और समस्त चिकित्सकों का 17 प्रतिशत भाग है। कोम्सोमोल की सदस्यता का दो-तिहाई भाग उच्चतर या माध्यमिक शिक्षा प्राप्त है।

यु क ली में वैचारिक, राजनीतिक, श्रम व नैतिक शिक्षा ग्रहण करने

युवजनों का पार्टी में प्रवेश निरंतर बढ़ता जा रहा है। 1966 और 1971 के मध्य यु क ली के 1,350,000 सदस्यों ने पार्टी में प्रवेश लिया, अर्थात् इस आबादी के नए सदस्यों के 45 प्रतिशत लोगों ने। 1976 तक पार्टी में शामिल होने वालो मे अधिकांश यु क ली के सदस्य थे, जबकि 1976 और 1981 मध्य पार्टी के नए सदस्यों में 75 प्रतिशत यु क ली के थे। 1981 के आरम्भ मे कम्युनिस्ट पार्टी के 14 लाख से अधिक युवा सदस्य यु क ली में सक्रिय थे, जो 1975 की अपेक्षा 465,000 अधिक थे (1966 में तो केवल 268,000 कम्युनिस्ट थे)। कम्युनिस्ट पार्टी के इन सदस्यो ने यु क ली को उच्चस्तरीय विचारधारा व संगठन, सुस्पष्टता व उत्तरदायित्व प्रदान किया।

निम्नलिखित आँकड़े भी इसी प्रकार की सूचना प्रदान करते हैं: 1 जनवरी, 1981 में कम्युनिस्ट पार्टी के 30 लाख से अधिक सदस्य 30 वर्ष की उम्र से कम थे (पार्टी की सदस्यता का 17 6 प्रतिशत), जबकि 25 वर्ष की आयु से कम सदस्य (1973 मे 83,4000 की तुलना मे) 1,130,000 थे।

यु क ली के सदस्य राजकीय व सार्वजनिक संगठनों के कार्य मे सक्रियता से लगे हुए हैं; वे उद्योगो, सामूहिक व राजकीय कृषि-फार्मों, और वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं में शीर्षस्थ स्थानों पर हैं। यह युवजनों को जिम्मेदार अधिकारी होने, राज्य व राष्ट्रव्यापी स्तर पर चिन्तन करने को सिखाता है। सो सं क पा की केंद्रीय समिति के निर्णयानुसार जन-प्रतिनिधियो[1] की सोवियतों, मत्रालयो व विभागों, स्थानीय राज्य सस्थानो, ट्रेड यूनियनों और अन्य सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को युवाओं के विकास, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, काम करने व रहने की परिस्थितियो, विश्राम व मनोरंजन के प्रश्नो को अपने हाथो मे लेना चाहिए; इस सबध मे यु क ली की समितियों को भागीदार होना चाहिए, तथा उनकी राय और नेतृत्व पर भी विचारना चाहिए। 1977 मे ट्रेड यूनियन की कार्यकारिणी समितियो मे 800,000 युवजन निर्वाचित हुए। 1980 मे स्थानीय सोवियतो मे चुने गए 757,700 व्यक्ति 30 वर्ष से कम उम्र के थे, और जन-प्रतिनिधियो की सम्पूर्ण सख्या के 33 3 प्रतिशत थे।

उच्चतर और माध्यमिक विशिष्ट शिक्षा के मत्रालय, संस्कृति मत्रालय, शिक्षा मत्रालय, रेडियो और टेलीविजन प्रसारण की राज्य समिति, पार्टी और राज्य नियत्रण के लिए गठित समिति और ट्रेड यूनियनों की अखिल-संघ केंद्रीय परिषद (ए यू सी सी टू यू) जैसी युवाओं की शिक्षा के लिए जिम्मेदार विभिन्न मंत्रालयों

1. पीपुल्स डिपुटीज की सोवियतें—सोवियत सघ मे वैधानिक अधिकार प्राप्त संस्थाएँ जिनके माध्यम से श्रमिकों की राजनीतिक शक्ति को क्रियान्वित किया जाता है।

के बोर्ड में भी ये यु क सी (ऑल लेनिनिस्ट युवा कम्युनिस्ट लीग) की केंद्रीय समिति के प्रतिनिधि बैठते हैं। कोम्सोमोल का प्रथम सचिव पार्टी की केंद्रीय समिति और सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत के प्रेसीडियम का एक सदस्य होता है। इन सभी संस्थाओं में युवाओं के प्रतिनिधि युवकों व युवतियों के श्रम, विश्राम, मनोरंजन और अध्ययनों से संबद्ध प्रश्नों को उठाते हैं।

सोवियत संघ की सुप्रीम सोवियत[1] की, संघ व स्वायत्त गणतंत्रों की सुप्रीम सोवियत की और जन-प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतों की युवाओं के मामलों पर स्थायी जन-प्रतिनिधि आयोगों के साथ-साथ युवा लोगों के मध्य कार्य करने के लिए ट्रेड यूनियन समितियों, लेखकों, पत्रकारों, कलाकारों और संगीतकारों के संघों का और तर्कशील व अनुसंधानकर्ताओं के समाज का युवा तबका उदीयमान पीढ़ी के हितों और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

2. वैचारिक और राजनीतिक शिक्षा

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सामूहिक स्तर पर आत्मीकरण सोवियत युवजनों की सामाजिक चेतना के विकास का एक अति महत्वपूर्ण लक्षण, और यु क सी के प्रत्येक सदस्य की एक आन्तरिक आवश्यकता बन चुका है।

वैज्ञानिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व-दृष्टिकोण न सिर्फ़ शास्त्रीय ज्ञान प्राप्ति के सम्पूर्ण योग बल्कि रचनात्मक रूप में चिंतन करने की क्षमता का अनुमान करता है; यह युवाओं को वैज्ञानिक संज्ञान की पद्धति से लैस करता है। इसे प्राप्त करने हेतु यु क सी युवाओं के मध्य वैचारिक व शैक्षणिक कार्य के स्वरूपों व पद्धतियों को पूर्ण करने, कार्य के नवीन स्वरूपों की रचनात्मक रूप के खोज करने का प्रयत्न करती है, जो मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत और उनकी श्रम-सम्बन्धी गतिविधि के विस्तार को एकमात्र प्रक्रिया में संयुक्त कर मिला देगी। जैसा प्रमुख सोवियत राजनीतिक विभूति मिखाइल सुस्लोव ने कहा वैचारिक व शैक्षणिक कार्य व्यावहारिक रूप में किस प्रकार किया जाय, वैचारिक गतिविधियों को कैसे समन्वय किया जाए ये प्रश्न आजकल विशेष रूप में महत्वपूर्ण बन रहे हैं। अपने वैचारिक प्रभाव के साथ हमें समस्त जन-समूह को आत्मसात करना चाहिए, साथ ही व्यक्ति रूप में प्रत्येक व्यक्ति के पास पहुँचना चाहिए। और इसकी माँग है वैचारिक व शैक्षणिक प्रभाव के समस्त साधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग। आमतौर पर सफलता वहीं प्राप्त होती है जहाँ पार्टी, श्रम यूनियन व यु क सी संगठन,

---

1. सुप्रीम सोवियत—सोवियत संघ में विधि-निर्माण करने वाला सर्वोच्च संस्थान।

श्रमिक समुदाय, परिवार व स्कूल, प्रबंध और सामान्य सार्वजनिक कार्य में तालमेल होता है, जहाँ काम-काज मे, अध्ययन मे और प्रतिदिन जीवन में ठोस गतिविधि मे वैचारिक लक्ष्य उद्देश्यपूर्वक प्राप्त किए जाते हैं।

सोवियत संघ के यु क ली संगठनों का ध्यान राजनीतिक शिक्षा की प्रणाली को पूर्णता प्रदान करने में केन्द्रित है। देश में यु क ली को लेनिनवादी पाठ सिखाए जाते हैं जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल-ग्रंथों के सामूहिक अध्ययन के साथ विशिष्ट श्रमिक समुदायों के समक्ष आने वाली परिस्थिति के एक विश्लेषण के योग्य बनाते हैं। ये पाठ इस प्रकार के हैं: 'किस प्रकार से क्रांति को निरंतर किया जा सकता है?'; 'क्रांतिकारी को आज क्या होना चाहिए?'; 'जैसे लेनिन ने क्रिया और संघर्ष किया वैसे ही जीना व सघर्ष करना इसका क्या आशय है?'; 'पार्टी हमारे युग की बुद्धि, सम्मान व चेतना है।'

1969-1970 में, व्लादिमिर लेनिन की जन्म-शताब्दी के सम्मान मे देश की यु क ली के सदस्यों के मध्य अखिल-संघीय मूल्यांकन किया गया। यु क ली के प्रत्येक सदस्य ने अपने श्रम की उपलब्धियों, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत पर अपने ज्ञान, किस प्रकार उन्होंने सामान्य शैक्षणिक व सांस्कृतिक स्तर को उठाया और सार्वजनिक जीवन में उनकी विशिष्ट, ठोस भागीदारी की रिपोर्ट पेश की। मूल्यांकन का कार्य जिसे यु क ली के सदस्यों ने किया था या जिस पर अध्ययन किया था, सामूहिक था। पार्टी व कोम्सोमोल के जीवन में अति महत्त्वपूर्ण घटनाओं को समर्पित ये मूल्यांकन नियमित रूप से किए गये। युवजनों मे सामाजिक हितों के निर्माण मे लेनिनवादी पाठ व मूल्यांकन एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, वे समुदाय को शिक्षण की एक अधिक भूमिका प्रदान करते हैं तथा प्रत्येक कोम्सोमोल सदस्य की गतिविधि और कोम्सोमोल संगठन के कार्य का समूचा मूल्यांकन करने मे मदद करते हैं।

राजनीतिक शिक्षा को संगठित करने में पार्टी के सगठन कोम्सोमोल की सहायता करते हैं। वे मूल्यांकनों को सगठित व संचालित करने में सीधे सम्बद्ध हैं: वे पार्टी समितियों व ब्यूरो के प्रमुख सदस्यों के नेतृत्व मे मूल्यांकन समितियों की स्थापना करते हैं और वक्ताओं, प्रचारकों व सलाहकारों के दलों को चुनने में सहायता करते हैं। आर्थिक विषयों के अध्ययनों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

कोम्सोमोल संगठन राजनीतिक अध्ययनों को अधिक अनौपचारिक, स्पष्ट व विश्वसनीय बनाने तथा अध्ययनों का सचालन करने वालों व अध्ययन करने वालों के मध्य सम्पर्क को अधिक बढ़ावा देने का प्रयत्न करते हैं।

कोम्सोमोल द्वारा राजनीतिक अध्ययनों को पूर्णता प्रदान करने के साथ-साथ लेनिन युवा कम्युनिस्ट लीग के अखिल सघ की वैचारिक गतिविधि का अन्य प्रमुख तत्त्व, प्रचार व आंदोलन, निरंतर महत्त्वपूर्ण बनता जा रहा है। सिनेमा की

सहायता से भाषण, मौखिक पत्रिकाएँ, वाद-विवाद, गोल मेज विचार-विमर्श तथा प्रश्नोत्तर-सध्याएँ जैसे प्रचार के स्वरूप व्यापक हो रहे हैं। अनेक जन विश्वविद्यालयों[1] में युवाओं के विभाग खुल गए हैं।

वैचारिक कार्य में युवजनों का मनोरंजन, रचनात्मक योग्यताओं व प्रतिभाओं को उभारना व प्रोत्साहित करना एक विशिष्ट स्थान रखता है। यु क लो की केन्द्रीय समिति के प्रस्ताव पर कोम्सोमोल, सोवियतों, ट्रेड यूनियनों, खेलकूद संस्थानों और सांस्कृतिक व प्रबोधक संस्थाओं के प्रतिनिधि युवजनों के स्वतंत्र समय के उपयोग हेतु जिला व नगर मुख्यालयों की स्थापना के लिए परस्पर एकत्रित हुए हैं। वे पड़ोस के युवाओं के साथ कार्य करते हैं और उनके पास आर्थिक साधन व कार्य-क्षेत्र हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय कोम्सोमोल संगठन भवन-निर्माण कार्य में, सार्वजनिक सुविधाओं को सुधारने में, ग्रामीण क्लबों और पुस्तकालयों को कलात्मक रूप में सजाने मे भाग लेते हैं तथा सांस्कृतिक व प्रबोधक कार्य मे विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के प्रश्नों से वे सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं।

पार्टी व कोम्सोमोल युवा पीढ़ी को समाजवाद की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक उपलब्धियों को सुरक्षित रखने और कई गुणा विकसित करने के लिए जिम्मेदारी महसूस करने की शिक्षा देने का प्रयास करती हैं। जीवन की विरोधी घटनाओं, जिनसे उन्हें कभी मुकाबला करना पड़ेगा, से सही निष्कर्ष कैसे निकाला जाए इसे भी वे युवजनों को सिखाने का प्रयास करते हैं। जब इस तरह की क्षमता नही होती है तब युवाओं का एक विशेष तबका सामाजिक रूप में उदासीन, निष्क्रिय और कभी-कभी विरोधी वैचारिक प्रभावों से प्रभावित होने लायक हो सकता है। जो इस प्रकार की मनोदशाओं के शिकार हो सकते हैं उनके साथ पार्टी व कोम्सोमोल संगठन सक्रिय रूप में कार्य करते हैं, और उन्हें सार्वजनिक व राजनीतिक जीवन में संलग्न कराते हैं। युवा व्यक्ति के चरित्र-निर्माण मे औद्योगिक व सार्वजनिक समुदायों को अधिक प्रभावशाली बनाने में यहाँ अधिक ध्यान दिया जाता है।

ऐसा इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि आज के युवजनों ने समाजवाद के निर्माण की प्रथम अवस्थाओं के दौरान अभावों का अनुभव नहीं किया है, वे युद्ध के कठिन वर्षों के दौरान या युद्धोपरान्त कठिनाइयों से नहीं गुजरे हैं। सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस में लियोनिद ब्रेझनेव ने कहा था—"यह कोई गुप्त बात नहीं है कि कुछ शिक्षित और सुविज्ञ युवजन राजनीतिक रूप मे भोले हैं और कार्य के प्रति

---

1. जन-विश्वविद्यालय—सोवियत संघ में सार्वजनिक अध्ययन के संगठन जो जनता को उनकी व्यावसायिक कुशलता को सुधारने मे सहायता करते हैं तथा स्व-शिक्षण के लिए अग्रसर जनों को साधन प्रदान करते हैं।

अधूरी ज़िम्मेदारी के साथ उनका व्यवसायिक प्रशिक्षण होता है···

"निष्कर्षतः शैक्षणिक कार्य पर अधिक जोर देना चाहिए। मेरा आशय श्र प्रशिक्षण, नैतिक उन्नयन और वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा से है···

"साथियो, यह सब कुछ कम्युनिस्टों, हम पर निर्भर करता है। हमारे प्र अनुभव है, और हमारी आस्था कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद सही है, दशकों र परीक्षा मे खरी उतरी है। युवजनों को यह सम्पत्ति हस्तांतरित करनी चाहि इसी मे यह गारंटी निहित है कि कम्युनिज्म के झंडे को सोवियत युवजन स ऊपर उठा रखेंगे।"[1]

क्योंकि अकसर युवजनों के पास अधिक मात्रा मे सामाजिक अनुभव नही होता है, वे जीवन की प्रक्रियाओं व घटनाओं का बोध सिर्फ अपने मस्तिष्क मे संचित नैतिक आदर्शों के दृष्टिकोण से करते हैं। और यह पाया जाता है कि जीवन की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ इन आदर्शों के अनुकूल नही हैं। प्रगतिशील वर्गों के विकसित सामाजिक आदर्शों को वास्तविकता के एक 'अवरोधक' प्रतिबिम्ब के समान प्रस्तुत किए जाते हैं। वे जनता के चिंतन व व्यावहारिक गतिविधि को उत्प्रेरित करते हैं तथा अपने सामाजिक वातावरण को बदलने के लिए उन्हें उन्मुख करते हैं।

परन्तु पर्याप्त सामाजिक अनुभव के अभाव मे, युवजनों का चरित्रगत लक्षण जैसे, सब कुछ या कुछ नही का उनका दृष्टिकोण और भावुकता से भरा अति, उच्च नैतिक गुण जैसे सैद्धांतिक प्रतिबद्धता, बुराई को नकारना, तथा आलोचना व आत्मालोचना अति विस्तृत हो सकते हैं और उनके कुछ भाग को सर्वखण्डनवाद (निहिलिज्म) की ओर ले जा सकते हैं। प्रायः आदर्श और यथार्थ के मध्य की असंगति के प्रति विकासोन्मुख व्यक्तित्व की पहली प्रतिक्रिया उस रचनात्मक आलोचना के रूप मे नही होती है जो उस असंगति पर विजय पाने का रास्ता बतलाए, बल्कि ऐसी आलोचना मे होती है, जो 'सामान्य रूप में' गहन चिंतन योग्य हैं, ऐसे दृष्टिकोण से होती है जिसे एक तटस्थ पर्यवेक्षक का दृष्टिकोण कहा जा सकता है।

युवजनों में इस प्रकार की प्रवृत्ति का दिखना अकसर शैक्षणिक प्रक्रिया मे गलत धारणाओं के साथ सम्बन्धित है। परन्तु बुनियादी तौर पर इसका निर्धारण एक ओर तो कुछ सामाजिक आदर्शों की सैद्धान्तिक व भावात्मक समझ मे वस्तुगत कठिनाइयों, जीवन की वस्तुगत समझ और दूसरी ओर जीवन मे इन्हें व्यवहार मे बदलने द्वारा होता है। ये कठिनाइयाँ युवजनों की चेतना के विकास में आती हैं और

---

1. डॉक्यूमेंट्स एण्ड रिजोल्यूशंस, द 26वं कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 87

इसका समाधान अधिकतर नहीं निकला, युवजनों को क्रांतिकारी, श्रमिक, जुझारू व अंतर्राष्ट्रवादी परम्परा में शिक्षित करने पर निर्भर करता है। शैक्षणिक प्रक्रिया में, जो कुछ भी उपलब्ध हुआ है उसका आदर्शीकरण, तथा विद्यमान परिस्थिति के अनुकूल इन आदर्शों को अत्यधिक निम्न स्तर तक लाना, इन दोनों की अवहेलना करनी चाहिए क्योंकि ये युवजनों को साहसी, रचनात्मक चिंतन व व्यावहारिक गतिविधि को विकसित करने योग्य नहीं बनाते हैं।

यह आकस्मिक नहीं है कि बुर्जुआ विचारधारा युवाओं के आदर्शवाद और यथार्थ के प्रति उनका सब कुछ—या—कुछ नहीं वाले दृष्टिकोण का फायदा उठाने की कोशिश में आवश्यक एक तकनीक का उपयोग कर रही है। यह तकनीक समाजवादी समाज के विकास में आदर्श व यथार्थ के मध्य विद्यमान वास्तविक द्वंद्वात्मक सह-सम्बन्ध का उपयोग नहीं करती है बल्कि उनके आध्यात्मिक विरोध का अमूर्तिकरण करती है ताकि वास्तविक समाजवाद के आकर्षण को कम करना—इस एकमात्र सत्य को वस्तुगत रूप में पा सके। सामाजिक आदर्शों व ऐतिहासिक यथार्थ के मध्य सम्बन्ध की सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी व्याख्या कम्युनिस्ट विरोधी विचारों के वास्तविक खण्डन का आधार है।

उधर, युवाओं की क्रांतिकारी, श्रमिक, जुझारू व अंतर्राष्ट्रवादी परम्परा में निरंतर शिक्षा न सिर्फ पीढ़ियों की निरंतरता को सुनिश्चित करने के अत्यन्त व्यावहारिक महत्त्व की बन रही है बल्कि कम्युनिज्म के विरुद्ध वैचारिक संघर्ष में युवाओं को अपने पक्ष में लेने के लिए एक महत्वपूर्ण हथियार भी है।

अतः सोवियत युवजनों की राजनीतिक संस्कृति का तात्पर्य है राजनीतिक ज्ञान की समूची प्रणाली पर उनका अधिकार, समाजवादी समाज के नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों, बेहतर व्यक्ति बनने की, स्वयं शिक्षित होने की, अपनी नैतिक छवि को पूर्णता करने की कम्युनिस्ट दृष्टिकोण का आत्मीकरण और बुर्जुआ विचारधारा की समस्त अभिव्यक्तियों के विरुद्ध निरंतर संघर्ष।

3. कम्युनिज्म के निर्माण में शिक्षा

शिक्षा के स्तर का उन्नयन

शिक्षा व संस्कृति का उच्चतर स्तर युवजनों द्वारा महत्तर सामाजिक गतिविधि के लिए एक आवश्यक शर्त है, और कम्युनिस्ट शिक्षा का एक महत्वपूर्ण रूप है।

स्कूली कोम्सोमोल संगठन छात्रों को ज्ञान की खोज करने, परिश्रमी होने, क्रांतिकारी आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध होने तथा जो करना है उसमें अडिग होने की शिक्षा देते हैं। अधिकाधिक स्कूली वैज्ञानिक समितियाँ हैं, रचनात्मक तकनीक में

छात्रों की भागीदारी बढ़ रही है, और स्कूल, उद्योग तथा सामूहिक कृषि फ़ार्म के मध्य सम्पर्क अधिक मजबूत होते जा रहे हैं।

समाजशास्त्रीय अध्ययन यह दर्शाते हैं कि बड़ी कक्षा का विशाल बहुमत प्रमुख रूप से यह सोचता है कि वे किस प्रकार जनता के लिए उपयोगी हो सकते हैं, अर्थात् जीवन में अपने उद्देश्य के रूप में वे जो सोचते हैं उसके पीछे सुपरिभाषित सामाजिक दबाव है। 'यदि तुम सब कुछ कर सकते हो तब तुम क्या करोगे?' इस विषय पर निबंध में पढ़ाई पूरी करके जाने वाले छात्रों ने लिखा कि वे विश्व शांति को स्थापित करेंगे; युद्ध और शारीरिक व नैतिक दोनों रोगों का अन्त करेंगे तथा अपने देश के लिए जो मर मिटे उन्हें वापस जीवित कर देंगे। वैज्ञानिक खोजों, अंतरिक्ष उड़ानों, अपने क्षितिजों को विस्तृत करने तथा अधिक ज्ञान प्राप्त करने का स्वप्न भी वे देखते हैं। उनकी व्यक्तिगत इच्छाएँ आम तौर पर तीसरी श्रेणी में आती हैं।

सोवियत संघ में अनिवार्य सामान्य माध्यमिक शिक्षा लागू की गई है। फिर भी, शिक्षा के जटिल दृष्टिकोण ने शिक्षा प्रणाली की माँगों को अधिक कठोर बना दिया है।

सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस (1981) में यह निर्देशित किया गया कि, "आज मुख्य बात शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाना तथा स्कूलों में कार्योन्मुखता व नैतिक विकास लाना है, शिक्षकों व शिष्यों के कार्य के परिणामों के मूल्यांकन के परम्परा को हटाना, व्यावहारिक शर्तों में शिक्षा के साथ जीवन के सम्पर्क को मजबूत करना और सामाजिक रूप में उपयोगी कार्य करने के लिए स्कूली बच्चों को तैयार करना है।"[1]

इस सम्बन्ध में, श्रमिकों की नई पीढ़ी के निर्माण का प्रश्न महत्त्वपूर्ण बन चुका है, और यह युवजनों व उनकी व्यवसायिक उन्मुखता से सीधे सम्बद्ध है। किसी व्यापार या व्यवसाय का चुनाव सिर्फ़ व्यक्तिगत रुचि द्वारा बल्कि सामाजिक माँगों, आर्थिक उन्नति की आवश्यकताओं द्वारा निर्धारित होता है। इसलिए आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, स्कूली छात्रों के लिए सही व्यवसायिक निर्देशन होना चाहिए, और युवजनों को अच्छे श्रमिक बनाने हेतु प्रशिक्षित करना चाहिए।

यह स्कूलों के पाठ्यक्रम को पूर्णता प्रदान करके, शिक्षा में पोली-टैक्नीशियनों को बढ़ाकर तथा इसे उत्पादक श्रम के साथ सम्बद्ध करके तथा व्यवसायिक व तकनीकी स्कूलों की संख्या को तेजी से बढ़ाकर, जो माध्यमिक शिक्षा व व्यवसाय

1. डॉक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशन्स, द 26th कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 78

में प्रशिक्षण दोनों देते हैं, प्राप्त किया जा रहा है। जहाँ छठे दशक में सभी लड़के व लड़कियों का सिर्फ एक-तिहाई भाग व्यवसायिक व तकनीकी शिक्षा प्रणाली मे एक व्यवसाय सीखते थे, 1976 और 1981 के मध्य यह संख्या 1 करोड़ 25 लाख, अर्थात कारखानों मे कार्य शुरू कर रहे सभी युवाओं का दो-तिहाई भाग, पहुँच गई।[1]

यह एक नियोजित समाजवादी अर्थव्यवस्था में व्यवसायिक उन्मुखता की समस्या कितनी जटिल है, इसको स्पष्ट करता है। कम्युनिस्ट शिक्षा का आशय है सार्वजनिक शिक्षा व व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रणाली की निरंतर पूर्णता। वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति के अन्तर्गत, जो श्रम की प्रकृति को परिवर्तित कर रहा है और परिणामतः, कार्य हेतु मनुष्य के प्रशिक्षण को भी बदल रहा है, आजकल यह विशेषकर महत्त्वपूर्ण है।

यहाँ एक अन्य सामाजिक स्वरूप—नैतिक स्वरूप—भी है। यह युवजनों की सामाजिक उन्मुखता के अत्यन्त प्रमुख कार्यों मे एक से सम्बद्ध है—यथा, व्यक्तिगत हितों और समाज के हितों की एकता को सुनिश्चित करने के लिए आधार के रूप मे व्यवसाय के चुनाव के साथ नैतिकता के चुनाव का मेल। जीवन मे अपने व्यक्तिगत योजनाओ, अपने हितों तथा अपनी ठोस गतिविधि को सामूहिक व समाज के हितों के साथ मेल कराने की क्षमता सामाजिक परिपक्वता का प्रमुख संकेत है।

उच्चतर व माध्यमिक विशेषीकृत शिक्षा की सोवियत प्रणाली की सफलताएँ प्रभावशाली हैं। 1976 व 1981 के मध्य 1 करोड़ प्रमाणपत्रित विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया गया। पार्टी ने शिक्षण की गुणात्मकता को सुधारने, उत्पादन के साथ सम्बन्ध को मजबूत करने, उच्चतर स्कूल की वैज्ञानिक क्षमता का अधिक उपयोग करने और विशेषज्ञों के प्रशिक्षण की योजना बनाने की प्रणाली को सुधारने का भी प्रस्ताव दिया है।

माना कि उच्चतर शिक्षा के लिए समान अवसर, जिसमें संस्कृति व शैक्षणिक ज्ञान का सामान्य स्तर आते हैं, ग्रामीण युवाओं के मुकाबले शहरी युवाओ के लिए ज्यादा है, जबकि स्वयं नगरों में बुद्धिजीवी परिवारों के बच्चों के पास अधिक अवसर हैं। यदि इस प्रक्रिया को ऐसे ही रहने दिया जाय, तब अन्ततः अत्यधिक उच्च योग्यता प्राप्त कैडर एक ही सामाजिक समूह से आएँगे। इसे हटाने के लिए, युवा श्रमिकों के लिए उच्चतर स्कूलों मे तैयारी विभागों की स्थापना की गई है। पहले से किसी उद्योग या कृषि मे कार्य कर चुके लोगों को उच्चतर स्कूलों मे प्रवेश

---

1. डॉक्यूमेन्टस् एण्ड रिजोल्यूशंस व 26वा कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 68

में प्राथमिकता प्रदान की गई। युवा श्रमिक और कृषक कारखानों या फ़ार्मों द्वारा किसी विशेष विषय में विशेषज्ञ बनने के लिए अध्ययन हेतु भेजे जा रहे हैं। बड़े उद्योगों में उच्चतर स्कूलों की शाखाएं खोली गई हैं। छात्रों की भौतिक, आवास सम्बन्धी व रहन-सहन की परिस्थितियों को सुधारा जा रहा है। इन सभी उपायों का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक तबकों के युवाओं को परस्पर अधिक निकट लाना, महज़ औपचारिकतावश नहीं बल्कि वास्तविक समानता के आधार पर सभी वर्गों व सामाजिक समूहों की जनता की उच्च शिक्षा मे पहुँच को सुनिश्चित करना है।

श्रम-शिक्षा

सो स क पा की 26वीं कांग्रेस के अतिथियों में एक, बुरुण्डी गणतंत्र के क्रांतिकारी युवा संगठन के महासचिव इसिडोर हकीज़िमाना से सोवियत रेडियो ने यह प्रश्न पूछा—"सो स क पा के अनुभव, सोवियत संघ के ऐतिहासिक अनुभव के कौन से रूप आपके देश के लिए अत्यधिक रुचि के हैं?" उनका उत्तर था: "हम आपके अनुभव से बहुत कुछ प्राप्त कर सकते हैं'''परन्तु सबसे अधिक महत्त्व का अनुभव वह है जो आपने शिक्षा में किया है, ऐसी जनता का निर्माण करना जो श्रम पर सहजता से चिंतन करती है, जो देश के समस्त समस्याओं को सुलझाने में श्रम को एक साधन के रूप में देखती हैं। हमारी पार्टी के लिए जिसे श्रमिक वर्ग का समर्थन प्राप्त है, यह अत्यधिक महत्त्व का है। और यहाँ सो सं क पा के अनुभव अत्यन्त रुचिकर हैं।"

सो स क पा की 26वीं कांग्रेस ने श्रमिक लोगों के समाज के रूप में सोवियत समाज का चरित्रांकन किया है, जिसमे मानव श्रम को अधिक उत्पादक व अधिक चुनौती भरा, रुचिकर व रचनात्मक बनाने के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। व्यापक ज्ञान व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की माँग करने वाले व्यवसायों की संख्या, विशेषकर ऐसे अस्तित्व जिनमें युवजन प्रवेश ले रहे हैं, बढ़ती जा रही है।

कम्युनिस्ट पार्टी युवजनो, जिन्होंने हाल ही में काम शुरू किया है, के औद्योगिक प्रशिक्षण हेतु कोम्सोमोल संगठनों को अधिक जिम्मेदार बनाने के लिए प्रति सदैव चिंतित रहती है, ताकि वे अपने व्यवसाय पर पूर्ण अधिकार रख सकें, तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा प्रगतिशील कार्य-पद्धतियों का उपयोग कर सकें। उद्योगों में अनुभवी लोगों की परिषदें तथा युवा श्रमिकों के क्लब हैं। जब कोई युवा व्यक्ति किसी कारखाने में काम शुरू करता है तब श्रमिक वर्ग की कतारों में उसे दीक्षित करने के लिए एक समारोह होता है। उत्पादन श्रेणी प्रदान करते समय इसी के समान एक प्रभावशाली समारोह होता है जिसमे युवा व्यक्ति समुदाय के समक्ष यह वायदा करता है कि वह 'श्रमिक के सम्मान के नियमों' के अनुरूप जिन्दगी गुज़ारेगा।

अनेक कारखानों में सर्वश्रेष्ठ व सर्वाधिक अनुभवी-सेवाओं वाले श्रमिकों, दलों, ट्रेड यूनियन व कोम्सोमोल के सदस्यों तथा प्रबन्धक के प्रतिनिधियों से मिलकर सार्वजनिक कैडर विभाग होते हैं, जो नवागंतुकों को उनके भावी कार्य की, उद्योग की परम्पराओं को तथा श्रमिक समुदायों के अधिकारों व दायित्वों को विस्तारपूर्वक समझाते हैं, कुशलताओं व शिक्षा को सुधारने तथा भाड़े में कार्य करने व बस्तियों से सम्बन्धित प्रश्नों में भी श्रमिकों की मदद करते हैं।

सो स क पा की केन्द्रीय समिति द्वारा समर्थित कोम्सोमोल केन्द्रीय समिति ने अध्यापन कार्य की उन्नति हेतु काफी अधिक संगठनात्मक कार्य किया है। इसका उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी के साथ एक अनुभवी शिक्षक प्रदान करना, जिनमें सबसे श्रेष्ठ को 'अधिकारी-शिक्षक' कहा जाता है।

मैग्निटोगोर्स्क में लेनिन धातुकर्मी संस्थान इस बात का बहुत अच्छा उदाहरण है कि यह किस प्रकार किया जा रहा है। इसमें युवा श्रमिकों को मदद देने वाले कुल 2,700 शिक्षक हैं। प्रत्येक दुकानों में युवाओं के साथ काम करने के लिए डिप्टी शॉप फोरमैन का एक असाधारण पद है। इस अवैतनिक स्वयंसेवी कार्य का नेतृत्व कम्युनिस्टों के हाथ में है, जो उच्चतम योग्यता के हैं तथा जिनके पास जीवन का पर्याप्त अनुभव है। सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस में बोलते हुए मैग्निटोगोर्स्क संस्थान के वरिष्ठ फर्नेसमैन वी॰ डी॰ नौम्किन ने बतलाया कि: "अपने स्वयं के अनुभव तथा अपने सहयोगी-श्रमिकों के अनुभव से मैं युवा श्रमिक को शिक्षित करने से प्राप्त परिणामों को देखता हूँ, जब न सिर्फ व्यवसाय की बारीकियों को बतलाया जाता है बल्कि जब युवा श्रमिक को कम्युनिस्ट आस्था, अपने श्रम के प्रति प्रेम और उत्पादन के लिए वह उत्तरदायी है इस भावना का उदाहरण स्वयं शिक्षक पेश करता है।"

पार्टी ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर रही है ताकि युवजन उत्पादन के प्रबन्ध में भाग ले सकें। कोम्सोमोल के प्रतिनिधि उन समितियों में बैठते हैं जो युवाओं के श्रम, शिक्षा तथा प्रतिदिन के जीवन की समस्याओं पर निर्णय लेती हैं। अपनी उद्योगों व उद्यमों में, जहाँ युवाओं की शक्ति व उत्साह विशेष रूप में महत्वपूर्ण होते हैं, युवा एक उत्पादन समुदाय है। युवा दलों, शिफ्टों और उपविभागों का अनुसरण करते हुए, बड़े कोम्सोमोल युवा उपविभाग (बोर्ड तथा मिश्रण) बन रहे हैं।

पार्टी व कोम्सोमोल संगठन समाजवादी प्रतियोगिता आंदोलन और श्रम के प्रति कम्युनिस्ट दृष्टिकोण के लिए आंदोलन को प्रेरित करने हेतु काफी अधिक ध्यान दे रहे हैं। युवजनों के मध्य समाजवादी प्रतियोगिता रचनात्मक नेतृत्व को उभारने व प्रेरित करने का एक तरीक़ा है। यह उन्नत उत्पादन परिणामों, समाजवादी उत्पादन के सम्बन्धों को पूर्णता प्रदान करने तथा युवजनों के सांस्कृतिक

स्तर को उठाने के लिए किये गए वायदों को पूरा करने के उद्यम में व्यक्त होता है। प्रतियोगिता अभियान प्रत्येक युवा को शक्ति, रचनात्मक योग्यता तथा वीर्य के सर्वोत्तम परिणामो को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। [16]

युवा श्रमिको के मध्य समाजवादी प्रतियोगिता के अनेक रूप हैं: सर्वोत्तम श्रमिक के नामांकन हेतु, श्रम-उत्पादकता को बढ़ाने के लिए, अनेक व्यवसायों पर अधिकार प्राप्त करने हेतु, और कुशलता को निखारने हेतु प्रतियोगिताएँ। समाजवादी प्रतियोगिताओ के अभियान युवा श्रमिको को नये अनुभव प्राप्त करने मे मदद देते हैं और वे एक देशभक्तिपूर्ण उद्यमो—यथा, तैयार किये गए उत्पादों की गुणात्मकता को सुधारना, नई तकनीक पर अधिकार करना, और प्रत्येक सामूहिक मे एक विशाल रचनात्मक उद्यम का एक वातावरण निर्मित करना, और औद्योगिक व वैज्ञानिक रूढ़िवाद को नामजूर करना—के आरम्भ करने वालो के समान दिखाई देते हैं। समाजवादी प्रतियोगिता इन नारो के अन्तर्गत विकसित हो रही है: 'अधिक, उन्नत तथा कम दाम के उत्पादो को उत्पादित करना !' 'पंच-वर्षीय योजना के लिए—युवाओं द्वारा अतिरिक्त प्रयत्न, कौशल व अनुसंधान !' 'प्रभावोत्पादकता और गुण के लिए पचवर्षीय योजना—युवाओं द्वारा उत्साह व रचनात्मक उद्यम !' 'तुम्हारे निकट कोई भी श्रमिक पिछड़ नही रहा है।' इत्यादि। दसवीं पंच-वर्षीय योजना के काल (1976-1981) के दौरान कोम्सोमोल ने स्वय को इसका हरावल दस्ता घोषित किया है।

समाजवादी श्रम अनुशासन को मजबूत करना श्रम शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। प्रत्येक स्थान पर श्रमिको के सम्मान से सम्बन्धित न्यायालय स्थापित हुए हैं; कोम्सोमोल की बैठको में श्रम-अनुशासन के प्रश्नो पर विचार-विमर्श होता है।

समाजवादी प्रतियोगिता को वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति से या पार्टी के उद्देश्य यथा, वैज्ञानिक व तकनीकी क्राति की उपलब्धियों को समाजवादी आर्थिक प्रणाली के साथ सावयिक रूप से जोड़ना, से अलग नही किया जा सकता है। सोवियत कोम्सोमोल ने ऐसी प्रतियोगिताओ का आरम्भ किया है जिसमे युवा श्रमिक किसी व्यवसाय में श्रेष्ठ श्रमिक के सम्मान हेतु प्रतिस्पर्धा करें। कोम्सोमोल समितियाँ अर्थव्यवस्था के लिए अतिआवश्यक विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र मे प्रतिस्पर्धा तथा तकनीकी उपलब्धियो की प्रदर्शनी का भी आयोजन करती हैं।

विकास के शुरुआत को कोम्सोमोल सफलतापूर्वक संरक्षण प्रदान कर रहा है। सो स क पा की 25वी (1976) के पश्चात् कोम्सोमोल ने घोषणा की कि यह दसवी पंच-वर्षीय योजना के 100 से अधिक बड़े निर्माण प्रोजेक्टो मे सरक्षण दे रहा है। स्थानीय कोम्सोमोल सगठन 3,000 से अधिक प्रोजेक्टो के सरक्षक बन गए हैं। कोम्सोमोल व्यक्तिगत प्रोजेक्ट के संरक्षण से तमाम उद्योग समूहों व

अग्रणी उद्योगों के विकास को संरक्षण देने वाला बन गया है। ग्यारहवीं पंच-वर्षीय योजना (1981-1986) के 130 से अधिक आर्थिक प्रोजेक्ट अखिल-संघ द्वारा निर्माणाधीन क्षेत्र घोषित किये गए हैं। और, 26वीं पार्टी कांग्रेस के सम्मान में नामांकित 7,000 व्यक्तियों का अखिल-संघ कोम्सोमोल दस्ता निर्मित किया गया है।

आज कोम्सोमोल प्रमुख सीमावर्ती-उत्पादन समूहों जैसे बाईकल-आमूर रेलवे (बी ए एम), 'नॉन-ब्लैक अर्थ-ज़ोन'[1] तथा पश्चिमी साइबेरिया में तेल व गैस उद्योग को संरक्षण प्रदान कर रहा है।

'शताब्दी के रेलवे', यथा बाईकल-आमूर रेलवे जो 3,000 किमी० से अधिक लम्बी है, के निर्माण में युवजनों की भागीदारी वीरता व साहस का एक प्रतीक बन गयी है। स्थायी रूप में कुहरे, दलदल से भरे व पहाड़ की वर्जित श्रेणियों के आरपार युवा श्रमिक 3,200 संस्थापनों; सैकड़ों किलोमीटर लम्बी सड़कों, नए नगरों व बस्तियों और दर्जनों औद्योगिक प्रोजेक्टों का निर्माण कर रहे हैं।

फसल उत्पादन को बढ़ाने का उद्यम करना, कृषि में आधुनिक तकनीक का उपयोग करना, रसायनीकरण तथा भूमि को कृषि योग्य बनाने की जिम्मेदारी लेना, पशु-फार्म को उन्नत करना और अन्तर-आर्थिक सहयोग एवं कृषि-औद्योगिक एकीकरण के आधार पर फार्म के उत्पादन में विशिष्टीकरण व केन्द्रीकरण करना प्रमुख दिशा है जिनमें युवजन पार्टी की कृषि नीति को लागू करने में मदद कर रहे हैं। यह बात विशेष रूप में 'नॉन-ब्लैक अर्थ-ज़ोन' में हो रही है। अनेक क्षेत्रों की कोम्सोमोल संगठनों ने कृषि में युवजनों को लगाने और उन्हें फार्मों में रहने, तथा उन्हें अपने नए व्यवसाय की ओर उन्मुख करने के लिए परिषदों का निर्माण किया है। क्षेत्र के स्कूलों में पढ़ाई समाप्त करने वाले अनेक छात्र अब फार्म में काम कर रहे हैं। सातवें दशक के अन्त व आठवें दशक के आरम्भ के मध्य में पचास प्रतिशत से अधिक युवजन सामूहिक व राजकीय फार्मों में तथा अन्य कृषि उद्योगों में रहे। वास्तव में दर्जनों फार्म युवा कृषकों के नेतृत्व में रहे। कल के छात्र अब अपने क्षेत्र में शीर्षस्थ, युवा सामूहिक के सुयोग्य नेता के रूप में माने जाते हैं। सो मं क था की 26वीं कांग्रेस में गांव के स्कूल की अध्यापिका, ए० ए० रमीनोवा ने युवाओं की कार्योन्मुख शिक्षा में अपने अनुभव के बारे में बतलाया : "हमारे चारों तरफ का प्रत्येक व्यक्ति यथा, दल-नेता से फार्म का निदेशक तक, पार्टी के दल का सदस्य-

---

1. नॉन-ब्लैक अर्थ ज़ोन —सोवियत संघ के यूरोपीय हिस्से में एक प्रमुख कृषि व उद्योग का क्षेत्र है, जिसकी कृषि योग्य विराट् क्षेत्र अब वास्तविक रूप में सुधारा जा रहा (कृषि योग्य भूमि को बनाना, रासायनिक खादों का उपयोग आदि के द्वारा) तब कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

कर्त्ता से पार्टी की क्षेत्रीय समिति का सचिव—सभी इस महत्त्वपूर्ण कार्य से सम्बद्ध हैं। इसके परिणाम स्वरूप स्कूल, परिवार और उत्पादन समुदायों के प्रयत्नों के साथ कार्योन्मुखी शिक्षा को प्रोत्साहन व इसके लिए जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक विलय हो गया है। परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण तो यह है कि युवजन गाँव में अधिकाधिक ठहरना व रहना चाह रहे हैं। पार्टी की कृषि नीति के निरंतर क्रियान्वयन तथा नॉन-ब्लैक अर्थ जोन के विकास के कार्यक्रम के परिणामस्वरूप हमारे गाँवों में *आनन्ददायक परिवर्तन हो रहे हैं।*"[1]

कामा मोटर वर्क्स [कामाज़—(के ए एम ए ज़ेड)] कोम्सोमोल के निर्माण-स्थलों में एक है। इस प्रोजेक्ट ने युवाओं को यह नारा दिया . "हम कामाज़ बना रहे हैं! कामाज़ हमें बना रहा है।" नाबेरेझ्न्यी चेल्नी (अब ब्रेझ्नेव शहर) की नगर पार्टी समिति के प्रथम सचिव ने कहा, "कोम्सोमोल युवा दल न सिर्फ़ युवकों व युवतियों को काम में सफलतापूर्वक संगठित कर रहे हैं, बल्कि दलों में तेज़ी से ऐसा वातावरण परस्पर बना रहे हैं जो नवागंतुकों को, उनके लिए आवश्यक कार्य करने की आदतों व कुशलताओं को अपनाने में वास्तव में मदद करता है। संक्षेप में, *सफल शिक्षा के लिए अच्छे हालात दिखाई देते हैं।*"

कामाज़ सामूहिक ने युवाओं की विशिष्ट समस्याओं को जैसे, अतिरिक्त आवासीय निर्माण व्यवस्था व खेलकूद की सुविधाएँ, सांस्कृतिक व सामुदायिक सुविधाएँ सुलझाई हैं। नए सीमावर्ती-उत्पादन समूहों के लिए अनेक मानक प्रोजेक्ट युवजनों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में नहीं रखते हैं। और इसने नए निर्माण क्षेत्रों में युवजनों को काम में टिके रहने से रोकने का काफ़ी कुछ किया।

सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस ने यह माना कि जन-सख्यात्मक व अन्य विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए नए नगरों व उनके आंतरिक व सामाजिक ढाँचे के त्वरित विकास को सुनिश्चित करने के लिए, तथा देश के नए क्षेत्रों के अधिक तीव्र सामाजिक विकास को प्राप्त करने के लिए विशेष राजकीय साधनों को अपनाना होगा ताकि क्षेत्रीय स्तर पर सामाजिक अन्तरों को समान कर दिया जाए।

आर्थिक निर्माण में युवजनों की सक्रिय भागेदारी और कार्योन्मुख शिक्षा में कोम्सोमोल के लिए पार्टी-निर्देशन के अन्तर्गत स्थापित संगठनात्मक स्वरूप एक तरफ़ तो, जीवन के प्रति युवजनों के दृष्टिकोण को निर्माण करने का और समाज में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के प्रति उन्हें चेतनशील बनाने का एक अत्यन्त

1. सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस की स्टेनोग्राफ़ की रिपोर्ट मास्को, 1981, जिल्द 1, पृ॰ 135, (रूसी भाषा में)

महत्त्वपूर्ण तरीक़ा है और दूसरी ओर, युवा पीढ़ी की उच्चस्तरीय गतिविधि की एक मूर्त अभिव्यक्ति तथा सोवियत समाज की प्रगति को आगे बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है।

देशभक्तिपूर्ण व अन्तर्राष्ट्रवादी शिक्षा

युवाओं की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा के लिए सामाजवाद हेतु संघर्ष-कर्त्ताओं की पूर्व पीढ़ियों के क्रांतिकारी, जुझारू, श्रमशील व अंतर्राष्ट्रवादी परंपराओं का सावधानीपूर्वक संरक्षण अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

पुरानी पीढ़ियों के क्रांतिकारी अनुभव को आत्मसात करने में युवाओं की मदद हेतु कोम्सोमोल के सदस्यों तथा युवाओं का क्रांतिकारी, सैनिक व श्रमिक गौरव स्थलों को देशव्यापी अभियान अब एक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक व राजनीतिक उद्यम बन चुका है। यह अपने देश व पार्टी के इतिहास के बारे में, कम्युनिज्म के आदर्शों के लिए संघर्ष में पूर्ववर्ती पीढ़ियों की वीरता व बहादुरी के बारे में और अधिक जानने की युवजनों की देशभक्तिपूर्ण आकांक्षा की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है। अभियान में भाग लेने वालों ने गौरव के स्थानीय संग्रहालय स्थापित किए, शहीदों के नाम खोज निकाले और उनके सम्मान में यादगारें व स्तंभ खड़े किये, युद्ध में मृतक सैनिकों के परिवारों को मदद दी तथा गौरवपूर्ण गाथाओं वाले गुरिल्ला दस्तों व सैनिक टुकड़ियों के द्वारा अपनाए गये रास्तों को पुनः खोज निकाला तथा उनके वीरतापूर्ण इतिहास को पुनः निर्मित किया। पार्टी व कोम्सोमोल के अनुभवी सदस्य सोवियत युवजनों को एक देशभक्तिपूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सदैव सहायता देते हैं। जिला व नगर कोम्सोमोल समितियों व प्राथमिक कोम्सोमोल संगठनों ने अनुभवी श्रमिकों व क्रांतिकारियों के परिषदों को संगठित किया है, जो प्रचार व राजनीतिक कार्य द्वारा अपने समृद्ध अनुभव से युवाओं को अवगत कराते हैं। लियोनिद ब्रेझनेव ने कहा—"पुरानी पीढ़ियों के लोग, जिनका यौवन क्रांति की गर्म हवाओं में गुजरा, जिनके चरित्र व आकांक्षाएं प्रथम पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण-स्थलों और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के मैदानों में संस्कारित हुए, यह जानकर खुश हैं कि कोम्सोमोल के सदस्य, युवक व युवतियाँ कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य के वीरतापूर्ण इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं तथा गर्मजोशी के साथ समझ रहे हैं, मृतकों की स्मृति को सम्मान देते हैं, अनुभवी लोगों व सैनिकों के परिवारों के प्रति, आदर प्रदर्शित करते हैं, जो युद्ध में लड़ रहे तथा जिन्होंने कम्युनिज्म के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लिया।"[1]

---

1. देखें : एल॰ आई॰ ब्रेझनेव, लेनिन का मार्ग, भाषण व लेख, जिल्द 6, पोलित्इज्दात, मास्को, 1978, पृ॰ 498 (रूसी भाषा में)

सोवियत सेना में काम करना देशभक्तिपूर्ण शिक्षा का एक पराक्रमपूर्ण स्कूल है। सैनिक सेवाओं में युवजन तकनीकी व व्यवसायिक कुशलता प्राप्त करते हैं तथा राजनीतिक व शारीरिक दृष्टि से इस्पाती बन जाते हैं। सेना में भर्ती होने वालों का ⅘वाँ भाग कोम्सोमोल के सदस्यों का है, जिनमें से अधिकांश उच्चतर व माध्यमिक शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं। स्थल व नौसेना में सेवा कर रहा प्रत्येक दूसरा कोम्सोमोल सदस्य सैनिक व राजनीतिक प्रशिक्षण के परिणाम में औसत से अधिक का है और प्रत्येक तीसरा कोम्सोमोल सदस्य ऊँचे दर्जे का योग्यता प्राप्त विशेषज्ञ है। यद्यपि इन युवाओं ने गम्भीर पराजय से भरे परीक्षणों का अनुभव नहीं किया है, जिसे इनके पिता व पितामहों ने किया था, फिर भी ये सोवियत सेना की वीरतापूर्वक परम्पराओं के प्रति आस्थावान हैं। जब कभी भी देश की सुरक्षा व शान्ति के हित दाँव पर होते हैं, सोवियत सैनिक यह दिखा देते हैं कि वे निःस्वार्थी व साहसी देशभक्त तथा अंतर्राष्ट्रवादी हैं।

सोवियत देशभक्ति की भावना का पोषण अतर्राष्ट्रवादी शिक्षा में अलग नहीं हो सकता है। अंतर्राष्ट्रवाद एक ऐसी विषय-वस्तु है जो कोम्सोमोल के प्रत्येक कृत्यों में है। सोवियत संघ की युवा पीढ़ी एक नवीन सामाजिक व बहुराष्ट्रीय समुदाय अर्थात् सोवियत जन की एक सावयिक घटक है। शैशवावस्था से ही उन्हें सोवियत संघ की समस्त राष्ट्रीयताओं की संस्कृति व प्रजातांत्रिक परम्परा का सम्मान करना सिखाया जाता है। कोम्सोमोल व युवा निर्माण स्थलों में दर्जनों राष्ट्रीयताओं के लोग एक-दूसरे के साथ काम करते हैं। देश के सभी स्कूलों (माध्यमिक, व्यवसायिक व तकनीकी, तथा उच्चतर) व कारखानों में, कार्यालयों तथा फार्मों पर, सैन्यदलों, कोम्सोमोल व अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में विभिन्न राष्ट्र व राष्ट्रीयता के युवजन एक सुखी परिवार के सदस्यों के समान रहते व कार्य करते हैं। समस्त संघ तथा स्वशासित गणतन्त्रों के मध्य, स्वशासित क्षेत्रों तथा राष्ट्रीय क्षेत्रों के मध्य सम्बन्ध ईमानदार मैत्री, परस्पर उदार सहायता और समान विचारों व क्रियाकलाप पर आधारित हैं।

राष्ट्रवाद के जीवित रह रहे अवशेष, जो कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रतिरोध करते हैं, के विरुद्ध नियमित संघर्ष करना अंतर्राष्ट्रवादी शिक्षा का एक घटक है। सो सं क पा युवजनों को राष्ट्रवाद, चाहे वह कितना ही छुपा हुआ क्यों न हो, को पहचानने, विदेशी बुर्जुआ प्रचार द्वारा प्रोत्साहित पूर्वाग्रहों का भंडाफोड़ करने और राष्ट्रीय अलगाववाद की समस्त अभिव्यक्तियों को मजबूती से अस्वीकारने व खत्म करने की शिक्षा देता है। सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस ने इंगित किया कि "हमारे देश में प्रत्येक व्यक्ति की राष्ट्रीय संवेदनाओं तथा राष्ट्रीय सम्मान की इज्जत की जाती है। सो सं क पा समाजवाद की प्रकृति से अलग अंधराष्ट्रवाद या राष्ट्रवाद जैसे दृष्टिकोणों के विरुद्ध, सामीवाद-विरोध या यहूदीवाद जैसे किसी

भी राष्ट्रवादी भटकाव के विरुद्ध लड़ा है और सदैव दृढ़तापूर्वक लड़ा। राष्ट्रीय पहचान को कृत्रिम रूप मे विकृत करने के उद्देश्य वाली प्रवृत्तियों के हैं। और, इसी हद तक, हम उनके कृत्रिम प्रसार को निषिद्ध मानते हैं। सोवियत देशभक्ति व सोवियत अंतर्राष्ट्रवाद की भावना में शिक्षित करना, महान एकीकृत सोवियत सघ के निवासी होने में गौरवान्वित होने की भावना पोषण करना पार्टी का परम पवित्र कर्त्तव्य है।"[1]

प्रत्येक राष्ट्र के, पीढ़ियों के अनुभव व बुद्धि को संजोये, ऐतिहासिक विकसित अपने रीति-रिवाज होते हैं। हालांकि इन रीति-रिवाजों में कुछ अप्रचलित व राष्ट्रीय दृष्टि से प्रतिबंधित होते हैं। वैचारिक कार्य को इन प्रिय परम्पराओ व रिवाजों से सर्वोत्तम को चुनकर अलग करना चाहिए, गंभीर वैचारिक विषय-वस्तु प्रदान करना चाहिए तथा नैतिक शिक्षा हेतु कुशलतापूर्वक लाभ उठाना चाहिए। यहाँ श्रमरत जनता के दैनिक जीवन संस्कृति मे नए श्रम व नागरिक रीति-रिवाजों व उत्सवों का निर्माण व अपनाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। युवा लोगों के लिए ये विशेष महत्व के हैं। पायोनियरो व कोम्सोमोल मे प्रवेश पाने के, छात्रों व श्रमिकों को दीक्षित तथा युवा सैनिकों के शपथ-ग्रहण करने के समारोह, (भावना व विषय-वस्तु अंतर्राष्ट्रीय समारोहों में कुछ समारोह) युवा सोवियत जनो के मध्य प्रचलित हैं।

अंतर्राष्ट्रवादी बनने का लेनिन के उपदेश को विशुद्ध रूप में पालन हुए कोम्सोमोल सर्वहारा की एकजुटता की परम्पराओं को निरंतर व कर रहा है, तथा संसार भर के क्रांतिकारी और प्रजातांत्रिक युवाओं को करने मे सहायता कर रहा है। यु क ली कम्युनिस्ट व प्रजातांत्रिक आंदोलन एक जुझारू दस्ता है।

समाजवादी देशों की बिरादराना युवा लोगों के साथ मैत्री को मजबूत करने का कार्य कोम्सोमोल की गतिविधि का मुख्य क्षेत्र है। समाजवादी के देशों में युवाओं की कम्युनिस्ट शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण, इन देशों के एकीकरण और उनका समान मार्क्सवादी लेनिनवादी विश्व दृष्टिकोण ठोस आधार पर आगे अग्रसर हो रहा है। समाजवादी देशों के युवजनों के व्यापक सम्पर्क और उनकी वैचारिक, राजनीतिक, श्रमिक, देशभक्ति, वादी व नैतिक शिक्षा की समान दिशा के फलस्वरूप उनकी समाजवादी मे समान लक्षण विकसित हो रहे हैं। समाजवादी देश का एक युवा

---

1. डॉक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशन्स, द 26वा कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 73-74

महान समाजवादी समुदाय का एक अंग के रूप में अनुभव करता है, एक अंतर्राष्ट्रवादी के समान सोचता है और समाजवादी व्यवस्था, इसकी वस्तुगत ऐतिहासिक आवश्यकता, एक नवीन अंतर्राष्ट्रीय ऐतिहासिक समुदाय के रूप में विकास के लिए इसकी अंतहीन सम्भावनाओं के प्रति आश्वस्त है।

व्यावहारिक रूप मे, समाजवादी देशों की युवा लीगों की गतिविधियों के समस्त पहलुओं में सहयोग है। बिरादराना युवा लीगों के नेताओं की नियमित सलाहकार बैठकों का आयोजन होता है। समाजवादी समुदाय के देशों की युवा पीढ़ी का ध्यान शांति, प्रजातन्त्र व सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष के प्रश्नों पर केन्द्रित है। सो सं क पा की 24वीं कांग्रेस द्वारा स्वीकृत शांति का कार्यक्रम उनकी अंतर्राष्ट्रीय गतिविधि का आधार बन गया है। दुनिया भर के युवाओं के विराट भाग ने सो स क पा की 25वीं कांग्रेस द्वारा स्वीकृत शांति हेतु अधिक संघर्ष के लिए कार्यक्रम तथा सो स क पा की 26वीं कांग्रेस के 'आठवें दशक का शांति कार्यक्रम' नामक नवीन शांति प्रस्तावों को सक्रिय रूप में समर्थन दिया है।

सोवियत युवा एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के साथ एकजुटता के लिए आंदोलन मे सक्रिय हैं, और उन्हें राजनीतिक व भौतिक सहयोग प्रदान कर रहे हैं। यु क ली की केन्द्रीय समिति और सोवियत संघ के युवा संगठनों की समिति (सी वाई ओ) ने पुर्तगाली उपनिवेशो के, दक्षिणी अफ्रीका के युवाओं व जनता के साथ एकजुटता का सम्मेलन, राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों के प्रतिनिधियों के साथ एकजुटता की बैठक तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध व राष्ट्रीय मुक्ति हेतु संघर्षरत अफ्रीका की जनता व युवाओ के साथ एकजुटता का सम्मेलन जैसे प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय कार्यवाहियों का संचालन किया है। सोवियत युवा चिली, एल-सेल्वाडोर तथा निकारागुआ की जनता व युवाओ के साथ अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के लिए आंदोलन मे विशेष रूप से सम्बद्ध हैं। सोवियत और चिली के युवाओं की 'मैत्री व एकजुटता सप्ताह' अभी भी मनाए जाते हैं।

दुनिया के प्रजातांत्रिक युवाओ के साथ सोवियत युवा विश्वव्यापी अभियानो जैसे, 'युवाओ द्वारा साम्राज्यवाद का भंडाफोड़' तथा 'साम्राज्यवाद विरोधी एकजुटता, शांति तथा प्रजातंत्र के लिए युवाओं का आह्वान' और आणविक युद्ध की धमकी के विरुद्ध, शांति व निरस्त्रीकरण के लिए युवाओं की कार्यवाही के विश्वव्यापी अभियान में सक्रिय हैं।

सर्वहारा एकजुटता के बंधन पूंजीवादी देशों की युवा कम्युनिस्ट लीगों के साथ, इन देशों मे जीवन के महत्त्वपूर्ण समस्याओं के न्यायिक समाधान के लिए, प्रजातंत्र व समाजवाद के लिए उनके संघर्ष में प्रगतिशील युवजनों के साथ सोवियत कोम्सोमोल को एकबद्ध करते हैं।

सोवियत कोम्सोमोल और सोवियत संघ के युवा संगठनों की समिति 14(से अधिक देशों के 1,350 राष्ट्रीय युवा, छात्र व बाल संगठनों के साथ मिलक कार्य करती है। सोवियत युवा व सोवियत कोम्सोमोल प्रत्येक स्थान के युवजन के साथ मैत्री का हाथ बढ़ाते हैं।

विकसित समाजवादी समाज में युवाओं की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा क समस्याओं के विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि अब विचारणीय प्रश्न है ए नवीन सामाजिक मानव का निर्माण करना जिसकी विशेषताएँ हों कम्युनिज्म म दृढ़ विश्वास, सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी, शोषण व सामाजिक अस मानता को नामंजूर करने वाला, अपने ज्ञान व रचनात्मक क्षमताओं को उन्न करने में तत्पर और मनुष्य में अच्छाई व विश्व के भविष्य के प्रति दिलचस्पी ले वाला।

इस सहयोग का मुख्य स्वरूप शांति के लिए, युद्ध के खतरे के विरुद्ध संघर्ष है। यु क ली की 19वीं कांग्रेस (1982) ने शांति के नए क़दमों की घोषणा की है:

—अखिल संघीय 'सोवियत युवा शांति अभियान', जिसके अंतर्गत शस्त्रों की होड़ को समाप्त करने व विश्वव्यापी शांति को सुनिश्चित करने में सोवियत युवाओं की तत्परता को व्यक्त करने वाले प्रदर्शन, रैलियाँ, अभियान, विशेष रूप में निर्दिष्ट काम के शिफ्ट तथा अन्य कार्यवाहियाँ हैं;

—नाजीवाद से योरोप की मुक्ति की 40वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में समाजवादी देशों के युवाओं का अंतर्राष्ट्रीय देशभक्ति आयोजन 'स्मृति' आयोजित करना;

—राष्ट्रीय मुक्ति व शांति के लिए युवाओं का साम्राज्यवाद विरोध पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन;

—श्रमरत युवाओं का एक विश्व सम्मेलन;

—12वाँ विश्व युवा व छात्र समारोह;

—युवाओं के सामाजिक व आर्थिक स्तर को प्रभावशाली रूप में सुधारने और इसके हितों, विश्व शांति व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुरक्षित करने के उद्देश्य हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में किए जाने वाले कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेना।

अध्याय : 3

समाजवादी देशों की युवा लीग

1. युवा लीगों को पार्टी-निर्देशन

समाजवादी समुदाय के देशों में युवाओं को अपने पक्ष में लाने तथा एक नवीन जीवन के निर्माण में लगाने के संघर्ष ने समान स्वरूप अपना लिया है; युवा आंदोलन के मार्क्सवादी-लेनिनवादी निर्देशन के समान वैचारिक व संगठनात्मक सिद्धांत स्थापित हो चुके हैं। सामाजिक विकास, समाजवादी समुदाय के प्रत्येक देश की ठोस ऐतिहासिक स्थितियों, तथा जैसे-जैसे एक विकसित समाजवादी समाज का निर्माण हो रहा है वैसे-वैसे आने वाले विशिष्ट कार्यों की दृष्टि में ये सिद्धांत क्रियान्वित किए जा रहे हैं।

युवा लीगों की स्थापना

जनता की प्रजातांत्रिक व समाजवादी क्रांतियों के पूर्व, समाजवादी देशों में युवा संगठन विभिन्न राजनीतिक पार्टियों द्वारा प्रभावित थे। क्रांति पश्चात् प्रजातांत्रिक युवा संगठनों के निर्माण का प्रश्न उपस्थित हुआ। आरम्भ में, ये संगठन युवाओं में सामाजिक व वर्गीय भेदों को दृष्टिगत रखते हुए, सामान्य प्रजातांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित थे। कम्युनिस्टों ने युवा कम्युनिस्ट लीग की स्थापना में जरूरत से ज्यादा जल्दबाजी का विरोध किया, जर्मनी की समाजवादी एकता पार्टी (एस यू पी डी) की केंद्रीय समिति ने लीग ऑफ फ्री जर्मन यूथ (एफ एफ जी वाई) के कुछ नेताओं को जताना पड़ा जिन्होंने 1946 में लीग को कम्युनिस्ट घोषित करने का प्रस्ताव रखा था। उन वर्षों में युवा लीग को एक फासीवाद-विरोधी, प्रजातांत्रिक संस्था के रूप में विकसित करना आवश्यक था। सिर्फ जनता की सत्ता की सुदृढ़ता के पश्चात् और जब विकास की समाजवादी अवस्था एक बार आरम्भ हो गई, तभी एस यू पी डी की केन्द्रीय समिति ने 1957 में एफ एफ जी वाई को जर्मन जनवादी गणतंत्र की युवा पीढ़ी के समाजवादी संगठन के रूप में सुदृढ़ करने का कार्य हाथ में लिया।

समाज के वर्गीय ढाँचे के परिवर्तन के साथ युवा लीगों का सामाजिक आधार भी बदला, हालाँकि धीरे-धीरे वे अपने देशों के युवाओं के हरावल दस्ते बन

गये। संक्रमण काल में संगठित सामाजिक व राजनीतिक युवा संगठनों ने विभिन्न राजनीतिक प्रवृत्तियों के प्रगतिशील युवजनों को संगठित करने में मदद दी तथा विभिन्न युवा दलों के मध्य विद्यमान अंतर्विरोधों को मिटाने को आसान बनाया। मार्क्सवादी-लेनिनवादी युवा संगठन तब प्रगतिशील युवा लीग के वैचारिक राजनीतिक व संगठनात्मक विकास के आधार पर निर्मित हुए, जो उनकी पार्टियों के पूर्व जनता के प्रजातंत्र में विद्यमान थे।

संक्रमण काल के दौरान युवाओं के प्रति कम्युनिस्ट पार्टियों की नीति युवा श्रमिकों व छात्रों के साथ कार्य करने में केन्द्रित थी तथा युवाओं की अत्यन्त महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं को हल करना इसका लक्ष्य था। जैसे ही वे इस कार्य में लगे और युवा लोगों को इसमें लगाया, वैसे ही कम्युनिस्टों ने यह पक्का कर लिया कि शिक्षा की प्राप्ति में समस्त युवा को प्राथमिकता मिलेगी और सभी स्कूलों में छात्र संख्या के सामाजिक ढाँचे को मूलरूप में बदलने में सहायता दी।

समाजवाद की विजय ने युवाओं की गतिविधि के लिए तथा उनकी सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों के सर्वांगिक विकास के लिए नवीन स्थितियाँ पैदा की हैं। समाजवादी समुदाय की सत्तारूढ़ मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों ने अपने कार्यक्रम के दस्तावेज़ों में एक विकसित समाजवादी समाज के निर्माण की अवस्था के दौरान सामाजिक प्रगति में योगदान देने वाले युवाओं की भूमिका का गम्भीर विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

1967 में बुल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की राजनीतिक ब्यूरो ने 'युवाओं तथा कोम्सोमोल के साथ कार्य की कुछ बुनियादी समस्याएँ' नामक प्रस्थापना स्वीकारी, जिसने ज़ोर दिया कि "पार्टी का राजनीतिक व सामाजिक कार्य, शिक्षा में, हमारी जनता को एकत्रित व गतिशील बनाने का कार्य मुख्यतः युवाओं के मध्य करना चाहिए।"[2]

हंगरी की समाजवादी श्रमिक पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्लेनरी बैठक

---

1. 1946 व 1950 के मध्य जनता के प्रजातन्त्र में संगठित युवा लीग की स्थापना हुई : बुल्गारिया—जनता के युवाओं की दिमित्रोव लीग; पोलैंड—पोलिश युवा संघ; युगोस्लाविया—जनता के युवा; हंगरी—प्रजातान्त्रिक युवा लीग; चीन—नव-प्रजातान्त्रिक युवा लीग; ज ज ग—स्वतंत्र जर्मन युवा लीग; चेकोस्लोवाकिया—चेकोस्लोवाक युवा लीग; अल्बानिया—अल्बानिया की युवा लीग आदि।
2. टी० शिवकोव, 'एबाउट द कोम्सोमोल एण्ड द यूथ', सोफिया, सोफिया-प्रेस, 1968, पृ० 57

(फरवरी 1970), जिसने 'युवाओं के प्रति पार्टी की नीति के कुछ प्रश्नों' पर विचार-विमर्श किया, ने यह प्रस्ताव पारित किया कि वर्तमान अवस्था में युवाओं तथा समाजवाद के निर्माण में उनकी भागीदारी एक अति महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। प्लेनरी बैठक में यह बतलाया गया कि "कोम्सोमोल के आगे विकास के लिए इसके राजनीतिक, कम्युनिस्ट चरित्र की प्राथमिक प्रकृति को ज़ोर देना ही आधारभूत प्रश्न है।"[1]

ज ज ग ने युवा आंदोलन के नेतृत्व को और भी पूर्णता प्रदान करने के लिए 4 मई 1964 को अपनाए "ज ज ग के युवाओं का समाजवाद के विस्तृत निर्माण के लिए संघर्ष में तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और राज्य की व्यवस्था में, कार्य करने व स्कूल में, संस्कृति व खेल-कूद में भागीदारी पर"[2] कानून में कार्यक्रम विकसित किए गये हैं। एस यू पी जी की केन्द्रीय समिति तथा ज ज ग की राज्य कौंसिल ने एस यू पी जी कमेटी द्वारा युवाओं के मामलों के लिए एक उप-विभाग तथा मंत्रिमंडल के अधीन युवाओं के मामलों के लिए एक विभाग को निर्मित करते हुए युवाओं के प्रश्नों पर भविष्य की नीति की रूपरेखा बनाई। 28 जनवरी, 1974 को युवाओं पर एक नया कानून—'समाजवादी अवस्था में युवा' लागू किया गया। जो एक विकसित समाजवादी राज्य के निर्माण में ज ज ग की युवा पीढ़ी के कार्यों को तथा साथ ही गणतन्त्र के युवा नागरिकों की समाजवादी शिक्षा के संबंध में पार्टी, राज्य व सार्वजनिक संस्थाओं के कर्त्तव्यों को परिभाषित करता है।[3]

रूमानिया की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्लेनरी अधिवेशन (1967) ने "युवाओं के मध्य शैक्षणिक कार्य को सुधारने के लिए पार्टी, राज्य व सार्वजनिक संगठनों व युवा कम्युनिस्ट लीग के कार्यों पर एक प्रस्ताव को स्वीकारा, जो ज़ोर देता है कि युवा पीढ़ी की शिक्षा वाले सम्पूर्ण पार्टी के सम्मानजनक कार्य की माँग है युवजनों के मध्य शैक्षणिक कार्य को निर्देशित करने के लिए तथा उनकी शिक्षा को सुलभ बनाने में आवश्यक सभी घटकों के कार्य को समन्वित करने के लिए पार्टी संगठनों को अधिक समझदारी व जिम्मेदारी दिखानी चाहिए।"[4]

1. इनफोरमेशन बुलेटिन ऑफ द सी सी ऑफ द एच एस डब्लू पी, संख्याएँ 2-3, पृ० 109
2. डोकूमेन्टे त्सुएर यूगेन्ड पोलिटीक इन डेर डे डे आर, बर्लिन, स्टास्वेरलाग डेर डे० डे० आर०, 1965
3. देखें: 'द यूथ इन द सोशलिस्ट स्टेट, द लॉ ऑन द यूथ ऑफ द जी डी आर, बर्लिन पनोरमा डी डी आर, 1974
4. इन्फार्मेशन बुलेटिन ऑफ द सी सी ऑफ द रूमानियन कम्युनिस्ट पार्टी 1967, संख्या 14, पृ० 25

चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी (सी सी पी) के स्वस्थ तत्वों को छठे दशक के अन्त में मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा-अंतर्राष्ट्रवाद के सिद्धांतों पर युवा आंदोलन को सुदृढ़ बनाने हेतु कठिन व अथक परिश्रम करना पड़ा था। *चेकोस्लोवाकिया में 1968 की घटनाओं ने युवा पीढ़ी के साथ गम्भीर वैचारिक* व राजनीतिक कार्य किए बिना युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्यता को बढ़ाने के औपचारिक दृष्टिकोण के खतरे को स्पष्ट किया। दक्षिण-पंथी शक्तियों ने संगठित युवा लीग को विघटित करने के प्रयत्न में व इसे व्यवसायों के आधार पर अनेक स्वतंत्र संगठनों तथा धार्मिक प्रकृति के विभिन्न संगठनों द्वारा स्थानापन्न करने के प्रयत्न में देश में युवा आंदोलन पर पार्टी के निर्देशन की कमजोरी का फायदा उठाया। सी पी सी की केन्द्रीय समिति का दस्तावेज "सी पी सी की 13वीं कांग्रेस के पश्चात चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी व समाज में संकट की बढ़ोतरी से सबक", कहता है कि "सी पी सी की केन्द्रीय समिति के अध्यक्षमण्डल की अनिश्चित कार्यवाहियों के कारण युवा-संगठन दक्षिण-पंथी व प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के हाथों टुकड़ों में बँटने हेतु सौंप दिए गये थे।"[1] एक बार देश का राजनीतिक संकट पर काबू कर *लिया गया तब 1970 के अन्त में सी पी सी को* मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों पर समाजवादी युवा लीग की पुनर्स्थापना के लिए तथा सी पी सी की निर्देशन-भूमिका और इसके सक्रिय सहयोग को मान्यता दिलाने हेतु *सक्रिय कार्यवाही करनी पड़ी। 14वें कांग्रेस (1971) के निर्णयों के अनुरूप 3 व* 4 जुलाई 1973 को सी पी सी की केन्द्रीय समिति की प्लेनरी बैठक में एक प्रस्ताव में इंगित किया कि "युवाओं के स्वस्थ विकास के लिए तथा वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद व समाजवादी देशभक्ति की भावना में उनकी शिक्षा के लिए चिंतित *होना* सम्पूर्ण पार्टी व समाज का प्राथमिक कार्य है।"[2] प्लेनरी बैठक ने 'विकसित समाजवादी समाज में जीवन व श्रम के लिए युवाओं की समाजवादी शिक्षा तथा उनकी तैयारी के बारे में' प्रश्न पर भी विचार-विमर्श *किया।*[3]

अनेक समाजवादी देशों—मंगोलिया, वियतनाम तथा क्यूबा—की कम्युनिस्ट

---

1. *चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी की 13वीं कांग्रेस के पश्चात्* चे० क० पा० व समाज में संकट-वृद्धि, पर सबक, मास्को, पोलिटिज्दाट, 1971, पृ० 38 (रूसी भाषा में)
2. *चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी की 14वीं कांग्रेस, प्राग 1971,* मास्को पोलिटिज्दाट, 1971, पृ० 168 (रूसी भाषा में)
3. इन्फोर्मेशन बुलेटिन ऑफ द सी सी सी पी ऑफ चेकोस्लोवाकिया, संख्या 8, *1973, पृ० 12।*

टियो ने समाजवाद के निर्माण की वर्तमान अवस्था पर युवाओ व उनके सगठनों भूमिका को स्पष्ट करते हुए दस्तावेजो को स्वीकारा है।

मगोलियाई जन क्रातिकारी पार्टी का कार्यक्रम "युवा पीढ़ी की कम्युनिस्ट क्षा मे, आर्थिक व सास्कृतिक निर्माण में तथा सार्वजनिक नियत्रण को सगठित ने मे पार्टी की जुझारू सहायक व आरक्षित शक्ति, मगोलियाई क्रातिकारी युवा ग की भूमिका को बढाने" की आवश्यकता पर जोर दिया "ताकि जहाँ कही भी ाजवाद का निर्माण हो रहा है वहाँ युवाओं की रचनात्मक नेतृत्व तथा श्रम की तिविधि हरसम्भव तरीके से बढाई जाए।"[1]

क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम (1975) का कथन है कि "युवा म्युनिस्टो का लीग प्रगतिशील युवाओ का एक सगठन, हमारी पार्टी की तपी-ायी आरक्षित शक्ति है। अपने सदस्यों में पार्टी के भावी सदस्यों को शिक्षित रना तथा विशाल-सर्वहारा संस्थानो के मार्फत और सीधे रूप मे सभी युवजनो के थ वाम में लगना, क्यूबा के युवा पायोनियरों की लीग के मार्फत बच्चों के साथ म करना इसके कार्य है और इस प्रकार से यह समाजवाद के चेतन निर्माताओ ी नई पीढी को शिक्षित करने मे योगदान देता है।"[2]

बिरादराना देशों की पार्टी के मुख्य दस्तावेज सत्ताधारी मार्क्सवादी-लेनिन-ादी पार्टियों की युवा-नीति के सार को प्रकट करते हैं, और वास्तविक समाजवाद समाज मे इसके अग्रिम विकास की सामान्य दिशा को निर्धारित करते हैं।

समाजवादी समुदाय के देशों की कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों द्वारा सचित नुभव युवाओं के प्रति नीति की दो मूल प्रवृत्तियों के स्पष्टतः प्रमाणित करता है। थम, सामाजिक व राजनीतिक संगठनों के रूप में युवा लोगों को कम्युनिस्ट ार्टियों द्वारा सीधे निर्देशन देना और द्वितीय, युवाओ के विकास व शिक्षा की सपूर्ण णाली को पार्टी का निर्देशन देना व समन्वय करना। युवाओं के प्रति नीति के न दो स्वरूपो का कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा निरंतर क्रियान्वयन समाजवादी देशो युवको व युवतियो की वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली नाने मे एव उन्हे सार्वजनिक जीवन मे अधिक सक्रिय बनाने मे मदद देता है।

युवा पीढ़ी की शिक्षा की सबसे अधिक जिम्मेदारी सत्ताधारी मार्क्सवादी-ेनिनवादी पार्टी की होती है, जो "हमारे समाज के विभिन्न अभिकेन्द्रो द्वारा ंचालित युवाओं के साथ समस्त जटिल राजनीतिक, सगठनात्मक व वैचारिक

1. मंगोलियाई जन क्रांतिकारी पार्टी की 15वीं कांग्रेस, मास्को, पोलिटिज्दाट 1966, पृ० 192 (रूसी भाषा में)
2. क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रथम कांग्रेस, मास्को, पोलिटिज्दाट, 1976, पृ० 363 (रूसी भाषा में)

कार्यों को निर्देशित करता है। यह युवाओं की आकांक्षाओं तथा उनकी सक्रिय भागीदारी को ध्यान में रखकर किया जाता है,[1] जैसा सो सं क पा की केन्द्रीय समिति के सचिव बी० एन० पोनोमरेव ने बतलाया था। युवा लीगों के सदस्यों को मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों की सदस्यता के लिए सफलतापूर्वक तैयार करना समाजवाद के निर्माण के कार्यों को पूर्ण करने तथा सार्वजनिक जीवन में जनता को सक्रिय बनाने में मदद देता है। समाजवादी समुदाय के देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के नियमों के अनुसार सार्वजनिक संस्थाओं में सिर्फ युवा लीगों को कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता के लिए सदस्यों की सिफारिश का अधिकार है। यह कम्युनिस्ट पार्टियों की आरक्षित शक्ति के रूप में युवा लीगों की भूमिका को व्यक्त करता है। जैसे, 1975 व 1980 के मध्य एच एस डब्लू पी में प्रवेश लेने वालों में 60 प्रतिशत सदस्य 30 वर्ष की आयु से कम के थे। इसी समय के दौरान एस यू पी जी में 335,900 तक सदस्य बढ़ गए, जिनमें से 169,700 सदस्य 25 वर्ष से कम आयु के थे। सिर्फ लीग ऑफ फ्री जर्मन यूथ के नेतृत्व में, एस यू पी जी की दसवीं कांग्रेस (1981) के पूर्व 75,000 लीग सदस्यों ने पार्टी में प्रवेश लिया। मंगोलियाई जन क्रांतिकारी पार्टी में युवाओं के श्रेष्ठ प्रतिनिधियों का प्रवेश आयु की आवश्यकता को 20 से 18 वर्ष तक कम करके की गई जिसके परिणामस्वरूप पार्टी के नये सदस्यों का 85.7 प्रतिशत हिस्सा युवजनों का है।[2]

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों की सदस्यता का युवा लीग के सदस्यों द्वारा इस तात्विक नवीनीकरण ने कम्युनिस्ट पार्टियों को युवा लीगों में पार्टी अभिकेन्द्रों को पर्याप्त रूप से मजबूती दी है। हंगरी के कोम्सोमोल में 61,000 कम्युनिस्ट कार्य कर रहे हैं, जबकि एल एफ जी वाई के प्राथमिक संगठनों के सचिवों का 30 प्रतिशत एस यू पी जी के सदस्य या उम्मीदवार सदस्य हैं। एस यू पी जी की केन्द्रीय समिति के एक नेता पॉल फर्नर ने इस सम्बन्ध में इंगित किया कि "लीग ऑफ फ्री जर्मन यूथ में पार्टी अभिकेन्द्रों का निरंतर मजबूत होते जाना उदीयमान पीढ़ी पर इसके राजनीतिक व वैचारिक प्रभाव की वृद्धि की गारंटी है।"[3]

---

1. वर्ल्ड मार्क्सिस्ट रिव्यू, अंक 6, 1973, पृ० 6
2. एच एस डब्लू पी की 12वीं कांग्रेस, मास्को, पोलिटिज्डाट, 1981, पृ० 21 (रूसी में); ई० होनेकर, रिपोर्ट ऑफ द सी सी ऑफ द एस यू पी जी टू द टेन्थ पार्टी कांग्रेस, ड्रेसडेन, जीट इन बिल्ड, 1981, पृ० 193, 194; यू त्से डेन्बल, रिपोर्ट ऑफ सी सी ऑफ मंगोलियन पीपुल्स रेवोल्युशनरी पार्टी टू द 18थ पार्टी कांग्रेस, उलान-बटोर, गो सोज्डाट, 1981, पृ० 66
3. वर्ल्ड मार्क्सिस्ट रिव्यू, संख्या 4, 1973, पृ० 4

बिरादराना सत्ताधारी पार्टियों की गतिविधियाँ निम्नलिखित बिन्दुओं पर
ा संगठनों के नेतृत्व को पूर्णता प्रदान करने में केन्द्रित हैं—

—युवा संगठनों की कम्युनिस्ट प्रवृत्ति को गम्भीर बनाना, अपने सदस्यों के मध्य वैचारिक व राजनीतिक कार्य को, तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना में बाकी युवाओं पर उनके प्रभाव को पूर्णता प्रदान करना;
—विकसित समाजवाद के निर्माण में बुनियादी कामों में युवजनों को अधिक सक्रियता से लगाना,
—युवा संगठनों में सदस्यता को और अधिक बढ़ाना तथा इन संगठनों में कार्य के स्वरूपों व तरीकों को पूर्णता देना।

जैसे-जैसे परिपक्व समाजवाद का निर्माण हो रहा है वैसे-वैसे युवाओं की
स्याओं के समाधान हेतु नवीन दृष्टिकोण का सार इसकी दुरूहता, अर्थात्
क्षा की एक प्रभावशाली प्रणाली का निर्माण जिसमें युवजन शिक्षा के कर्म
व गतिविधि के कर्ता दोनों ही हैं। समाज में उनकी स्थिति तथा उनके हितों
र आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यह प्रणाली युवाओं के सभी स्तरों का
ंनुमान करती है। विभिन्न संगठनों व संस्थाओं, जिन्हें शैक्षणिक कार्य में
ाना है, की पूरक कार्यवाही इस प्रकार के दृष्टिकोण का एक रूप है। बिराद-
ना पार्टियों की केन्द्रीय समितियों की मान्यता है कि कोई एक संगठन युवाओं की
क्षा हेतु उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है। इसका उत्तरदायित्व, जो सम्पूर्ण
टी व राज्य का मामला है, परिवार स्कूल, श्रम के सामूहिक केन्द्र, सेना, युवा
न तथा ट्रेड यूनियन पर है।

अतिम युवा नीति को लागू करने में समाजवादी समाज की राजनीतिक
वस्था के प्रत्येक सम्बन्ध के महत्व के निर्धारण में कम्युनिस्ट पार्टियाँ अपने
युवा सहयोगी के रूप में युवा लीगों पर विशेष महत्व देती हैं। युवा प्रश्नों पर
टी के निर्देशों तथा राज्य व सार्वजनिक संस्थाओं के निर्णयों को लागू करने पर
युनिस्ट सदैव नियंत्रण रखते हैं। युवाओं की विशेष समस्याओं पर सिफारिशें
ायी जाती हैं। बी सी पी की केन्द्रीय समिति के महासचिव तोदोर झिवकोव ने
झिवकोव युवा कम्युनिस्ट लीग को एक पत्र में लिखा (जुलाई 1978) कि 'देश
प्रगति ने हमारी सर्वाधिक के समस्त वर्गों के मूल्यांकन के नवीन व उच्चतर
र कायम किये हैं। नये मानदण्ड अध्यापक के स्थान पर युवाओं हैं। इस वर्ष
पार्टी ने युवाओं की सर्वाधिक के विस्तार करने की सम्भावनाओं के प्रश्न को
ाया था। आज कोम्सोमोल के कार्य का पूरा [illegible] महत्व का हो रहा है,
सामान्यतः, यह युवा पीढ़ी के [illegible] और उनके निर्माण के एक अत्यन्त

सामाजिक प्रभाव का प्रश्न है।"[1]

समाजवाद की राजनीतिक प्रणाली में युवा

जैसे-जैसे कम्युनिस्ट संगठनों के रूप में युवा लोगों की वैचारिक व राजनीतिक शक्ति सुदृढ़ होती जा रही है, वैसे-वैसे समाजवाद की राजनीतिक प्रणाली में उनका स्थान निरंतर विशिष्ट होता जा रहा है तथा समाज के राजनीतिक संगठन की अन्य कड़ियों के साथ उनके संबंध अधिकाधिक मज़बूत होते जा रहे हैं। राज्य-सत्ता के प्रति दृष्टिकोण इस प्रक्रिया की एक महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है।

राज्य व समाज के मामलों की व्यवस्था में युवा लोग सक्रिय रूप से भाग लेते है। राज्य के प्रशासनिक संस्थाओं में युवा लोगों का प्रतिनिधित्व सिद्धांततः महत्त्वपूर्ण है। वैधानिक संस्थाओं के सभी स्तरों में युवा जन-प्रतिनिधियों का अच्छा प्रतिनिधित्व है। बुल्गारिया की राष्ट्रीय परिषद् में 400 जन-प्रतिनिधियों में 33 प्रतिनिधि 30 वर्ष से कम आयु के हैं। जबकि ज ज ग के जन-संसद के 500 सदस्यों मे यह संख्या 62 है। बुल्गारिया तथा ज ज ग की स्थानीय व्यवस्थापिका में जन-प्रतिनिधियों के 20 प्रतिशत से अधिक प्रतिनिधि इसी आयु वर्ग के हैं।[2] सोवियत संघ व बुल्गारिया में युवा कम्युनिस्ट लीगों को कानून को प्रस्तावित करने का अधिकार है। ज ज ग, हंगरी व क्यूबा ने युवाओं से सम्बद्ध कानूनों को स्वीकारा है। यह सब कुछ समाजवादी प्रजातंत्र के अधिक विस्तार का प्रमाण है।[3]

किन्तु वैधानिक संस्थाओं मे युवजन-प्रतिनिधियों की संख्या प्रशासनिक कार्यों में युवजनों के सम्पादन के स्वरूप को पूर्णरूपेण चित्रित नहीं करती है। युवा प्रतिनिधित्व के स्वरूप भी समान महत्त्व के हैं, जो राज्य व समाज दोनों के मामलों के प्रबंध में युवाओं के विशाल समूह को लगाने के लिए समाजवाद द्वारा दिये गए अवसरों के साक्षी होते हैं। हंगरी में युवा संसदें इस बात के लक्षण हैं जहाँ युवक व युवतियाँ एस एस डब्ल्यू पी एवं हंगरी के राज्य की नीति के अति महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श करते हैं, तथा अपने स्वयं के प्रस्तावों व विचारों को पेश करते हैं। युवा संसद का स्तर वैधानिक रूप से सम्मत है।[4] केवल 1978 में हंगरी के

---

1. टी० शिवकोव, स्टडीज एण्ड लेबर, वॉय ऑफ लिविंग एण्ड डॉरिंग, सोफिया, सोफिया प्रेस, 1978, पृ० 5
2. सोविएत्स्की नोवोस्ती, 10 जुन 1981
3. देखें : सोवियत समाजवादी गणतंत्रीय संघ का संविधान (मौलिक कानून), मास्को 1977; बुल्गारिया के जन गणतंत्र का संविधान, सोफिया, सोफिया प्रेस 1971; यूथ इन द सोशलिस्ट स्टेट, बर्लिन 1974; द यूथ लॉ, एच पी आर, बुडापेस्ट, आल-स्टेट यूथ पोलिटिकल स्टडी कमेटी, 1972
4. द लॉ ऑन द यूथ ऑफ द एच पी आर, बुडापेस्ट 1972, पृ० 29

1,450,000 युवक व युवतियाँ, अर्थात् 16-30 आयु वर्ग की जनसंख्या का 65-70 प्रतिशत ने युवा संसदों के अधिवेशनों में भाग लिया।

युवा लीग तथा अन्य सार्वजनिक संगठनों के मध्य संबंध समाजवादी प्रजातंत्र की प्रणाली में समान उद्देश्यों पर आधारित हैं और सहयोग के सिद्धांतों पर निर्मित हैं। मंगोलियाई ट्रेड यूनियनों की 11वीं कांग्रेस के दस्तावेज़ कहते हैं : "रेव्सोमोल संगठनों के साथ ट्रेड यूनियनों को युवजनों के लिए प्रतिदिन रुचि दिखानी चाहिए, जो अभी हाल में श्रमिक बने हैं और उन्हें अपने नये स्थानों के अनुकूल बनाने में, नए व्यवसायों को सीखने में तथा समाजवादी तौर-तरीकों में रहने और कार्य करने में उनकी मदद करें।"[1] कन्फेडेरेशन ऑफ जर्मन ट्रेड यूनियन्स (सी एफ जी टी यू) की 1977 में नवीं कांग्रेस ने लीग ऑफ फ्री जर्मन यूथ के साथ अपने संयुक्त कार्य पर विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श किया, और युवा दलों के आंदोलन को संगठित करने व प्रेरित करने में एल एफ जी वाई के नेतृत्व का समर्थन किया। सी एफ जी टी यू के नियमों में एक विशेष धारा में 25 वर्ष की आयु से कम युवा यूनियन के सदस्य अपने स्वयं के प्रतिनिधि का चुनाव कर सकें, यह प्रावधान है। युवा लीग के प्रतिनिधि अन्य सार्वजनिक संस्थाओं में नेतृत्वकारी कार्य में संलग्न हैं, और इसे एक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक दायित्व माना गया है।

पार्टी और राज्य के अंगों में तथा सार्वजनिक संगठनों में युवा सदस्यों की सक्रिय भागीदारी उनकी राजनीतिक सूझबूझ तथा चेतना के विकास में, उनमें आत्मगौरव की भावना विकसित करने में सहायक है और उनके सर्वांगिक विकास को आसान करती है।

2. युवाओं की सार्वजनिक गतिविधि

कार्योन्मुख-शिक्षा

समाजवादी देशों के युवा संगठनों की उत्पादन में गतिविधि कार्योन्मुख शिक्षा के प्रश्नों पर, उत्पादन में युवकों व युवतियों को लगाने में, और नई प्रणाली के भौतिक व तकनीकी आधार को निर्मित करने में केन्द्रित है।

वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति के आरम्भ के साथ श्रमिकों की सेना में विशेषज्ञों व श्रमिकों के युवा कार्यकर्त्ताओं का आगमन निरंतर महत्त्वपूर्ण होने लगा। बुल्गारिया में, इलेक्ट्रोनिक उद्योग में 47 प्रतिशत, मशीनों के निर्माण में 38 प्रतिशत तथा रसायन उद्योग का 37 प्रतिशत युवा श्रमिक हैं। कोम्सोमोल की कांग्रेसों के दस्तावेज़ों ने विकसित समाजवाद के भौतिक व तकनीक आधार के निर्माण में युवजनों की भागीदारी को मुख्य कार्य घोषित किया। बी सी पी की

1. द् एलेवेन्थ कांग्रेस ऑफ मंगोलियन ट्रेड यूनियन्स, पृ० 49

11वीं कांग्रेस ने "समाजवाद के निर्माण में और विशेष रूप में अर्थव्यवस्था की प्रगतिशील शाखाओं को प्रेरित करने में युवा पीढ़ी के योगदान की वृद्धि"[1] पर ज़ोर दिया है। हंगरी की युवा कम्युनिस्ट लीग की नवीं कांग्रेस ने विकसित समाजवादी समाज के निर्माण को अपना क्रांतिकारी कार्य और ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी घोषित किया है।[2]

सामाजिक और आर्थिक प्रगति में युवजनों की भागीदारी को दो महत्वपूर्ण लक्षणों द्वारा चित्रित किया जाता है: पहला, समाजवादी समुदाय के सभी देशों में विशेष 'उत्पादन के युवाओं के लिए क्षेत्र' होते हैं। दूसरा, अब युवा लीग श्रम में युवकों व युवतियों को अधिक सक्रिय रूप में लगाने तथा सामाजिक व आर्थिक कार्यों में लगाने के लिए प्रेरित करने के तरीकों व साधनों से समृद्ध हैं। व्यवसायिक निर्देशन, शिक्षण, बड़े आर्थिक कार्यक्रमों का संरक्षण, कोम्सोमोल और युवाओं के दल, उद्योग, यातायात तथा कृषि में कार्यरत युवाओं के समुदायों की प्रतिस्पर्द्धा, युवाओं के रचनात्मक कार्यों के मूल्यांकन, व्यवसायिक प्रतियोगिताएँ, सर्वश्रेष्ठ युवा श्रमिकों और प्रवर्तकों को एकताबद्ध करना आदि युवजनों द्वारा मान्य कार्य के रूपों की पूर्ण गणना से काफ़ी कम हैं।

अधिकांश समाजवादी देशों में युवाओं द्वारा आर्थिक कार्यक्रमों के संरक्षण के अनेक सामान्य स्वरूप हैं: ऐसे अधिक-से-अधिक कार्यक्रम हैं और अधिक-से-अधिक युवक-युवतियाँ इनमें लगे हैं; अब अलग-अलग कार्यक्रमों के संरक्षण से उद्योग, कृषि, विज्ञान और तकनीक की उभरती हुई शाखाओं के संरक्षण की ओर प्रवृत्त होने की प्रवृत्ति है; संरक्षण के स्वरूपों में तथा युवजनों की भागीदारी के अन्य स्वरूप बनते जा रहे हैं, और युवजनों के आगमन से अनेक क्षेत्रों का जनसांख्यिक ढाँचा बदल रहा है।

समाजवादी देशों के आंतरिक जीवन की ये विशेषताएँ अंतर्राष्ट्रीय महत्व के दृष्टिकोणों द्वारा पूरित होती हैं और सहयोग व समाजवादी आर्थिक एकता के लिए व्यापक कार्यक्रम के काम के साथ सम्बद्ध होती हैं। महत्वपूर्ण संयुक्त उद्योग समूहों का निर्माण हो रहा है। सोवियत संघ, पोलैंड, ज ज न व चेकोस्लोवाकिया के युवा संगठनों ने ड्रुझबा तेल पाइप लाईन के निर्माण में मदद करके बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किया। सातवें दशक में अनेकों एकीकृत कार्यक्रमों के निर्माण में युवजन सक्रिय रूप में सम्बद्ध थे, यथा उस्त-इलिम्स्की शहतीर उद्योग (सोवियत

---

1. द् एलेवेन्थ कांग्रेस ऑफ द् बुल्गेरियन कम्युनिस्ट पार्टी, मास्को, पोलितिज़्दात 1977, पृ० 53
2. देखें: शोर्ट प्रोटोकोल ऑफ द् नाइंथ कांग्रेस ऑफ द् हंगेरियन यंग कम्युनिस्ट लीग, बुडापेस्ट, 8-11 मई 1976, पृ० 86

संघ), यूराल में ओरेन्बर्ग से सोवियत संघ के पश्चिमी सीमांत तक सोयुज गैस पाइप-लाईन; मंगोलिया मे अर्डेनेट तांबा और मोलीब्डेनम अयस्क-सकेंद्रण उद्योग ज ज ग, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया तथा हंगरी में विद्युत बेन्ड; क्यूबा मे निकल उद्योग समूह आदि।

उत्पादन मे युवाओं के सामाजिक कार्य ,समाजवादी प्रतियोगी अभियानो मे उनकी भागीदारी और कम्युनिस्ट व समाजवादी श्रमिक दलों के सम्मान हेतु आंदोलन मे व्यक्त होते हैं। यह आंदोलन पांचवें दशक के अंत मे सोवियत युवजनों के नेतृत्व मे समाजवादी देशों के युवजनों में आरभ हुआ, और अन्य समाजवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों तथा युवा लीगो द्वारा तहेदिल से समर्थित था। तोदोर शिवकोव ने कहा : "हम कम्युनिस्ट श्रमिक दलों का समर्थन करते हैं, क्योंकि उनके सदस्य श्रम-उत्पादकता को बढ़ाने, उत्पादित माल के गुण को सुधारने तथा उत्पादन-मूल्यों की कटौती करने···सम्पूर्ण राजनीतिक व सांस्कृतिक स्तर को पूर्णता प्रदान करने···हेतु संघर्ष कर रहे हैं। परिणामतः, कम्युनिस्ट श्रम-दल युवाओं को शिक्षित करने में दो मूल प्रवृत्तियो को संयुक्त करते हैं : कम्युनिस्ट विश्व दृष्टिकोण तथा नैतिकता के साथ नये लोगों, युवकों व युवतियों का अत्यधिक उत्पादक श्रम के साथ लालन-पालन करना।"[1]

1979 में हंगरी में युवा दल के आंदोलन मे 2,33,000 से अधिक युवजन थे। 1970 व 1980 के मध्य ज ज ग मे इन युवा दलों की संख्या 1970 मे 14,000 से 1980 मे 38,000 तक पहुँच गई, जबकि सदस्यता 178,300 से 377,800 तक पहुँच गई। बुल्गारिया में युवा समुदायो मे 114,000 से अधिक युवा श्रमिक कृषक थे—यानी समस्त युवाओं का 22 प्रतिशत भाग उत्पादन से सीधे सम्बद्ध था। चेकोस्लोवाकिया मे 1979 मे 8,500 युवा समुदाय थे जिसमें समाजवादी श्रमिकों के 4,255 दल और उद्योगों की समरूपता के 698 दल थे। मंगोलिया में रैव्मोमोल व युवा दलों की संख्या बढ़ी है और इनमे 20,000 से अधिक युवजन हैं। समाजवादी देशों के युवा आंदोलन मे स्थायी युवा श्रमिक समुदायों (दल, दुकानें, पारियाँ आदि) की स्थापना एक महत्त्वपूर्ण प्रचलित प्रक्रिया है। ये दल युवा श्रमिकों के प्रशिक्षण को सुविधाजनक बनाते हैं, और सभी की भलाई हेतु अपनी क्षमताओं व उत्तरदायित्वों को शीघ्रता से व्यक्त करते हैं।

युवा पीढ़ी को वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति ने नई चुनौतियाँ दी हैं और समाजवाद के देशों ने इस दिशा में अपेक्षाकृत अच्छा ही किया है। बुल्गारिया मे युवाओं के मध्य तकनीकी व वैज्ञानिक रचनात्मक कार्य व्यापक रूप मे हैं; हंगरी मे

---

1. टी० शिवकोव, सेलेक्टेड ऐसेज, जिल्द II, सोफिया, पार्टीज्डाट, 1975 पृ० 243-44

इस आंदोलन का नेतृत्व 'क्रिएटिव यूथ' नामक संगठन के हाथों है, जी.डी.आर. में 'द मास्टर्स ऑफ टुमारो', पोलैंड में 'यूनियन ऑफ यंग मास्टर्स ऑफ टैक्नोलॉजी' और चेकोस्लोवाकिया में 'जेनिथ ऑर्गेनाइजेशन' के हाथों में है। अनेक देशों में छात्रों को स्वतंत्र शोध करने में प्रोत्साहित करने का आंदोलन फैल रहा है। शोध के विषय समाजवादी समाज के आर्थिक, वैज्ञानिक व सांस्कृतिक विकास के ठोस मामलों में छात्रों के योगदान के व्यापक प्रयासों को प्रतिबिम्बित करते हैं। यह सब कुछ आंकड़ों से स्पष्ट है। 1979 में त्रेनिच ने समन्वयता के प्रस्तावों को लागू करके 47 करोड़ कोरून की बचत करवाई। हंगरी में, क्रिएटिव यूथ द्वारा बनवाए कार्यक्रमों ने कई लाखों फोरिन्ट की बचत में मदद की। युवाओं को रचनात्मक बनाने में उत्साह उनकी सामाजिक व राजनीतिक गतिविधि को प्रेरित करता है। युवाओं के साथ काम के सब पहलू वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति की उपलब्धियों के साथ समुदाय के देशों में समाजवादी आर्थिक प्रणाली के लाभों को सावयवी रूप में संयुक्त करने में एक महत्त्वपूर्ण घटक हैं। कार्य के उपरोक्त स्वरूप व साधन युवजनों के मध्य श्रम की गतिविधि को बढ़ाने में युवा लोगों के कार्यों की मुख्य दिशा बन गए हैं, तथा समाजवादी समुदाय के अधिकांश देशों के लक्षण हैं। इनमें कार्यानुभव के व्यापक विनिमय, युवाओं के अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों तथा छात्रों के निर्माण ब्रिगेड में भागीदारी, वैज्ञानिक प्रयत्नों की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी, आदि आते हैं। समाजवादी आर्थिक एकीकरण के साथ यह गतिविधि महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह विश्व समाजवादी प्रणाली को आगे मजबूत करने में मदद करते हुए समाजवाद के देशों के युवा आंदोलन को घनिष्ठता से एक साथ लाने में मदद करती है।

वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा

युवजनों के मध्य वैचारिक व राजनीतिक कार्य के लक्ष्यों व उद्देश्यों के निरूपण में, बिरादराना पार्टियाँ मुख्य निर्देशों को सही रूप में चुनने का भी ध्यान रखती हैं तथा शिक्षा के समाजवादी व कम्युनिस्ट दृष्टिकोण पर जोर देती हैं और सामाजिक चेतना में व्यक्तियों को सक्रिय भी करती हैं। बुल्गारिया की कम्युनिस्ट पार्टी के केंद्रीय समिति की 'युवाओं और कोम्सोमोल के साथ कार्य करने की कुछ मूल समस्याएँ' नामक प्रस्थापना आठ बुनियादी निर्देशों को बताती है: श्रम, समितियों का राजनीतिक जीवन एवं प्रबंध, कला व संस्कृति, सैनिक प्रशिक्षण, शिक्षा, विज्ञान व तकनीक प्रगति, शारीरिक संस्कृति, खेलकूद व यात्रा, और विश्राम व मनोरंजन। यह कहा गया है कि इन क्षेत्रों में कोम्सोमोल को प्रेरक शक्ति होना चाहिए, उसे युवाओं व उनकी चेतना को सही रूप में और सक्रियता के साथ प्रभावित करना

चाहिए।' ज ज श के युवाओ हेतु बने नियमों मे, और अधिकांश कम्युनिस्ट
श्रमिकों की पार्टियों के दस्तावेज़ों में इसी प्रकार के प्रावधान हैं।

विभिन्न संस्थाओं और संगठनों मे नियुक्त युवाओ को प्रभावित करने के रू
मे कोई समरूपता न होना युवाओं के मध्य वैचारिक कार्य की तीव्रता से करने
कार्यक्रमों का एक कारण था। इसने एक ओर तो युवा लीग को शैक्षणिक कार्य
समूची ज़िम्मेदारी दे दी और दूसरी ओर, युवा लोगों के मध्य वैचारिक व शैक्षणि
कार्य मे कम्युनिस्ट पार्टियों के सहयोगियो के रूप मे अपने कर्तव्यों को पूरी त
करने से उन्हें रोका। इसीलिए कम्युनिस्ट पार्टियों ने एक एकीकृत शैक्षणिक
की स्थापना की तथा युवाओ के पालन मे राजकीय सगठनो व सार्वजनिक संस्था
को अधिक उत्तरदायी बनाना आवश्यक समझा। युवाओ को शिक्षित करने
सामाजिक संस्थाओं, मुख्यतया युवा लीग की भूमिका का विश्लेषण किया गया

युवाओ के मध्य वैचारिक व शैक्षणिक कार्य को सुधारने पर पार्टी के निर्द
को पूरा करने में बिरादराना लीग युवा पीढ़ी की राजनीतिक चेतना के स्तर
स्थिति और व्यक्ति विशेष की शिक्षा व निर्माण में एक वैचारिक प्रभाव पैदा क
मे प्रयुक्त विधियो की प्रभावोत्पादकता को ध्यान मे रखती हैं। ऐसा करने के लि
व्यापक स्तर पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान किए जाते हैं, परिणामस्वरूप ब
सारे तथ्य एकत्रित हो गए हैं, जिनके आधार पर शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन कि
जाता है, और महत्त्वपूर्ण कमियाँ ढूँढी जाती हैं।

युवजन अपनाने हेतु सदैव सामाजिक व नैतिक मूल्यों की तलाश मे हैं। अ
केवल समाजवाद ही युवाओं को वास्तविक नैतिक मूल्य प्रदान कर सकता है, जै
समाजशास्त्रीय अनुसंधान से, विशेष रूप मे बुल्गेरिया के समाजशास्त्री इव
पोपोव की कृति 'सेल्फ-पोर्ट्रेट ऑफ ए जेनेरेशन' (पीढ़ी का आत्मचित्रण) से स्प
है। वह लिखते हैं कि आज की बुल्गारियाई युवाओं द्वारा अपनाया प्रमुख अ
अति महत्वपूर्ण मूल्य है, उनकी उद्देश्यपरता। "जीवन में आपका लक्ष्य क्या है
प्रश्न के उत्तर मे उत्तरदाताओं के 85 प्रतिशतों ने जवाब दिया : "कम्युनिज
विजय के लिए जीना और कार्य करना।" उनके लिए सबसे महत्त्वपूर्ण गु
"कम्युनिज्म के लिए, मातृभूमि के लिए प्रेम।" "अध्ययन व श्रम श्रमिक के
मुख्य मूल्य हैं।" उत्तरदाताओ मे 49.3 प्रतिशत लोगों ने अपना सबसे महत्त्व
व्यक्तिगत लक्ष्य शिक्षा की प्राप्ति व अच्छा विशेषज्ञ बनना है। 75 प्रतिशत लो
का सोचना था कि "आज भी क्रांति, उत्साह और साहस हमारे इर्द-गिर्द है।"
मत का विश्वास था कि "समाजवादी श्रम सामान्यतः मानवता का उच्चतर

1. देखें : टी० शिवकोव, 'एबाउट द कोम्सोमोल एण्ड द यूथ', सोफि
सोफ़िया प्रेस, 1968, पृ० 26-27

है और साथ ही, लोगों के निरंतर समाजीकरण और उनके गुणों व मूल्यों के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण शर्त है।" प्रश्नावलियों के उत्तर देने वालों ने आलस्य, कठिनाइयों से भय, शराबखोरी, हुड़दंगबाजी, घनिष्ठ संबंधों के प्रति लापरवाही, फूहड़पन, कथनी व करनी में अन्तर, अहंकारवाद, पूर्वाग्रहों, निष्ठुरता, स्वार्थ, खुशामद, आलोचना से भय, राजनीति के प्रति उदासीनता आदि की निंदा की।[1]

शिक्षा के अनेकों स्वरूपों में राजनीतिक शिक्षा एक विशिष्ट स्थान रखती है। आयु, सामान्य शिक्षा-स्तर, तथा व्यवसायिक विशेषताएँ युवजनों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के अध्ययन के इस स्वरूप में अधिकाधिक रुचि लेने योग्य बनाने हैं। युवाओं का अत्यन्त विराट हिस्सा राजनीतिक अध्ययनों में संलग्न है। राजनीतिक बौद्धिकता की प्रणाली न सिर्फ़ युवा लीगों के सदस्यों में बल्कि ऐसे युवकों व युवतियों मे भी, जो राजनीतिक युवा संगठनों से सम्बद्ध नहीं हैं, तेजी से फैल रही है। युवा लीगें कोम्सोमोल के सदस्यों और सोवियत संघ में सेवारत युवजनों को दी जाने वाली शिक्षा का अध्ययन करते हैं तथा अपनाते हैं, विशेषकर लेनिनवादी पाठ व सोवियत कोम्सोमोल द्वारा संचालित परीक्षाओं को।

युवाओं की विभिन्न श्रेणियों (श्रमिक, छात्र, बच्चों) के लिए, उनके सामान्य शैक्षणिक स्तर को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक बौद्धिकता व शिक्षा की प्रभावशाली प्रणाली के निर्माण की ललक ने अध्ययन के नवीन स्वरूपों को जन्म दिया है। बुल्गारिया में, एक 'राष्ट्रीय राजनीतिक प्रतियोगिता' है जबकि रोमानिया में 'कम्युनिस्ट पद्धति में जीना व कार्य करना' नामक भाषण-मालाएँ आयोजित की जाती हैं।

युवा लीगों ने देशभक्ति की शिक्षा के क्षेत्र में काफ़ी अनुभवों को एकत्रित कर लिया है। जुझारू लोगों की पूर्ववर्ती पीढ़ियों के ऐतिहासिक अनुभव को आज के युवाओं द्वारा अध्ययन करने का एक बहुत अच्छा राजनीतिक रूप है क्रांतिकारी संघर्ष, और श्रम के शौर्य के स्थानों पर अखिल-संघ यात्रा, जिसका आरंभ महान अक्तूबर क्रांति की 50वीं वर्षगांठ के लिए कोम्सोमोल की तैयारी के दौरान किया गया था; यह समाजवादी समुदाय के ढांचे के अंतर्गत एक अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन के समान बन गया। युवा लीगों के प्रतिनिधियों ने यात्रा में भाग लेने वालों की अखिल संघीय रैली निकाली, और अपने-अपने स्थानों पर इसी प्रकार के अभियानों का आयोजन किया। हंगरी में यह 'युवाओं के क्रांतिकारी दिनों' के नाम से पुकारा जाता है, क्यूबा में प्रतिवर्ष 'कैमिलो और चे के अनुयायियों' ऐसे अभियान करते हैं, बुल्गारिया में 'मातृभूमि के लिए अभियान' और 'हमारी जनता के क्रांतिकारी,

---

1. देखें: इवान पोपोव, आइडोलॉजी, यूथ, वेल्यूज़, सोफ़िया, मरोडोव म्लाडेज, 1973

संघर्ष और श्रम के शौर्य के मार्ग पर' छात्रों के अभियान होते हैं; पोलैण्ड में 'थोड्ड्स कोस्कीस्को डिवीजन के मार्ग पर' और वियतनाम में 'प्रतिरोध के पथ पर' नामक अभियान आयोजित होते हैं।

युवाओं के जन-प्रचार साधन यथा, प्रकाशन-गृह, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो और टेलीविज़न के प्रसारण कम्युनिस्ट शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। प्रत्येक लीग के अपने केंद्रीय समाचार-पत्र तथा विशिष्ट प्रकाशन हैं। प्रतिवर्ष प्रकाशन-गृह लाखों की संख्या में युवाओं के विषय पर पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। जन-सचार माध्यम युवाओं के मध्य मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रचार में तथा बिरादराना युवा लीग क्या कर रही है, इसे बताने में काफ़ी कुछ करते हैं, इस प्रकार समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माता, एक नए इन्सान के निर्माण में, एक समान लक्ष्य में मदद देते हैं।

युवा लोगों के सामान्य शिक्षा-स्तर को बढ़ाने, व्यवसायिक प्रशिक्षण को सुधारने, युवा लोगों के खाली समय का उपयोग करने, और शौकिया कलाओं, शारीरिक संस्कृति, खेलकूद और यात्रा को उन्नत बनाने में बहुत कुछ करते हुए युवा लीग सांस्कृतिक क्रांति के विकास में सक्रिय हैं।

उच्चतर स्कूलों में छात्रों को शैक्षणिक अध्ययनों के साथ घनिष्ठ रूप में वैज्ञानिक शिक्षा प्रदान करने में विशेष ध्यान दिया जाता है। उच्चतर स्कूल न सिर्फ योग्यता प्राप्त विशेषज्ञों को बनाये बल्कि जनता कम्युनिस्ट आस्था अपनाए इसमें और अपने समाजवादी देश पर पूर्णतया समर्पित देशभक्त व अंतर्राष्ट्रीयवादी बनाने में उन्हें मदद करनी चाहिए, इसे निश्चित करने में समाजवादी समुदाय के देशों की कम्युनिस्ट पार्टियाँ निरंतर प्रयत्न करती हैं। यह कार्य वर्तमान में दुनिया को दो प्रकार की प्रणालियों के मध्य वैचारिक संघर्ष की तीव्रता को देखते हुए विशेषकर आवश्यक है।

नवीन सामाजिक संबंधों के विकास व विस्तार को एक नए व्यक्ति यथा, कम्युनिस्ट समाज का सक्रिय निर्माता को शिक्षित करने और नए प्रकार की सामाजिक चेतना में ढालने की अत्यंत दुरूह प्रक्रिया ने, (और वह भी विरोधी सामाजिक प्रणालियों के मध्य वैचारिक व राजनीतिक रूप में कटु संघर्ष के समय पर) अनेक कठिनाइयों, समस्याओं व प्रश्नों को जन्म दिया है। युवा इससे अलग नहीं हैं। और गंभीर प्रयत्न व व्यापक अनुभव का परिणाम तथा व्यवहार और जीवन द्वारा प्रमाण ही इन समस्याओं का सबसे अधिक सम्भव समाधान है।

जैसे-जैसे समाजवाद का निर्माण हो रहा है वैसे-वैसे वस्तुगत और आत्मपरक दोनों प्रकार की विरोधी और नकारात्मक घटनाएँ हो रही हैं जो प्रगति को अवरुद्ध करती हैं। उन पर ध्यान न देना या उनसे संघर्ष न करना उनके लिए उर्वरकता

प्रदान करने के समान होगा। यह मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों और उनके वास विक सहयोगियों—युवा कम्युनिस्ट लीगों—की गतिविधियों की आलोचनात्म क्रांतिकारी भावना नहीं है। हालांकि, उन्होंने युवाओं के साथ अपने वैचारिक क में एक आदिम, इकतरफे दृष्टिकोण से स्वयं को मुक्त नहीं किया है, युवजनों मध्य पार्टी के प्रचार की प्रभावोत्पादकता के मापदंड का अभी भी पर्याप्त रू अध्ययन नहीं हुआ है और उनके सामाजिक मनोविज्ञान व विशेष सामाजिक व्य हार का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। पोपोव के अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि 28 व की उम्र से कम बुल्गेरिया के 12 प्रतिशत युवजन इस तरह का व्यवहार करते जो आज की दुनिया के प्रति उनकी निश्चित उदासीनता को बतलाती है। निराश वाद, राजनीति के प्रति उदासीनता, व्यापारवाद, अलगाव, उत्तरदायित्व का अ पूर्ववर्ती पीढ़ी के अनुभव के लिए बहुत कम सम्मान और भविष्य के प्रति आश ये सब घटनाएँ चेतावनी भरी हैं जो युवाओं के एक तबके में पायी जा सकती हैं।

युवाओं के साथ वैचारिक कार्य की यह एक कमी है कि युवाओं की समस्याअ पर सतही व अनियमित रूप में विचार-विमर्श होता है। उत्पादन के महत्वपू प्रश्नों के सिद्धांतों के समाधान में युवा सदैव सक्रिय रूप में भाग नहीं लेते हैं। राज नीतिक बौद्धिकता के लिए अकसर पुराने घिसे-पिटे तरीके ही अपनाए जाते हैं ऐसे भाषण, जिनसे प्रश्न या वाद-विवाद न हो सके और जो वास्तविक जीवन अलग हैं, नीरस होते हैं तथा तर्कहीन व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं। वैचारिक कार्य ये नकारात्मक लक्षण हैं। बुर्जुआ विचारों की आलोचना संक्षिप्त और कमज़ो तर्क वाली होती है। समाचारपत्रों में, विशेषकर युवाओं के समाचारपत्रों वैचारिक प्रचार में कमियाँ हैं, युवा लोगों की रुचि को कैसे समझा जाए, कैसे उन्हे सोचने को बाध्य किया जाए तथा विश्वास दिलाया जाए कि मार्क्सवादी विचार धारा सही है, यह वे सदैव नहीं जान पाते हैं।

यह विश्वास करना ग़लत होगा कि युवा लोगों को केवल सकारात्मक उदाह हरण ही देने चाहिए, कि वे कठिनाइयों व ग़लतियों को करके, उन्हें समझने अयोग्य हैं। युवाओं में विश्वास की कमी उनके लिए घातक हो सकती है। युवा लोगों के साथ, गंभीरतापूर्वक, स्पष्ट रूप में और ईमानदारी से बात करनी चाहिए और वह भी न सिर्फ सफलताओं के बारे में बल्कि ग़लतियों के बारे में भी।

युवाओं की वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा में कमियाँ, विशेषकर इस समय जब विश्व की दो प्रणालियों के मध्य वैचारिक संघर्ष तीव्र है, कुछ देशों में पैटी-बुर्जुआ राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति तथा गृह-नीति में भूलें व ग़लतियों के परिणाम-स्वरूप समाजवाद-विरोधी शक्तियों के प्रभाव बढ़ रहे हैं। इसका अच्छा उदाहरण 1968-1969 में चेकोस्लोवाकिया की घटनाएँ हैं, जब युवाओं के एक बड़े तबके ने स्वयं को सुधारवादी तत्वों से प्रभावित दर्शाया। इस समय पर चेकोस्लोवाकिया

की समाजवादी युवा लीग ने कहा था, "वास्तव में विद्यमान वर्ग-विभाजित विश्व के समक्ष विकास हेतु—पूँजीवाद या समाजवाद—दो विकल्प हैं, इसीलिए कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे समाजवादी समाज के विकास को सुविधाजनक बनाने की रक्षा तथा जी-तोड़ प्रयत्न करना युवा पीढ़ी के लिए आवश्यक है।"[1]

जोसिप ब्रोज टीटो ने इंगित किया कि "युगोस्लोवाकिया के युवा सगठन की कमियो पर सारा दोष केवल युवाओं को नही देना चाहिए। काफी हद तक वे हमारे समाज और स्वयं कम्युनिस्टो की लीग मे दिखाई देने वाली कमियों को प्रतिबिंबित करती हैं। ये कम्युनिस्ट थे···जो युवाओं के प्रति अपने दायित्व को भूलने लगे, तथा उनकी मार्क्सवादी शिक्षा में बहुत कम ध्यान दिया।"[2] युगोस्लोवाकिया के समाजवादी युवा की लीग की नवीं कांग्रेस के निर्णय के अनुसार सम्पूर्ण गणतन्त्रों व स्वयत्तासी क्षेत्रों में सैद्धांतिक अध्ययनों के केंद्रों के साथ-साथ युवाओं के राजनीतिक स्कूल व समूह, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मौलिक सिद्धांतों और देश की सामाजिक व राजनीतिक जीवन के प्रमुख प्रश्नो का अध्ययन करते हैं, की स्थापना की गई।

सातवें दशक के अंत और आठवें दशक के आरम्भ मे, पोलैण्ड के युवा आंदोलन ने स्वयं को सकट मे पाया, क्योंकि इस देश मे विद्रोही विचारधारा से संघर्ष करने के कोई व्यावहारिक प्रयत्न न थे। वास्तव में पोलैण्ड के सामाजिक-आर्थिक ढांचे मे एक विराट पैटी-बुर्जुआ आधार के परिणामस्वरूप पैटी बुर्जुआ दृष्टिकोणों, विचारो, अवधारणाओं, मनोविज्ञान व आदतों की निरंतरता बनी रही बल्कि युवाओं पर इसके प्रभाव का विकास भी हुआ। राजनीतिक संकट के काल के दौरान अनेक पोलिश युवाओं ने दर्शा दिया कि वे समाजवाद-विरोधी विचारधारा के शिकार हैं, वैचारिक रूप मे सिद्धांतहीन हैं और दुःसाहसिक कार्यों में फँसने व समर्पित होने में तत्पर हैं।

'पोलिश यूनाइटेड वर्कर्स पार्टी' युवाओं की समाजवादी शिक्षा के बारे मे विशेष रूप मे चिंतित है। यह पोलिश युवजनो की देशभक्ति और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के लिए परिवार मे, स्कूल व उद्योग मे, सार्वजनिक संस्थाओ मे और पड़ोस में पार्टी के सभी सदस्यो को जिम्मेदार मानती है, ताकि युवजन वास्तविक नागरिक बनें, अपने समाजवादी देश की नियति के लिए उत्तरदायित्व का अनुभव करें, आस्थापूर्वक इसकी सेवा कर सकें, सचेत होकर ज्ञान व काम करने की अच्छी आदतें अपना सकें, और नैतिकता के समाजवादी सिद्धांतो द्वारा निर्देशित हो सकें। पोलैंड

---

1. सम बेसिक क्वेश्चन्स ऑफ द डवलपमेंट आफ द चिल्ड्रेन्स एण्ड यूथ मूवमेंट इन चेकोस्लोवाकिया, प्राग, 1971, पृ० 42
2. ग्लसहोस्ट, 28 नवम्बर, 1974

के कम्युनिस्ट उन युवा लोगों का समर्थन कर रहे हैं, जिनकी वैचारिक घोषणाएँ, अभिव्यक्तियाँ तथा मुख्यतया उनके ठोस कार्य समाजवादी मंच से उठाये गए हैं।

समाजवादी समुदाय के देशों की पार्टी के दस्तावेजों ने जोर दिया है कि युवाओं पर युवा लोगों के वैचारिक प्रभाव की प्रक्रिया कोई स्वतः प्रेरित प्रक्रिया नहीं है। युवाओं को लीग में भर्ती होने के लिए आकर्षित करना ही आवश्यक नहीं है, बल्कि उनकी निष्ठा को अपने पक्ष में लेना भी आवश्यक है, ताकि वे समाजवादी प्रणाली की प्रगति का तहेदिल से समर्थन कर सकें। यह समाजवादी देशों में युवाओं की मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा की प्रभावोत्पादकता को अधिकतर निर्धारित करता है।

अंतर्राष्ट्रीयतावादी शिक्षा

युवा लोगों की गतिविधियों और समाज में युवा पीढ़ी को अधिक सक्रिय बनाने के लिए युवा लोगों, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी शिक्षा और विश्व के समाजवादी समुदाय को मजबूत करने में युवजनों की भूमिका के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एक आधार है।

युवा लोगो के घोषणापत्र अपनी अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि और अन्तर्राष्ट्रीयतावादी शिक्षा के उद्देश्य व मुख्य दिशाओं की घोषणा करते हैं। दिमित्रोव युवक लीग का घोषणापत्र कहता है कि "दिमित्रोव युवा कम्युनिस्ट लीग···समाजवादी देशों के युवजनों और संसार के प्रगतिशील युवाओं के साथ मैत्री व सहयोग को बढ़ा रही है, शान्ति के लिए योगदान दे रही है, प्रजातान्त्रिक युवा संगठनों के कार्य में सक्रिय है, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रवाद की भावना में तथा मुक्ति व राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत जनता के साथ एकजुटता की शिक्षा युवजनों को दे रही है।"[1]

जैसे-जैसे समाजवादी प्रणाली मजबूत हो रही है और विश्व क्रान्तिकारी प्रक्रिया पर प्रभाव बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे समाजवादी देशों की युवा लीगों के मध्य दोस्ती व सहयोग को प्रोत्साहन मिल रहा है। समाजवादी देशों के युवाओं के मध्य सम्बन्ध उत्पादन व सामाजिक जीवन के समस्त पहलुओं को अपने में समेटे हुए, अत्यन्त विकसित, नियमित व स्थायी हैं।

यह महत्वपूर्ण प्रक्रिया कम्युनिस्ट शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण के चारों ओर घूमती है जिसका आधार समूचा समाजवादी समाज यथा, समान विश्व-दृष्टिकोण, मार्क्सवाद-लेनिनवाद है। युवजनों के लिए, उनके वैचारिक, राजनीतिक, श्रम-सम्बन्धी, देशभक्ति अन्तर्राष्ट्रीयतावादी, नैतिक, सौन्दर्यबोधात्मक व शारीरिक

---

1. चार्टर ऑफ दिमित्रोवस्की कोम्स, म मरोद्नता स्मदेझ, सोफिया, 1972, पृ० 13-14

शिक्षा के अध्ययनों के लिए इसी प्रकार के रूप और पद्धतियाँ युवा लोगों ने सचालित की हैं।

समाजवादी देशों के युवा लोग अपनी समाजवादी उपलब्धियों को सुरक्षित रखने मे भी एकजुट हैं, जैसा साम्राज्यवादी आक्रमण का मुकाबला करने के लिए युवा लोगों ने क्यूबा व वियतनाम को आर्थिक, राजनीतिक व नैतिक सहायता दी और आंतरिक प्रतिक्रांति व बाह्य प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध पोलैंड मे समाजवादी उपलब्धियों को सुरक्षित रखने मे मदद दी।

विश्व युवा आंदोलन में समाजवादी देशों की युवा लोगों द्वारा समन्वित कार्य-क्रम एक महत्त्वपूर्ण लक्षण है। यह गतिविधि शान्ति, प्रजातंत्र व सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष पर केन्द्रित है। 'वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिक यूथ' तथा 'इन्टर-नेशनल यूनियन ऑफ स्टूडेण्ट' मे और इनकी विश्वव्यापी युवा व छात्रा महोत्सवों को सगठित करने में युवा लोग सक्रिय हैं। बिरादराना देशों मे युवा लोग विकसित पूँजीवादी विश्व मे युवा कम्युनिस्टों के साथ, जो अति महत्त्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक समस्याओ के वास्तविक समाधान के लिए और शोषण व इजारेदारी पूँजी के आधिपत्य को समाप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, सर्वहारा एकजुटता को मज़बूत कर रहे हैं।

समाजवादी देशों की युवा लीग ग़ैर-कम्युनिस्ट प्रगतिशील युवा सगठनो के साथ सहयोग कर रही हैं। और कम्युनिस्ट पार्टियाँ प्रजातांत्रिक युवा आदोलन मे विभिन्न राजनीतिक शक्तियों के मध्य एकता के निर्माण को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानती हैं।

एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका के युवा लोगो के साथ, जो औप-निवेशिक व्यवस्था को पूर्णतया समाप्त करने के लिए, अपनी अर्थव्यवस्था व सस्कृति के पुर्ननिर्माण के लिए, फासीवादी सैनिक सत्ता को खत्म करने व सामा-जिक मुक्ति को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, साम्राज्यवाद विरोधी एकजुटता समाजवादी देशों के युवा लीगों की अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि का प्रमुख तत्त्व है।

प्रजातांत्रिक युवाओं को एकताबद्ध करने का कार्य, एकता के मध्य मैत्री के सिद्धांतों व विचारो के निर्धारण व व्याख्या, बुर्जुआ राष्ट्रवाद के विरुद्ध संघर्ष और अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता के साथ सम्बद्ध है। युवा लोगो के कार्य का यह स्वरूप आज के वैचारिक संघर्ष में मुख्य स्थान रखता है। अन्तर्राष्ट्रवाद के सिद्धांतों के लिए संघर्ष विप्रराव के विरुद्ध संघर्ष है और प्रगतिशील सामाजिक विकास के लिए संघर्ष मे युवा आंदोलन के लिए एक समान रणनीति तथा कार्यनीति के निर्धारण हेतु संघर्ष है।

उपरोक्त बातों से, समाजवादी देशों की सत्ताधारी बिरादराना पार्टियों की

युवाओं से सम्बन्धित नीति निम्नांकित मुख्य दिशाओं में संचालित होती है :

—बुर्जुआ विचारधारा की समस्त अभिव्यक्तियों को दृढ़ता से नकारते हुए, युवजनों के मध्य वैचारिक व शैक्षणिक कार्य को पूर्णता प्रदान करना, युवा संगठनों की कम्युनिस्ट प्रकृति को गम्भीरता प्रदान करना और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना में युवाओं के विशाल समुदाय पर उनके प्रभाव को व्यापक बनाना;

—समाजवाद व कम्युनिज्म के निर्माण में युवा लोगों को अधिक सक्रिय रूप में सम्बद्ध करना, युवा पीढ़ी समाज में सक्रिय रहे यह सिखाना, उन्हें कम्युनिस्ट नैतिकता, देशभक्ति व सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रवाद की भावना में शिक्षित करना;

—युवा लीग के आकार को अधिक विकसित करना, उनकी संरचना व कार्य के तरीक़ों को पूर्णता प्रदान करना, तथा समाज के मामलों में उन्हें अधिक भूमिका प्रदान करना।

समाजवादी देशों की कम्युनिस्ट युवा लीगों की गतिविधियों का एक विश्लेषण दर्शाता है कि यद्यपि उनमें कुछ भिन्नताएँ हैं, फिर भी इन सभी को छूपाते हुए समाजवाद की राजनीतिक प्रणाली में अन्य कड़ियों के साथ युवा लीगों के सम्बन्ध और समाजवादी समाज में युवा लीगों की स्थिति व भूमिका को निर्धारित करने वाले मूल सिद्धांत के कुछ सामान्य लक्षण हैं। ये हैं—

—समाजवादी समाज की राजनीतिक प्रणाली में युवा लीग एक आवश्यक सम्पर्क सूत्र है;

—उत्पादन और सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों में समाजवादी रूपातरणों में युवा लीग सक्रिय रूप से सम्बद्ध है;

—युवा लीग कम्युनिस्ट पार्टी व युवाओं के मध्य सम्पर्कों का ठोस संगठनात्मक रूप है, जो युवा पीढ़ी को पार्टी की नीति बतलाता है और युवाओं की कम्युनिस्ट शिक्षा के लिए एक साधन है;

—युवा लीग एक सार्वजनिक संगठन है, सामाजिक गतिविधि के सभी क्षेत्रों में युवाओं की आत्माभिव्यक्ति का एक साधन है;

—समाजवादी देशों में युवजन विश्व युवा आंदोलन, जो विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन की आरक्षित शक्ति है, के हरावल दस्ते हैं।

समाजवादी देशों में युवा आंदोलन का समूचा इतिहास दर्शाता है कि केवल कम्युनिस्ट पार्टियों से निर्देशित होने पर ही युवा लीग, पूर्णतया एक नए तरीक़े में समाज के पुनर्निर्माण में संघर्षशील समाजवाद व कम्युनिज्म की विजय के लिए संघर्षशील, युवा पीढ़ी के हितों व अधिकारों की सही वकालत कर सकती है।

अध्याय : 4

समाजवादोन्मुख देशों में क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीग

द्वितीय विश्वयुद्ध में फासीवादी व सैन्यवादी धुरी राष्ट्रों की हार तथा तत्पश्चात् समाजवाद, प्रजातंत्र व राष्ट्रीय मुक्ति के पक्ष में शक्तियों के सन्तुलन के झुकाव के आमूल परिवर्तनों ने एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका के राजनीतिक नक्शे को मूलतः परिवर्तित कर दिया। साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों के आक्रमण के फलस्वरूप पूर्ववर्ती औपनिवेशिक साम्राज्यों के स्थान पर दर्जनों स्वतंत्र देश आ गए। सो स क पा की 26वीं कांग्रेस ने इस बात पर जोर दिया : "ये देश बहुत भिन्न हैं। स्वतंत्रता पश्चात इनमें से कुछ ने क्रांतिकारी प्रजातांत्रिक पथ अपना लिया है। अन्य में पूँजीवादी सम्बन्धों ने जड़ें जमा ली हैं। उनमें कुछ सचमुच स्वतंत्र नीति अपना रहे हैं, जबकि अन्य आज भी साम्राज्यवादी नीति के नेतृत्व के तले हैं। संक्षेप में, चित्र बहुरंगी बन गया है।"[1]

नव-स्वतंत्र देशों में समाजवादोन्मुख देशों का एक विशेष स्थान है। अपनी साम्राज्यवाद विरोधी, सामंतवाद विरोधी, प्रजातांत्रिक क्रांतियों की विजय के पश्चात इन देशों ने समाजवाद की ओर संक्रमण का पथ अपना लिया है। कम्युनिस्ट व श्रमिकों की पार्टियों की अन्तर्राष्ट्रीय बैठक (1969) ने बतलाया कि "हमारे युग की क्रांतिकारी परिस्थितियों के प्रभाव के अन्तर्गत नव-स्वतंत्र देशों ने प्रगतिशील सामाजिक विकास के विशेष स्वरूप अपना लिये हैं तथा क्रांतिकारी व प्रजातांत्रिक शक्तियों की भूमिका बढ़ चुकी है।"[2]

हाल के वर्षों में यह प्रवृत्ति और भी विकसित हुई है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्षेत्र में शक्तियों के हरावल दस्ते, समाजवादोन्मुख देश अधिक संख्या में बन रहे हैं। पुर्तगाली उपनिवेशवाद के ढहने के पश्चात अंगोला, गिनी-बिसाऊ व मोजाम्बिक ने समाजवादी दिशा का चुनाव किया। जैसे ही बीसवीं शताब्दी के

---

1. डॉकूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशंस, द 26थ कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ सोवियत यूनियन, पृ० 16
2. इन्टरनेशनल मीटिंग ऑफ कम्युनिस्ट एण्ड वर्कर्स पार्टीज, मास्को, 1969, पीस एण्ड सोशलिज्म पब्लिशर्स, प्राग, 1969, पृ० 28

सातवें दशक की समाप्ति हुई और आठवें दशक का आरम्भ हुआ वैसे ही अल्जीरिया, अफगानिस्तान, बेनिन, गिनी, कांगो, यमेन का प्रजातांत्रिक गणतन्त्र (पी डी आर वाई), लीबिया, तंजानिया मैडागास्कर, इथोपिया, निकारागुआ व अन्य स्थानों पर क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक शक्तियों ने अपनी स्थितियाँ मजबूत कर लीं।

इन देशों का प्रगतिशील विकास जटिल परिस्थितियों में से गुजरता जा रहा है। इसका मूल उद्देश्य है धीरे-धीरे साम्राज्यवादी इजारेदारियों, स्थानीय बड़े बुर्जुआजी व सामंती जमींदारों की स्थितियों को समाप्त करना, विदेशी पूँजी को रोकना, अर्थव्यवस्था में जनता का राज्य अत्यन्त शक्तिशाली शक्ति है इसे निश्चित करना, सुनियोजित आर्थिक विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना, ग्रामीण सहकारी आंदोलन को उत्साहित करना, सार्वजनिक जीवन में श्रमिक जनों को अधिक भूमिका प्रदान करना, जनता के प्रति प्रतिबद्ध अधिकारियों के साथ राज्य के उपकरणों को धीरे-धीरे शक्तिशाली बनाना तथा साम्राज्यवाद-विरोधी विदेश नीति का संचालन करना।

इतिहास दर्शाता है कि समाजवादोन्मुख समाज का निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है तथा सदैव सीधी रेखा के रूप में विकसित नहीं होता है। ऐसे स्थानों पर जहाँ बुर्जुआ समर्थक शक्तियाँ पहल करने में समर्थ हैं वहाँ सामान्यतः टेढ़े-मेढ़े रास्तों से विकास हुआ है तथा कभी-कभी प्रगतिशील विकास से पूर्णतया जुदाई है(जैसे—मिस्र व सोमालिया में)। किन्तु सब कुछ मिलाकर समाजवादोन्मुख देश चाहे पूरी तरह व्यवस्थित तरीक़े से आगे नहीं बढ़ पाए हैं, फिर भी इसका अर्थ यह नहीं है कि समाजवादोन्मुखता की प्रवृत्ति व्यवहार्य नहीं है। उष्ण कटिबंधीय व दक्षिणी अफ्रीका के अनेक देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधियों की बैठक (1978) के एक दस्तावेज़ ने कहा कि "प्रगतिशील अफ्रीकी देशों की समाजवादोन्मुखता आधुनिक युग के, एक शोषित प्रणाली से समाजवाद को संक्रमण पर देशों की बढ़ती हुई संख्या के युग के वस्तुगत नियमों की अभिव्यक्तियों में एक है।"[1]

कुछ क्रांतिकारी प्रजातंत्रों ने (अंगोला, बेनिन, कांगो, पी डी आर वाई, मोजाम्बिक तथा इथोपिया में) वैज्ञानिक समाजवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपने वैचारिक आधार के रूप में घोषित किया है। उन्होंने समाजवाद के लिए संघर्षकर्ताओं के एक हरावल संगठन—एक हरावल पार्टी के निर्माण करने के वस्तुगत कार्य को सामने रखा है। तथा राज्य के प्रबंध हेतु श्रमिक जनों व सार्वजनिक संगठनों के विराट तबकों को लगाया जा रहा है।

---

1. द अफ्रीकन कम्युनिस्ट, लन्दन, संख्या 75, 1978, पृ० 6

लेनिन ने लिखा, "विश्व क्रांति में सन्निकट निर्णायक संघर्षों में, दुनिया की जनसख्या के बहुमत का आदोलन, जोकि आरम्भ में राष्ट्रीय मुक्ति की ओर निर्देशित है, पूँजीवाद व समाजवाद के विरुद्ध बदल जाएगा और सम्भवत., हमारी आशा से अधिक क्रांतिकारी भूमिका अदा करेगा।"[1] लेनिन की बुद्धिमत्तापूर्ण भविष्यवाणी को जीवन ने पूर्णतया सही सिद्ध कर दिया। विश्व समाजवाद के समर्थन पर विश्वास करते हुए, तथा दूसरी क्रांतिकारी शक्तियों के साथ सामजस्य रखते हुए राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन गुणात्मक रूप मे नई सीमाओ तक पहुँच चुका है। क्रांतिकारी सर्वहारा व राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियाँ साम्राज्यवाद-विरोधी एक ही दिशा में कार्य करती हैं तथा समान शत्रु—विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष मे एक सुदृढ मित्रता हेतु एक वस्तुगत आधार रखती हैं—लेनिन का यह दूसरा निष्कर्ष भी सही प्रमाणित हो चुका है।

1. निर्माण की प्रक्रिया में क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीग

युवा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की गतिविधि

1917 की महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति ने एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका मे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर अपना निर्णायक प्रभाव डाला है तथा वहाँ के युवा आदोलन में एक नई अवस्था का सूत्रपात किया है। इसने क्रांतिकारी युवाओ, जुझारु सर्वहारा तथा राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन के मध्य सबधों को सुदृढ़ करने की प्रेरणा दी है। युवा आदोलन मे अक्तूबर क्रांति का सबसे बड़ा क्रांतिकारी प्रभाव मार्क्सवादी-लेनिनवादी लीगों का निर्माण था जिन्होंने युवा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (वाई सी आई) मे एक साथ प्रवेश लिया। लातीनी अमेरिका, एशिया तथा उत्तरी व दक्षिणी अफ्रीका मे कम्युनिस्ट युवा आदोलन के विकास पर वाई सी आई का एक जबरदस्त प्रभाव था, जब अर्जेन्टीना, चीन, उरुग्वे, दक्षिणी अफ्रीका, ब्राजील, चिली, कोस्टारिका व अन्य देशो मे कम्युनिस्ट युवा लीग बनी। कम सर्वहारा, कमजोर श्रमिक आंदोलन, क्रूर औपनिवेशिक प्रणाली व अन्य घटक इनका परिणाम यह था कि औपनिवेशिक देशो मे युवा आंदोलन में ये नेतृत्व प्रदान नहीं कर सकते हैं। इस क्षेत्र के अनेक देशों मे कोई कम्युनिस्ट युवा लीग नही थी।

औपनिवेश के प्रश्न वाई सी आई की दूसरी कांग्रेस (जुलाई 1921) के एजेन्डा मे थे। कांग्रेस द्वारा उत्पीड़ित व पराधीन देशों के युवजनों की स्थिति का विश्लेषण करने वाला तथा "पूर्व व पश्चिम के युवा आदोलन को वैचारिक व

1. वी० आई० लेनिन, 'थर्ड कांग्रेस ऑफ द् कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल' कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 32, पृ० 482

व्यावहारिक दृष्टि से एक साथ लाना"[1] आज की आवश्यकता है कि घोषणा करने वाला एक विशेष दस्तावेज स्वीकारा गया। वाई सी आई द्वारा संयोजित सभी परवर्ती बड़े अंतर्राष्ट्रीय मंचों में औपनिवेशिक व अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों में काम करने की समस्याएँ भी जाँची गई थी। पूर्ववर्ती निर्देशनों की सावधानी से जाँच की गई तथा नए स्वरूपों व तरीकों की खोज की गयी। साथ ही, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने इसी प्रकार से कार्य करने के लिए युवा कम्युनिस्टों को जोर दिया। इसने कहा, "युवाओं के अलावा कोई भी साम्राज्यवादी उत्पीड़न को इतनी गम्भीरता व भावमयता के साथ महसूस नहीं करता, और न ही इस दमन से संघर्ष करने की आवश्यकता को अनुभव करता है।"[2]

राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में युवा पीढ़ी की भूमिका पर जोर देते हुए कामिटर्न व वाई सी आई ने युवाओं के विभिन्न सामाजिक स्तर की क्रांतिकारी क्षमता को और अधिक विकसित करने का प्रयास किया है। क्योंकि मुक्ति संघर्ष में वे क्रांतिकारी सर्वहारा प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए उपनिवेशों के युवजनों में अपने कार्य पर कम्युनिस्ट युवा श्रमिकों में, विशेषकर थोड़े-बहुत औद्योगिक विकास के साथ उन पराधीन देशों में जहाँ श्रमिक वर्ग का उदय हो चुका है, प्रमुख रूप से समर्थन की तलाश करते हैं। यद्यपि पूँजीवादी संसार में अपने भाइयों के समान उपनिवेशों में युवा श्रमिकों में अधिक वर्ग-चेतना नहीं है, वे संख्या में कम तथा सांस्कृतिक व शैक्षणिक स्तर पर काफी नीचे हैं फिर भी वे युवा पीढ़ी के सबसे अधिक संगठित तबका हैं।

उत्पीड़ित देशों में युवा श्रमिकों के अधिक समर्थन को पाने के अपने प्रयासों को निर्देशित करते हुए, कामिटर्न व वी सी आई ने यह अनुभव किया कि वहाँ सर्वहारा एक प्रमुख शक्ति नहीं है, अतः उन्होंने गैर-सर्वहारा युवाओं में अधिक कम्युनिस्ट प्रभाव के लिए निरंतर आह्वान किया। वहाँ ग्रामीण युवा प्रमुख थे क्योंकि उपनिवेशों में जनसंख्या का विशाल बहुमत कृषकों का था। जैसा ज्ञात है लेनिन ने औपनिवेशिक और अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों के कम्युनिस्टों को किसानों पर ध्यान देने का आह्वान किया था। पूर्वी सोवियत के कम्युनिस्टों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था : "इस विषय में आपका वास्ता उस काम से है जिसे संसार के कम्युनिस्टों ने पहले नहीं किया : कम्युनिज्म के सामान्य सिद्धांत व व्यवहार पर भरोसा रखते हुए आपको उन विशेष परिस्थितियों के अनुकूल स्वयं को ढालना चाहिए जो यूरोपीय देशों में नहीं हैं, आपको उस सिद्धांत व व्यवहार को उन परिस्थितियों में लागू करने योग्य होना चाहिए जहाँ अधिकांश जनसंख्या कृषक है,

1. द कोमिंटर्न, द वाई सी आई एण्ड द यूथ मूवमेंट, मास्को, 1977 पृ॰ 115
2. वी॰ आई॰ लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 30, पृ॰ 161

और जहाँ पूंजीवाद के विरुद्ध नहीं बल्कि मध्य युगीन अवशेषों के विरुद्ध संघर्ष छेड़ना ही एकमात्र कार्य है।"[1]

वाई सी आई ने भी पूर्व में कार्य को भी अधिकाशतः एक कृषक समस्या माना। हालांकि गाँवों में पहुँचना अत्यन्त कठिन था परन्तु वस्तुगत कठिनाइयाँ इस कार्य को रद्द करने का औचित्य नहीं दे सकतीं। व्यवहारतः औपनिवेशिक प्रश्नों पर वाई० सी० आई० के सभी प्रमुख दस्तावेजों में कृषक युवाओं को अपने पक्ष में लेने हेतु संघर्ष करने का आह्वान है।

वाई सी आई की चौथी कांग्रेस (1924) ने विशाल राष्ट्रीय क्रांतिकारी युवा संगठनों के निर्माण के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम को पेश किया; एशियाई व अफ्रीकी देशों की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थितियों पर आधारित इनके विभिन्न स्वरूपों का एक विश्लेषण था, अनेकों कार्यों का वर्णन था, तथा इन संगठनों में युवा कम्युनिस्टों की भूमिका को परिभाषित किया गया था। कांग्रेस का यह निष्कर्ष सैद्धांतिक महत्व का था कि बहुत से उपनिवेशों में पूंजीवादी विकास अपनी आरम्भिक अवस्था में है, कि उद्योग लगभग नहीं के बराबर है, कि सामाजिक विभेदीकरण की प्रक्रिया अभी भी पूर्ण नहीं हुई है और इसीलिए एक वर्ग-चेतना युक्त सर्वहारा व राष्ट्रीय बुर्जुआजी का अभी भी विकास नहीं हो पाया है। कांग्रेस के एक प्रस्ताव[2] में कहा गया कि "यहाँ जनसख्या का बहुत बडा जनमत विदेशी साम्राज्यवाद की गुलामी से स्वतंत्र होना चाहता है", तथा व्यापक तौर पर साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन के साथ सहयोग करना चाहता है।

बाद के वर्षों में यह दृष्टिकोण और विकसित हुआ तथा 1935 में वाई सी आई की छठी कांग्रेस में यह निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय मुक्ति की प्रकृति के विराट युवा संगठनों को स्थापित करने का काम आरम्भ किया जाए जो युवाओं के विशाल तबके को शामिल कर सके। कांग्रेस ने युवा संगठनों के मध्य सहयोग का भी आह्वान किया।

यह उल्लेखनीय है कि वाई सी आई की छठी कांग्रेस ने यूथ इन्टरनेशनल की सदस्यता हेतु स्थितियों को व्यापक बनाने का आह्वान किया ताकि न सिर्फ कम्युनिस्ट बल्कि अतर्राष्ट्रीय सहयोग में भाग लेने में उत्सुक फासीवाद-विरोधी, राष्ट्रीय मुक्ति तथा राष्ट्रीय-क्रांतिकारी अन्य युवा संगठन वाई सी आई में सम्मिलित हो सकें। इस ऐतिहासिक निर्णय ने वाई सी आई के आकार को बढ़ाने तथा एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका में साम्राज्यवाद-विरोधी युवा लोगों के साथ अपने

1. वी० आई० लेनिन, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 30, पृ० 161
2. रेजोल्यूशन एडोप्टेड एट द फोर्थ कांग्रेस ऑफ द यंग कम्युनिस्ट इंटरनेशनल, स्टाक्होम, 1924, पृ० 87 (औपनिवेशिक प्रश्न)

सहयोग को मजबूत करने में मदद दी। यहां हमें क्रांतिकारी युवाओं के ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संघ की ओर एक रुझान दिखाई देता है जिसे वर्ल्ड फ़ेडरेशन ऑफ़ डेमोक्रेटिक यूथ प्रतिनिधित्व करता है।

औपनिवेशिक विश्व में जुझारू साम्राज्यवाद-विरोधी सहयोग और युवा कम्युनिस्टों व राष्ट्रीय देशभक्तों एवं क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक संगठनों के मध्य क्रांतिकारी भाईचारे के लिए एक आधार स्थापित करने में अपना योगदान देना वाई सी आई की ऐतिहासिक सेवा थी।

मुक्ति व स्वतंत्रता हेतु संघर्ष

मुक्त देशों की युवा लीग का विकास मुक्ति व स्वतंत्रता के लिए साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में गहराई तक है। प्रगतिशील युवा लीगें अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में उभरीं। उनके उद्भव में दमनकारी औपनिवेशिक नीति द्वारा रुकावटें आयीं, इस प्रकार कभी-कभी युवा देशभक्तों को अपनी कार्यवाहियां रोकनी पड़ीं, और फिर से अपना अभियान आगे शुरू किया। साम्राज्यवाद तथा प्रतिक्रियावाद ने युवा आंदोलन से इसकी साम्राज्यवाद-विरोधी प्रहारशक्ति को खत्म करने, मुक्त देशों में युवाओं की राजनीतिक गतिविधि को उस दिशा में मोड़ने की जिनसे इजारेदारी पूंजी अक्षुण्ण रहे, तथा उन्हें समाजवादी समुदाय के युवजनों व समूचे प्रजातांत्रिक आंदोलन से अलग करने का प्रयास किया और अभी भी कर रहे हैं। वे उग्र-राष्ट्रवाद, कम्युनिज्म-विरोध, धार्मिक कट्टरता के विभिन्न रूप, नस्लवाद आदि का पोषण कर रहे हैं ताकि श्रमिक वर्ग व राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को विभाजित करें तथा प्रजातांत्रिक युवाओं की एकता तोड़ी जाय।

स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के वर्षों के दौरान क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों या राष्ट्रीय मुक्ति संगठनों के निर्देशन में युवा काफ़ी सक्रिय थे। युवा किसान, छात्र व प्रशिक्षार्थियों का समुदाय मुक्ति-सेनाओं व गुरिल्ला दस्तों का एक बहुसंख्यक भाग था। किसान, श्रमिक, छात्र तथा बुर्जुआ पृष्ठभूमि के युवक व युवतियों ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन, हड़तालें, बैठकें व विरोध-प्रदर्शनों के अभियानों का संचालन किया।

क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीग का निर्माण देश की परिस्थिति पर आधारित विभिन्न तरीक़ों से हुआ। मोजाम्बिक, अंगोला व गिनी-बिसाऊ में, जैसाकि अन्य कई समाजवादोन्मुख देशों में, प्रथम राष्ट्रीय-देशभक्त संगठनों में प्रशिक्षार्थी, छात्र व नवीन बुद्धिजीवी स्तर के समूह शामिल थे। जैसा फ़ेलिमो (एफ आर ई एल आई एम ओ) के संस्थापक एडुआर्डो मोंडलाने ने लिखा कि कम शिक्षितों का अल्पमत जो दुनिया की घटनाओं को समझने की स्थिति में थे, जिनका बाहरी दुनिया से काफी सम्पर्क था, जिनमें विश्लेषणात्मक चिंतन की आदत थी, वे ही

स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के नारे को बुलन्द करने का श्रेय प्राप्त करने के अधिकारी थे। देशभक्ति की भावना वाले युवजनों के समूह क्रांतिकारी प्रजातांत्रिक केन्द्र थे जिनके चारों ओर समाजवादोन्मुख देशों की वर्तमान सत्ताधारी पार्टियों का स्वरूप मुक्ति व स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के दौरान बना।

वास्तविक समाजवाद की सफलताओं व कम्युनिस्टों एवं अन्य प्रगतिशीलों के साथ सम्पर्क का युवा देशभक्तों के दर्शन के निर्माण पर एक सकारात्मक प्रभाव था।

यह पुर्तगाल की वामपंथी शक्तियों, विशेषतया पुर्तगाल की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के साथ सहयोग का परिणाम था कि अफ्रीका के महान नेताओं अमिलकार कैब्राल एवं एगोस्टिन्हो नेटो ने उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष का अपना पहला अनुभव प्राप्त किया। उपनिवेशवाद-विरोधी छात्र-समूहों के कार्यों में तालमेल का केन्द्र—उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलन (मैंक—एम ए सी)—जिसे उन्होंने 1957 में लिस्बन में स्थापित किया था, में गिनी-बिसाऊ, मोजाम्बिक और अंगोला की क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों के नेता मार्सेलिनो डॉस सन्टोस, ल्यूसिओ लारा व अन्य नेता थे। इन्होंने डब्ल्यू एफ डी वाई तथा आई यू एस के साथ ठोस सम्पर्क स्थापित किए जिनकी गतिविधियों का बाद के वर्षों में इन देशों में युवा आंदोलन के निर्माण व विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ा था।

सन् 1960 में मैंक छात्र शक्तियों की लामबन्दी से समूची जनता की लामबन्दी करते हुए तथा एक देशभक्तिपूर्ण औपनिवेश-विरोधी मोर्चे के निर्माण से राष्ट्रीय स्वतंत्रता हेतु अफ्रीकी क्रांतिकारी मोर्चा बन गया।

अंगोला, मोजाम्बिक व गिनी-बिसाऊ में सशस्त्र संघर्ष के प्रारम्भिक वर्षों में विशाल युवा संगठनों की स्थापना का तो प्रश्न ही नहीं उठता था। जब स्वयं एम पी एल ए, फ्रेलिमो व पी ए आई जी सी पार्टियों की सदस्यता मुख्यतः युवजनों से निर्मित थी तथा जब सशस्त्र संघर्ष की मांग शक्तियों का केन्द्रीकरण व ध्रुवीकरण था, तब युवा लीग का निर्माण करना अपरिपक्वता समझा गया। जैसा फ्रेलिमो के नेताओं ने तर्क दिया कि इसका परिणाम वैसा ही होगा जैसे ये दो युवा पार्टियाँ हों, और क्योंकि अधिकांश गुरिल्ला दस्तों में युवा हैं, इसलिए दो सेनाएँ हो जाएंगी। उन्होंने महसूस किया कि यह उपनिवेशवाद-विरोधी मोर्चे में वैचारिक व राजनीतिक भिन्नता की अवस्था में अतिरिक्त अंतर्विरोधों को जन्म दे सकता है। इसीलिए, जब राष्ट्रीय मुक्ति सेनाओं ने मोजाम्बिक क्षेत्रों में से एक को मुक्त कर दिया तब आदिवासी सम्पन्न लोगों में दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी तत्त्वों ने फ्रेलिमो युवा लीग, एक संगठन जिसे खुद उन्होंने निर्मित किया था, द्वारा नियंत्रण अपने हाथों में लेने का प्रयास किया था। जन-सेना बनाने के बहाने स्थानीय प्रतिक्रियावादियों ने ऐसे फौजी दस्ते बनाए जो लीग के आधीन रहे गये जबकि वास्तविकता में वे वास्तविक

देशभक्तों के विरुद्ध आक्रामक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते थे। इस तरीके से, जैसा फ्रेलिमो की तीसरी कांग्रेस ने इंगित किया कि आदिवासी सम्पन्न लोगों के नए शोषणकर्त्ताओं ने सामंती शोषण की प्रणाली को जारी रखने की कोशिश की।[1] दक्षिणपंथी शक्तियों ने मोजाम्बिक महिला संगठन का इसी प्रकार का उपयोग करने का प्रयास किया तथा उन्होंने मोजाम्बिक छात्र यूनियन के ऊपर अपने नियंत्रण को रखने का प्रयास किया।

आंतरिक प्रतिक्रियावाद के द्वारा तोड़-फोड़ के कार्यों ने उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष के विकास में बहुत बड़ी बाधा उपस्थित की। एक बार जब फ्रेलिमो में क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिकों ने सही निष्कर्ष निकाल लिया। तब उन्होंने युवाओं व छात्रों में वैचारिक व राजनीतिक कार्य को बढ़ावा दिया। प्रजातांत्रिक युवा व छात्र संगठनों के साथ युवाओं के सम्पर्कों व युवाओं में कार्य करने हेतु उत्तरदायी विशेष विभाग व उपविभाग फ्रेलिमो, एम पी एल ए तथा पी ए आई जी सी की नेतृत्वकारी संस्थाओं ने स्थापित किए।

नामीबिया व दक्षिणी अफ्रीका की क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों की भी इसी प्रकार की युवा नीति है। नस्लवादी सरकारों की क्रूरतापूर्ण प्रतिहिंसा व उत्पीड़न ने मुक्ति शक्तियों को विशाल युवा लीग की स्थापना न करने की बल्कि स्वयं को क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों की निर्देशक केन्द्र—युवा शाखाओं (जैसा स्वतंत्रतापूर्ण जिम्बाब्वे में था)—के निर्माण में सीमित करने के लिए बाध्य किया।

स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात ही, देश का एक बार गैर-पूँजीवादी रास्ते पर अग्रसर होने के पश्चात ही, जन-क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा संगठनों का निर्माण पूरी तरह से संभव हो सकता है। जैसाकि व्यावहारिक अनुभव दिखाता है कि युवा लोगों के संगठन के निर्माण हेतु, युवाओं में वैचारिक व शैक्षणिक कार्य हेतु तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन व राजकीय कार्यों के संचालन में युवा क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिकों की भागीदारी के लिए समाजवादी अभिमुखता व्यापक अवसर प्रदान करती है।

2. क्रांतिकारी प्रजातंत्र एवं युवा

युवा—क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों का एक सामाजिक स्तम्भ

क्रांतिकारी-प्रजातंत्र के सामाजिक स्तम्भ का प्रश्न अनेक मुक्त देशों की समाजवादी अभिमुखता के चुनाव के साथ जुड़ा हुआ है। इस सामाजिक स्तम्भ

1. देखें : मोजाम्बिक के जनवादी गणतंत्र की फ्रेलिमो पार्टी के दस्तावेज, तृतीय कांग्रेस, मापुतु, 3-7 फ़रवरी 1977, मास्को, नौका प्रकाशन, 1980 (रूसी भाषा में)

का निर्माण युवा संगठनों सहित सार्वजनिक संस्थाओं की गतिविधि व एकजुटता की मात्रा पर निर्भर करता है। युवा संगठनों पर क्रांतिकारी-प्रजातंत्र की नीति का मन्तव्य नये राज्य के अंगो के निर्माण में, शिक्षा में तथा गैर-पूँजीवादी विकास को गति प्रदान में जनता को संगठित करने में इनकी सक्रिय भागीदारी है। सो स क पा की केन्द्रीय समिति की पोलिट ब्यूरो के वैकल्पिक सदस्य, सो स क पा की केन्द्रीय समिति के सचिव, अकादमीशियन बोरिस पोनोमारेव ने लिखा, "जब एक नये राज्य के अंगों का निर्माण हो रहा हो, तब राजकीय मामलों में, सेना में पार्टी के राजनीतिक कार्यों में, तथा सामाजिक परिवर्तन के कार्य में युवजनों को शामिल करना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होता है।"[1]

समाजवादोन्मुख देशों में क्रांतिकारी प्रजातांत्रिक युवाओं को पार्टियों के भावी सदस्य तथा उनके कार्यक्रमों को वास्तविक बनाने में एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व के रूप में देखते हैं। अपनी तीसरी कांग्रेस में स्वीकृत फ्रेलिमो के कार्यक्रम के अनुसार, "पार्टी मोज़ाम्बिक युवा संगठन व युवा पायोनियर संगठन स्थापित कर रहा है, जो नवीन पीढ़ी—फ्रेलिमो के भावी सैनिकों का मुख्य स्रोत—के देशभक्तिपूर्ण व समाजवादी शिक्षा के शानदार कार्यों के लिए उत्तरदायी होगा।"[2]

लगभग सभी क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों के नियमों में युवा लोगों की गतिविधियों पर उनके निर्देशन की भूमिका की घोषणा की गई है। तथा युवा लोग इस निर्देशन की भूमिका को स्वीकार करते हैं एवं पार्टी की विचारधारा की भावना में युवाओं की शिक्षा व उनके प्राथमिक कार्य को आगे बढ़ाते हैं।

बहुदलीय प्रणाली वाले देशों में, कई बार सार्वजनिक संस्थाओं को निर्देशित करने का कार्य सत्ताधारी दल का नितांत विशेषाधिकार बना दिया जाता है। दुर्भाग्यवश, कुछ मामलों में, सत्ताधारी क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टी माँग करती है कि युवा कम्युनिस्टों की गतिविधियों को पूरी तरह काट दिया जाय तथा वे अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व पर व अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क पर एकाधिकार लेने का प्रयास करती हैं। अन्य देशों में, जैसे मैडगास्कर में, स्थिति भिन्न है : क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक कम्युनिज्म-विरोध का विरोध करते हैं तथा सभी प्रगतिशील शक्तियों में साम्राज्यवाद-विरोधी सहयोग की वकालत करते हैं।

सार्वजनिक संस्थाओं के विषय में क्रांतिकारी- प्रजातन्त्र की नीति देश के लिए, प्रगतिशील विकास के कार्य को सम्पादित करने में श्रमिक-जनों को शिक्षित करने व एकत्रित करने के लिए पार्टी की समग्र नीति का एक अंग है। निःसन्देह, प्रत्येक

1. कम्युनिस्ट, संख्या 16, 1980, पृ० 43 (रूसी में)
2. मोज़ाम्बिक के जनवादी गणतंत्र की फ्रेलिमो पार्टी के दस्तावेज़, मास्को, 1980, पृ० 225 (रूसी में)

क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टी की नीति के अपने विशिष्ट स्वरूप होते हैं और विशेष तरीकों से क्रियान्वित होते हैं। जनता की मैत्री को अपने पक्ष में करने, सार्वजनिक संस्थाओं के रूप में समर्थन का एक ठोस बुर्ज के निर्माण हेतु प्रयास ही उनकी नीतियों में समान विचार है।

युवा लोगों का पुनर्गठन

हाल के वर्षों में क्रांतिकारी-प्रजातंत्र ने युवाओं में अपने संगठनात्मक व राजनीतिक कार्य को अधिक व्यापक कर दिया है, तथा अपने आरक्षित युवाओं की गतिविधि में अपने जन-सम्पर्कों को व्यापक व सुदृढ़ करने के अवसर को देखते हुए अनेक देशों में युवा लोगों को आमूलतः पुनर्गठित किया है। यह दिशा पार्टी की युवा शाखाओं का जन-क्रांतिकारी युवा संगठनों के रूप में रूपांतरण से अभिव्यक्त होती है (अल्जीरिया, अफ़ग़ानिस्तान, अंगोला, गिनी-बिसाऊ, मोज़ाम्बिक, निकारागुआ, पी डी आर वाई, इथोपिया आदि)।

युवा आंदोलन का पुनर्गठन सामान्यतः किसी योजना के अन्तर्गत, अधिकतर 'ऊपर से' किया जाता है। आरम्भ में, सत्ताधारी क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों की विशेष समितियाँ बनाई जाती हैं, प्रस्ताव तैयार किये जाते हैं, तथा यहाँ तक कि युवा संगठनों के निर्माण की अवस्थाओं या विद्यमान संगठनों के पुनर्गठन के लिए नियमबद्ध समय-सारिणी बनाई जाती है। केन्द्रीय अंगों व मध्यवर्ती कड़ियों को नेतृत्व देने वाले व्यक्तियों का चुनाव किया जाता है, तथा गतिविधि व संगठनात्मक ढाँचे के सिद्धांतों को तय किया जाता है। क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक संगठनों के अधिकृत युवा नेता पार्टी के अंगों के साथ मिलकर स्थानीय, कस्बे, जिले व क्षेत्रीय सम्मेलनों के आयोजन हेतु कार्य करते हैं। 'ऊपर से' आरम्भ किया गया कार्य इस दौरान एक वैधानिक कांग्रेस की तैयारी हेतु, जिसमें नियमों व कार्यक्रमों को स्वीकृत किया जाय, 'नीचे से' एक आंदोलन द्वारा समर्थित किया जाता है। कांग्रेस हेतु तैयारियाँ क्रांतिकारी-प्रजातंत्र की विचारधारा को फैलाने तथा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में युवाओं के व्यापक स्तर को शामिल करने के साथ होती हैं।

वास्तव में, हमारे द्वारा सामान्यीकृत क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लोगों के गठन की यह योजना सार्वभौमिक नहीं है। विशेष स्थानीय परिस्थितियाँ व घरेलू राजनीतिक स्थिति के विशेष लक्षण इसके चरित्र को निर्मित करते हैं। यहाँ लेनिन की सही सिफ़ारिश उपयुक्त प्रतीत होती है: "हमारी कार्यरीति की नक़ल मत करो, बल्कि उनके ख़ास स्वरूपों, उन्हें जन्म देने वाली परिस्थितियों, व उनके परिणामों का विश्लेषण करो; शब्दों के पार जाओ तथा अनुभव की भावना, सार

व शिक्षाओं को अपनाओ।"[1]

समकालीन क्रांतिकारी-प्रजातन्त्र समाजवादी देशों की बिरादराना युवा लीगों के अनुभव का व्यापक उपयोग करता है। अंगोला, अल्जीरिया, मेडागास्कर, पी डी आर वाई, अफ़ग़ानिस्तान, सीरिया, निकारागुआ, इथियोपिया व अन्य देशों की युवा लीगों ने अपने विशेष प्रतिनिधिमंडलों को समाजवादी समुदाय के देशों में युवाओं के साथ कार्य करने में उनके अनुभव के अध्ययन हेतु भेजा। उन्हें प्राप्त सहयोग क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीगों के संगठनात्मक रचना व वैचारिक तथा राजनीतिक अभिमुखता हेतु महत्त्वपूर्ण था तथा उनमें कम्युनिस्ट युवा लीग के समान लक्षणों के विकास में सहायक रहा।

एक बार विशेष लक्षणों के प्रश्न पर, यह कहा जा सकता है कि वे भी क्रांतिकारी युवा लीग के निर्माण के क्षण को भी प्रभावित करते हैं। कुछ देशों में क्रांतिकारी-प्रजातन्त्र द्वारा इस प्रक्रिया का आरम्भ स्वतंत्रता हेतु संघर्ष के वर्षों के दौरान हुआ; दूसरों में यह स्वतंत्रता के तत्काल बाद आरम्भ हुआ, जबकि तीसरे प्रकार के देशों में कुछ परिस्थितियोंवश यह काफी समय तक आरम्भ नहीं हुआ।

अल्जीरिया के राष्ट्रीय मुक्ति हेतु मोर्चे (जे एफ एल एन) के युवा तबके का एक जन-संगठन—अल्जीरियाई युवा राष्ट्रीय संघ (एन यू ए वाई) में रूपांतरण 1975 से आरम्भ हुआ, अर्थात, स्वतन्त्रता के 15 वर्ष पश्चात, जबकि एन यू ए वाई की पहली संविधायी कांग्रेस जनवरी 1979 में हुई। परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि इस पूरे काल के दौरान संघ की गतिविधि शून्य रही। संगठन अल्जीरिया की क्रांति के कार्यों के संचालन में सक्रिय रहा, जो 1975 में उसकी राष्ट्रीय सम्मेलन में पारित युवा घोषणापत्र से स्पष्ट है। संविधायी कांग्रेस में बोलते हुए राज्य व पार्टी के नेताओं ने संकेत किया कि देशभक्त क्रांतिकारी शक्तियों के 50 प्रतिशत से अधिक भाग अल्जीरियाई युवाओं का है।

कई देशों (अंगोला, कांगो, मोजाम्बिक, पी डी आर वाई, व अन्य) में इस पुनर्गठन का उद्देश्य मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर अपनी गतिविधियों को आधारित करते हुए, एक हरावल दस्ते की तरह क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीगों की स्थापना करना है। इस हरावल दस्ते की तरह के संगठन में युवा श्रमिकों व कृषकों के प्रभावशाली प्रतिनिधित्व को निश्चित करने हेतु कारगर कदम उठाये जा रहे हैं। इसे प्राप्त करने हेतु प्रथम अखिल राष्ट्रीय जे एम पी एल ए कांग्रेस

1. वी० आई० लेनिन, 'टू द कामरेड्स कम्युनिस्ट्स ऑफ अज़रबाईजेन, जार्जिया, अरमेनिया, दग़ेस्तान, एण्ड द माउण्टेनियर रिपब्लिक', **कलेक्टेड वर्क्स**, जिल्द 32, पृ० 318

(1978) में निम्न रूप से प्रतिनिधित्व दिया गया : श्रमिक व कृषक—121 प्रतिनिधि; सशस्त्र सेनाएँ—42 प्रतिनिधि; छात्र—20 प्रतिनिधि। सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पारित कर जे एम पी एल ए को पार्टी के युवा संगठन में रूपांतरित करने का निर्णय लिया, जैसा इसका नया नाम—'जे एम पी एल ए—पार्टी व यूथ'—बतलाता है। इसमें अंगोला के युवाओं के वे सर्वोत्तम तत्व सम्मिलित होंगे जो वास्तव में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति प्रतिबद्ध हैं। संगठन का प्रमुख उद्देश्य समाजवादी समाज के निर्माण में श्रमिक युवाओं को लामबंद करना है। इसके बुनियादी कार्यों की घोषणा इसका कार्यक्रम करता है, यथा, अंगोला के युवाओं के व्यापक जन समुदाय में क्रांतिकारी प्रचार व आंदोलन संचालित करना; देशभक्ति व अंतर्राष्ट्रवाद की भावना में युवाओं को बड़ा करना; देश के आर्थिक पुनर्निर्माण में सक्रियता से लगना, तथा निरक्षरता, पिछड़ेपन व पूर्वाग्रह के विरुद्ध दृढ़ता से संघर्ष करना।

पुनर्गठन की प्रक्रिया के दौरान युवा आंदोलन को संगठित करने में विशेष ध्यान दिया जा रहा है। यह राष्ट्र की सुदृढ़ता हेतु आवश्यक है, विशेषकर विभिन्न नस्लों की अधिक सख्या वाले देशों में; क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों द्वारा युवा आंदोलन के निर्देशन को, क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए कार्य में जन-समुदाय की भागीदारी हेतु लामबन्दी को तथा प्राप्त उपलब्धियों को अक्षुण्ण रखने को यह एकता आसान बनाती है। यूनियन ऑफ द कांगोलीज सोशलिस्ट यूथ, यूथ लीग ऑफ द रेवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ टन्जानिया, एसोसिएशन ऑफ द यूथ ऑफ रेवोल्यूशनरी इथोपिया, द नेशनल यूनियन ऑफ अल्जेरियन यूथ तथा अनेक संगठनों के नियम संगठित युवा लीग में सभी सामाजिक स्तर के युवजनों को संगठित होने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। नेशनल यूनियन ऑफ अल्जीरियन यूथ के लिए नियमों को निर्धारित करने वाली राष्ट्रीय समिति की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि "राजनीतिक रूप में सामाजिक-व्यवसायिक आधार पर विभाजन ग़लत है, क्योंकि वैचारिक एकता अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।"[1]

1974 तक बेनिन में नस्लवादी स्वरूप पर आधारित लगभग 180 विभिन्न युवा संगठन थे। 1978 में बेनिन की पार्टी ऑफ द पीपुलर रिवोल्यूशन ने छात्रों, माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों, श्रमरत ग्रामीण व शहरी युवा, युवा सैनिक, युवा देशभक्त बुद्धिजीवी तथा युवा पायोनियर आंदोलन को एक साथ कर क्रांतिकारी युवाओं का एक एकीकृत फेडरेशन के निर्माण की नीति की रूपरेखा तैयार की।

युवा लीगों का पुनर्गठन समाजवादी समुदाय के देशों के युवा संगठनों के विशिष्ट संगठनात्मक सिद्धांतों, जैसे प्रजातांत्रिक केन्द्रवाद, सदस्यता में व्यक्तिगत

1. अल-मुजाहिद, 27 नवम्बर, 1973

प्रवेश, तथा संगठन की भौगोलिक सीमाओं व उत्पादन के ढाँचे के आधार पर किया जा रहा है। नियमावलियों में लीग के सदस्यों के अधिकारों व दायित्वों को परिभाषित करने वाली धाराएँ हैं। देश के विशिष्ट स्वरूप को ध्यान में रखा जाता है, जैसे कबीलावाद, क्षेत्रीयतावाद व नस्लवाद के भग्नावेश, बौद्धिकवाद व पैटी-बुर्जुआ की संग्रह प्रवृत्तियों में संघर्ष करना (मोजाम्बिक युवा संगठन), स्त्रियों के प्रति सामंती दृष्टिकोण पर विजय पाना (यमन की समाजवादी युवा लीग) तथा अतीत के अन्य अवशेषों व उपनिवेशवाद की धरोहर को समाप्त करना।

यह क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक युवा लीग के गठन व पुनर्गठन का सामान्य स्वरूप है, जो समाजवादी देशों की कम्युनिस्ट युवा लीग के अनुभवों का लाभ ले रही हैं तथा समाजवादी अभिमुखता के मार्ग पर आने वाली अनेकों कठिनाइयों एवं विशेष राष्ट्रीय परिस्थितियों को भी ध्यान में रख रही हैं।

3. शिक्षा एवं युवाओं का वैचारिक व राजनीतिक उन्नयन

शिक्षा व युवाओं के वैचारिक व राजनीतिक उन्नयन में समाजवादी समुदाय के समृद्ध अनुभव का लाभ समाजवादोन्मुख देशों ने उठाया है।

निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष व शिक्षा

उदीयमान पीढ़ी को शिक्षित करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। अफ़ग़ानिस्तान में जनता के शासन के पहले वर्ष में ही 110 स्कूल निर्मित किये गये तथा विभिन्न राष्ट्रीयता की भाषाओं में क़रीब 10 लाख नई पाठ्य-पुस्तकें नि.शुल्क वितरित की गईं। राज्य द्वारा व्यवसायिक व तकनीकी स्कूली छात्रों को पूर्ण सुविधाएँ दी जाती हैं। अंगोला में शिक्षा की अत्यन्त विकसित प्रणाली कांगो में है, जहाँ स्कूली आयुवर्ग के कुल बच्चों का 95 प्रतिशत स्कूल जाता है। अल्जीरिया में खानाबदोशों के बच्चों सहित 25 लाख से अधिक बच्चे स्कूल जाते हैं। राजशाही के दौरान इथोपिया में 80 प्रतिशत बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। परन्तु अब सभी व्यक्तिगत स्कूलों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है तथा हजारों नये स्कूल बन रहे हैं। गर्मी की छुट्टियों में, अनेक इथोपियाई अध्यापक, छात्र व उच्च श्रेणी के विद्यार्थी "शिक्षित निरक्षरों को पढ़ाएँ" अभियान में शामिल होते हैं। इथोपिया में करीब 60 000 निरक्षरता-उन्मूलन केन्द्र हैं, जिसमें 70 लाख से अधिक लोगों को पढ़ना व लिखना सिखाया जा चुका है। स्वतन्त्रता पश्चात के आरम्भिक तीन वर्षों में अंगोला में कोई 30 000 व्यक्ति, जो उपनिवेशवाद के अन्तर्गत शिक्षा पाने के अयोग्य थे, पढ़ना-लिखना सीख गये तथा अंगोला के सभी तरह प्रांतों में निरक्षरता से लड़ने के लिए पाठ्यक्रम हैं।

निकारागुआ में 19 जुलाई सांदिस्ता युवा द्वारा 60,000 युवक-युवतियों को निरक्षरता से लड़ने हेतु लामबन्द किया गया।

राज्य के विभागों को युवा संगठन शिक्षा के जनवादी करण, श्रमरत युवकों को विशेषज्ञ बनने में प्रशिक्षित करने तथा अपनी जनता के इतिहास, भाषा व संस्कृति को लोकप्रिय बनाने में मदद दे रहे हैं।

वैचारिक-राजनीतिक तथा देशभक्ति की शिक्षा

समाजवादोन्मुख देशों की सरकारें व सत्ताधारी पार्टियां न सिर्फ़ युवजनों को साक्षर बनाने, एक व्यवसाय या विशेषज्ञता प्राप्त करने की सम्भावना का प्रयास कर रही हैं, अपितु वे नए समाज के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध युवजनों के वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा पर भी काफी ध्यान दे रही हैं।

अनेक क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों का सर्वहारा हरावल दस्ते की पार्टियों के साथ निकट के सम्बन्धों की ओर वैचारिक व राजनीतिक विकास का युवा लीग के वैचारिक व राजनीतिक मंच पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का भी प्रभाव मोजाम्बिक युवा संगठन (ओ एम वाई), कांगो की समाजवादी युवा संघ (यू सी एस वाई), अंगोला की मुक्ति के लिए जन आंदोलन के युवा (जे एम पी एल ए—पार्टीज यूथ) क्रांतिकारी इथोपिया के युवा का संघ (ए वाई आर ई) तथा अन्य युवा लीग के नियमों पर पड़ा है। अनेक समाज-वादोन्मुख देशों ने माध्यमिक स्कूलों की उच्च कक्षाओं तथा विश्वविद्यालयों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अनिवार्य विषय बना दिया है।

एम पी एल ए की पहली कांग्रेस के दस्तावेजों ने घोषणा की कि पार्टी का युवा संगठन—पार्टी ऑफ लेबर—वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धांतों पर युवाओं के व्यापकतम जन-समूह को लामबद व शिक्षित करेगा तथा क्रांति के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु युवजनों को निर्देशित करेगा।

यमन के युवाओं का समाजवादी संघ (वाई एस यू वाई) के नियम अपने सदस्यों को युवाओं को वैज्ञानिक समाजवाद की भावना में शिक्षित करने हेतु प्रति-बद्ध करता है। प्रस्तावना के अनुसार, वैज्ञानिक समाजवाद की स्वीकृति सिद्धांत व व्यवहार को द्वंद्वात्मक रूप में एक करता है, अर्थात्, वैज्ञानिक समाजवाद का अध्ययन व उसके स्त्रोतों को रचनात्मक रूप में वास्तविक जीवन का एक घटक बनाना। वाई एस यू वाई के दस्तावेजों के अनुसार युवा क्रांतिकारी वैज्ञानिक समाजवाद को अपनी आशाओं की प्राप्ति का, तथा एक शोषण-विहीन समाज के निर्माण का एक प्रभावशाली साधन मानते हैं।

मोजाम्बिक युवा संगठन का कार्यक्रम फ्रेलिमो के निर्देशन के अन्तर्गत एक समाजवादी राज्य के निर्माण के कार्य की, वर्ग-संघर्ष व वैज्ञानिक समाजवाद की

भावना मे युवजनों को शिक्षित करने की, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयवाद की तथा क्रांतिकारी व प्रगतिशील युवा संगठनों के साथ एकजुटता व सहयोग की घोषणा की।

कांगो की समाजवादी युवा संघ के नियमों में युवा श्रमिकों में वर्ग-चेतना को विकसित करना एक घोषित लक्ष्य है; इसने जोर दिया कि सघ के प्रत्येक सदस्य को मार्क्सवाद-लेनिनवाद—समाजवादी देश के निर्माण मे एक जुझारू अस्त्र—का अध्ययन व क्रियान्वयन करना चाहिए।

बेनिन के क्रांतिकारी-प्रजातान्त्रिकों ने घोषित किया कि युवा लीग मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर आधारित होनी चाहिए। इथोपिया की प्रोविजन मिलिटरी एड-मिनिस्ट्रेटिव कौन्सिल (पी एम ए सी) की घोषणा (जून 1980) में भी यही कहा गया है। क्रातिकारी-प्रजातान्त्रिक पार्टियों की सहायता से युवा लीग युवाओं की पार्टी शिक्षा का सक्रियता से प्रबंध करती हैं। अनेक देशों मे ऐसे पाठ्यक्रम हैं जहाँ युवा कार्यकर्त्ताओं को किस प्रकार वैचारिक व सगठनात्मक कार्य किया जाय, सिखाया जाता है। वाई एस यू वाई की केन्द्रीय समिति के पास अब युवा कैडर के लिए एक उच्चतर स्कूल है। तजानिया में क्षेत्रीय कमेटियों के सचिवो तथा युवा लीग के जिला सगठनों के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के लिए एक युवा स्कूल है। इथोपिया की प्रोविजनल मिलिटरी एडमिनिस्ट्रेटिव कौन्सिल युवा पीढ़ी की राजनीतिक शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान देती है। युवा छात्रों को राजनीतिक स्कूल, जो क्रांति हेतु कैडर को प्रशिक्षित करता है, के लिए विशेष रूप मे चुना जाता है। इस केन्द्रीय स्कूल के अलावा, अनेक जिलों में राजनीतिक पाठ्यक्रम चालू हैं। 1981 मे अफ़ग़ानिस्तान मे अफ़ग़ानिस्तान की पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की केन्द्रीय समिति के आधीन सामाजिक विज्ञान संस्थान मे एक युवाओ के विभाग की स्थापना की गई।

ऐसे समय पर जब साम्राज्यवाद अभी भी षड्यंत्रों व तोड़-फोड़ के माध्यम से प्रगतिशील सरकारों को अस्थिर करने की आक्रामक कार्यवाहियों मे लगा हुआ है, युवाओं को देशभक्ति की शिक्षा विशेष रूप मे आवश्यक है। तजानिया की क्रातिकारी पार्टी की युवा लीग का विधान कहता है कि युवा समाजवादी क्रांति तथा पार्टी की नीति के अभिभावक व संरक्षक हैं।

देशभक्ति पूर्ण शिक्षा का सर्वाधिक व्यापक स्वरूप जन-सेना को संगठित करने मे युवा लीग की भागीदारी है। जन-सेना दस्ते, आत्मरक्षा दल व युवजनो के स्वयंसेवक बटालियन (अफ़ग़ानिस्तान, अंगोला, सीरिया, निकारागुआ व अन्य देशों में) जनता की सेना के साथ कार्य करते हैं तथा प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को कुचलने व बाह्य आक्रमण को रोकने मे इसे मदद करते हैं। अफ़ग़ानिस्तान, इथोपिया, कांगो की जनता का गणतत्र, पी डी आर वाई तथा अन्य अनेक क्रांति

कारी-प्रजातंत्र सशस्त्र सेनाओं में सीधे युवा लीग के समूहों को संगठित करने तथा उनकी शिक्षा के कार्य को चलाने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं।

युवाओं की सामाजिक गतिविधि

प्रगतिशील क्रांतिकारी प्रजातांत्रिक न सिर्फ समाजवादोन्मुखता के मूल्य के प्रति बल्कि इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के प्रति भी अधिकाधिक सजग हो रहे हैं। वे वैज्ञानिक आधार पर विकास के कार्यक्रम को विकसित करने तथा समाजवादी देशों के अनुभव, राजनीतिक व आर्थिक गतिविधि की प्रमुख दिशाओं में जन-समुदायों व सार्वजनिक संस्थाओं की लामबंदी करने की उनकी क्षमता का अधिक साहसपूर्ण उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। सोवियत विद्वान, प्रोफ़ेसर आर० ए० उल्यानोव्स्की ने लिखा कि यह प्रक्रिया "वैज्ञानिक समाजवाद के कार्यक्रम की स्वीकृति व घोषणा तक ही सीमित नहीं हो सकती···पार्टी के सभी सम्पर्कों में, पार्टी की व्यावहारिक गतिविधि में वैज्ञानिक समाजवाद को आधार बनाना, इसे सही रूप में आत्मसात करना काफी कठिन है।"[1]

युवा आंदोलन में वैचारिक शिक्षा के व्यावहारिक स्वरूप की ओर मुड़ने का, क्रांतिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों द्वारा पारित कार्यों के सम्पादन में उन्हें लगाने का एक प्रयास है। कांगो का समाजवादी युवा संघ के विधान में कहा है कि "संघ का बुनियादी कार्य रचनात्मक श्रम में, भौतिक उत्पादन में, उद्योग व कृषि में युवाओं की सक्रिय भागीदारी को संगठित करना है।"[2] और मोजाम्बिक के युवा संगठन का कार्यक्रम इस पर जोर देता है कि युवजनों को "राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में, समाजवादी समाज के भौतिक व तकनीकी आधार को निर्मित करने में"[3] सक्रियता के साथ भाग लेना चाहिए।

अंगोला, मोजाम्बिक तथा पी डी आर वाई में अनेक युवजन श्रम प्रतियोगिता के अभियानों में भाग ले रहे हैं। युवा संगठन तंजानिया में आत्म-सहयोग के जन-आंदोलनों में, अल्जीरिया, इथोपिया व कांगो में स्वयंसेवी कार्यों में, अफगानिस्तान व गिनी में खलिहान के कार्यों में सक्रिय हैं। अंगोला में बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक के आरम्भ में करीबन 2000 युवा श्रमिक स्वयंसेवकों की ब्रिगेड थी जिसने क़रीबन 260 स्कूल निर्मित किए तथा बंदरगाह में सामान चढ़ाने व उतारने के कार्य में मदद दी। 20,000 से ज्यादा अंगोला के छात्र व स्कूली विद्यार्थी

1. कम्युनिस्ट, संख्या 11, 1979, पृ० 120 (रूसी भाषा में)
2. स्तुत दे ल'यूनिओं दे ल ज्युस्से सोसिलिस्त गोंगोलिस, 1974, पृ० 1
3. दाकूमेंतोस द् ल कांफ्रेंसिया द् जुएन्तूद मोज़ाम्बिकाना प्रोग्रामा इस्तेतूतो द् ओ० जे० एम० मपूतू, 1978, पृ० 5

अपनी छुट्टियाँ इमारतो के निर्माण व सहकारी कृषि फ्रामों में काम करके बिताते हैं। अनेक देश (अंगोला, पी डी आर वाई, मोजाम्बिक व अन्य) तेजी के साथ सोवियत कोम्सोमोल के छात्र-निर्माण-दस्तों के विचार को अपनाते जा रहे हैं। गिनी में, सहकारी तरीकों मे ग्रामीण क्षेत्रों मे युवा आवास-गृहो का निर्माण किया जा रहा है। तथा मोजाम्बिक के युवजन समाजवादी गाँवों के निर्माण मे सक्रिय हैं।

इस प्रकार समाजवादोन्मुख देशो में वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा का कार्य निरतर युवा पीढ़ी, जो एक नए समाज के निर्माण में सक्रिय रूप से मदद कर रहे हैं, की व्यावहारिक गतिविधि द्वारा समृद्ध हो रहा है।

4. युवाओं की अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ

एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका मे युवा आदोलन का विकास साम्राज्यवाद-विरोधी सहयोग की अधिक सुदृढ़ता को प्रमाणित करता है। इन देशो के युवजन सोवियत कोम्सोमोल तथा समाजवादी समुदाय के अन्य देशो के युवा संगठनो से पर्याप्त समर्थन व सहयोग पाते हैं। तथा, जैसा सोवियत युवा कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल) की 19वीं कांग्रेस (मई 1982) के दस्तावेज घोषित करते है कि यह क्रातिकारी-प्रजातांत्रिक पार्टियों व राष्ट्रीय मुक्ति आदोलनों द्वारा निर्देशित युवा लीग के साथ अपने सहयोग को व्यापक व गहरा बनाते रहेगा, एव मुक्ति व स्वतत्रता हेतु सघर्षरत सभी युवजनों को प्रभावशाली जुझारू एकजुटता देगा।

साम्राज्यवाद व प्रतिक्रियावाद की सभी साजिशों के बावजूद सोवियत कोम्सोमोल, सोवियत संघ के युवा संगठन की कमेटी, तथा सोवियत संघ की छात्र-परिषद् द्वारा मुक्त देशों के युवा व छात्रो को दिया जा रहा सहयोग ठोस व दृढ़ता पर आधारित हो गया है। साम्राज्यवाद व प्रतिक्रियावाद स्वतंत्र देशों के युवजनो को उनके सच्चे मित्रों—सोवियत संघ व अन्य समाजवादी देशों—से अलग करने के अपने प्रयासों में असफल रहे। जैसा सोवियत कोम्सोमोल की 19वी कांग्रेस मे अनेक एशियाई, अफ्रीकी व लातीनी अमेरिकी मेहमानों ने इंगित किया कि कोई भी मिथ्या प्रचार, कोई भी सोवियतवाद-विरोध या कम्युनिज्म-विरोध मजबूत नहीं है जो समकालीन क्रातिकारी युग में वास्तविक क्रातिकारियों तथा साम्राज्य-वाद विरोधियों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के हरावल दस्ते के मन व मस्तिष्क की एकता को तोड सके।

समाजवादोन्मुख व समाजवादी देशों के मध्य सहयोग का एक रूप शान्ति, मुक्ति व स्वतंत्रता के लिए तथा युवा पीढ़ी के अधिकारों को अक्षुण्ण रखने के लिए सहयोग के समझौते हैं जिस पर उन्होंने हस्ताक्षर किए हैं। उदाहरण के लिए, 1982 एवं 1983 मे सोवियत सघ के युवा संगठनो की कमेटी, सोवियत

कोम्सोमोल और सीरियाई क्रांति के युवाओं के संघ के मध्य में सहयोग पर संधि ने युद्ध व आक्रमण छेड़ने की साम्राज्यवादी धमकी के समक्ष प्रगतिशील युवा संगठनों के प्रयत्नों को सुदृढ़ करने की अति आवश्यकता पर जोर दिया।

मुक्त देशों में युवजनों के बीच साम्राज्यवाद-विरोधी सहयोग की सुदृढ़ता क्षेत्रीय युवा संगठनों अखिल अफ्रीकी युवा आंदोलन (पी ए वाई एम), लातीनी अमेरिकी महाद्वीपीय छात्र संगठन (ओ सी एल ए ई), अरब युवा फेडरेशन (ए वाई ई), सर्व अफ्रीकी छात्र संघ (ए ए एस यू) आदि, के सक्रिय कार्य से व्यक्त होता है। बुनियादी तौर पर, उनकी गतिविधियों का लक्ष्य शान्ति के पक्ष में तथा साम्राज्यवाद के विरोध में युवा व छात्रों की कार्यवाहियों को समन्वित करना है। पी ए वाई एम सक्रियता के साथ अफ्रीकी राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को समर्थन देता है तथा अफ्रीकी संस्कृति को उन्नत करने में सहयोग देता है। ए वाई ई अरब जगत में प्रगतिशील युवा संगठनों के मध्य सम्बन्धों को मजबूत करने, इज़रायली आक्रमण के विरुद्ध लड़ने, फिलिस्तीनी जनता व युवाओं के संघर्ष को मदद देने आदि को अपना अति महत्वपूर्ण कार्य मानता है। ओ सी एल ए ई का मुख्य ज़ोर लातीनी अमेरिका में साम्राज्यवाद-विरोधी छात्र आंदोलन की स्थितियों को मजबूत करने तथा सभी क्रांतिकारी शक्तियों और जो फासीवादी व प्रतिक्रियावादी तानाशाहियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं, के मध्य एकजुटता को सुदृढ़ करने में है।

अनेक नव स्वतंत्र देशों के युवाओं व छात्र संगठनों के प्रतिनिधियों ने 'शान्ति', तनाव-शैथिल्य व निरस्त्रीकरण के लिए युवा व छात्रों के विश्व मंच (हेलसिंकी 1981) में भाग लिया तथा एक रचनात्मक योगदान दिया। उनकी उपस्थिति ने दिखलाया कि विकासमान देशों के युवजन विश्व को युद्ध के विनाशकारी रसातल में पहुँचाने की इजाजत न देने के लिए दृढ़तापूर्वक संकल्पबद्ध हैं। उन्होंने दृढ़तापूर्वक घोषणा की कि वे विश्व-शान्ति हेतु अन्य युवजनों के साथ कार्यवाही व सहयोग करने के लिए तैयार हैं।

समाजवादोन्मुख देशों के युवा व छात्र शानदार आंदोलन में तथा प्रजातांत्रिक युवाओं का विश्व फैडरेशन (डब्लू एफ डी वाई) तथा अन्तर्राष्ट्रीय छात्र संघ (आई यू एस) द्वारा प्रायोजित विशाल साम्राज्यवाद विरोधी एकजुटता अभियानों में भी सक्रिय हैं। युवा व छात्र संगठन महत्वपूर्ण विश्वव्यापी युवा कार्यवाही को आगे बढ़कर अधिकाधिक आयोजित कर रहे हैं।

इस प्रकार निम्नलिखित निष्कर्ष है : अनेक कठिनाइयों व समस्याओं के बावजूद एशिया, अफ्रीका व लातीनी अमेरिका में प्रगतिशील व प्रजातांत्रिक युवा आन्दोलन ने साम्राज्यवाद व प्रतिक्रिया के विरुद्ध संघर्ष में तथा एकता प्राप्त करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है, और अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक युवा आन्दोलन का एक अंग बन गया है।

अध्याय : 5

पूंजीवादी दुनिया में युवा

1. युवाओं की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियां

विकसित पूँजीवादी दुनिया मे युवा पीढी जिस प्रकार की सामाजिक व आर्थिक समस्याओ का सामना कर रही है वह आर्थिक जीवन मे युवजनो की वर्तमान भूमिका द्वारा अधिकतर निर्धारित होता है। पश्चिमी योरोप व अमेरिका मे, 15 से 24 वर्ष की आयु के 20 करोड से अधिक युवा हैं, उनमे से 40 प्रतिशत से अधिक (उत्पादन व सेवाओं में) कार्यरत हैं। फ्रांस तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे सभी कार्यरत लोगों मे युवा 30 प्रतिशत हैं जबकि जापान मे 40 से 50 प्रतिशत हैं।

पूंजीवाद के अतर्गत, युवा श्रमिक भयंकर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व आध्यात्मिक उत्पीड़न के शिकार हैं। फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने कहा, "युवा न सिर्फ एक साधारण अल्पकालीन आर्थिक सकट का, बल्कि समाज का एक सकट, सभ्यता का एक विश्वव्यापी संकट का अनुभव कर रहा है। वे एक संकट के साथ रह रहे हैं तथा व्यवहारत कोई अन्य सामाजिक वास्तविकता को नहीं जानते हैं। वे संकट की पीढ़ी हैं।"[1]

बेरोजगारी तथा श्रम का अमानवीयकरण

इस संकट की एक अभिव्यक्ति श्रमरत जनों की युवा पीढ़ी मे बेरोजगारी का बढ़ना है। सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस मे यह नोट किया गया कि एक पूँजीवादी समाज मे, आधुनिकतम वैज्ञानिक व तकनीकी उपलब्धियों का उपयोग श्रमरत-जनों के विरुद्ध है, तथा इसने लाखो लोगों को बेरोजगार बना दिया है। 1970 व 1980 के मध्य विकसित पूंजीवादी दुनिया मे बेरोजगारों की सख्या 190 लाख तक पहुँच कर दुगुनी हो गई।[2] फ्रांस मे 25 वर्ष की आयु से कम रजिस्टर्ड बेरोज-गार की संख्या लगभग 900,000 है जिसमे दो-तिहाई स्त्रियां हैं। प्रत्येक 6 में एक, जो स्कूल मे नहीं जाता है, बेरोजगार है। इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि

1. यौर स क्युस्ते प्रेन तु सा प्लास''', पृ० 5
2. डोक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशन्स द 26थ कांग्रेस आफ द कम्युनिस्ट पार्टी आफ सोवियत यूनियन, पृ० 27

अनेक युवजन सिर्फ़ अस्थायी काम में नियुक्त हैं, वास्तविक संख्या 20-30 लाख है। इसका अर्थ हुआ कि लगभग हर दूसरा आदमी जो काम करना चाहता है सालों तक बेकार है या ऐसे काम पर लगा है जहाँ से वह कभी भी निकाला जा सकता है। संघीय जर्मन गणराज्य में, बेरोजगारों की संख्या 50 से 60 लाख तक पहुँच चुकी है, यानी हर तीसरा व्यक्ति बेरोजगार है। इटली के दो-तिहाई रजिस्टर्ड बेरोजगार युवा हैं, तथा देश की प्रजातांत्रिक ट्रेड यूनियन का अंदाजा है कि 15 लाख से ऊपर के व्यक्ति 18 से 23 वर्ष की आयु के हैं जिसमें आधे से अधिक माध्यमिक या उच्चतर शिक्षा प्राप्त किए हुए हैं।

बेरोजगारी पूँजीवाद के अंतर्विरोधों की सबसे बड़ी केंद्रीभूत अभिव्यक्ति है, जो किराए के श्रम के शोषण पर आधारित पूँजीवादी संबंधों के ढाँचे से ही पैदा होती है। सामाजिक कारणों की सम्पूर्ण संख्या इसमें शामिल है। एक है उद्योगों व सारे व्यवसायों का पुनर्गठन जिसे वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति ने आवश्यक बना दिया, और क्योंकि यह एकाएक एक अनियोजित अर्थव्यवस्था में किया जा रहा है, परिणामतः परम्परागत व्यवसायों का नुकसान, नए का उदय एवं श्रम भण्डारों का विषम वितरण।

बुर्जुआ विज्ञान यह स्वीकारने को बाध्य है कि युवाओं की बेरोजगारी में तीव्र वृद्धि के कारण युवाओं के सामाजिक संबंधों की कमजोरी में वृद्धि के फलस्वरूप युवा आक्रोश सिर्फ उनकी भौतिक परिस्थिति के विरुद्ध होने की अपेक्षा पूँजीवादी उत्पादन की समूची प्रणाली के विरुद्ध अधिक निर्देशित हो गया है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का अनुमान है कि 1980 से 1987 के बीच सब युवकों, जो विकसित पूँजीवादी देशों में काम की तलाश में हैं, काम देने हेतु 6 करोड़ नए काम बनाने होंगे। परन्तु आठवें दशक के विकास की भविष्यवाणी आर्थिक वृद्धि-दर का वायदा नहीं करती है जिससे यह माँग पूरी हो सके। बुर्जुआ समाचार-पत्र इस तथ्य को छिपाते नहीं हैं कि छठे दशक व सातवें दशक के आरंभ में पैदा हुई पीढ़ी को श्रम व शिक्षा में और अधिक कठोर प्रतियोगिता का सामना करना पड़ेगा।[1]

युवा श्रमजन जनता के सर्वाधिक जोखिम व उत्पीड़ित तबकों में एक हैं। वे न सिर्फ कम कमाते हैं, बल्कि अक्सर मूल अधिकारों से वंचित तथा ट्रेड यूनियनों से सम्बद्ध नहीं हैं। अधिकांश श्रम शिक्षार्थी व युवा श्रमिक मध्यम वर्ग के, छोटे व [illegible] कारखानों के उद्योगों में लगे हुए हैं, जो प्रतियोगिता में बचकर युवाओं व किशोरों के अति-शोषण को बनाता है।

इस प्रकार, युवाओं की बेरोजगारी का राजनीतिक भाग उठाते हैं। वे युवा

---

[1] वर्ल्ड मार्क्सिस्ट रिव्यू, संख्या 2, 1981, पृ० 123

पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के खिलाफ करते हैं (विकसित पूँजीवादी देशों में युवा श्रमिकों की औसत मजदूरी प्रौढ़ श्रमिकों की मजदूरी से 55 से 60 प्रतिशत कम है), उत्पादन में लगे नवशिक्षार्थियों के हितों के विरुद्ध छात्रों व स्कूल को छोड़ने वालों के हितों को रखते हैं, विदेशी श्रमिकों के विरुद्ध अंध-राष्ट्रवाद को उकसाते हैं, इत्यादि। बढ़ती हुई बेरोजगारी के साथ इजारेदारियाँ घने संघर्ष में पहले हासिल किए गए युवाओं के अधिकारों पर हमला कर रही हैं, तथा युवा श्रमिकों व नवशिक्षार्थियों की राजनीतिक कार्यवाही एवं उनकी ट्रेड यूनियन गतिविधियों में बाधा डालती हैं। प्रतिक्रियावाद बेरोजगार युवाओं का उपयोग सैनिक उद्देश्यों में करता है। संघीय जर्मन गणराज्य की सबसे बड़ी इजारेदारियाँ शानदार जीवन, पोशाक व व्यवसायिक प्रशिक्षण का वायदा करके बेरोजगार युवजनों को बुन्डेस्वेर में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करने में सैनिक अधिकारियों के साथ घनिष्ठता से कार्य करते हैं। 64

नव-उपनिवेशवाद का एक परिणाम व्यापक बेरोजगारी पूँजीवादी मार्ग पर विकासमान देशों के युवजनों को आर्थिक रूप में विकसित देशों को जाकर बसने में बाध्य कर रही है। पूँजीवादी इजारेदारियों के कुछ विकासमान देशों की आर्थिक निर्भरता के परिणामस्वरूप प्रतिभा पलायन यथा, युवा विशेषज्ञों का बड़ी संख्या में मूल देशों से बाहर जाना क्योंकि वे अपने देशों में अपने ज्ञान का उपयोग सदैव नहीं कर सकते हैं, होता है। युवा प्रवासियों के साथ-साथ राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आमतौर पर सबसे अधिक शोषित होते हैं। राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों व प्रवासियों की बेरोजगारी का स्तर औसत से कई गुना ऊँचा है। उसी काम में वे कम कमाते हैं, तथा उनके काम की हालत व सामाजिक सुरक्षा की सम्भावनाएँ बदतर होती हैं। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक इजारेदारों की नस्लवादी नीति के शिकार हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में नियोजकों का दावा है कि युवा श्वेतों में बेरोजगारी की वृद्धि इसलिए है क्योंकि उनके कार्यों को अश्वेत, प्यूर्टो-रिकन, मूल निवासी तथा एशिया के मूल वासियों ने हथिया लिया है। इसका लक्ष्य नस्लवादी भावना को उभारना तथा बेरोजगार श्वेत युवकों को अल्पसंख्यकों के विरुद्ध करना है।

पूँजीवादी समाज में बाल-श्रम का शोषण बीसवीं शताब्दी का—वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति का अभूतपूर्व युग का—कलंक है। बाल-श्रम सबसे सस्ता और अत्यधिक लाभदायक है। एक विशेष अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1973) ने माँग की कि उन्हीं बच्चों को काम करने की इजाजत देनी चाहिए जिनकी उम्र शिक्षा कानून के अंतर्गत निर्धारित स्कूल को छोड़ने की उम्र से ज्यादा हो। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के आँकड़ों के अनुसार उद्योगों में 15 वर्ष की आयु से कम 550 लाख से अधिक बच्चों का शोषण सम्मेलन के निर्णय का उल्लंघन करके किया जा रहा है।

पूँजीवादी समाज में श्रम का तीव्र गति से अमानवीयकरण हो रहा है ...

इसकी रचनात्मकता की कमी, श्रम में श्रमिकों के आत्माभिव्यक्ति के पतन, कार्यों की अस्थायी व क्षणीय प्रकृति और यह तथ्य कि लोग अपना काम खुद नहीं चुन सकते, इन सभी से स्पष्ट है। पूंजीवादी देशों में युवजन काम के प्रति अपने दृष्टिकोण को मूलरूप से परिवर्तित कर रहे हैं। जैसा फ्रांस के समाजशास्त्री पियरेत सार्तो सूचित करते हैं : "श्रम के क्षेत्र में पीढ़ियों के मध्य अंतर जितना अधिक है, उतना और किसी क्षेत्र में नहीं है।"[1] समाज में युवजनों को एकतावद्ध करने का अत्यन्त महत्वपूर्ण तरीके के रूप में श्रम के परम्परागत मूल्यांकन से अलग हटते हुए आज की वास्तविकता में श्रम 'स्वयं में लक्ष्य' नहीं रहा है तथा बुनियादी तौर पर जीवन की आवश्यक सुविधाओं की प्राप्ति हेतु सम्पत्ति अर्जित करने का सिर्फ एक साधन ही बन गया है। युवजनों में व्यवसायिक गौरव की भावना गिरी है, वे श्रम को एक व्यवसायिक धन्धे के स्थान पर आराम का जीवन बिताने के विपरीत सिर्फ़ एक काम मानते हैं।

युवा समस्याओं पर फ्रांसीसी विशेषज्ञ जाँ रूजले ने युवाओं में श्रम के अवमूल्यन को 'श्रम के प्रति अरुचि' कहा। वे कहते हैं कि यह घटना पूंजीवादी समाज के सम्पूर्ण निषेध का, परम्परागत बुर्जुआ नैतिकता के प्रकारों में एक है। रूजले ने सही ही इंगित किया है कि जब युवाओं को कहा जाता है कि श्रम मानवीय गतिविधि का एक महत्त्वपूर्ण रूप है, व्यक्ति की आत्माभिव्यक्ति के मूल तत्त्वों में एक है, तब उनमें अधिकाश शंका करते हैं। "उनमें कोई भी भविष्य में रुचिकर, रचनात्मक व उत्तरदायित्वपूर्ण नियुक्ति की आशा नहीं रखता है।"[2]

साथ ही पूंजीवादी देशों में युवजनों का अधिकांश भाग युवा पीढी की दयनीय स्थिति के सामाजिक कारणो के पर्याप्त रूप मे सही समझ नहीं रखता। फ्रैंकफुर्ट ऑन द मैन में मार्क्सवादी शोध संस्थान ने एक बड़े नगर के बड़े औद्योगिक संस्थान में कार्यरत युवजनों मे वर्ग-चेतना के स्तर को दर्शाने वाली कई समाजशास्त्रीय प्रश्नावलियाँ बनाई हैं। इस शोध ने यह बतलाया है कि 15 से 25 की आयु वर्ग के अधिकांश युवा श्रमिक बेरोजगारी की समस्या के समाधान को सरकार पर छोड़ते हैं, जैसा पृष्ठ 129 की तालिका से स्पष्ट है (प्रतिशत में)।

उत्तर देने वालों मे दो-तिहाई ट्रेड यूनियनों में भाग लेना आवश्यक समझते हैं, तथा एक-तिहाई से कुछ अधिक का विश्वास है कि वर्तमान संकट में सम्पत्ति की विषमता के प्रभाव से उबरने के लिए उन्हें राजनीति में भाग लेना होगा।[3]

1. सार्तो पि, 'ज्युने ओ त्रावेल, ज्युनेस सॉं त्रावेस, पेरिस 1977, पृ॰ 9
2. रूजले जाँ, एर्लेगी ओ त्रावेल—मिथ ऊ रेलिते ?' प्रोब्लाम इकोनोमिके सं॰ 1480, 1976, पृ॰ 6
3. वही, पृ॰ 79

	हाँ	शायद	वास्तव में नहीं	नहीं
—बेरोजगारी एक अस्थायी घटना है तथा सरकार इसे विपत्तिजनक अनुपात तक पहुंच जाने की इजाजत नहीं देगी	42	21	8	29
—बेरोजगारी संकट से जुड़ी है। सरकार को युवजनों के लिए काम देने का अधिक प्रयास करना चाहिए	77	14	4	5
—बेरोजगारी पूंजीवादी वर्ग के विलीन होने के साथ समाप्त हो जाएगी	15	25	10	50
—बहुत से बेरोजगार आलसी व खराब कामगार हैं	28	34	10	28
—विदेशियों के न होने पर हमें काम मिल जाएँगे।	13	33	16	38

बहुत से युवजन यह समझने लगे हैं कि सामाजिक व वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति की मुख्य आवश्यकताओं की माँग सम्पूर्ण राजनीतिक ढाँचे का आमूल पुनर्गठन है, तथा उनके समक्ष विशेष समस्याएँ सिर्फ़ श्रमिक-वर्ग व सभी श्रमरत जनता के साथ संयुक्त कार्यवाही द्वारा सुलझाई जा सकती हैं। युवजन, जो पूंजीवाद में सबसे अधिक शोषित हैं, हड़तालों में भाग ले रहे हैं।

सातवें दशक के दौरान पूंजीवादी देशों में हड़ताल करने वालों की संख्या तीन गुनी हो गई है तथा अधिकाधिक आँकड़ों के अनुसार यहाँ तक कि 25 करोड़ पहुँच गई है।[1] संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रति वर्ष करीब 20 लाख युवा श्रमिक हड़ताल करते हैं। फ्रांस, इटली व पश्चिमी जर्मनी में श्रमिक-वर्ग के संघर्ष में युवा श्रमिकों की भागेदारी काफी अधिक है।

युवा श्रमिकों की बढ़ती हुई राजनीतिक माँगें उनके आधुनिक संघर्ष की विशिष्टता है। ब्रिटेन में युवा ट्रेड यूनियनवादियों की राष्ट्रीय समितियों ने इजारेदारियों की शक्तियों को सीमित करने, श्रमिकों के लिए अधिक राजनीतिक अधिकार देने व नस्लवादी भेदभाव को समाप्त करने की माँग की।

कारखानों पर नव-शिक्षार्थियों का आंदोलन पश्चिमी जर्मनी के राजनीतिक जीवन की हाल की घटना थी। आरम्भ में आंदोलन सही ढंग से संगठित नहीं था

1. डोक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशन्स, द 26th कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 27

तथा स्वतःस्फूर्त था। कालान्तर में यह मजबूत हो गया तथा नव-शिक्षार्थियों की मांगों (पारिश्रमिक की एक प्रणाली, अच्छा न्यूनतम वेतन, व्यापक सामान्य शि[illegible] हड़ताल करने का अधिकार आदि) को पुराने श्रमिकों ने समर्थन प्रदान कि[illegible] इसी प्रकार के आंदोलन इटली, फ्रांस व ब्रिटेन में फैले। राज्य शिक्षा अधिकारि[illegible] द्वारा औद्योगिक नवशिक्षार्थी नियम प्रणाली के लिए प्रगतिशील ट्रेड यूनियनों [illegible] संघर्ष काफी प्रेरक रहा।

बेहतर जीवन की सुविधाओं व आमूल सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष श्रमिक वर्ग के साथ कृषि में कार्यरत युवजन शामिल हो रहे हैं। खेतिहर श्रमि[illegible] शक्ति निरंतर घट रही है क्योंकि अप्रशिक्षित ग्रामीण युवा कृषि को छोड़ रहे तथा शहरों में अकुशल श्रमिकों या बेरोजगारों की क़तारों को बढ़ा रहे हैं। [illegible] कृषि मे हो हैं वे इज़ारेदारों के हितों के आधीन कृषक नीति का, तथा कृषि उत्पाद के खरीद मूल्य के निरंतर गिरावट व मशीनों और उर्वरकों के ऊँचे मूल्य [illegible] विरोध कर रहे हैं। युवजन उन्हें कार्य, भूमि तथा दीर्घकालीन ऋणों को प्रदा[illegible] करने वाले कृषि-सुधार की मांग कर रहे हैं।

पूँजीवादी समाज में श्रमिक वर्ग के अंग के रूप में अपनी स्थितियों के कार[illegible] युवा श्रमिक इज़ारेदारी आधिपत्य का विरोध कर रहे हैं। इसीलिए वे अपनी मांग[illegible] को एक सही वर्ग-दृष्टिकोण देने मे तथा अपने संघर्ष को अधिक ठोस व व्यवस्थि[illegible] बनाने में समर्थ हैं।

शिक्षा प्रणाली में संकट

वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति के साथ, शिक्षा आर्थिक विकास का एक अति महत्त्वपूर्ण घटक बन गया है तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति व दर को निरंतर प्रभावित कर रहा है। नवीन उद्योगों तथा उससे सम्बन्धित विशेषताओं ने नई शिक्षा प्रणाली, स्कूली पाठ्यक्रम तथा शैक्षणिक पद्धतियों की मांग ला दी है; अब प्रश्न सभी व्यवसायों के श्रमिकों की उच्चतर सामान्य शिक्षा व व्यापक प्रशिक्षण का है ताकि वे उत्पादन की तेज़ी से बदलती प्रणाली में स्वयं को अनुकूल बना सकें।

विज्ञान व तकनीक के तीव्र विकास के इस युग मे निरक्षरता-उन्मूलन वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण समस्या है। यूनेस्को के आँकड़ों के अनुसार संसार में 80 करोड़ से अधिक लोग हैं जो न पढ़ना और न लिखना जानते हैं। इनमें, पूँजीवादी देशों में 6 से 11 वर्ष की आयु वर्ग के 10 करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जाते। यदि शिक्षा की विद्यमान पद्धति व वर्तमान जनसंख्या की वृद्धि-दर बरकरार रहे तब 1985 तक करीबन 16 करोड़ 50 लाख बच्चे या इस आयु वर्ग का हर तीसरा बच्चा स्कूल नहीं जाएगा। तथा जो पढ़ने व लिखने के अयोग्य हैं उनकी संख्या 1990

तक 88 करोड़ 40 लाख और 2000 तक 95 करोड़ 40 लाख तक पहुँच जाएगी।

पूँजीवादी शिक्षा प्रणाली श्रमरत जनता के विशाल समूह की शिक्षा हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं दे सकता है। वास्तव में यह प्रणाली विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के युवाओं के लिए शिक्षा के भिन्न स्तर देने हेतु सचालित की जाती है। यह सत्ताधारी वर्ग के विशेषाधिकारों को सुरक्षित रखते हुए एक सामाजिक रुकावट है। वर्ग-विभेदीकरण 'अच्छे' स्कूलों के अस्तित्व से प्रमाणित होता है, यथा— इंग्लैंड में 'पब्लिक स्कूल', फ्रांस में लाई सी व पश्चिमी जर्मनी में जिमनाज़ियम। अधिकांश व्यक्तिगत स्कूलों की तरह ये श्रमिक वर्ग के परिवारों के बच्चों के लिए वर्ग-चुनाव व शिक्षा की ऊँची फीस के कारण सुलभ नहीं हैं। इंग्लैंड में सिर्फ़ सात प्रतिशत बच्चे पब्लिक स्कूल में जाते हैं, हालांकि देश के कुल स्कूलों में इनकी सख्या 14 प्रतिशत है। प्रति वर्ष की शिक्षा फीस कम-से-कम 500 पौंड स्टर्लिंग है। ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज—'वर्गीय' विश्वविद्यालय—में प्रवेश पाने वालों का 60 प्रतिशत इन्हीं स्कूलों से आते हैं। 'पब्लिक स्कूल' के डिप्लोमाधारी विद्यार्थी को सामान्य स्कूलों से आने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा ऑक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में प्रवेश पाने के 22 गुना अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। 'पब्लिक स्कूल' के भूतपूर्व छात्र आज ब्रिटिश न्यायालयों में उच्च पदों के 83 प्रतिशत पर हैं तथा ब्रिटेन के फौजी जनरलों में उनकी सख्या 72 प्रतिशत है। पश्चिमी जर्मनी के जिमनाज़ियमों में अकुशल श्रमिकों के केवल 4 प्रतिशत तथा कुशल श्रमिकों के केवल 9 प्रतिशत बच्चे प्रवेश ले पाते हैं; इन परिवारों के क्रमशः 84 प्रतिशत व 76 प्रतिशत बच्चे आम सामान्य स्कूलों में जाते हैं जबकि बचे हुए अन्य ग़ैर-क्लासिकी स्कूलों में जाते हैं।

अनेक पूँजीवादी देशों में नस्लवादी भेदभाव घर किए हुए हैं। नागरिक अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र संघ के कमीशन की रिपोर्ट ने स्कूलों में नस्लवादी भेदभाव के अनेक उदाहरण दिए हैं, तथा यह निष्कर्ष निकाला है कि राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के बच्चों को अभी भी बराबर कानूनी संरक्षण के उस वायदे का लाभ हासिल करना है जो संविधान द्वारा घोषित व सुप्रीम कोर्ट के निर्णयों में है।[1] रिपोर्ट खुलेआम स्वीकारती है कि नस्लवाद संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की राजकीय नीति बन गया है।

नस्लवाद व रंगभेद ने दक्षिणी अफ्रीका में शिक्षा-प्रणाली को पूर्णतया तहस-

1. देखें, स्टेटमेन्ट ऑन मैट्रोपोलिटन स्कूल डिसेग्रेगेशन, ए रिपोर्ट ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स कमीशन ऑन सिविल राइट्स, यू० एस० गवर्नमेन्ट प्रिंटिंग ऑफिस, वाशिंगटन, 1977, पृ० 112

नहग कर दिया है। 15 वर्ष के आधे से अधिक अफ्रीकी बच्चे कभी भी स्कूल न गए। छात्रों का सिर्फ 10 प्रतिशत ही चौथी कक्षा से आगे जा पाते हैं। रा अफ्रीकियों, जो पूरी जनसंख्या के 70 प्रतिशत हैं, की शिक्षा के मुकाबले श्वेतों क शिक्षा पर 4 गुना अधिक खर्च करता है। एक श्वेत बच्चे की शिक्षा पर अश्वे बच्चे के मुकाबले 15 गुना अधिक व्यय किया जाता है। अफ्रीकियों के लि पाठ्यक्रम अनिवार्य बेगार को तय करता है। नस्लवादी अल्पसंख्यक कृषि में बाल श्रम का व्यापक उपयोग करता है।

विकसित पूँजीवादी दुनिया में पूर्णतया अपर्याप्त व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रणाल एक विकट सामाजिक समस्या बन चुकी है। इटली में काम शुरू करने वाले युवा का करीबन दो-तिहाई भाग के पास न्यूनतम व्यवसायिक प्रशिक्षण भी नहीं है फ्रांस में, नियोजन कार्यालय में प्रतिवर्ष नाम दर्ज कराने वाले 230,000 युवज किसी भी प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण नहीं रखते हैं।

वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति के विस्तार ने, जिसने योग्यता प्राप्त विशेषज्ञों की माँग को बढ़ा दिया है, उच्चतर स्कूलों की पढ़ाई में विकास किया है। परंतु श्रमिक व कृषकों के अधिकांश बच्चों के लिए, तथा श्रमरत युवाओं के व्यापक समूह के लिए उच्चतर शिक्षा अभी भी सुलभ नहीं है। शिक्षा की ऊँची फीस अप्रजा तांत्रिक स्कूल प्रणाली श्रमिक परिवारों के युवजनों को उच्चतर स्कूलों में प्रवेश पाने की इजाजत नहीं देती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में छात्रों की जनसंख्या का 60 प्रतिशत धनी परिवारों (बड़े व मध्यम बुर्जुआजी), 23 प्रतिशत पेटी-बुर्जुआ परिवारों तथा सिर्फ 17 प्रतिशत श्रमिकों व कृषकों के परिवारों से हैं। यूनेस्को के आंकड़ों के अनुसार अन्य पूंजीवादी देशों में श्रमिकों के परिवारों का प्रतिशत इससे भी नीचा है: बेल्जियम—11%; डेनमार्क—10%; पश्चिम जर्मनी—8.5%; आयरलैंड—7.5%; नार्वे—7%; फ्रांस—6.2%; नीदरलैंड—6% तथा स्विट्जरलैंड—3.7%।

उच्चतर शिक्षा की प्रणाली पर राज्यकीय इजारेदारी नियंत्रण सख्त होता जा रहा है। इजारेदारियाँ उच्चतर शिक्षा को नियोजक संघों द्वारा प्रभावित करती हैं, सरकारी अधिकारियों को इच्छाएँ व सिफ़ारिशें भेजती हैं। उच्चतर स्कूल के पाठ्यक्रम को निर्मित करने वाली सरकारी समितियों पर इजारेदारों के समूह के प्रतिनिधि बैठते हैं। आर्थिक मददों के मार्फत इजारेदारियाँ उच्चतर शिक्षा पर एक सीधा प्रभाव डालती हैं। शिक्षा प्रणाली के 'आधुनिकीकरण' हेतु दिए जाने वाली उनकी राशि सरकारी अनुदान के लगभग बराबर होती है। साथ ही पूँजीवादी राज्य, जिसने शिक्षा के क्षेत्र में अपनी भूमिका व्यापक कर दी है, एक नीति को विकसित व लागू करने का प्रयास करता है जो समूचे सत्ताधारी वर्ग के हितों की कारगर ढंग से मदद करता है।

शिक्षा व व्यवसायिक प्रशिक्षण पर पहले से ही कम हो रहा खर्च और भी कम हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में सातवें दशक के दौरान सरकारी अनुदान 30 प्रतिशत कम कर दिया गया है। इंग्लैंड में मानविकी विषयों में विशेषज्ञताओं को सिखाने वाले उच्चतर स्कूलों मे प्रवेश लगभग आधा कम कर दिया गया है। यहाँ तक कि कम-से-कम विस्तृत अनुमानों के आधार पर जो उच्चतर स्कूलों मे प्रवेश पा रहे हैं वे उन्हें निर्धारित समय पर स्नातक करने के सिर्फ 50 प्रतिशत ही अवसर मिलते हैं।

पूंजीवादी देशो में छात्रों की परिस्थितियाँ यथा, अनिश्चयता, भविष्य के प्रति छात्रो के विश्वास मे कमी तथा समाज के सामाजिक विकास की वस्तुगत माँग के साथ उच्चतर स्कूल प्रणाली को एकरूप करने मे बुर्जुआ समाज की मौलिक अयोग्यता, छात्रों के विशाल हिस्से को श्रमरत युवाओं के विशाल जनसमूह को आकांक्षाओं व संघर्ष के निकट लाती जा रही हैं। जैसा बोरिस पोनोमरेव ने इंगित किया है, पहले से कही ज्यादा अधिक शिक्षित बेरोजगारों की फौज सातवें दशक मे वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति की एक 'उपलब्धि' है।

पश्चिमी यूरोप मे उच्चतर शिक्षा सुधार के लिए छात्रो के तीव्र संघर्ष ने कुछ सरकारो को आंशिक सुधारों को लागू करने को बाध्य कर दिया है। हालांकि, अकसर ये आंशिक सुधार सार्वजनिक राय को शांत करने और वास्तव मे कुछ नहीं करने हेतु, सिर्फ घोषणाओ मे सीमित हैं। सामान्यतः जो किया जाना है वह है शिक्षा प्रणाली मे रचनात्मक परिवर्तन, नए किस्म के स्कूलों की स्थापना, अध्यापन व अध्ययन के परिष्कृत तरीके, इत्यादि। परन्तु पुनर्गठन व नए उपायों मे अधिकांश व्यवहार मे नहीं लाये जाते हैं। संघीय जर्मन गणराज्य के नवीन शिक्षा कार्यक्रम (1975) ने विद्यमान बहु-स्तरीय प्रणाली के स्थान पर सार्वभौम 10-वर्षीय स्कूली शिक्षा को लागू करने का लक्ष्य रखा। परन्तु जो कुछ किया गया वह था अनेक प्रायोगिक स्कूलों को खोलना। 1968 मे फ्रांस मे उच्चतर शिक्षा पर एक कानून लागू किया गया, जिसने उच्चतर शिक्षा की प्रशासनिक संस्थाओं में तथा शोध-परिषदों में प्रतिनिधित्व के लिए छात्रो की माँगों पर कुछ रियायतें दी, लेकिन वास्तव में कुछ भी परिवर्तन नही किया। निर्धन परिवारों के बच्चे पहले की तरह उच्चतर शिक्षा मे सीमित प्रवेश पा रहे हैं।

सुधारो का क्रियान्वयन प्रजातांत्रिक व रूढ़िवादी शक्तियों के मध्य तथा राजनीतिक पार्टियो व समूहों के मध्य एक कड़वे व निरंतर संघर्ष मे हो रहा है। पूंजीवादी देशो मे शिक्षा-प्रणाली का आंशिक प्रजातान्त्रिकरण वामपंथ के निरन्तर व सबल संघर्ष का परिणाम है।

2. युवाओं को पक्ष में लेने हेतु कम्युनिस्टों का संघर्ष

युवाओं के अधिकारों के लिए

पूँजीवादी दुनिया में मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियाँ युवा समस्याओं पर विशेष ध्यान दे रही हैं। ऐसा विभिन्न समूहों व तबकों के युवाओं के विराट् समूह को प्रजातांत्रिक व प्रगति के लिए इजारेदारी पूँजी के विरुद्ध संघर्ष में लाने की आवश्यकतावश हुआ, क्योंकि युवजनों की समस्याएँ सिर्फ़ समान सामाजिक उद्देश्यों को अपने पक्ष में लेने के संदर्भ द्वारा ही पूरी की जा सकती हैं।

योरोप के पूँजीवादी देशों में 22 कम्युनिस्ट युवा लीग या कम्युनिस्ट पार्टियों से घनिष्ठता से सम्बन्धित युवा लीग है, तथा 6 मार्क्सवादी छात्र संगठन हैं। सातवें दशक तक इन लीग एवं संगठन में 100,000 से अधिक सदस्य थे तथा दशक की समाप्ति तक सदस्यता लगभग 400,000 पहुँच गई।

लातीनी अमेरिका में युवा पीढ़ी में कम्युनिस्ट युवा संगठन एक अग्रगामी भूमिका अदा करते हैं। यहाँ 19 राष्ट्रीय युवा कम्युनिस्ट संगठन हैं। पाँच देशों में ये कम्युनिस्ट पार्टियों के युवा विभाग की तरह कार्य करते हैं। यद्यपि युवा कम्युनिस्ट कानूनी तौर पर सिर्फ 13 देशों में कार्य करते हैं।

कम्युनिस्ट युवा आंदोलन का एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप इसमें युवा श्रमिकों की बढ़ती हुई संख्या है। पुर्तगाली युवा कम्युनिस्ट लीग व स्वीडन की युवा कम्युनिस्ट लीग के आधे से अधिक सदस्य युवा श्रमिक हैं, फिनलैंड की प्रजातांत्रिक युवा लीग के लिए यह संख्या 66 प्रतिशत है।

कम्युनिस्ट पार्टियों की वैचारिक व व्यावहारिक गतिविधि का एक बुनियादी स्वरूप युवजनों में कार्य करना है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी युवा श्रमिक मुक्ति लीग (वाई डब्ल्यू एल एल) के साथ सम्बन्धों पर अत्यधिक ध्यान देती है। अपने 22वें सम्मेलन (1979) में सी पी यू एस ए ने वाई डब्ल्यू एल एल की गतिविधियों का उच्च-स्तरीय मूल्यांकन किया, साथ ही कम्युनिस्टों का युवाओं में कार्य तथा वाई डब्ल्यू एल एल की गतिविधियों में भागीदारी का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया। सम्मेलन ने कहा कि यह बढ़िया प्रमाण है कि वाई डब्ल्यू एल एल बाद में पार्टी की भावी सदस्यता के लिए एक बीच की कड़ी के रूप में कार्य कर रहा है तथा टिप्पणी की गई कि युवा आंदोलन में लीग एक स्वतंत्र भूमिका निभा रही है। वाई डब्ल्यू एल एल के सर्वाधिक प्रगतिशील सदस्य न सिर्फ पार्टी में भर्ती होते हैं, बल्कि वह हजारों वर्ग-चेतन मजदूरों को भी शिक्षित कर रहे हैं जो जुझारू ट्रेड यूनियन-वादी बनते हैं और जो इजारेदार-विरोधी व शांति आंदोलनों में भाग लेते हैं। इसके कार्य का एक महत्त्वपूर्ण रूप युवा अमेरिकों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की

लोकप्रिय बनाना है। वाई डब्लू एल एल की एक स्थायी शिक्षा समिति है जो स्थानीय शाखाओं द्वारा संचालित मार्क्सवादी-लेनिनवादी स्कूलों में समन्वय स्थापित करती है। लीग के सदस्य युवाओं के साथ विशेष कार्यक्रमों व मार्क्स-वादी-लेनिनवादी अध्ययन केन्द्रों दोनों में कार्य करते हैं। इसका समाचार पत्र 'यंग वर्कर' है। वाई डब्लू एल एल ने युवाओं के अधिकारों के लिए एक अभियान शुरू किया, बेरोजगारी व मुद्रास्फीति के विरुद्ध संघर्ष इसमें एक कार्य है। इस आधार पर वाई डब्लू एल एल अन्य अमेरिकी युवा समूहों के साथ संयुक्त संघर्ष का आह्वान करता है।

युवाओं पर अपने कार्य में जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी समाजवादी जर्मन श्रमरत युवा (एस जी डब्लू वाई) पर निर्भर करती है, जिसके 50 प्रतिशत से ज्यादा सदस्य युवा श्रमिक हैं तथा करीबन 30 प्रतिशत छात्र हैं। जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी पश्चिम जर्मनी के छात्रों में कार्य को काफी महत्व प्रदान करती है, तथा 20 विश्व-विद्यालयों से अधिक में पार्टी के दल हैं।

पश्चिमी जर्मनी के सबसे बड़े प्रगतिशील छात्र संगठन मार्क्सिस्ट स्पार्टाकुश लीग का पश्चिमी जर्मनी के छात्र समुदाय पर काफी अधिक प्रभाव है। समाजवाद की ओर ले जाने वाले पथ में एक बीच की कड़ी के रूप में प्रजातान्त्रिक इजारेदार-विरोधी प्रजातंत्र इसका रणनीतिक उद्देश्य है। स्पार्टाकुश लीग ने अपना इजारेदार-विरोधी संघर्ष दो दिशाओं में छेड़ा : वैचारिक ('विश्वविद्यालयों में मार्क्स !') तथा राजनीतिक (छात्रों को स्वशासन प्रदान करने हेतु संघर्ष)। पश्चिमी जर्मनी के लेखक हा० वेयर को एकजुटता की सुदृढ़ता में इस संघर्ष के आश्चर्यजनक प्रभाव को स्वीकारना पड़ा। उन्होंने कहा कि यहाँ तक ग़ैर-'वामपंथी' पीठ (फैकल्टी) ने स्पार्टाकुश को 'एक ऐसा साथी जिसके साथ वार्तालाप की जा सकती है' माना, जबकि 'विश्वविद्यालय में मार्क्स !' वाली माँग को 'वास्तविक वैज्ञानिक बहुवाद को सुरक्षित रखने की विधिसम्मत माँग'[1] माना। सातवें दशक के अंत तक स्पार्टाकुश के 142 उच्चतर स्कूलों में 250 समूहों में कार्यरत करीबन 6000 सदस्य थे। सरकारी अधिकारियों ने स्पार्टाकुश के सदस्यों को राजनीतिक भेदभाव की नीति का शिकार बनाया है, तथा उन्हें उनके द्वारा चुने क्षेत्र में काम करने के अधिकार से वंचित कर रहे हैं।

फ्रांस के कम्युनिस्ट युवा का आंदोलन (एम सी वाई एफ), जो फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में कार्य करता है, एक मार्क्सवादी युवा संगठन है। एम सी वाई एफ 1974 में स्थापित हुआ जब चार युवा संगठनों का विलय हुआ। इसके नेता विशेष

---

1. वेयर० हा० एम० एस० बे०, स्पार्टाकुस फोन्डेर स्टूडेन्टिशेन प्रोटेस्ट बे बेगुंग सुम बलासेन कम्फ, स्टुटगार्ट, 1973, पृ० 49-50

पार्टी प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं, तथा सामान्यतः फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध हैं। एम सी वाई एफ के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को कम्युनिस्ट, कम्युनिस्ट नगरपालिकाओं द्वारा लिये कार्यों में लगाते हैं। विचार-विमर्श की बैठकें नियमित रूप से होती हैं जिसमें युवा कम्युनिस्ट मार्क्सवादी सिद्धांत का अध्ययन करते हैं तथा वर्तमान घटनाओं का विश्लेषण करते हैं। फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी का युवाओं पर राजनीतिक ब्यूरो के एक वक्तव्य के अनुसार, "एम सी वाई एफ युवाओं में कम्युनिस्ट गतिविधि के लिए मुख्य आधार है···संघर्ष के विकास तथा बढ़ते हुए प्रभाव के साथ इसकी जिम्मेदारी बढ़ रही है।"[1] फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्लेनम (1979) ने 'वर्ग-संघर्ष में युवाओं की भागीदारी' पर विचार किया।[2] एम सी वाई एफ की कांग्रेस (1980), जिसने इसके वर्तमान घोषणापत्र को स्वीकारा है, वास्तव में फ्रांसीसी युवा की जुझारू शक्तियों का एक प्रतिबिम्ब है।

युवाओं के सामाजिक व आर्थिक अधिकारों हेतु संघर्ष में, एम सी वाई एफ जनरल कन्फेडरेशन ऑफ लेबर के युवा सदस्यों के साथ नजदीकी रूप में सहयोग करता है। वे बेरोजगार युवा कमेटियों में साथ-साथ बैठते हैं, वे युवजनों को उनके अलगाव उपेक्षित होने की भावना से उबरने में मदद करते हैं, तथा युवा बेरोजगार श्रमिकों को सामाजिक सहायता प्रदान करने में स्वयं को रोकते नहीं हैं। ये कमेटियाँ ट्रेड यूनियन आंदोलन पर पाठ्यक्रम चलाती हैं, पत्रिकाएँ निकालती हैं, क़ानूनी सलाहकार सेवाएँ चलाती हैं, बेरोजगारों के परिवारों को उनके घरों से निकालने के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन करती हैं, आदि। 1979 में फ्रांसीसी कम्युनिस्टों ने बेरोजगार युवाओं को, भौतिक सहायता व काम पाने में मदद, स्थानीय समस्याओं से निपटने आदि के लिए उनके साथ एकजुटता के एक संगठन की स्थापना की बात की।

1957 में कम्युनिस्ट छात्र संघ (यू सी एस) की स्थापना एम सी वाई एफ से संबद्ध एक स्वशासी संस्था के रूप में हुई। यू सी एस फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम के दस्तावेज छात्र समुदाय के समक्ष लाते हैं तथा इन दस्तावेजों के मुख्य विचारों को समझाने व प्रचारित करते हैं। यह नियमित भाषणों, वाद-विवादों तथा फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के साथ छात्रों की बैठकों का आयोजन करना है तथा छात्रों की आर्थिक माँगों व व्यापक हितों के लिए संघर्ष में सक्रिय है।

ब्रिटिश कम्युनिस्टों का ध्यान युवा कम्युनिस्ट लीग को कैसे जन-संगठन बनाए

---

1. ल'यूमिने, 14 अप्रैल 1973
2. वही, 9 नवम्बर 1970

इस पर केन्द्रित है। इसके लिए कारखानों में किए जाने वाले कार्य को सुधारा जा रहा है, स्थानीय यु क ली शाखाओं को मजबूत किया जा रहा है, बुलेटिन निकाले जा रहे हैं, स्कूलों में यु क ली की शाखाओं की सदस्यता को बढ़ाने में ध्यान लगाया जा रहा है। जबकि अधिकतर यु क ली सदस्य अधिक आयु-वर्ग के युवा होने चाहिए फिर भी आजकल 14-15 वर्ष की आयु पर जोर दिया जाता है। यु क ली ने स्कूली छात्रों के राष्ट्रीय संघ को संगठित करने में मदद दी जो विद्यार्थियों के अधिकारों के लिए संघर्ष करता है।

ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव गॉर्डन मैकलेनन द्वारा, ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के 36वें कांग्रेस (1979) में युवाओं पर एक विशेष विभाग की एक रिपोर्ट में संकेत किया गया कि समाजवाद के लिए संघर्ष में युवजनों को खींचने में ब्रिटिश कम्युनिस्टों को बहुत ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि युवजन विशेष रूप से बेरोजगारी व सरकारी खर्चे में कटौतियों से परेशान हैं, हालांकि वे ब्रिटेन के भविष्य हैं। कम्युनिस्टों को युवजनों को एक ऐसे समाज के निर्माण की संभावना को बतलाना है जो रचनात्मक प्रयास में उनके गुणों व क्षमताओं को पूरी तरह से काम में लेगा, युवाओं को शिक्षा, सांस्कृतिक उन्नति, आराम व मनोरंजन के लिए सभी अवसर प्रदान करेगा ताकि वे पूर्णरूपेण विकसित मानव बन सकें व शांति के संसार में जी सकें।

पुर्तगाली युवा कम्युनिस्ट लीग युवाओं में काम करने वाले आंदोलन की प्रेरक शक्ति है। पुर्तगाली कम्युनिस्ट पार्टी की नवीं कांग्रेस (1979) ने बतलाया कि यु क ली को अपनी गतिविधियाँ उद्योगों व सहकारी संस्थाओं में बढ़ानी चाहिए, जहाँ अधिकतर श्रमरत युवा केन्द्रित हैं, तथा युवाओं के कुछ हिस्सों को प्रभावित करने वाली 'अव्यवस्था'—निष्क्रियता व राजनीति के प्रति उदासीनता—को दृढ़तापूर्वक हटाना चाहिए। प्रजातांत्रिक स्वतंत्रताओं व क्रांति की अन्य उपलब्धियों को सुरक्षित रखने के लिए लोकप्रिय संघर्ष में श्रमरत युवाओं के आंदोलन को भी सक्रिय होना चाहिए।

पार्टी कांग्रेस ने कहा कि दो युवा कम्युनिस्ट संगठनों : युवा कम्युनिस्ट लीग तथा कम्युनिस्ट छात्रों के संघ का विलय एक महत्वपूर्ण राजनीतिक लक्ष्य था। पुर्तगाली कम्युनिस्ट इस आधारवाक्य से आगे बढ़े कि दोनों संगठन युवाओं की बेरोजगारी व भेदभाव और हिंसा व वासना की संस्कृति के विरुद्ध, शिक्षा के अधिकार व फासीवादी युवा समूहों पर प्रतिबन्ध आदि के लिए साथ-साथ कार्य कर रहे हैं। इन दो संगठनों ने संयुक्त संघर्ष में एवं राष्ट्रीय व प्रांतीय युवा कार्यवाहियों के संगठन ने काफी अनुभव संचित किया है। पुर्तगाली कम्युनिस्ट युवा संगठन (पी सी वाई) की स्थापना के साथ नवम्बर 1979 में वे परस्पर विलय हो गए। एक युवाओं का घोषणापत्र स्वीकृत किया गया जिसमें मुक्ति, प्रजातन्त्र व समाज-

ग्रीक के कम्युनिस्ट युवाओं (सी वाई जी) ने एक स्पष्ट साम्राज्यवाद-विरोधी, प्रजातांत्रिक कार्यक्रम बनाया है जिसमे समान मूल्य के कार्य में समान वेतन, पूरे युवाओं को रोजगार, युवा-स्वास्थ्य सेवा, युवा श्रमिकों के लिए नियत श्रम दिवस, 15 वर्ष के नीचे के बच्चों के श्रम पर प्रतिबन्ध आदि का आह्वान किया है। सी वाई जी के कार्य का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पहलू युवा श्रमिकों को ट्रेड यूनियन में अधिक सक्रिय करना है। सी वाई जी ने कहा कि जब युवा पीढ़ी का विराट भाग—युवा श्रमिक—अधिक सक्रिय होते हैं, सिर्फ तभी वे युवजन, जो अभी भी राजनीति की उपेक्षा करते हैं, प्रजातांत्रिक आंदोलन के लिए अपने पक्ष में किए जा सकते हैं।

कम्युनिस्ट छात्र संघर्ष के उबाल को वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति की माँग तथा स्कूल व समाज के वर्तमान ढाँचे के मध्य अंतर्विरोधों की एक अभिव्यक्ति के रूप मे देखते हुए छात्र समस्याओं पर विशेष ध्यान देते हैं। वे इसे एक नई भूमिका जिसे छात्र, विशेषज्ञ व बुद्धिजीवी अपने स्वयं के देशों मे क्रांतिकारी प्रक्रिया मे अदा कर सकते हैं, के संकेत के रूप में भी देखते हैं।

पूँजीवादी दुनिया में अधिकांश कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों के कार्यक्रम के दस्तावेज स्कूलों व विश्वविद्यालयों के प्रजातांत्रिकरण का आह्वान करते हैं। ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी नए स्कूलों के लिए अधिक धन तथा शिक्षकों के लिए अधिक वेतन की माँग कर रहा है। *कनाडा व पश्चिमी जर्मनी में कम्युनिस्ट सार्वभौम निःशुल्क* शिक्षा की माँग कर रहे हैं। जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी ने शिक्षा की पूर्ण प्रजातांत्रिक प्रणाली की स्थापना का आह्वान किया है। कम्युनिस्टों की माँग है कि शैक्षिक समस्याओं के हल में श्रमिक-वर्ग व इसके संगठन भाग लें। मार्क्सवादी संगठन स्पार्टाकुश (सं० ज० ग०) ने उच्चतर स्कूलों में प्रजातांत्रिक परिवर्तनों को लागू करने का, छात्रों व श्रमरत व्यक्तियों के प्रतिनिधियों द्वारा उच्चतर शिक्षा के प्रजातांत्रिक नियंत्रण की अर्थव्यवस्था व शिक्षा मे पूँजी के प्रभाव को खत्म करने का आह्वान किया। स्पार्टाकुश उच्चतर स्कूलों में स्वतंत्र राजनीतिक व सार्वजनिक गतिविधि के कानून द्वारा मान्य अधिकार हेतु, तथा यह निश्चित करने के लिए संघर्ष कर रहा है कि अंधराष्ट्रवाद, प्रतिशोधवादी, सैन्यवाद, नस्लवाद व नव-उपनिवेशवाद के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विज्ञान का उपयोग नहीं किया जाएगा। इतावली कम्युनिस्टों ने शैक्षिक समस्याओं को देश के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास की मूल समस्याओं के साथ जोड़ा तथा संसद में स्कूल व विश्वविद्यालय के सुधार पर अनेक बिल पेश किए। लातीनी अमेरिकी छात्र विशेष माँगों के लिए अपने संघर्ष को प्रजातांत्रिक, साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलन के साथ जोड़ रहे हैं। छात्र व श्रमिक सामान्य प्रजातांत्रिक व साम्राज्यवाद-विरोधी लक्ष्यों तथा अपनी विशेष माँगों, दोनो के लिए निरंतर साथ-साथ संघर्ष कर रहे हैं। जैसा

उरुग्वे की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव रोडनी ऐरिस्मेंडी ने कहा कि छात्रों व सर्वहारा की मैत्री एक रणनीतिक मैत्री है, विश्वविद्यालय की लड़ाइयों को लड़ने में एक आकस्मिक कार्यनीतिक गुट नहीं है।[1]

निकट व मध्य पूर्व में छात्र समुदाय एक सर्वाधिक क्रियाशील सामाजिक समूह है, जैसा ईरान की वर्तमान राजनीतिक जीवन ने विशेष रूप में दर्शाया है। ईरान की पीपुल्स पार्टी (तूदेह) की केन्द्रीय समिति के सचिव हमीद सफरी ने ईरान में विपक्ष का चरित्र-चित्रण करते हुए कहा कि कुछ वस्तुगत तथा 'आत्मपरक कारकों' द्वारा उत्पन्न धार्मिक रंग के बावजूद, "आंदोलन मुख्यतया सामाजिक व राजनीतिक है। इसमें सबसे अधिक सक्रिय औद्योगिक व कार्यालय के श्रमिक तथा शहरी युवा हैं जिनके हम-कदम छात्र व बुद्धिजीवी हैं।"[2]

वैचारिक व राजनीतिक शिक्षा

जैसे-जैसे युवजन राजनीति एवं सार्वजनिक जीवन मे, अधिक सक्रिय होते जाते हैं तथा उनमे से अधिकाधिक वर्ग-संघर्ष में शामिल होते जाते हैं वैसे-वैसे कम्युनिस्टों का युवाओं मे वैचारिक व राजनीतिक कार्य का महत्त्व बढ़ता जाता है।

लेनिन की प्रस्थापनाएँ, कि समाजवादी व बुर्जुआ विचारधाराओं मे समझौता नही हो सकता है, कि प्रत्येक को एक सैद्धांतिक वैचारिक स्थिति तथा अटल वैचारिक विचार व मान्यताएँ रखना हैं एवं क्रांतिकारी सिद्धांत की पवित्रता को बरकरार रखना है, युवा क्रांतिकारियों को वैचारिक रूप में फौलादी बनाने हेतु कम्युनिस्ट व श्रमिकों की पार्टियों के कार्य मे निरंतर लागू करनी चाहिए। कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियाँ मजबूती से लेनिन के आह्वान का अनुसरण कर रही हैं जिसके अनुसार युवाओं के आंदोलन मे मार्क्सवाद-लेनिनवाद को लाना महत्त्वपूर्ण है।

कम्युनिस्टों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन के उद्देश्य कम्युनिस्ट समाचारपत्रों, भाषणों व वार्ताओं, अध्ययन केन्द्रों तथा खुले वाद-विवादों में प्रचारित किये जाते हैं; वे गृह को तथा विश्व की राजनीतिक स्थिति पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं तथा बुर्जुआ व संशोधनवादी विचारधारा का पर्दाफाश करते हैं।

कम्युनिस्ट युवा कम्युनिस्ट लीग को अपनी आरक्षित जुझारू शक्ति मानते हैं जहाँ से युवजनों को पार्टी के पक्ष में जीता जाएगा—ऐसे युवजनों को जो श्रमिक

1. देखें : रोडनी एरिस्मेण्डी, इन्सुरेशिआ जुवेनिल, रिवोल्टा ओ रिवोलूशोन ? मोन्टेविडिओ, 1970, पृ० 50
2. वर्ल्ड मार्क्सिस्ट रिव्यू, संख्या 1, 1979, पृ० 79

वर्ग के प्रति प्रतिबद्ध होंगे। वे युवा लीग को युवजनों के विभिन्न समूहों की उम्र, व्यवसाय तथा हितों को ध्यान मे रखते हुए रचनात्मक राजनीतिक कार्य करने को कहते हैं। कम्युनिस्टों की दृष्टि में कम्युनिस्ट युवा लीग न सिर्फ उनकी आरक्षित शक्ति है बल्कि ऐसी शक्ति भी है जो युवाओं को वैज्ञानिक समाजवाद भी देगी।

युवाओं में वैचारिक कार्य हेतु जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी ने सामाजिक मंचों, युवा सम्मेलनों तथा कांग्रेसों का संयोजन किया है। ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के समाजवाद के मूल सिद्धांतों के अध्ययन हेतु जिला स्कूल हैं तथा वह मार्क्सवादी विषयों पर सार्वजनिक वाद-विवादों को भी संचालित करती है। अपने वार्षिक ग्रीष्म अवकाश मे करीबन 700 छात्र लंदन मे कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय मे मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत के प्रश्नों का अध्ययन करते हैं। अध्ययनकर्त्ता सिर्फ ब्रिटेनवासी नहीं हैं बल्कि विदेशी छात्र व ब्रिटेन में अस्थायी निवासी भी हैं। फ्रांस, इटली व अन्य देशों में भी कम्युनिस्टों द्वारा ग्रीष्मकालीन स्कूल चलाये जाते हैं।

फ्रांसीसी व ब्रिटेन के छात्र-संघो के साथ कार्य करते हुए ट्रेड-यूनियन श्रमिकों की शिक्षा पर अत्यधिक ध्यान देते हैं। पेरिस, स्ट्रासबर्ग, बोर्दू, ग्रेनोब्ल व नैन्सी के विश्वविद्यालयों मे औद्योगिक श्रमिकों के संस्थान हैं। 16 ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में औद्योगिक श्रमिकों के लिए विशेष पाठ्यक्रम हैं। श्रमिकों के संस्थान व पाठ्यक्रम—दोनों सामाजिक व आर्थिक विषयों तथा श्रम के इतिहास पर ध्यान केन्द्रित रखते हैं। पश्चिमी बर्लिन में युवा श्रमिकों के लिए एक सफल मार्क्सवादी सायंकालीन स्कूल है। पुर्तगाली युवा कम्युनिस्ट लीग पुर्तगाली युवजनों के लिए, जो काम करने के साथ-साथ अध्ययन करते हैं, काफी कुछ कर रही है। सायंकालीन स्कूलों में संगठित सभी संगठनों के 90 प्रतिशत से अधिक इस संगठन से सम्बद्ध हैं।

डेनमार्क में मार्क्सवादी छात्रों द्वारा निकाली गई मार्क्सिस्ट ब्राईअर्स काफी लोकप्रिय है, जो मार्क्स, एंगेल्स तथा लेनिन की रचनाओं को लोकप्रिय बनाती है तथा वर्ग-संघर्ष व युवाओं के आंदोलन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं की जाँच करती है।

भारतीय कम्युनिस्ट छात्र व युवा शिविरों मे दस-दिवसीय विशेष पाठ्यक्रम संचालित करते हैं जिसमे न सिर्फ युवा कम्युनिस्ट बल्कि ऐसे युवा, जो सदस्य नहीं हैं, भी भाग लेते हैं। वहाँ उन्हें समाजवादी विचारों, वर्गों की मार्क्सवादी सिद्धांत, वर्ग-संघर्ष, क्रांतिकारी परिवर्तन, समाजवादी व्यवस्था आदि से परिचय कराया जाता है। अति वामपंथी विचारधारा के पर्दाफाश पर भी काफी ध्यान दिया जाता है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की दसवीं कांग्रेस (1975) के एक प्रस्ताव में निम्नलिखित उल्लेख किया गया :

"पार्टी को युवाओं व छात्रों मे अपने काम को इस तरह करना चाहिए ताकि

उनकी इच्छाओं व आकांक्षाओं को एक सही अभिव्यक्ति मिले और उनके आंदोलन को एक सही वैचारिक दृष्टिकोण, धैर्यपूर्ण व अथक कार्य, राजनीतिक व वैचारिक प्रचार के साथ विशाल गतिविधि से उन्हें यह समझाना चाहिए कि क्रांति व समाज के आमूल पुनर्गठन का कोई छोटा रास्ता नहीं है।"[1]

हाल के वर्षों में अनेक देशों में कम्युनिस्ट व प्रजातांत्रिक युवा लीगों ने स्वयं को संगठनात्मक व राजनीतिक रूप में काफी मजबूत कर लिया है तथा आकार में बढ़ी है। साथ ही युवा कम्युनिस्ट लीग द्वारा सामना की गई समस्याओं की जटिलता को भी ध्यान में रखना चाहिए। कुछ युवा कम्युनिस्ट लीग में संकीर्णतावाद, सुधारवाद व संशोधनवाद के तत्त्व, राष्ट्रीय विशेषताओं की अतिशयता और अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को कम करके आंकना पाये जा सकते हैं।

युवाओं में अवसरवाद की धारा के लिए वस्तुगत कारणों का प्रथम समूह पूंजीवाद के विकास की वर्तमान अवस्था के विशेष लक्षणों एवं वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति द्वारा बने पूंजीवाद के सभी अंतर्विरोधों के चरमोत्कर्ष के परिणामस्वरूप बुर्जुआज़ी द्वारा अपनाई नवीन सामाजिक व राजनीतिक रणनीति में गहरे छुपा है। कुछ युवजन सुधारवादी विचारधारा से प्रभावित हो जाते हैं और इस भ्रम को पालते हैं कि पूंजीवाद एक अधिक न्यायपूर्ण सामाजिक प्रणाली में शांतिपूर्वक विकसित हो सकता है। अन्य युवजन धैर्य खो बैठते हैं एवं विद्यमान व्यवस्था के सामाजिक अन्यायों को तुरन्त समाप्त करने की इच्छा में, यथार्थ और क्रांति के लिए वस्तुगत व आत्मगत परिस्थितियों की अनुपस्थिति को अस्वीकार करते हुए, इसे शक्ति द्वारा 'कुचलने' का प्रयास करते हैं।

अवसरवाद के बढ़ने का दूसरा कारण बुर्जुआज़ी के विरुद्ध वर्ग-संघर्ष के सामाजिक आधार के तात्त्विक विकास मे ढूंढा जा सकता है। भाड़े के श्रम के क्षेत्र में संरचनात्मक परिवर्तन तथा ग़ैर-सर्वहारा स्तरों का, विशेष रूप में इन स्तरों से युवजनों का इजारेदार-विरोधी संघर्ष में प्रवेश के परिणामस्वरूप वर्ग-संघर्ष में पैटी-बुर्जुआ विचार व पूर्वाग्रह आ जाते हैं। यह विभिन्न ग़ैर-मार्क्सवादी राजनीतिक प्रवृत्तियों व संगठनों के उद्भव से भी व्यक्त होता है।

युवाओं में वैचारिक तथा शैक्षिक कार्य में कमियाँ, वैचारिक व सैद्धांतिक कार्य की क्षति की उपेक्षा करते हुए राजनीतिक कार्य पर जोर देना, तथा वर्तमान की अवस्थाओ के लिए नवीन रणनीतियों व कार्यनीतियों को भी युवाओं में अवसरवाद के बढ़ने के आत्मपरक कारणों में जोड़ना चाहिए।

---

1. डॉकुमेन्ट्स ऑफ द टेन्थ कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, 27 जनवरी से 2 फ़रवरी, 1975, कम्युनिस्ट पार्टी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1975, पृ० 197

वर्ग-संघर्ष की वर्तमान अवस्था पर युवाओं में कम्युनिस्टों के कार्य की माँग सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तनों के सक्रिय स्वरूपों व तरीकों और विचार हैं। उदाहरणार्थ, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विश्वव्यापी व अन्तिम लक्ष्यों के साथ वास्तविक वस्तुओं, जिन्हें आज के युवजन चाहते हैं, जो उनके विचारों व व्यवहार को प्रभावित करते हैं, को समरूप करना युवाओं के साथ कार्य करने का मुख्य बिन्दु है। इस अन्तर्विरोध पर काबू पाने के लिए, कम्युनिस्टों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों की वैज्ञानिक भविष्यवाणी के भविष्य के साथ जुड़े अनेक प्रश्नों को युवजनों की चेतना के वर्तमान स्तर के साथ 'समायोजन' की क्षमता के साथ हल करना होगा। इस दृष्टिकोण से युवजनों को पूँजीवादी देशों मे क्रांति की प्रजातान्त्रिक व समाजवादी अवस्थाओं के द्वंद्व को, अन्तिम उद्देश्यों की प्राप्ति के स्वरूपों व तरीकों आदि की मार्क्सवादी-लेनिनवादी समझ को वैचारिक रूप में समझाना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। युवाओं को अपनी महत्त्वपूर्ण समस्याओं को पाने के तरीके व साधन ढूँढने चाहिए, सामाजिक प्रगति के लिए वस्तुगत नियमों व सम्भावनाओं को हृदयंगम करने लायक होना चाहिए। ऐसा करने में अधिकांश कम्युनिस्ट व श्रमिकों की पार्टियाँ वास्तविक समाजवाद के समृद्ध अनुभव का उपयोग करती हैं। समाजवादी देशों की सफलताएँ प्रजातान्त्रिक व सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष में युवजनों को प्रेरणा दे रही हैं।

साथ ही, यहाँ तक कि बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों व युवा लोगों मे कभी-कभी समाजवाद पर एक 'आलोचनात्मक दृष्टिकोण' का सामना करना पड़ सकता है। सो सं क पा की 26वीं कांग्रेस की रिपोर्ट मे यह कहा गया है : "हमारे देश मे विकास के अलग से ठोस स्वरूपों पर आलोचनात्मक निर्णय कभी-कभी कुछ कम्युनिस्ट पार्टियों में उठाए जाते हैं। हम यह सोच ही नहीं सकते कि हमारे पास हर वस्तु आदर्श है। सोवियत संघ में समाजवाद अविश्वसनीय कठिन परिस्थितियों में स्थापित हुआ। पार्टी को अनजान भूमि को काट-छाँट कर अपना रास्ता बनाना था। हमारे अलावा कोई नहीं जानता कि रास्ते मे कितने कष्ट और कमजोरियाँ आयीं तथा जिनसे अभी भी उबरना है।

"हम साथी की भावना वाले, रचनात्मक आलोचना पर पूरा ध्यान रखते हैं। परन्तु हम उस 'आलोचना' का साफ तौर पर विरोध करते हैं जो समाजवादी यथार्थ को तोड़ते-मरोड़ते हैं, इस तरह बुद्धिमत्ता या बचकानेपन से हमारे वर्ग-शत्रु साम्राज्यवादी प्रचार की सहायता करते हैं।

"जैसा हमारी पार्टी का मानना है, मतभेदों को तो खत्म किया जा सकता है, वास्तव में, अगर वे क्रांतिकारियों व सुधारवादियों के मध्य, रचनात्मक मार्क्सवाद तथा रूढ़िवादी संकीर्णतावाद या अति-वामपंथी दुस्साहसतावाद के मध्य मौलिक मतभेद न हों। जिस मामले मे वस्तुतः कोई समझौता नहीं हो सकता है—आज

भी नहीं जैसा लेनिन के समय पर थां। परन्तु जब कम्युनिस्ट समान क्रांतिकारी कारण के लिए संघर्ष करते हैं, हमारी मान्यता है कि तब विभिन्न दृष्टिकोणों और स्थितियों पर धैर्यपूर्वक साथीभाव के साथ किया गया वाद-विवाद उनके समान लक्ष्यों की सबसे अधिक मदद करता है।"[1]

वर्तमान परिस्थिति में, बिरादराना युवा कम्युनिस्ट लीगों की एकता की समस्या विशेष ध्यान देने के योग्य है। युवाओं की विकट समस्याओं तथा वैचारिक कार्य के वैचारिक विस्तार का कम मूल्यांकन; कट्टरतावाद, संकीर्णतावाद तथा अवसरवाद के तत्त्व; किसी कार्यवाही के वस्तुगत व आत्मपरक घटकों का पूरी तरह विश्लेषण किये बिना उस कार्यवाही पर अधिक ज़ोर देना; तथा क्रांतिकारी अनुभव, प्रजातांत्रिक परम्पराओ व वास्तविक समाजवाद की उपलब्धियों का कम मूल्यांकन करना—ये सब घटनाऐं किसी-न-किसी सीमा तक व्यक्तिगत मार्क्सवादी युवा संगठनों की राजनीति व व्यवहार मे अभी भी मिलती हैं। यह बिरादराना युवा लीगों की संयुक्त कार्यवाही व उनमें समझ में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देता है।

इन कठिनाइयों को समाप्त करने के लिए, वास्तविक मार्क्सवादी युवा लीगों को संयम, लचीलापन तथा एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाना होगा; उन्हें क्रांतिकारी प्रक्रिया की दुरूहता की, गम्भीर वैचारिक और सैद्धांतिक कार्य, तथा युवा आंदोलन में वर्तमान स्थिति के वस्तुगत वैज्ञानिक विश्लेषणों के महत्व की, आज के युवजन के विशेष स्वरूपों की सही व्याख्या प्रस्तुत करनी चाहिए; उन्हें मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रवाद को सुरक्षित रखने के लिए, उनमें किसी भी प्रकार के विचलन को अस्वीकारते हुए, संघर्ष करना चाहिए, तथा आक्रामक बुर्जुआ विचारधारा को अस्वीकारना चाहिए। इस सन्दर्भ में, निम्नलिखित वैचारिक प्रश्नों का और अधिक विश्लेषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है : सामान्य व विशेष के मध्य, क्रांतिकारी प्रक्रिया में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय के मध्य सह-सम्बन्ध; युवा आंदोलन के सामान्य वस्तुगत नियम तथा विभिन्न देशों मे इनकी अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट परिस्थितियाँ; वैचारिक कार्य के स्वरूप व विषय-वस्तु के मध्य सह-सम्बन्ध; शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व, तनाव-शैथिल्य व वर्ग-संघर्ष के मध्य द्वन्द्वात्मक एकता; प्रजातंत्र तथा समाजवाद के लिए संघर्ष के तात्कालिक व चरम उद्देश्यों की अविभाज्यता; वास्तविक समाजवाद की प्राप्ति का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व, आदि।

1. डाक्यूमेंट्स एण्ड रैज़ोल्यूशंस, द 26th कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, मास्को, फ़रवरी 23-मार्च 3, 1981, नोवोस्ती प्रेस एजेन्सी पब्लिशिंग हाउस, मास्को, 1981, पृ० 27

युवाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थितियों को आमूल रूप में सुधारने का संघर्ष तथा उन्हें सार्वजनिक व राजनीतिक जीवन में तथा मूल प्रजातांत्रिक परिवर्तन में लगाना पूंजीवादी विश्व में कम्युनिस्ट पार्टियों की गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। ये पार्टियाँ युवाओं के विरोध को पूंजीवादी समाज को रूपांतरित करने के लिए वास्तविक कार्यक्रमों से प्रजातांत्रिक संघर्ष की मुख्य धारा में लाने का प्रयत्न कर रही है, वे युवाओं के समक्ष संसार के क्रांतिकारी रूपांतरण हेतु जो करना चाहिए उस गौरव को स्पष्ट करती हैं तथा उन्हें मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों पर आधारित एक वास्तविक वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण प्रदान करती हैं।

अध्याय : 6

युवाओं में मार्क्सवाद-विरोधी अवधारणाओं एवं राजनीतिक रुझानों की आलोचना

1. युवाओं की चेतना से स्वार्थ-साधन

इजारेदारी बुर्जुआजी और इसके विचारक, राजनीतिज्ञ व पार्टियाँ युवाओं पर अपने प्रभाव को बनाए रखने तथा युवा आंदोलन के विकास पर नियंत्रण रखने का जबरदस्त प्रयास कर रहे हैं। वे वर्ग-चेतना के निर्माण को अवरुद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं, तथा जनता की राय से अपनी स्वार्थ-सिद्धि हेतु अनुकूल मनोवैज्ञानिक वातावरण को बनाने के लिए राजनीति में संलग्न होना निरर्थक है, कि वर्ग-सहयोग ही सही मार्ग है इस पर युवजनों को आश्वस्त करने के लिए वे जो कुछ भी हो सकता है, कर रहे हैं। कम्युनिस्ट आदर्शों को विकृत करने हेतु साम्राज्यवादी बुर्जुआजी ने कम्युनिज्म-विरोधी झंडे के तले समस्त प्रतिक्रियावादी शक्तियों को एकत्रित होने की माँग की है। वे युवाओं की राजनीतिक अनुभवशून्यता, उनकी अति भावुकता तथा उनका सब कुछ—या—कुछ नहीं वाला दृष्टिकोण व अधीरता से लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं, समाजवादी व्यवस्था *तथा अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के विकास की कठिनाइयों* से राजनीतिक लाभ उठा रहे हैं।

उपभोक्ता मानसिकता का सम्प्रदाय

सभी युवजन एक-सा सोचें इसके लिए बुर्जुआजी उपभोक्ता मानसिकता बनाने में, धन का लालच देकर उन्हें उत्तेजित करने में, और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण व दमन के न्याय को स्वीकारने में अपने प्रयत्नों को बढ़ा रहे हैं। युवजनों को पिछलग्गू व रूढ़िवादी चेतना अपनाने के लिए बुनियादी तरीक़ों में व्यक्तिगत सम्पत्ति की आकांक्षाओं व उपभोक्ता की सहज प्रवृत्तियों को उभारना एक तरीक़ा है।

सफलता केवल चालाकी व उद्यम से ही आती है, इस पर उन्हें *विश्वास दिलाने* वकील युवजनों की अनुभवहीनता का लाभ उठाते हैं। सभ्यता की

भोग-विलास की वस्तुओं तथा शानो-शौकत की वस्तुओं द्वारा उन्हें मोहित करते हुए बुर्जुआजी पिछलगुओं की ऐसी पीढ़ी का निर्माण करने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो विद्यमान मापदण्डों के साथ-साथ चलेंगे। परिणामतः न सिर्फ़ राजनीतिक रूप में वफादार उपभोक्ता होंगे अपितु एक विशेष सामाजिक व्यवस्था के सक्रिय सहयोगी भी।

कुछ की आकांक्षाओं पर दूसरे की आकांक्षाओं का आधिपत्य उपभोक्तावाद है, जिसमें इजारेदार की आकांक्षाएँ पहले स्थान पर हैं, और लाखों श्रमिक जनों की आवश्यक आकांक्षाएँ उपेक्षित रहती हैं; यह आध्यात्मिक व बौद्धिक नपुंसकता की ओर ले जाने वाली 'लोक-संस्कृति' तथा कृत्रिम आकांक्षाओं का निर्माण करने वाला एक उद्योग है।

युवाओं को एक उपयुक्त जीवन-पद्धति अपनाने की राह दिखाकर पूँजीवादी विचारक उनकी सामाजिक व राजनीतिक रुचियों को कुंठित करने का प्रयास करते हैं। वास्तविक जीवन की समस्याओं से युवजनों के ध्यान को तथा पूँजीवादी यथार्थ पर उनकी समझ को हटाने की आशा में बुर्जुआ जीवन-पद्धति की मोहकता के साथ मनोरंजन-उद्योग के व्यापारिक उत्पादों को जोड़ दिया गया है।

जन-प्रचार साधनों, मुख्यतया फ़िल्मों व टी० वी० के द्वारा, मनोरंजन पर उनके चुनाव को सीमित करके बुर्जुआजी एक सांस्कृतिक घेटो (टोली) के निर्माण करने का प्रयत्न कर रहे हैं। विशेष युवा प्रकाशन, क्लब, प्रदर्शनियाँ व लोक-युवा संस्कृति का प्रचार करने वाले आकर्षण इसी उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं।

युवा पीढ़ी की चेतना में बुर्जुआ जीवन-पद्धति के मूल्यों को, जो व्यक्तिवाद तथा वैयक्तिक नेतृत्व पर आधारित व्यक्तिगत सफलता पर केन्द्रित है, धूर्ततापूर्वक जोड़ने के लिए लोक-युवा संस्कृति का उपयोग किया जाता है। 'सितारे', 'प्रतिमाएँ' और इसी प्रकार के अन्य प्रतिमान निर्मित किए जाते हैं, तथा व्यक्तिगत उन्नति व वैयक्तिक नेतृत्व से प्राप्त सफलताओं का प्रचार किया जाता है। अंतिम विश्लेषण में 'आदर्श' विलासिता की चमक-दमक और परी-कथा के समान दौलत की ईर्ष्या-जन्य सम्भावनाओं तथा समस्त भौतिक ऐशो-आराम व सनकों के संतुष्टीकरण में समाप्त हो जाता है। इसकी पृष्ठभूमि में, उपभोक्तावाद का प्रचार है, जो इस प्रकार से व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बताने के लिए एक साधन बन गया है। व्यक्तिवाद बुर्जुआ समाज की सबसे बड़ी 'स्वतन्त्रता' घोषित की गई है।

युवाओं के मन को वैचारिक रूप में बदलने के ऐसे ग़ैर-वैचारिक साधनों का उपयोग करते हुए बुर्जुआ उभरते हुए सामाजिक विरोध को अक्सर निष्फल आश्चर्य भाषणबाज़ी व निष्क्रियता में बदल देते हैं। अभिनेताओं के समवयस्क बनने की सनक न सिर्फ़ रुचियों बल्कि आकांक्षाओं तथा मानसिक दिशा-निर्देशन का भी मानवीकरण करता है। उपभोक्तावाद में जो फँस जाते हैं वे आसानी से स्वार्थ-

विकृत उपभोक्ता निर्देशों की रचना प्रतिदिन के जीवन में [illegible] यह समाज रूप में संस्कृति के क्षेत्र को भी प्रभावित करती है। भविष्य के प्रति बढ़ती हुई चिंता और वर्तमान से मोहभंग युवजनों को कुछ हद तक सब कुछ भूलने और सपनों की दुनिया में लौट जाने को बाध्य करता है। यही वजह है जिसे बुर्जुआजी 'नई नशीली गोली की संस्कृति', 'नई कामुकता', 'नई जीवन शैली' और अन्य 'नए मूल्य' के नाम से पुकारते हैं। परन्तु सिद्धांत यही है : युवा जो चाहते हैं करें—नाचें हत्या करें, बलात्कार करें, नशीली गोलियाँ खाएँ—बस सिर्फ जितना सम्भव हो सके राजनीति से दूर रहें।

बुर्जुआजी प्रचार के माध्यम से, जिसमें पूँजीवाद की सच्चरित्रता का विचार सर्वोपरि रहता है, युवाओं के विरुद्ध अपना सर्वाधिक केन्द्रीभूत आक्रमण करता है। कहा जाता है कि पूँजीवाद का एक भविष्य, एक वैभवशाली भविष्य है और इसे उन्नत औद्योगिक विकास को सुनिश्चित करने के एकमात्र विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह व्यक्तिगत सम्पत्ति व बेरोजगारी को न्यायसंगत ठहराने के लिए है, जिसे स्वतन्त्रता व आक्रामकता की कीमत, राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा हेतु एक अनिवार्य तरीका कहा गया है।

उपभोक्ता उन्मुखता, जिसका पाठ जन-प्रचार द्वारा निरंतर व हठपूर्वक पढ़ाया

जाता है, विकास के आतरिक तर्क का विरोधी है। बुर्जुआजी द्वारा थोपे गए माप-दण्डो के समनुरूप होकर भी युवजन सन्तुष्ट नहीं हैं। वास्तविक मानवीय मूल्यों के लिए उनकी ललक निरन्तर बढ़ती जा रही है, और उनके स्तर व समाज मे विभाजित भूमिका के प्रति उनका असंतोष बढता जा रहा है। युवजन विरोधी अन्त:-विरोधो, जिसे वे वास्तविक जीवन में पाते हैं, को स्वीकारने मे अधिकाधिक कठिनाई पा रहे हैं।

परन्तु यहाँ भी, बुर्जुआजी नवीन सुरक्षात्मक उपायों के साथ आ गए हैं। वैचारिक क्षेत्र में, वे अनिवार्यतः युवजनो को एक ग़ैर-समानता को अपनाने को कह रहे हैं, जो पूंजीवादी समाज के लिए कम-से-कम ख़तरनाक है। सामाजिक प्रगति के बारे मे झूठे आदर्शों व विचारो को जानबूझकर फैलाया जाता है। पूंजीवाद के समर्थकों ने ऐसे सभी प्रकार के सिद्धांतो व अवधारणाओं का निर्माण किया है जो यथार्थ के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण का आभास देते हैं। हालांकि ये आलोचना संस्था विशेषो पर आक्रमण करने से अधिक कुछ नही करती। अमेरिकी पत्रकार हैरिसन सैलिसबरी युवजनो को व्यवस्था की जंग लगी मशीनरी को तेल देने मे अपनी शक्ति व उत्साह लगाने की सलाह देता है। उसका सुझाव है कि वे युवजन, जो अपनी आलोचना को अभिव्यक्ति देना चाहते हैं, बिना नई क्रांतियों को आरम्भ करे ऐसा करें।[1]

बुर्जुआजी आलोचक विचार वाले युवा दलों के सामाजिक विरोध को बदलने मे इन विचारो से लाभ लेने की आशा करते हैं। इन सिद्धांतों की रचना उनकी इस आशा को बरकरार रखने के लिए की गई है कि बुर्जुआ वास्तविकता के ढांचे को बदले बिना बहुत कुछ सुधार लाया जा सकता है, सिर्फ धैर्य व रुचि बस यही सब कुछ आवश्यक है।

सामाजिक काल्पनिक राज्य

बुर्जुआ विचारकों ने वर्ग-संघर्ष को तेज करने मे युवा पीढ़ी की सामाजिक गतिविधि को 'युवा क्रांति', 'पीढ़ियों के बीच संघर्ष' के द्वारा बदल दिया और कहा कि छात्र क्रांति मे नेतृत्वकारी भूमिका निभाएंगे क्योंकि वे 'नवीन', 'चिन्तनशील वर्ग' हैं।

बुर्जुआ विचारकों ने पूंजीवादी देशों में युवजनों की विशाल गतिविधियों, विशेषकर छठे दशक के अंत व सातवें दशक के आरंभ मे छात्रों द्वारा की गई गतिविधियों की व्याख्या हेतु सामाजिक मिथकों का आविष्कार किया। 'युवाओं का

---

1. देखें: सेलिसबरी हैरीसन ई०, द मैनी अमेरिकाज शॉल बी वन' न्यूयार्क, 1971।

आगमन' एक मिथक थी जिसमें यह माना गया कि नियति पुराने सड़े-गले संसार को हटाने और साथ ही इसी संसार को नष्ट करने की है। इस मिथक ने, जो आरंभ में एक तरह से मायावादियों की कहानी थी पर शीघ्र ही इसने राजनीतिक रंग धारण कर लिया था, यह कल्पना की कि क्रांतिकारी संघर्ष में युवजन अब नेतृत्वकारी भूमिका अपनाएँगे। इसके अनुसार, यह कहा गया कि श्रमिक-वर्ग अब इतिहास द्वारा क्रांति की संचालक शक्ति नहीं कहा जा सकता है।

जिस तरह क्रांति के प्रमुख संचालक बदल गए वैसे ही क्रांति के उद्देश्य का रूपान्तरण हुआ, यथा, संपत्ति-संबंधों को बदलने के स्थान पर तथाकथित सत्ता के ढाँचे को बदलना है। नौकरशाही व तकनीक-शाही की अनाम सत्ता को उखाड़ फेंकना ही भावी क्रांति का प्रमुख उद्देश्य घोषित किया गया। 'सामुदायिक नियंत्रण' के द्वारा यह बदलाव लाया जाएगा। मानवीय स्वतंत्रता का असीमित विकास और जीवन के गुण में आमूल परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन के लक्ष्य बन गए जिसे युवजन स्थापित करेंगे।

इस विचार, कि युवजन अब क्रांति में नेतृत्वकारी भूमिका अपनाएँगे, के प्रतिपादकों—हर्बर्ट मार्क्यूस, सी॰ राइट मिल्स, पॉल गुडमैन व अन्यों ने युवा विरोध के नैतिक व नीति संबंधी लक्ष्यों को एक निरपेक्ष सत्य के रूप में बताया और सामाजिक व आर्थिक कारणों की उपेक्षा की। हर्बर्ट का दावा है कि क्रांतिकारी विचारधारा मर चुकी है, और क्रांतिकारी इच्छा सहज विद्रोही चेतना में बदल गई है। सी॰ राइट मिल्स तो युवा बुद्धिजीवियों को इतिहास के एकमात्र इतिहास के निर्माता के रूप में मानते हैं। गुडमैन का विचार है कि युवा सबसे अधिक शोषित सामाजिक वर्ग बन गया है। जो इससे सहमत हैं वे दावा करते हैं कि उत्पादन की पूँजीवादी संबंधों की प्रणाली में सर्वहारा का स्थान युवाओं ने ले लिया है।

बुर्जुआ विचारक क्रांति के नए प्रकार-विधान को प्रस्तावित करते हैं। रोन टागेपेर का निष्कर्ष है कि छात्र असन्तोष के कारणों की खोज विश्वव्यापी विकास की राजनीतिक या आर्थिक समस्याओं में नहीं करनी चाहिए बल्कि शिक्षा के तीव्र विकास के परिणामस्वरूप बने नए सामाजिक वर्ग के उदय में करनी चाहिए, जिसका विरोध बुर्जुआजी व श्रमिक वर्ग दोनों को करना होगा। टागेपेर का विश्वास है कि इस 'नए वर्ग' के अधिकाधिक व्यक्ति एक विराट विप्लव के सम्भावित परिणाम को दृष्टिगत रखते हुए छात्र आंदोलन में भाग लेंगे।

अमेरिकी समाजशास्त्री रिचर्ड फ्लेक्स का कहना है कि युवा बुद्धिजीवी 'औद्योगिकेतर समाज' के नवीन वर्ग हैं। उनका विचार यह है कि अपनी तुलनात्मक भौतिक स्वतन्त्रता व स्थायित्व के बावजूद यह 'नया वर्ग' पूँजीवादी व्यवस्था से संघर्ष करना है, जो इसकी सांस्कृतिक आवश्यकताओं को समझने व पूरा करने में असमर्थ है, तथा श्रम के अलगाव को समाप्त और एक वास्तविक प्रजातांत्रिक सामाजिक,

व्यवस्था को स्थापित नहीं कर सकता है। प्लेक्स का विश्वास है कि विश्वविद्यालयों में इस 'नए वर्ग' का केन्द्रीकरण व उनकी बड़ी संख्या राजनीतिक संघर्ष को आह्लादा बना देती है।

इन अवधारणाओं से एक त्रुटिपूर्ण 'क्रांतिकारी' रणनीति का उद्‌भव होता है कि छात्रों व श्रमिकों की मैत्री पूँजीवाद-विरोध के आधार पर नहीं बल्कि अधिकारी-तंत्रवाद के विरोध पर होनी चाहिए, क्योंकि दोनों समूहों का एक ही समान स्वरूप है सत्ता से अलगाव। अतः संघर्ष इसी समस्त पर होना चाहिए और श्रमिक-वर्ग को छात्र-आंदोलन की अधिकारी-तंत्रवाद-विरोध धारा पढ़ानी ही होगी।

यह भी इंगित करना चाहिए कि अधिकांश बुर्जुआ विचारक युवाओं या छात्रों को एक वर्ग नहीं मानते हैं। फ्रांसीसी समाजवादी जेक्स इल्लू ने कहा कि "अधिकांश युवजन, विशेषकर छात्र उपभोक्ता हैं. उत्पादक नहीं।" इसीलिए युवजन उपभोक्ता समाज के विरुद्ध इतने उग्र हैं; इल्लू समझाते हैं कि यह एक ऐसी घटना है जो क्रांतिकारी चेतना का परिणाम नहीं है वरन् एक ऐसी परिस्थिति जिसमें युवजन स्वयं को पाते हैं, कि स्वतः प्रतिक्रिया है। उसका विश्वास है कि इस समूह के अस्थायी व संक्रमणकारी प्रकृति की दृष्टि से युवाओं या इसकी सामाजिक और यहाँ तक कि आयु की विशेषताओं पर वर्ग की समाजशास्त्रीय अवधारणा लागू नहीं होती है; युवा एक वर्ग क्यों नहीं हैं इसका दूसरा कारण यह है कि वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप—वर्ग-चेतना—इसमें नहीं है।[1]

वर्ग के रूप में युवाओं से संबंधित समस्त बुर्जुआ सिद्धांत ग़लत रीति-विज्ञानी आधारों पर आधारित हैं। इनमें से एक सिद्धांत है कि युवा एक समरूप सामाजिक दल—जो वास्तव में वे कभी नहीं रहे—और बिना सामाजिक भिन्नता के हैं। युवाओं के विशेष व व्यक्तिगत लक्षणों पर उनका बाहुल्यकलन व अमूर्तिकरण बुर्जुआ समाजशास्त्रियों की दूसरी प्रमुख रीति-विज्ञानी त्रुटि है।

इसे इंगित करना चाहिए कि यद्यपि युवजन पूँजीवादी संकट के शिकार हैं, फिर भी यह कहने का कोई कारण नहीं है कि वे उत्पादन में एक विशेष स्थान रखते हैं, या राष्ट्रीय सम्पत्ति के भाग को वे प्राप्त करें ऐसे विशेष साधन हैं, दूसरे शब्दों में, कि वर्ग-रचना के किसी संकेत का अस्तित्व है। यह नारा कि युवाओं को 'स्वयं में वर्ग' से 'स्वयं के लिए वर्ग' में बदलना होगा स्पष्टतः भड़काने वाला है, क्योंकि यह युवा पीढ़ी को अपनी स्वयं की विचारधारा, व अपने स्वयं के संगठन बनाने का आह्वान करता है और जैसा इसके प्रचारकों की धारणा है, सबसे पहले श्रमिक वर्ग की विचारधारा व संगठनों का विरोध करता है।

युवाओं की क्रांतिकारी अनन्यता की अवधारणाओं ने छठे दशक के अंत व

---

1. इल्लू जेक्स, द अ रिवोल्यूशनों ओव रिवोल्यूते; पृ० 1972

सातवें दशक के आरंभ में 'विरोधी समाज' तथा 'विरोधी संस्कृति' के आंदोलन का सूत्रपात किया। जैसा वे इसे मानते हैं, युवा अपनी स्वयं की संस्कृति निर्मित करते हैं जो वर्तमान संस्कृति के विरुद्ध है। जो इस विरोधी-संस्कृति आंदोलन में है उन्होंने 'विरोधी-समाज' का निर्माण किया है, जो उनके कथनानुसार भावी क्रांतिकारी *परिवर्तन का प्रमुख संचालक होगा। इस प्रकार यह वर्ग-संघर्ष नहीं है जो* सामाजिक परिवर्तन का आधारभूत घटक है बल्कि चेतना के विरोधी स्वरूपों के मध्य संघर्ष है।

येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चार्ल्स रीख ने चेतना के पुनर्जागरण तथा विद्यमान पूँजीवादी प्रणाली के ढाँचे में एक नई संस्कृति के निर्माण के माध्यम से 'नई क्रांति' की अवधारणा प्रस्तावित की है। वे 'चेतना-1' व 'चेतना-2', जिसे *सामाजिक उद्देश्यों व संस्थाओं का उच्चतम मूल्य माना गया है*, को 'चेतना-3', जो व्यक्तिगत 'अहम्' को ही सिर्फ़ वास्तविक मूल्य मानता है, के विरुद्ध रखते हैं।[1] जहाँ उनसे ग़लती होती है वह चेतना या आत्मबोध पर इतना अधिक ज़ोर देना नहीं है, बल्कि विद्यमान यथार्थ से इसका पूर्णरूपेण अलगाव। जब चेतना के माध्यम से क्रांति प्राप्त की जाती है तब इसका उपसिद्धांत हुआ कि सामाजिक परिवर्तन स्वतःस्फुट है और यह इसे सिर्फ़ एक दूसरी वैचारिक मिथक में परिवर्तित कर देता है।

वामपंथी फ्रायडवाद या तथाकथित फ्रायडीय मार्क्सवाद युवजनों के मध्य बड़ी मेहनत से बनाया गया एक अन्य प्रकार का 'क्रांति का सिद्धांत' है। इस वासनापूर्ण कोहरे का निर्माण, जिसका उद्देश्य 'उच्छृंखल वासनावृत्तियों' में युवाओं को डुबा कर युवाओं की चेतना को नशीला बनाना है, *भटकाव की एक क्रिया है जिसे पूँजीवादी समाज उपयोग में लाता है।*

सिगमंड फ्रायड से भिन्न, बुनियादी तौर पर जिसका मनोविश्लेषण निराशावादी है, जैसे मानवीय व्यवहार में अनियंत्रित सहजवृत्तियों व विनाशात्मक उत्प्रेरणाओं का आधिपत्य, वामपंथी फ्रायडवाद मनोविश्लेषण व मार्क्सवाद को 'संयुक्त' करने का प्रयास करता है। *वामपंथी फ्रायडवादी विश्वास करते हैं कि मनुष्य की अब तक अछूती असीमित प्राकृतिक शक्तियों में अन्तर्निहित 'क्रांतिकारी सहज-प्रवृत्ति'* और प्राकृतिक कामुकता की सम्पूर्ण शक्ति की मुक्ति दमनकारी बुर्जुआ संस्कृति को साफ़ कर देगी।

विल्हेल्म रीख, वामपंथी फ्रायडवाद के आध्यात्मिक पिताओं में से एक, ने अपनी अवधारणा को *'कामनात्मक आर्थिक समाजशास्त्र' कहा है ताकि इसके दोहरे* आधार—फ्रायड का मनोविश्लेषण और मार्क्स का सामाजिक व आर्थिक दर्शन

1. देखें : चार्ल्स रीच, द ग्रीनिंग ऑफ अमेरिका, न्यूयार्क, 1972

(हालाँकि रीख का 'आर्थिक' विचार जीव विज्ञानी यथा, उत्पीड़न का विचार है) —पर जोर दिया जा सके। रीख के अनुसार, काम-भावना का दमन पूँजीवादी उत्पीड़न से अविभाज्य है। वह बुर्जुआ परिवार को, जो काम-भावना के दमन व मूलभूत विचारों को सीमित करने के लिए उत्तरदायी संस्था है, सभी सामाजिक उत्पीड़न का स्रोत मानता है। इसलिए 'वासना की क्रांति' का एक उद्देश्य पितृ-सत्तात्मक परिवार को नष्ट करना है, क्योंकि यह सत्तावादी विचारधाराओं को निर्मित करने वाला कारखाना है। वामपंथी फ्रायडवादी विश्वास करते हैं कि पूँजी-वाद तथा सत्तावादी परिवार के रूप में इसके लघु रूप की समाप्ति वासनामय जीवन के स्वतन्त्र आत्म-नियंत्रण और व्यक्तित्व को निखारने के मार्ग को प्रशस्त करेगा। कामशास्त्र, जिसे वामपंथी फ्रायडवाद ने उपासना के स्तर तक पहुँचा दिया सिर्फ युवा आंदोलन सहित मूल सामाजिक प्रक्रियाओं में बाधा ही पहुँचा सकता है और युवा पीढ़ी को भ्रष्ट कर सकता है। पूर्ण वासनात्मक उन्मुक्तता के फलस्वरूप नैतिक अध:पतन, अवनति और वास्तविक जीवन में किसी भी प्रकार की रुचि की समाप्ति है।

कुछ युवजनों के विश्व दृष्टिकोण का निर्माण करने वाले एक घटक के रूप में 'क्रांति के नए नमूनों' पर अधिक ध्यान न देते हुए भी उनके वैचारिक व राज-नीतिक परिणामों को कम नहीं आँकना चाहिए। कुछ सीमा तक इन नमूनों के अनुयायियों द्वारा उपदेशित यह आंतरिक मनोचिकित्सा पूँजीवादी देशों में युवजनों की मनोदशा के अनुकूल है। ऐसा पुरानी पीढ़ियों की अपेक्षा युवजनों की बेहतर शिक्षा, संस्कृति व गतिशीलता के परिणामस्वरूप अपने व्यक्तिगत जीवन पर उच्च-तर आशाओं और पूँजीवादी सामाजिक संबंधों की सम्पूर्ण प्रणाली में व्याप्त निर्म-मानवीकरण के मध्य अत्यन्त तीव्र अंतर्विरोध के कारण है।

क्योंकि पूँजीवादी समाज की संकटमय स्थिति को छुपाने में बुर्जुआ विचार-असमर्थ हैं, इसलिए वे इसे समूची सभ्यता के संकट के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं। विश्वव्यापी संकट, युवा-विरोध की विश्वव्यापकता, आदि का हवाला देना फैशन बन गया है। इसके समानान्तर हैं भावी समाज के विभिन्न नमूनों को पेश करना। अतीत व वर्तमान की व्याख्या में निरन्तर अर्थ का अन-किया जा रहा है, इसी प्रकार भविष्य की बुर्जुआ व्याख्या की जा रही है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है कि 'भविष्यशास्त्र' शब्द पश्चिम में बना, जिसमें भविष्य की विभिन्न अवधारणाओं के बरक्स भावी 'युवा समाज' की तस्वीर लेकर अंधकार-भरे, नशाखोरों से बिखरकर अलग हो रहे अस्थिर, दुखभरे सम-जिसमें दुःख भरे, अपराध आदि के दलदल में फँसे हैं, की तस्वीर तक, अविश्वसनीय विकास को प्रतिबिंबित करता है।

इस प्रकार, असंतोष को दबाने और संघर्ष करने की युवजनों की इच्छा शक्ति को निर्जीव करने के लिए युवा पीढ़ी की चेतना व व्यवहार में पिछलग्गूपन की मुहर लगाने हेतु बुर्जुआजी उपलब्ध सामाजिक, वैचारिक व राजनीतिक प्रभाव की प्रत्येक शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। परन्तु बुर्जुआजी की चालबाज़ियाँ व स्वार्थ-सिद्धियाँ युवजनों के सामाजिक विरोध को तीव्र कर रही हैं। और इसका उपयोग अति-वामपंथी और अति-दक्षिणपंथी समूह व संगठन अपने स्वयं के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कर रहे हैं।

2. पैटी-बुर्जुआ क्रांतिवाद की आलोचना

जैसे-जैसे वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति का विकास होता है, वैसे-वैसे मध्य-पैटी-बुर्जुआ स्तर, बुद्धिजीवी और उनसे सम्बद्ध युवा समूहों की भूमिका बढ़ती है। इस वातावरण के लोगों का युवा आंदोलन पर निश्चित प्रभाव होता है। इजारेदारी उत्पीड़न से असंतोष तथा समाज के इस तबके की अस्थिर आर्थिक स्थिति विभिन्न प्रकार की पैटी-बुर्जुआ विचारधारा व समकक्ष राजनीतिक प्रवृत्तियों से व्यक्त होती है। इस वातावरण के लोग, विशेषकर युवा लोग, जिन्होंने श्रमिक-वर्ग के अनुशासन व वर्ग-संगठन का अनुभव नहीं किया है, चारित्रिक रूप से अधीर व व्यक्तिवादी हैं; वे आंदोलन की अगुवाई करने का दावा करते हैं परन्तु संगठनात्मक रूप में विभक्त व वैचारिक रूप में अस्थिर हैं।

अपने समय पर मार्क्स और एंगेल्स ने निम्नलिखित शब्दों में पैटी-बुर्जुआ भ्रामक-क्रांतिकारी स्थितियों के ख़तरे व नुकसान पर ध्यान आकर्षित कराया : "क्रांतिकारी विकास की प्रक्रिया की पूर्व-कल्पना करना, इसे कृत्रिम रूप से संकट की स्थिति तक ले जाना, क्रांति के लिए परिस्थितियों के बिना ही क्षण में क्रांति कर देना, यह सब स्पष्टतः उनका कार्य है। उनके लिए क्रांति की एकमात्र शर्त है उनकी साज़िश की माकूल तैयारी। वे क्रांति के कीमियागर हैं और उनका चरित्र-चित्रण ठीक उसी तरह का है जैसा अतीत के कीमियागरों का अराजकतापूर्ण चिंतन व टिमटिमाता आवेग।"[1]

लेनिन ने 'अति-वामपंथियों', जो पूँजीवाद को अंट-शंट कहकर नामंज़ूर करते हैं, की 'क्रांतिकारी लफ़्फ़ाज़ी' की आलोचना की है। उन्होंने लिखा कि "एक निश्चित सकारात्मक समाधान से असम्बद्ध एक 'नकारात्मक' नारा चेतना को 'प्रखर' नहीं बल्कि मंद करेगा, क्योंकि ऐसा नारा एक थोथी लफ़्फ़ाज़ी, महज़

---

1. कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंगेल्स, 'रिव्यूज़ फ्रॉम द नोए राइनिशेत्साइटुंग पोलिटिश-ओकोनोमिशे रिव्यू न० 4', कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 10, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को, 1978, पृ० 318

चिल्लाहट, निरर्थक शोरगुल है।"[1]

समकालीन युवा समस्याओं पर साहित्य अकसर आमूल वाम क्रांतिकारिता को अतिवाम उग्रवाद के साथ समीकृत करता है। वामपंथी आमूल परिवर्तनवाद का यह मूल्यांकन एक-पक्षीय व नकारात्मक है। यह इस आंदोलन के वास्तविक सार तथा इसके निश्चित इजारेदार-विरोधी धारा को विकृत करता है जबकि इसका जटिल स्वरूप, जिसमें अनेक सकारात्मक तत्त्व व प्रजातांत्रिक क्षमता हैं और नकारात्मक तत्त्वों को ध्यान में नहीं रखा गया है। अतः वाम-पक्षीय आमूल परिवर्तनवाद और अति-वाम उग्रवाद के मध्य वैचारिक व राजनीतिक स्तर दोनों पर अंतर करना अत्यन्त आवश्यक है।

लेनिन ने पैटी-बुर्जुआ की प्रगतिशील विषय-वस्तु, ग़ैर-सर्वहारा प्रवृत्तियों में भेद करने और उन्हें विस्तारपूर्वक व ऐतिहासिक रूप में जाँच करने की आवश्यकता पर संकेत किया तथा क्रांतिकारियों द्वारा उनके प्रति संकीर्णतावादी हठधर्मिता का दृष्टिकोण रखने की आलोचना की।[2]

नव-वामपंथ का विकास

तेजी से बढ़ रहे मध्यम स्तर, जो श्रमिक वर्ग व बुर्जुआ जी के मध्य बीच की स्थिति पर है, द्वारा विरोध की एक अभिव्यक्ति नव-वामपंथ नामक वाम-पक्षीय आमूल परिवर्तन वाली आंदोलन थी। उसका उदय छठे दशक में मुख्यतया छात्रों के मध्य हुआ। यह आंदोलन संरचना में ग़ैर-सर्वहारा था और एक स्पष्ट इजारेदार-विरोधी कार्यक्रम संचालित करने में असमर्थ था।

नव-वामपंथ ने सम्पूर्ण संरचनात्मक परिवर्तनों का तथा एक प्रकार के समाजवाद का आह्वान किया, परन्तु ये विद्यमान समाजवाद के विरोधी थे। इसका ज़ोर एक 'मानवतावादी सुधारवाद', भावी समाज के नैतिक व आध्यात्मिक स्तम्भों पर था, बिना इन स्तम्भों के सामाजिक या आर्थिक नींवों का उल्लेख किए। नव-वामपंथवाद के अनुसार यह क्रांति और नया समाज नहीं है जो मनुष्य का निर्माण करता है बल्कि इसका उल्टा होता है, यथा एक नए व बेहतर प्रकार के व्यक्ति का उद्भव, व्यक्तिगत जीवन-शैली में एक क्रांति सामाजिक क्रांति की आवश्यक शर्त व शक्ति है। सार रूप में, यह पूँजीवादी प्रणाली के ढाँचे में जीवन-शैली में 'शांत क्रांति' का एक आह्वान मात्र है।

---

1. वी० आई० लेनिन, 'ए कैरीकेचर ऑफ मार्क्सिज़्म एण्ड इम्पीरियलिस्ट इकोनोमिज़्म', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 23, पृ० 71
2. देखें: वी० आई० लेनिन, 'आन अदर एग्रेरियन प्रोग्राम', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 9, पृ० 246-51

सातवें दशक के आरम्भ तक नव-वामपंथ धीरे-धीरे जन-समुदाय से असम्बद्ध स्वतंत्र संघर्ष की निरर्थकता को समझने लगा था। श्रमिक वर्ग की ओर झुकाव आया परन्तु यह मिशनरियों, प्रबोधकों के रूप में और बुद्धिवाद के चुटीलेपन व अगुवाई करने के दावे के साथ था।

सातवें दशक के मध्य से कुछ बुर्जुआ विचारकों ने विकसित पूंजीवादी देशों में युवा आंदोलन में नवीन अवस्था के आरम्भ का बार-बार संकेत करना आरम्भ कर दिया, जो उनके कथनानुसार आमूल परिवर्तनवादी वामपंथी युवा आंदोलन के 'संकट' का लक्षण है। 'नव वामपंथ का आयु निर्धारण' नामक लेख में पश्चिम जर्मनी के समाजशास्त्री हैन्ज आवोश ने कहा कि युवाओं की क़तारों में मोह भंग व भ्रांति का बोलबाला है और कि विघराव की प्रक्रिया का आरम्भ हो गया है। आवोश ने लिखा, "बुद्धिजीवी विद्रोही आध्यात्मिक रूप से अपंग साबित हो गए और पुनः स्थापना की बैसाखियों का सहारा लेने लगे हैं। प्रवर्तकों ने पुराने सिद्धांत-वाक्यों को पढ़ाना आरम्भ कर दिया है, भविष्य के अग्रगामी वापस पूर्व-निर्मित स्थिति को लौट गए हैं, जिसने प्राचीन प्रस्थापना की नवीन व्याख्या को उत्पन्न किया है।"[1]

फिर भी, इन वक्तव्यों का अधिक सूक्ष्मता से विश्लेषण करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि युवा आंदोलन के 'संकट' से बुर्जुआ विचारकों का आशय मार्क्सवाद का बढ़ता हुआ वैचारिक प्रभाव है। आमूल परिवर्तनवादी वामपंथी अधिनायकवाद विरोध से लोकप्रिय-प्रजातांत्रिक कार्यवाही की ओर बदलाव का आरम्भ समकालीन युवा आंदोलन की अति महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों में एक है।

इसे राजनीतिक दृश्य-पटल पर आमूल परिवर्तनवादी वामपंथी युवा आंदोलन के एक नए प्रकार, जैसे 'परिस्थिति-विज्ञानी', के उदय में देखा जा सकता है। यह आंदोलन आर्थिक अन्तर्विरोधों पर विजय चाहता है तथा समाज में 'मानवीय मूल्यों' पर आधारित 'स्थिति संतुलन' पुनः स्थापित करना चाहता है। हालांकि, इसे प्राप्त करने में, 'परिस्थिति विज्ञानी' पूंजीवादी समाज के सामाजिक अन्यायों के विरोध को नहीं चुनते हैं बल्कि औद्योगिक सभ्यता तथा सामान्य रूप से किसी भी राज्य का विरोध करते हैं। "वे मनुष्य व प्रकृति के मध्य एक ऐसे सीधे सह-जीवन की मांग करते हैं, जो न ही सामाजिक और न ही राजनीतिक सम्बन्धों द्वारा सीमित किया गया हो।"[2]

---

1. डा० आवोश 'दास ऐल्टेर्न डेर नौयर लिंकेन' नोए रुण्डशाउ, अंक 2, 1974, पृ० 203
2. फ्रांस नोविले, संख्या 1640, 18 अप्रैल 1977, पृ० 251

हालांकि वे कहते हैं कि वे राजनीति में भाग नहीं लेंगे किन्तु वास्तव में 'परिस्थिति-विज्ञानी' राजनीति रूप में काफ़ी सक्रिय हैं। और, यद्यपि वे अकसर राजनीतिक पार्टियों के साथ संवाद को नामंजूर करते हैं, तथापि वे अपनी राजनीतिक आस्थाओं यथा, वामपंथी आमूल परिवर्तनवाद या सुधारवाद, का खुले आम प्रदर्शन करते हैं।

जैसा फ्रांसीसी कम्युनिस्टों ने बतलाया कि 'परिस्थिति विज्ञानी' का आंदोलन पूंजीवादी व्यवस्था के अन्यायों के विरुद्ध एक आमूल परिवर्तनवादी विरोध का प्रतिनिधित्व करते हैं और माँग करते हैं कि तुरन्त ही आवश्यक परिवर्तनों की स्थापना की जाय। आंदोलन वामपंथी शक्तियों के साथ मैत्री के लिए आकर्षित है, और इसके उद्देश्य सिर्फ प्रगतिशील शक्तियों के साथ एक मैत्री द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं।

वर्तमान अवधि में 'परिस्थिति-विज्ञानियों' में संगठनात्मक रूप मे सम्मिलन की प्रक्रिया रही है। मई 1980 में फ्रांसीसी 'परिस्थिति-विज्ञानी' आंदोलन की प्रमुख धाराओं का लियोन में एक राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन हुआ था, जिसने क्षेत्रीय संरचनाओं पर आधारित एक एकीकृत संगठन की स्थापना को स्वीकार किया। 1980 के आरम्भ में पश्चिमी जर्मनी मे पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए संघर्षरत अनेक संगठनों मे एकता स्थापित करने और 'ग्रीन्स' नामक नई पार्टी के गठन करने का निर्णय लिया गया। ग्रीन्स के कार्यक्रम में कहा गया है कि 'ग्रीन विकल्प' का उद्देश्य सामाजिक सम्बन्धों का रूपान्तरण करना है, जिसमें समूची मानव जाति की पर्यावरणिक, सामाजिक व प्रजातांत्रिक आकांक्षाओं के मुकाबले जनसंख्या के एक छोटे तबके को लाभ देने के लिए लघु-कालीन रुचि ली जाती है। इस उद्देश्य का मार्ग आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन के पुनर्गठन की परिकल्पना करता है।

पश्चिमी जर्मनी के कम्युनिस्टों का मानना है कि ग्रीन्स परंपरागत बुर्जुआ पार्टियों का विकल्प नहीं बन सकता है। फिर भी, परिस्थिति-विज्ञानी आंदोलन पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए, ताकि उसे इजारेदार-विरोधी संघर्ष की मुख्यधारा मे सम्मिलित किया जा सके।

कम्युनिस्ट वामपंथी आमूल परिवर्तनवादी युवाओं की निष्ठा को अपने पक्ष मे लेने का प्रयत्न कर रहे हैं, जिन्हें ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, जिनकी त्रुटियों की ओर सहानुभूतिपूर्वक संकेत करना चाहिए और उनके साथ धैर्यपूर्वक वार्तालाप करना चाहिए ताकि उन्हें श्रमिक-वर्ग के पक्ष मे मिलाया जा सके। अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम का कहना है, "कम्युनिस्ट के रूप में नए व पुराने वामपंथी के इन तबकों के प्रति हमारा दृष्टिकोण, हमारे मतभेदों पर मैत्रीपूर्ण बहस व विशेष मामलों पर की जाने वाली कार्यवाही मे एकता क़ायम करने का

होना चाहिए, जिसमें हमारा स्पष्ट लक्ष्य उनके अनुयायियों को मार्क्स, एंगेल्स व लेनिन के वैज्ञानिक समाजवाद के निकट लाना है।"[1]

परिणाम यह रहा कि नव-वामपंथ का एक तबका वास्तविक मार्क्सवाद व कम्युनिस्ट पार्टियों के साथ काम को स्वीकार करने लगा है (अमेरिका में डू बोइस क्लब मार्क्सवादी युवा संगठन में शामिल हो गया, पश्चिमी जर्मनी में स्पार्टाकुस छात्र संघ की स्थापना, फ्रांसीसी छात्र संघों का पुनर्गठन, यू एन ई एफ, आदि)

अति वामपंथी संकट

राजनीतिक मंच पर अधिकाधिक दल, जो 'वामपंथी' व 'क्रांतिकारी' होने का दावा करते हैं, अब दिखाई देने लगे हैं। परन्तु वास्तव में, ये अति-वामपंथी अराजकतावादी प्रवृत्तियों के अंग हैं। इन समूहों के विचारक जन-समर्थन को पाने के प्रयास में युवजनों को अपने अति वामपंथवाद का भाषण सुनाते हैं।

हाल के वर्षों में आतंकवाद की वृद्धि के द्वारा अराजकतावादी तरीके विशेष रूप में प्रचारित हुए हैं। इटली में 'लाल-ब्रिगेड' ('ब्रिगेट रोज़') ने अति-वामपंथी भ्रामक-क्रांतिकारी नारों के आवरण में भड़काने वाली अपनी कार्यवाहियाँ की हैं।

फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के समाचारपत्र ल'ह्यूमनिते ने समकालीन आतंकवाद को "पूंजीवादी औद्योगिक समाज के संकट की एक चरम अभिव्यक्ति कहा है। यह राजनीतिक संघर्षों में आमूल परिवर्तनवाद से निराशावाद तक के संक्रमण को बतलाता है। इसका समाजशास्त्रीय आधार युवाओं के बहिष्कृत व असंतुष्ट तबकों का आंदोलन है, जो एक विशाल समाज के लिए विशिष्ट सांस्कृतिक विकास के साथ संयुक्त होकर अनाधारित प्रजातांत्रिक राजनीतिक संघर्ष में अविश्वास पैदा कर देता है। आतंकवाद की विचारधारा अराजकतावाद की भयंकर परिस्थितियों के साथ श्रमिकों के संकीर्णतावादी अवशेषों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के भद्दे, आरम्भिक व अनैतिहासिक भावार्थ को जोड़ देती है। इसका वैचारिक व व्यावहारिक परिणाम होता है श्रमिक वर्ग के आंदोलन के विचारों व ऐतिहासिक परम्पराओं का निरन्तर निषेध'''। यह प्राथमिक रूप में एक तीखी मुठभेड़ बनता है।"[2]

इजारेदार बुर्जुआजी द्वारा श्रमिकों के संघर्ष व युवा आंदोलनों के साथ उग्रवादियों के अपराधी कृत्यों को अभिज्ञान करना, ताकि उन्हें बदनाम ठहराया जा सके, ही उग्रवादियों के आतंकवाद को इतना खतरनाक बनाता है।

नवकालीन अराजकतावाद बहुत-सी विभिन्न प्रवृत्तियों को दर्शाता है। इस

---

1. 'द प्रोग्राम ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी यू एस ए', न्यू आउट लुक पब्लिशर्स, न्यूयार्क, 1970, पृ० 124
2. ल'ह्यूमनिते, 11 अप्रैल 1978

के वर्षों में पश्चिमी जर्मनी के छात्रों के मध्य स्पोन्टी नामक आंदोलन आरम्भ हुआ। इसके गम्भीर अंतर्विरोधमय तथा लगभग असंगत सिद्धांत व मनोवैज्ञानिक आधारवाक्यों ने इस आंदोलन को अस्थिर बनाया है और साथ ही इसे जनता के आकर्षण का बना दिया है। सभी राजनीतिक पार्टियों व राजनीतिक रझानों के प्रति अरुचि और संगठित कार्यवाही के सभी स्वरूपों का विरोध सभी स्पोंटी के लिए सामान्य है। पश्चिमी जर्मनी के समाजशास्त्रियों ने स्पोंटी को सातवें दशक के अन्त की पीढ़ी कहा है, जो छठे दशक के विद्रोहियों के पश्चात आयी है। उस आंदोलन के मोहभंग से स्पोंटी ने निष्कर्ष निकाला कि कुछ भी नहीं बदला है और सामान्यतः कुछ भी नहीं बदल सकता है। अपने वैयक्तिक संसार को वापस लौटना ही स्पोंटी की चारित्रगत विशेषता है, जो संयुक्त छात्र संगठनों को तोड़ने की उनकी रणनीति को स्पष्ट करती है। उनके विचारों में एक है 'एसोसिएशन ऑफ जर्मन स्टूडेन्ट्स' से अलग होना और अपनी स्वयं की विरोधी 'रैडिकल लैफ्ट स्टूडेन्ट एसोसिएशन' बनाना ताकि 'अराजकता को प्रेरित' किया जा सके।[1] समष्टि कार्य के स्थान पर उनकी कार्यवाही का सिद्धांत है सुखवाद में स्वयं को डुबोना साथ ही स्पोंटी आतंक के प्रति सहानुभूति रखते हैं और आतंकवादी दलों की भर्ती के लिए एक उपजाऊ संगठन हैं। जहाँ से वे तथाकथित आनन्ददायक दंगे के लिए बाहर आते हैं।

पश्चिमी जर्मनी के स्पोंटी के समान आंदोलन अन्य पूँजीवादी देशों में भी उभर रहे हैं। इतावली समाजशास्त्रियों द्वारा 'स्ट्रैंज' कहलाए जाने वाले एक आंदोलन में भावशून्य युवजन हैं जिन्होंने यह स्वीकार कर लिया है कि वे समाज को नहीं बदल सकते हैं, लेकिन फिर भी, वे आतंकवाद के प्रति थोड़ी-बहुत सहानुभूति रखते हैं। युवजनों के इस समूह के विरोध का एक रूप है वैयक्तिक चोरी को अधिकार की मान्यता देना।

सातवें दशक के अन्त में फ्रांस में 'स्वशासन' नामक एक नया समूह बना जो अति-वामपंथ के वाम से भी दूर है।[2]

'स्वशासनवादी' राजनीतिक संघर्ष को अस्वीकार करते हैं, जिसे वे 'अलगाव की चरम अवस्था' कहते हैं। उन्होंने सभी प्रकार की विचारधाराओं के विरुद्ध युद्ध घोषित किया है, जिसमें 'पूहदयन' भी सम्मिलित है जिसे वे पर्याप्त क्रांतिकारी नहीं मानते हैं। उनके लिए सभी वामपंथी राजनीतिक पार्टियाँ अवसरवादी व सुधारवादी हैं। जहाँ तक संगठनात्मक सिद्धांतों का प्रश्न है 'स्वशासनवादी' सब प्रकार के नेतृत्व को दृढ़ता से अस्वीकार करते हैं। संगठनमात्र को अस्वीकार करते

1. स्पीगैल, संख्या 13, 1979, पृ॰ 62
2. देखें : ल मोंद, 25 जनवरी, पृ॰ 1

हुए वे सम्पूर्ण सहजता व निर्बाधता की वकालत करते हैं। इसमें सम्बद्ध अधिकांश लोग छात्र व भूतपूर्व श्रमिक हैं जिनकी आजीविका के साधन अस्थायी हैं, अर्थात् वर्गच्युत तत्व हैं। वे कहते हैं कि "भाड़े के श्रम की प्रणाली डकैती है। यह प्रणाली लोगों को समय, ज़िन्दगी व विश्राम से वंचित करती है। वह लोगों को मशीन बना देती है, और वे रात्रि में अपनी शारीरिक शक्ति पुनः प्राप्त कर केवल अश्लीलता के योग्य रह जाते हैं।"[1]

'स्वशासन' आन्दोलन के विभिन्न रूप पश्चिमी योरोप में यहाँ-वहाँ मिलते हैं।

अराजकतावाद जिसने ऐतिहासिक दृश्यपटल से प्रस्थान कर लिया था, आज वापस युवा आंदोलन में फिर अपना सर कैसे उठा लिया?

इसके स्पष्टीकरण हेतु सबसे पहले राज्यकीय इजारेदारी पूंजीवाद के विकास में, नागरिक सेवा, नौकरशाही, दमनकारी तंत्र और सेना के अविश्वसनीय फैलाव में खोज करनी चाहिए। इससे लाजमी है कि युवजन, विशेष रूप में छात्र, जिनमें से अधिकांश विश्वविद्यालय से स्नातक होकर और नौकरी प्राप्त करके राज्यतंत्र की सेवा करेंगे, राज्य के प्रति ही अरुचि करें।

किन्तु वे बुद्धिजीवी, जिनके ज्ञान व योग्यता का अर्थ यह होता है कि वे अधिकांश प्रशासनिक कार्यों को करेंगे, सत्ता के वास्तविक गलियारों में प्रवेश पाने से वंचित हैं, अतः वे राजनीतिक सत्ता की अयोग्यता और राजनीतिक ढाँचे की बुराइयों की आलोचना करने लगते हैं। समाज में मनुष्य के अलगाव के समस्त स्वरूपों का विरोध और समस्या के निरपेक्ष सैद्धांतिक समाधान की तलाश के परिणाम-स्वरूप ही प्रायः सत्ता के समस्त ढाँचे को पूर्णतया नकारना आरम्भ होता है।

ट्राट्स्कीवाद द्वारा कम्युनिज्म-विरोध की सेवा

वर्तमान वर्षों में पश्चिम में ट्राट्स्कीवाद का पुनरुत्थान, विशेषकर युवजनों में, हुआ है। हालांकि ट्राट्स्कीवाद पेटी-बुर्जुआ क्रांतिकारी विचारधारा की एक परम्परागत अभिव्यक्ति है, जबकि नव-ट्राट्स्कीवाद व्यक्तिगत सम्पत्ति को स्वीकारते हुए लेकिन लेनिनवाद के विचारों तथा वास्तविक समाजवाद पर अपनी दुश्मनी को सिर्फ़ छुपाने के लिए अपने स्वयं के अति क्रांतिकारी नारों के साथ बुर्जुआ विचारधारा की ओर निरंतर गतिशील है।

आज के ट्राट्स्कीवादी राजनीतिक रूप से ग़ैर-सर्वहारा तबकों, मुख्यतया छात्रों को अपने पक्ष में लेने हेतु ध्यान दे रहे हैं, यद्यपि वे अब भी सभी युवाओं में रुचि रखते हैं। हालांकि, खुद ट्राट्स्की, जिसने युवाओं को 'क्रांति का बैरोमीटर'

1. देखें: ल मोंद, 25 जनवरी, पृ० 13

और इसका 'सर्वाधिक आमूल क्रांतिकारी पक्ष' कहा था, से विपरीत आज के ट्राट्स्कीवादी कहते हैं कि युवजन क्रांति के अति सक्रिय हरावल दस्ते हैं जिन्होंने श्रमिक वर्ग का स्थान ले लिया है। वे युवाओं को अलग करने व कम्युनिस्ट पार्टियों का उत्साह भंग करने के अपने इरादे को नहीं छुपाते हैं।

समकालीन छात्र आंदोलन में अन्य प्रवृत्ति 'मन्दीकृत' ट्राट्स्कीवाद की है, इस धारा के पक्षधरों के अनुसार यद्यपि श्रमिक वर्ग क्रांति का हथौड़ा है तथापि छात्र उसे चलाने वाले हाथ हैं। आजकल लगभग 60 ट्राट्स्कीवादी समूह हैं, जिसमें अधिकांश पश्चिमी योरोप में (50 प्रतिशत से अधिक) और लातीनी अमेरिका में (30 प्रतिशत से अधिक) हैं। चौथी इन्टरनेशनल का संयुक्त सचिवमण्डल सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय ट्राट्स्कीवादी संगठन है, जिसमें अधिकारिक सूचना के अनुसार लगभग 40,000 सदस्य हैं। 'चौथे इंटरनेशनल' के मताधिकार का एकमात्र दावा करने वाले कई अन्य ट्राट्स्कीवादी अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र भी हैं। कई देशों में, विशेषकर ब्रिटेन व फ्रांस में ट्राट्स्कीवादियों का कुछ प्रभाव युवा सोशल-डेमोक्रेट, दक्षिणपंथी ट्रेड यूनियनों व छात्र आंदोलन पर है।

ट्राट्स्कीवादी पूँजीवादी दुनिया में बुर्जुआजी के स्थान पर कम्युनिस्टों को अपना प्रमुख राजनीतिक शत्रु मानते हैं। यद्यपि वे कहते हैं कि वे समाजवाद के लिए हैं, फिर भी ट्राट्स्कीवादी वस्तुगत रूप में व ठोस रूप में समाजवाद-विरोधी शक्तियों की मदद करते हैं। उनकी छद्म-क्रांतिकारी आलंकारिक भाषा कुछ युवजनों को यह कहानी अपनाने देती है कि पूँजीवादी समाज की सामाजिक समस्याओं का समाधान सिर्फ कम्युनिस्ट पार्टियों व वास्तविक समाजवाद से दुश्मनी करके हो सकता है। ट्राट्स्कीवादी उन उग्र पैटी-बुर्जुआ तत्वों का समर्थन करने की कोशिश करते हैं, जो पूँजीवाद की निन्दा करने वाले सभी प्रकार के मुहावरों का धारा-प्रवाह उपयोग करते हैं, किन्तु वे आधुनिक समाजवादी यथार्थ को भी नहीं स्वीकारते हैं। ट्राट्स्कीवादी दल विभिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के मध्य समाजवादी देशों की शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति का भी विरोध करते हैं, इसके स्थान पर सैनिक-झड़पों की दुःसाहसिक नीति की वकालत करते हैं। वास्तव में ट्राट्स्कीवाद ने साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष के स्थान पर प्रगतिशील क्रांतिकारी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष को ला दिया है। वे बड़े पैमाने पर तथाकथित घुसपैठ की, विशाल प्रजातांत्रिक युवा संगठनों में चोरी छुपे घुसने की कार्यनीति का उपयोग करते हैं, ताकि वे उनको भीतर से तोड़ सकें, उनमें अराजकता ला सकें और उनमें से अपने समर्थकों की भर्ती कर सकें।

सभी बुनियादी पैटी-बुर्जुआ प्रवृत्तियों के एक-से लक्षण होते हैं। प्रथम, दुनिया को बदलने का सिर्फ हिंसा का रास्ता ही है, द्वितीय, युवजनों, विशेषकर छात्रों के साथ उनकी नाटकबाजी और उन्हें धोखा देना; तृतीय, उनकी सिद्धांतहीनता, गुट-

बंदी और बेईमानी। ये सभी प्रवृत्तियाँ एक साथ मिलकर बनाते हैं—वैचारिक रूप में उनका प्रबल सोवियतवाद-विरोध और कम्युनिज्म-विरोध, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा की विकृति और वास्तविक समाजवाद पर उनकी पूर्ण असहमति।

कम्युनिस्टों का विश्वास है कि अति-वामपंथ, पैटी-बुर्जुआ दृष्टिकोणों के विरुद्ध संघर्ष युवजनों को वास्तविक क्रांतिकारी आंदोलन में सम्बद्ध करने की आवश्यक शर्त है। अति-वामपथ का प्रभाव श्रमिक-वर्ग के राजनीतिक संघर्ष के स्तर व युवाओं पर इसके वैचारिक प्रभाव के, और साथ ही जिस स्तर तक युवजन क्रांतिकारी गतिविधि में जुड़े हैं तथा क्रांतिकारी पार्टियों के साथ उनके संगठनात्मक सम्बंधों की शक्ति है, विपरीत अनुपात में होता है।

3. युवा आंदोलन में आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथ की आलोचना

आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपथ का उभार समकालीन युवा आंदोलन को छठे दशक के अन्त व सातवें दशक के आरम्भ के आंदोलन, जब आमूल परिवर्तनवादी वामपथ की सक्रियता पर ध्यान दिया जाने लगा था, के मध्य के अन्तर को बताता है।

शहरी पैटी-बुर्जुआ के भाग्य में अवनति, जो बड़े इजारेदारियों के साथ स्पर्धा नहीं कर सकते हैं और जनसंख्या का विराट हिस्से, विशेषकर छोटे किसान, के जीवन की बदतर हालात में न सिर्फ इजारेदार-विरोधी भावना को उभारा है बल्कि अतीत में इजारेदारी अवस्था के पूर्व की स्वतंत्र, स्वच्छन्द प्रतियोगिता को वापस लौटने के भ्रम को भी बढ़ावा मिलता है। इसके साथ ही, बहुत से युवजनों में अपराध व नैतिक-पतन की वृद्धि भी उतनी ही गम्भीर समस्या बन रही है जितनी कि आर्थिक अस्थिरता की समस्या। इससे उत्पीड़नकारी मनोवैज्ञानिक दबाव की स्थिति बनती है, और यह दबाव किसी भी साधारण मनुष्य को 'मजबूत सरकार' की बढ़ावा वाले प्रचार में फँसने को आसान बनाता है। यह अति दक्षिणपंथी भावनाओं के लिए उपजाऊ स्थिति है।

आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथी युवा संगठनों का उदय बुर्जुआजी की युवा पीढ़ी की वर्ग स्थिति के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। इन्हीं संगठनों में युवा बुर्जुआ अपने वर्ग की सही भूमिका, वास्तविक क्रांतिकारी शक्तियों से संघर्ष, सिखाता है। यदि दक्षिणपंथी युवा संगठनों का निर्माण बुर्जुआजी के राजनीतिक, वैचारिक व संघर्ष के हितों के मध्य और क्रांतिकारी सर्वहारा व इसके राजनीतिक हरा-, यथा कम्युनिस्ट पार्टियों, के मध्य इनके संघर्ष में इनके वर्ग के उद्देश्यों पूर्णतया सम्बद्ध है।

अति-दक्षिणपंथ का युवा पक्ष, इसका राजनीतिक सारतत्त्व व सामाजिक दिशा आंदोलन के वर्ग-आधार द्वारा सीमित है। आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथी युवा सगठनों के सामाजिक आधार का विस्तार करने और इन्हें जन-संगठनों के रूप में बनाने के लिए बुर्जुआजी जनसंख्या के मध्यम स्तर से जितना सम्भव हो सके उतने युवजनों को, जिनकी आर्थिक स्थिति अस्थिर है और जो उग्रवादी अपीलों को स्वीकारते हैं, अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। दूसरी बात यह है कि लफ्फ़ाज़ीदार अपीलें राजनीतिक रूप में अपरिपक्व और भ्रष्ट युवा श्रमिक, विशेषकर बेरोज़गार को इन प्रतिक्रियावादी संगठनों की ओर आकर्षित कर सकती हैं।

नव-फासीवाद साम्राज्यवादी बुर्जुआजी की राजनीतिक आरक्षित शक्ति बन चुका है। माना कि अतीत के फासीवादी आंदोलन, उनके विचार व नारे अधिकतर अपना भेद खोल चुके हैं और जनता के लिए कम आकर्षण रखते हैं, फिर भी, आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथी दकियानूसी परम्पराओं के प्रति वफादारी के पीछे अपनी कार्यवाहियों को छिपा लेते हैं। फिर भी, आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथ की जड़ें परम्परावादी फासीवादी आंदोलन में हैं। उनके कार्यक्रम में शास्त्रीय फासीवाद की विशेषता सामाजिक व राजनीतिक दकियानूसी के साथ पेटी-बुर्जुआ भ्रम व बगावत है।

कम्युनिज़्म-विरोध एक ऐसा मंच है जिसमें आमूल परिवर्तनवादी दक्षिणपंथ के सिद्धांत व राजनीतिक गतिविधि के साथ दक्षिणपंथी दकियानूसी बुर्जुआ पार्टियों की विचारधारा व राजनीति मिली हुई है। संयुक्त राज्य अमेरिका में यह खतरा बढ़ता जा रहा है कि सैन्य-औद्योगिक समूह देश के राजनीतिक जीवन का फासीकरण कर देगा।

सैन्यवाद फासीवादी उप-संस्कृति का बुनियादी मूल्य है और सैन्यवादी मूल्य राष्ट्र के सामान्य मूल्यों के रूप में उभारे जाते हैं। संघीय जर्मनी में अर्द्ध सैनिक विकिंग्स युवा संगठन, जो नव-फासीवादी विकिंग्स बुण्ड से सम्बद्ध है, के सदस्य प्राचीन जर्मनी की वफादारी का पदक पहनते हैं। जापान में समुराई वीरता को एक सुन्दर आदर्श के रूप में निर्मित करना सैन्यवादी शिक्षा का एक अंग है।

प्रतिक्रियावादी रूमानियत फ़ासीवादी विचारधारा का एक प्रमुख स्तम्भ है। 'हठधर्मी व्यक्तित्व', 'अतिमानव' की पूजा और क्रूरता व हिंसा की उपासना को उनके सर्वाधिक प्रतिक्रियावादी रूपों में प्रचारित किया जाता है। तथा अतीत की 'स्वस्थ' परम्पराओं साथ में अप्रचलित घोर-प्रतिक्रियावादी सामाजिक व्यवस्थाओं व संस्थाओं की रूमानियत की ओर विस्मय से देखा जाता है।

साथ ही अनेक अति-दक्षिणपंथी गुट युवजनों को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं को सुलझाने का अत्यन्त उदारतापूर्वक वायदा करते हैं; वे 'लघु मानव'

की शान के बारे में नारे बुलन्द करते हैं और यहाँ तक कि पूँजीवाद की [illegible] के साथ आलोचना करते हैं। पश्चिम में पूँजीवाद-विरोधी सप्रजाओं और छ[illegible] प्रजातांत्रिक छद्मावरण युवजनों के मध्य बढ़ते हुए पूँजीवाद-विरोधी भावनाओं [illegible] समस्त फ़ासीवादी-विचारधाराओं के समर्थकों के लिए अधिकाधिक आवश्यक [illegible] रहा है। यह स्पष्ट करता है कि क्यों नव-फ़ासीवाद पेटी-बुर्जुआओं के मध्य अप[illegible] स्थिति को मज़बूत करने और यहाँ तक कि युवा श्रमिकों की मैत्री पाने का प्रय[illegible] कर रहा है।

खुले रूप में प्रतिक्रियावादी, फ़ासीवादी व फ़ासीवाद समर्थक आमूल परिवर्तन[illegible] वादी दक्षिणपंथी युवा संगठनों और परम्परागत दकियानूसी संस्थाओं के सा[illegible] दक्षिणपंथी आमूल परिवर्तनवाद के अनेक विशिष्ट रूप हाल ही में उदित हुए हैं[illegible] इस समूह में तथाकथित नव-कट्टरवाद गुट है, जो अमेरिका में है।

नव-कट्टरवाद का एक लक्षण 'स्वतंत्रता' की अपील है, जिसका स्पष्ट आशय [illegible] निजी उद्योग के लिए अबाध स्वतंत्रता और इसके साथ राज्य का कोई भी हस्तक्षे[illegible] न होना। नव-फ़ासीवाद की शक्ति के साथ जुड़कर नव-कट्टरवाद युवाओं के मध्य अपने प्रभाव को बढ़ाने की आशा करता है। और यह वास्तविक वामपंथ और प्रजातांत्रिक युवा-संगठनों के विरुद्ध संघर्ष में पुलिस के साथ अपने संबंधों को नहीं छिपाता है।

नव-वामपंथ के प्रजातांत्रिक आदर्शों व समाज के पुनर्निर्माण की उनकी स्वप्निल योजनाओं की निरंतर आलोचना करते हुए नव-कट्टरवाद नव वामपंथी आन्दोलन के प्रतिपक्ष के रूप में उभरा है। यह इस बात का संकेत है कि ऐसे कई लोग, जो नव-वामपंथ के साथ हुआ करते थे और जो अन्ततः इस निष्कर्ष में पहुँचे कि क्रांति द्वारा रातों-रात सामाजिक पुनर्निर्माण के उनके प्रयत्न निरर्थक थे, वह नए कट्टरवादियों के साथ जुड़ गये हैं और उनके नारे—दुनिया ऐसी होनी चाहिए के विरुद्ध दुनिया जैसी है वैसी ही हो—को अपना लिया है। नव कट्टरवाद वामी विचारधारा को फैलाने और सभी प्रजातांत्रिक परिवर्तन के विरुद्ध एक अस्त्र के रूप में व्यवस्था का उपयोग कर रहा है।

कट्टरवाद का उभार व्यापक बेरोज़गारी और भविष्य में बढ़ती हुई अनिश्चितता से जूझते अनेक युवजनों में बढ़ रही धर्मानुवर्ती भावनाओं के साथ भी जुड़ी हुई है। नव कट्टरवाद अति भौतिकवाद के और [illegible] राजनीतिक आन्दोलन के मुकाबले एक प्रकार की मुक्तात्मक प्रतिक्रिया भी है। अन्त, यह भी कहना चाहिए कि अधिकांश कट्टरपंथी युवा संगठनों का नेतृत्व अपने वास्तविक उद्देश्यों को जनता की आँख से छिपाकर चलता है।

फिर भी परम्परागत फ़ासीवादी व नव कट्टरपंथी विचारों के प्रति [illegible] अति दक्षिणपंथी संगठन अधिक आकर्षक राजनीतिक व नये वैचारिक [illegible]

उपयोग द्वारा युवाओं को अपने पक्ष में लेने की चेष्टा करते हैं।

इसके परिणामस्वरूप तथाकथित नव-दक्षिणवाद का राजनीतिक पशुत्व का आरंभ हुआ (अमेरिका, इटली, फांस, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, स्वीडेन व अन्य देशों में)। ये गुट पूंजीवाद की आलोचना के साथ कुछ हद तक—कट्टर समाजवाद—विरोध को मिला देते हैं। वे जिस आदर्श की महत्वाकांक्षा रखते हैं वह है एक शक्तिशाली फासीवाद राज्य।

परम्परागत राजनीतिक युवा सगठनों से नव-दक्षिणपथ के संगठनात्मक स्वरूप बहुत भिन्न हैं, जिसे नव-दक्षिणपंथ बहुत ही जटिल मानते हैं। नव-दक्षिणपंथ का प्राथमिक सैल राष्ट्रीय-क्रांतिकारी आधार गुट है। 'आधार' से आशय सिर्फ उद्योग नहीं है, बल्कि विश्वविद्यालयों व अन्य उच्च शिक्षण संस्थान, पार्टियाँ व ट्रेड यूनियन भी हैं।

विश्वव्यापी राजनीति में नव-दक्षिणपंथियों की अधिकतर दखलदाजी में समाजवादी देशों के विरुद्ध कार्यवाहियाँ हैं। वे समाजवादी देशों को भीतर से तोड़ने और 'आन्तरिक विपक्ष' की रक्षा के लिए अभियान चलाने का आह्वान करते हैं। समाजवाद के विरुद्ध प्रबल आक्रमणों के साथ पूंजीवाद की दिखावटी आलोचना जोड़ दी जाती है। बुर्जुआ व्यक्तिवाद तथा तथाकथित कम्युनिस्ट समूहवाद दोनों के प्रति दुश्मनी दिखाते हुए, नव-दक्षिणपंथ ने एक छद्म-मानववादी झंडा उठा रखा है, जिसमें व्यापक रूप में प्रचलित नव-फ्रायडवादी विचार हैं, जिनके अनुसार युवजन दक्षिणपंथी आमूल परिवर्तनवाद की ओर सहज रूप में प्रवृत्त होते हैं, और फासीवाद उनके अन्तरतम आवश्यकताओं के सबसे अधिक अनुकूल है।

संघीय जर्मनी में नव-दक्षिणपथ राष्ट्रीय एकजुटता पर अपनी अवधारणा, जनता व राष्ट्र के साथ व्यक्ति की एकता को स्पष्ट करते हैं। उनकी घोषणा है कि "जीवन को सुरक्षित व सुनिश्चित करने की लक्ष्य वाले राष्ट्रवाद का भविष्य है—अन्यथा अन्य प्रकार का कोई भी भविष्य नहीं होगा।"[1]

एक गैर-वर्ग वाले 'राष्ट्रीय समुदाय' का दावा करते हुए नव-दक्षिणपथ 'अखिल-जर्मन राष्ट्रीय चेतना' को सुरक्षित व सुस्थिर रखने का आह्वान किया है।

साम्राज्यवाद की प्रमुख प्रतिक्रियावादी शक्तियों में एक है यहूदीवाद, एक प्रकार का फासीवाद। यहूदीवादी नेता युवजनों से समर्थन पाने की आशा रखते हैं, तथा विशिष्टता के दावों द्वारा उनके विचारों में परिवर्तन लाते हैं। इजरायल में अनेक अर्द्ध-सैनिक युवा संगठन हैं, जिसमें सभी का चारित्रिक गुण है सोवियतवाद-

1. बार्थ जी०, रिवोल्यूशन फॉन रेख्ट ? फीवर्न इन ब्रीस्न, 1975 बसेल, वीन, पृ० 60

विरोध, कम्युनिज्म-विरोध और यहूदीवाद की नीति और पश्चिमी योरोप व अमेरिका के फासीवादी गुटों के साथ मैत्री। इजरायल की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव, मीर विलनेर ने कहा कि "हम अपनी जनता को आक्रमणकारी बनाना या साम्राज्यवादी हितों में अपने युवाओं को बलि में चढ़ाना नहीं चाहते हैं– इजरायल में, सरकारी नीति के विरोधियों की संख्या बढ़ती जा रही है। अधिकाधिक युवजन कब्जा किए गए अरब क्षेत्रों में काम करने से इन्कार कर रहे हैं।"

इतिहास बताता है कि उग्र दक्षिणपंथी फासीवाद संकटमय राजनीतिक परिस्थितियों के समय में, जब श्रमिक वर्ग विशिष्ट प्रजातांत्रिक व सामाजिक मांगों को हासिल करने योग्य हो चुकते हैं, अपना सर उठाता है और आक्रामक बन जाता है। इसकी प्रतिक्रिया विद्यमान व्यवस्था को अक्षुण्ण रखने वालों द्वारा प्रतिरोध है। बड़ा व्यापारी इजारेदारी-विरोधी संघर्ष के दौरान श्रमिक वर्ग को नए मित्र हासिल करने से रोकने के लिए दक्षिणपंथ से मदद का आह्वान करता है।

युवाओं की निष्ठा को अपने पक्ष में लेने के अधिकार के लिए, उन्हें असली क्रांतिकारी बनाने के लिए, उनकी एकता व अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता के लिए और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए, श्रमिक वर्ग व इसके हरावल दस्ते, यथा कम्युनिस्ट पार्टियाँ भ्रामक क्रांतिकारी सिद्धांतों, जिनमें उनकी उग्रवादी विविधताएँ भी सम्मिलित हैं, से सक्रियता के साथ संघर्षरत हैं।

अध्याय : 7

युवाओं की संयुक्त कार्यवाही व अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता

लेनिन द्वारा प्रस्तुत विचार, कि श्रमिक वर्ग इतिहास द्वारा निर्धारित अपने ब को सिर्फ नए जनसमूह की मित्रता को प्राप्त करके सफलतापूर्वक पूरा कर सव है, पर कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों की युवानीति के मूल सिद्धांत आधारित है। श्रमिक वर्ग द्वारा जनसंख्या के मध्यवर्ती तबकों को अपने पक्ष में लेने के महत्त्व पर लेनिन ने ज़ोर दिया।[1]

कम्युनिस्ट महसूस करते हैं कि सोशल डेमोक्रेटिक, धार्मिक तथा क्रिश्चियन-डेमोक्रेटिक संगठनों—युवाओं के सभी समूहों के मध्य कार्य करना अति महत्त्वपूर्ण है। व्यापक प्रजातांत्रिक युवा मोर्चे के निर्माण के संघर्ष में युवा सोशल-डेमोक्रेट के साथ कुछ मामलों में सहयोग तथा धार्मिक युवजनों के साथ कार्य करना तेजी से महत्त्वपूर्ण बनता जा रहा है। पूंजीवादी समाज के अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष में विभिन्न राजनीतिक संगठनों के युवजनों के मध्य अधिक समझ व संयुक्त कार्यवाही इसका लक्ष्य है।

युवा कम्युनिस्ट व सोशल-डेमोक्रेट

पश्चिमी योरोपीय पूंजीवादी देशों में लगभग 750,000 युवा सोशल डेमोक्रेट युवा संगठन में हैं, जर्मनी की सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टी के युवा संगठन यंग सोशलिस्ट, स्वीडेन की सोशल-डेमोक्रेटिक यूथ यूनियन, तथा नार्वे की यूनियन ऑफ यंग वर्कर्स सबसे बड़े हैं। इटेलियन फैडरेशन ऑफ सोशलिस्ट यूथ, फ्रांस की सोशलिस्ट यूथ, ब्रिटिश लेबर पार्टी की यंग सोशलिस्ट, आस्ट्रिया का सोशलिस्ट यूथ व अन्य संगठन भी प्रभावशाली हैं।

सोशल-डेमोक्रेटिक युवा संगठन ट्रेड यूनियन युवा आंदोलन व राष्ट्रीय छात्र संगठनों में अपेक्षाकृत मजबूत स्थिति बनाए रखे हुए हैं। उनका प्रभाव बहुत से युवा श्रमिकों व बाबुओं तथा अनेक युवा बुद्धिजीवियों में भी बढ़ा हुआ है।

---

1. वी० आई० लेनिन 'ए न्यू रेवोल्यूशनरी वर्कर्स एसोसिएशन', कलेक्टेड वर्क्स, जिल्द 8, पृ० 501

युवाओं को सामाजिक-सुधारवाद, जो वास्तव में बुर्जुआजी के हितों की तथा विशेषकर युवाओं में सामाजिक दाँवपेंच व वैचारिक चालाकी की नीति की रक्षा करता है, के सार को वास्तव में समझने में कुछ समय लगता है। सत्ता पर आ जाने के पश्चात सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक सुधारों को शुरू करने में सोशल डेमोक्रेट्स की असमर्थता दर्शाने पर आम तौर पर मोह भंग होता है। युवा सोशल-डेमोक्रेट्स का बढ़ता हुआ विरोध विभिन्न स्तरों में व्यक्त होता है, यथा— पूँजीवादी प्रणाली से घनिष्ठ रूप में जुड़े दक्षिणपंथी नेताओं व पार्टी के साधारण सदस्यों के मध्य दरार, कुछ सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों की अधिकृत नीतियों व उन युवा संगठनों, जिन पर उनका प्रभाव है, की गतिविधि के मध्य दूरी, आदि।

परन्तु युवा सोशलिस्टों का वामपंथ की ओर झुकाव के मूल्यांकन पर अति आशावादी भी होना ग़लत होगा। दक्षिणपंथी सोशल-डेमोक्रेटिक नेतृत्व द्वारा स्वयं की परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की क्षमता, उनके लचीलेपन को तथा युवजनों को अपने विचार में प्रभावित करने हेतु उपयोग में लाने वाले अनेक तरीक़े व साधनों को भी ध्यान में रखना होगा। कम्युनिस्ट-विरोधी विराट अभियानों के साथ चालाकीभरी नेतागिरी सामान्यतः युवा सोशल-डेमोक्रेट्स में बढ़ते हुए वामपंथी रुझान को रोकने में सहायक होती हैं।

सोशल-डेमोक्रेटिक आंदोलन में, विशेषकर युवा सोशल-डेमोक्रेट्स में दृष्टिगत वामपंथी धारा को निर्मित करने वाले कई वस्तुगत व आत्मपरक घटक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सोशल-डेमोक्रेट्स का वामपंथ की ओर झुकाव मुख्यतः विश्व की शक्तियों का शांति व समाजवाद की ओर झुकाव तथा वास्तविक समाजवाद व समाजवादी विचारों का बढ़ता हुआ सम्मान का परिणाम है।

सोशल डेमोक्रेटिक आंदोलन में इस वामपंथी धारा का एक महत्वपूर्ण योगदान देने वाला तत्त्व अनेक ऐसे युवजनों का इसमें जुड़ना है, जिन्होंने 20वीं सदी के छठे दशक के अन्त व सातवें दशक के शुरू में हुए तूफानी संघर्ष में भाग लिया था। ये युवजन अपने साथ सामाजिक परिवर्तन की एक ऐसी माँग सोशल-डेमोक्रेसी के समक्ष लाये जिसे न ही अति-वामपंथ और न ही बुर्जुआ समाज की परम्परागत संस्थाओं वाला सोशल-डेमोक्रेसी पूरी कर सकते हैं।

सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों में वामपंथी धारा, विशेषकर युवाओं द्वारा वामपंथ की ओर झुकाव जैसे-जैसे पूँजीवादी प्रणाली का संकट गहरा होता जाता है वैसे-वैसे उनके अधिकारों व हितों के लिए संघर्ष में उनकी गतिविधि को प्रेरणा दे रहा है।

सोशल-डेमोक्रेसी में यह वामपंथी धारा कम्युनिस्टों के साथ सम्बन्धों को [illegible] में अत्यन्त मदद दे रही है। श्रमिक जनों के राजनीतिक, सामाजिक व [illegible] लिए तथा शांति, प्रजातंत्र व समाजवाद के लिए संघर्ष में समाज-

वादियों व सोशल-डेमोक्रेट के साथ कम्युनिस्ट पार्टियों के सहयोग की अभिलाषा सभी श्रमिक-वर्ग के सगठनों को एकजुट करने की नीति के विस्तार में व निरंतर बने रहने मे देखी जा सकती है। जबकि आधारभूत वैचारिक मतभेद बरकरार है फिर भी निःशस्त्रीकरण; न्यूट्रोन सहित परमाणविक शस्त्रो पर प्रतिबंध, विभिन्न सामजिक प्रणालियों वाले देशों के मध्य संबंधों के सामान्यीकरण, योरोप की सुरक्षा, फासीवादी व जातिवादी सरकारो, तानाशाहियो की निन्दा आदि विश्व की प्रमुख समस्याओं पर कम्युनिस्ट व सोशल-डेमोक्रेट के दृष्टिकोण काफी हद तक निकट आ चुके हैं।

व्यक्तिगत सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों व सोशलिस्ट इन्टरनेशनल तथा समाजवादी देशों की कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों के मध्य सम्बन्ध काफ़ी विकसित हो चुके हैं, और इसने युवाओ के स्तर पर बढते हुए सम्बन्धों को जन्म दिया है। अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी युवा सघ (आई यू एस वाई) के प्रभाव के कारण सोशलिस्ट इन्टरनेशनल अपने संबंधित संगठनो व कम्युनिस्ट पार्टियों के मध्य सम्पर्कों पर अपने 20 साल पुराने प्रतिबन्ध को हटाने को बाध्य हो गया है।

साझा मंडी (कॉमन मार्केट) के नौ देशों के सोशल-डेमोक्रेटिक युवा सगठनों द्वारा भाग लिये गए 1979 मे ब्रुसेल में आई यू एस वाई के यूरोपीय सम्मेलन ने एक पूँजीवाद-विरोधी प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया। इसमे कहा गया है कि पश्चिमी योरोप के युवा सोशलिस्ट रोजगार व शिक्षा के अपने अधिकार, व्यापक प्रजातान्त्रिक योजना को लागू करने तथा एक समाजवादी समाज के निर्माण हेतु संघर्ष मे दृढ़ निश्चयी हैं। प्रतिनिधियों ने कहा कि पश्चमी योरोप की समस्त प्रगतिशील व वामपंथी शक्तियो को एकताबद्ध करने में मदद के द्वारा बड़े व्यापारिक संस्थानो व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विरुद्ध सघर्ष करना उनका कर्त्तव्य है। पूँजीवादी प्रणाली की गंभीर बुराइयो व इसके सकट से युवाओं पर नकारात्मक प्रभावों का भंडाफोड़ करने हेतु एक विराट अभियान की शुरुआत का निर्णय लिया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय तनावों को कम करने व निरस्त्रीकरण के लिए सघर्ष मे सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टी के अधिकांश नेताओं की अपेक्षा युवा सोशल-डेमोक्रेटिक अधिक प्रगतिशील दृष्टिकोण रखते हैं। सघीय जर्मन गणराज्य के युवा समाजवादियो के कांग्रेस (1981) ने अपनी सरकार व नाटो के अन्य देशों की सरकारो से पश्चिमी योरोप में मिसाइलें लगाने की योजनाओं को नामंजूर करने तथा तनाव-शैथिल्य व निरस्त्रीकरण की वार्ताओ पर एक रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने के आह्वान वाला एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया। युवा समाजवादियो ने योरोप मे परमाणु-स्वतंत्र क्षेत्र घोषित करने की माँग की तथा सैन्य-औद्योगिक समूह के हितो के कारण युवाओं की आवश्यकताओ के लिए व्यय मे कटौतियो का विरोध किया।

युवा कम्युनिस्ट लीग व युवा सोशल-डेमोक्रेट्स के मध्य संयोग में सामाजिक प्रजातान्त्रिक युवा आंदोलन की असंगति से अक्सर रुकावट पैदा होती है। सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों के दक्षिणपंथी नेतृत्व के कारण कम्युनिज्म-विरोध, निराधार संदेह व अविश्वास की ओर पुनः वापस लौटने की प्रवृत्तियाँ अक्सर कुछ सोशल-डेमोक्रेटिक युवा संगठनों मे प्रवेश पा जाती हैं। सोशल-डेमोक्रेटिक विचारकों द्वारा अनुसरित तथाकथित पुनरोन्मुखता अभियान इसका एक प्रमुख कारण है।

इस 'पुनरोन्मुखता' को पूँजीवाद-विरोधी तथा आलोचनात्मक विचारों वाले उन युवजनो को सोशल-डेमोक्रेसी में वैचारिक रूप मे दीक्षित करने के समान माना गया है, जो बीसवी सदी के छठे दशक के विरोध आंदोलन मे शामिल थे। दक्षिणपंथी सोशल-डेमोक्रेट इस अभियान का उपयोग सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों मे युवजनो की तीक्ष्ण आलोचना को कम करने तथा विकसित पूँजीवादी देशों मे 'अमली समाजवाद' के लिए संघर्ष में समर्थन पाने की आशा मे करते हैं। वास्तव मे यह 'प्रजातान्त्रिक समाजवाद' का एक आधुनिकीकृत स्वरूप है, जो बुर्जुआ समाज का सिर्फ एक सामाजिक-प्रजातान्त्रिक नमूना है।

युवा पीढ़ी को उनके अधिकारों व स्वतंत्रताओं की 'सुरक्षा मे' तथा मानवतावाद, प्रजातंत्र तथा न्याय की 'सुरक्षा' में अपनी अनेक घोषणाओं की दक्षिणपंथी सोशल-डेमोक्रेट वर्षा कर रहे हैं। युवाओं की मैत्री को अपने पक्ष में लेने हेतु वैचारिक संघर्ष की सूची मे इन जादुई सूत्रों को सर्वोच्च स्थान देने के कारण हैं। ये युवजनों का ध्यान बुर्जुआ समाज की अतिआवश्यक समस्याओं से हटाने मे सहायक हैं तथा यह भ्रम पैदा करते हैं कि बुर्जुआ समाज की राजनीतिक संगठन के लिए आदर्श संस्थाओं को निर्मित करना संभव है। यहाँ तक कि एकजुटता ने, मुट्ठीभर इजारेदारों व श्रमरत युवाओं व छात्रों के व्यापक जन-समूहों के मध्य 'एकजुटता' बनकर वर्ग-तुष्टीकरण व वर्ग-सहयोग का रूप धारण कर लिया है।

पूँजीवादी समाज में युवा पीढ़ी के अधिकारों व स्वतंत्रताओं के बारे में सोशल-डेमोक्रेटिक आंदोलन के दक्षिण-पंथियों की नेतागिरी का लक्ष्य सुधारवाद मे युवजनों के विरोधों को मोड़ना है।

दक्षिणपंथी सोशल-डेमोक्रेसी 'पुनरोन्मुखता' का उपयोग वर्ग-विरोधों की तीव्रता को कम करने तथा पूँजीवादी समाज स्वयं द्वारा रूपांतरित हो सकता है यह भ्रम पैदा करने मे कर रहा है। युवा-पीढ़ी सहित जनसाधारण को नैतिक-बुर्जुआ सुधारवाद स्वीकारने हेतु मार्क्सवादी शब्दावली तथा समाजवादी मुहावरेबाजी का प्रयोग नेतागिरी मे किया जाता है।

साथ ही, सोशल-डेमोक्रेटिक आंदोलन मे सामान्यतः सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों मे मतभेद को आगे बढ़ाने मे सहायक हो रहा है; कुछ पार्टियों में दक्षिणपंथी नेतृत्व ने अपनी मजबूती को दी है तथा श्रमिक वर्ग द्वारा संयुक्त कार्यवाही की

और अग्रसर होने के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करते हुए वामपंथी धाराएँ व प्रवृत्तियाँ मजबूत हो गयी हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की 26वीं कांग्रेस को प्रस्तुत केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट में कहा गया है कि "वर्तमान सोशल-डेमोक्रेसी एक विचारणीय राजनीतिक महत्त्व रखता है। यह जनता के महत्त्वपूर्ण हितों की सुरक्षा हेतु और सबसे अधिक, शांति के सुदृढीकरण, अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को सुधारने, फासीवाद व नस्लवाद तथा श्रमिक-जनों के राजनीतिक अधिकारों पर प्रतिक्रियावादी शक्तियों के हमले के प्रतिरोध में बहुत कुछ कर सकता है। हालांकि, व्यवहार में सोशल-डेमोक्रेटिक नेतृत्व सदैव इन्हीं रास्तों पर कार्य नहीं करते हैं।"[1]

कम्युनिस्ट पार्टियाँ युवा सोशल-डेमोक्रेट के सिद्धांत व व्यवहार में अंतर्विरोधों व सीमाओं से परिचित हैं और दक्षिणपंथी अवसरवाद पर अपनी सैद्धांतिक आलोचना को बरकरार रखे है। परन्तु साथ ही कम्युनिस्ट सोशल-डेमोक्रेट विशेष-कर युवाओं को अपने वास्तविक वर्गहित समझा पाने में मदद देने का तथा शांति, प्रजातंत्र व सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष में श्रमिक-वर्ग द्वारा संयुक्त कार्यवाही की स्थितियों में अधिक प्रगतिशील सोशल-डेमोक्रेटिक युवा आंदोलन को प्रेरणा देने का प्रयास कर रहे हैं।

युवा आंदोलन की एकता

वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिक यूथ (डब्लू एफ डी वाई), जिससे 130 से अधिक देशों के 200 से ऊपर संगठन संबद्धित हैं, द्वारा विश्व-युवा आंदोलन की व्यापक राजनीतिक शक्तियों के सहयोग व संयुक्त कार्यवाही को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। ये युवा संगठन विभिन्न राजनीतिक व धार्मिक विचारों तथा विभिन्न नस्लों व राष्ट्रीयताओं के हैं। डब्लू एफ डी वाई शांति, युवा अधिकारों, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, प्रगतिशील युवजनों की अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता के लिए तथा साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, फासी-वाद व नस्लवाद के विरुद्ध संघर्ष करता है। डब्लू एफ डी वाई ब्यूरो की क्षेत्रीय समितियाँ योरोप, एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व व लातीनी अमेरिका की विशेष समस्याओं हेतु तथा विशेष युवा हितों व आवश्यकताओं हेतु अनेक विशिष्ट संस्थाएँ हैं (द इन्टरनेशनल कमेटी ऑफ चिल्ड्रन्स एण्ड एडोलेसेन्ट मूवमेन्ट्स, द इन्टरनेशनल ब्यूरो फॉर टूरिज्म एण्ड यूथ एक्सचेन्जेज, आदि)।

इन्टरनेशनल यूनियन ऑफ स्टूडेन्ट्स (आई यू एस) जिससे 100 से अधिक

---

1. डॉकुमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशन्स, द 26th कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 25

राष्ट्रीय छात्र संघ संबद्ध हैं, दूसरा प्रगतिशील अंतर्राष्ट्रीय युवा संगठन है। इसके प्रमुख उद्देश्यों में एक है छात्रों के लिए बेहतर परिस्थितियों हेतु संघर्ष करना, विकासमान विश्व में छात्र-संगठनों को उनके देशों की आवश्यकता के अनुसार विशेषज्ञ तैयार करने मे मदद देना तथा संस्कृति, पर्यटन, खेल-कूद आदि मे छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना है। व्यापक अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता की कार्यवाहियाँ, प्रमुख सामयिक समस्याओं पर सम्मेलन तथा प्रचार (पत्रिकाएँ, बुलेटिन, पोस्टर, पर्चे आदि) छात्रों को राजनीतिक संघर्ष मे छात्रों को लगाने हेतु अनेकों तरीकों मे कुछ हैं।

सयुक्त राष्ट्र संघ की विशिष्ट संस्थाओं व घटकों के साथ प्रमुख विश्व युवा संगठनो का सलाहकारी संपर्क अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। उपनिवेशवाद, नस्लवाद तथा रंगभेदवाद के विरुद्ध सघर्ष मे युवजनों को वृहत भूमिका प्रदान करने में उनके प्रयासो में अनेक देशों को कुछ हद तक सयुक्त राष्ट्र सघ मदद करता है। इसने युवाओ की समस्याओ तथा मानव अधिकारों पर ऐसे कई सम्मेलनों का भी आयोजन किया है जिनमें राष्ट्रों मे शांति व परस्पर सहयोग के आदर्शों पर युवाओं को लाने के लिए सयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा को लागू करने के योगदान मे युवजनों को लायक बनाने तथा संयुक्त राष्ट्र सघ के अन्य निर्णयों को कार्यान्वित करने हेतु तरीकों व साधनों पर विचार-विमर्श हुआ है।

यूनेस्को, जिसका बुनियादी कार्य शिक्षा, विज्ञान व संस्कृति में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की पुष्टि व शिक्षा मे भेदभाव के विरुद्ध सघर्ष करना है, ने युवाओं की समस्याओं पर बहुत अधिक ध्यान दिया है। यूनेस्को के आम सम्मेलन के 21वें अधिवेशन में युवाओं की समस्याओं पर एक दीर्घकालीन योजना स्वीकार की गई जो 1977 से 1982 तक चली।

विश्व शांति परिषद् तथा वर्ल्ड फैडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स भी अंतर्राष्ट्रीय युवा कार्यवाही मे सलग्न हैं, विशेष रूप से दोनो संगठनों की युवा समितियों के निर्माण के पश्चात्।

युवजनों की विराट् संस्थाओं के मध्य विस्तृत सहयोग को विस्तार देने में विश्व युवा महोत्सवों ने अपरिमित सहायता प्रदान की है। युवाओ व छात्रों का 11वाँ विश्व महोत्सव 1978 में हवाना में हुआ जिसमें 145 देशों के लगभग 2,000 युवा सगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विश्व के युवाओं की महोत्सव की अपील की गूंज समूचे ससार में सुनी गई जिसमे युवजनों को आरे सहयोग व सयुक्त कार्यवाही को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था ताकि युवा व छात्र साम्राज्यवाद-विरोधी सघर्ष में अधिक भूमिका निभा सकें तथा स्थिर शांति व अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने के लिए, सुरक्षा व सहयोग के लिए, हथियारों के लिए होड़ व आक्रामक साम्राज्यवादी युद्धों की समाप्ति के लिए,

सामान्य व पूर्ण निरस्त्रीकरण हेतु तथा न्यूट्रोन बम सहित, विराट् विध्वंस के लिए हथियारों के निर्माण व विकास की योजनाओं के विरुद्ध कठोर-से-कठोर संघर्ष कर सकें।[1]

शांति, तनाव-शैथिल्य व निरस्त्रीकरण हेतु वर्ल्ड फोरम ऑफ यूथ एण्ड स्टूडेंट (हेलसिंकी 1981) पर 100 देशों से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय युवा संगठनों के 650 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अन्तिम दस्तावेज ने युवाओं को युद्ध की धमकी के विरुद्ध संघर्ष में और अधिक निकट आने का आह्वान किया। इस मंच (फोरम) को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए लियोनिद ब्रेझनेव ने लिखा : "आज सिर्फ शांति की इच्छा ही पर्याप्त नहीं है—शांति को सुरक्षित रखना होगा, इसके लिए संघर्ष करना होगा। हमारे संसार में युवजनों को बचपन से ही शांति व मित्रता से रहने को सिखाना होगा। सबसे अधिक यही एक बात है जो विभिन्न रुझानों के युवा संगठनों के मध्य व्यापक सहयोग की प्रेरणा दे सकता है।"[2]

हाल के वर्षों में, योरोप के युवा संगठनों के मध्य सहयोग व्यापक पैमाने में बढ़ा है। योरोप के युवाओं व छात्रों का सम्मेलन (वार्सा, जून, 1976), जिसका नारा "स्थायी शांति, सुरक्षा, सहयोग व सामाजिक प्रगति!" था तथा निरस्त्रीकरण पर योरोप के युवाओं व छात्रों के सम्मेलन (बुडापेस्ट, 1978)—योरोप के युवाओं के इन दो सम्मेलनों ने उनकी एकजुटता, मित्रता व समझ को बढ़ाने में बहुत योगदान दिया। मई 1980 में सैन्यवाद व हथियारों की दौड़ के विरुद्ध युवजनों के संघर्ष ने एक नया रूप धारण कर लिया—निरस्त्रीकरण के लिए योरोप के युवाओं व छात्रों की संयुक्त कार्यवाही हेतु पूरे महाद्वीप में बैठक व प्रदर्शनों का एक दिन। विभिन्न राजनीतिक प्रवृत्तियों के युवा संगठनों के प्रतिनिधियों का एक संयुक्त योरोपीय युवा प्रतिनिधिमण्डल निरस्त्रीकरण पर संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा के विशेष अधिवेशन में उपस्थित हुआ।

अक्तूबर 1980 में बुडापेस्ट में अखिल योरोपीय युवा-छात्र सहयोग संरचना की विशाल परिषद् व प्रथम सलाहकार समिति की बैठक हुई।[3]

उपस्थित होने वालों में 31 अंतर्राष्ट्रीय व क्षेत्रीय युवा व छात्र संगठनों के प्रतिनिधि थे, जो महाद्वीप के 26 देशों के 500 से अधिक राष्ट्रीय संगठनों सहित सोशल डेमोक्रेटिक, उदारवादी, केन्द्रवादी व अन्य प्रवृत्तियों के साथ-साथ धार्मिक,

1. प्रावदा, 9 अगस्त, 1978
2. वही, 19 जनवरी, 1981
3. 'डॉकूमेन्ट्स ऑफ द ऑल-योरोपियन स्ट्रक्चर फॉर द को-ऑपरेशन ऑफ द यूथ एण्ड स्टूडेन्ट्स', हेलसिंकि के एम ओ, संख्या 12, 1980

रणनीतिक व कार्यनीतिक दृष्टि से आणविक हथियारों के 'चयनात्मक' प्रयोग की स्वीकृति की कहानियों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। तनाव-शैथिल्य के शत्रु युवजनों को विश्वास दिलाने का प्रयास कर रहे हैं कि युद्ध के औद्योगिक समूहों को नागरिक उत्पादन में बदलने पर बेरोजगारी बढ़ जाएगी। जबकि, वास्तविकता तो यह है कि यह बदलाव न केवल अधिक रोजगार को जन्म देगा बल्कि सामाजिक आवश्यकताओं के लिए उपयोग में आ सकने वाली विपुल राशि भी देगा।

प्रगतिशील युवा संगठन नए प्रकार व किस्मों की परमाणविक मिसाइलों के निर्माण का विरोध करते हैं तथा मांग करते हैं कि नाटो व वारसा-सन्धि संगठन के मध्य वर्तमान समानता बनी रहे; उन्होंने 'सोवियत धमकी' के मिथ्या प्रचार का भंडाफोड़ किया है जिसे नाटो की सैन्यवादी नीति को न्याय-संगत ठहराने के लिए आविष्कृत किया गया है।

विश्व प्रजातांत्रिक युवा फेडरेशन, अन्तर्राष्ट्रीय छात्र संघ व अन्य प्रगतिशील अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय संगठनों के द्वारा संचालित संयुक्त कार्यवाही ने यह प्रमाणित कर दिया कि शान्ति व सुरक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव को कम करने, हथियारों की दौड़ को समाप्त करने तथा निरस्त्रीकरण प्रत्येक स्थान के युवजनों के महत्त्वपूर्ण हितों व अभिलाषाओं के पक्ष में है।

विश्व प्रजातांत्रिक युवा फेडरेशन का 11वाँ सम्मेलन (प्राग, जून 1982) इस अभियान का एक मुख्य कदम था। 'शांति के समान अधिकार हेतु संघर्ष में एक हो जाओ।'—सम्मेलन की यह अपील शान्ति व निरस्त्रीकरण के लिए आणविक धमकी के विरुद्ध विश्व युवा संघर्ष के अभियान का नारा बन गया। सम्मेलन के समापन अधिवेशन ने 'बीसवीं सदी का आठवाँ दशक: कार्यवाही का काल' नामक एक दस्तावेज स्वीकार किया। दस्तावेज का कहना है: "हमारा विश्वास है कि आज विश्व शान्ति को सुरक्षित रखने व मजबूती प्रदान करने से अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य न तो है या हो सकता है'''बीसवीं सदी के सातवें दशक में प्रजातांत्रिक युवाओं द्वारा जीते गए व्यावहारिक उपलब्धियों को कायम रखना, परमाणविक खतरे को हटाने का हरसम्भव प्रयास करना; शान्ति, प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वतंत्रता व सामाजिक प्रगति हेतु संघर्ष में साम्राज्यवाद-विरोधी मार्ग पर आगे बढ़ते हुए जाना—ये महत्त्वपूर्ण कार्य वर्तमान के अन्तर्राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक युवा आंदोलन के समक्ष हैं।

युवजनों द्वारा विराट युद्ध-विरोधी कार्यवाही का आम-जनता के मानस पर निरंतर प्रभाव बढ़ रहा है जिससे हमारे समय की वस्तुगत वास्तविकता की ओर आक्रमणकारी ताकतों को ध्यान देने के लिए बाध्य कर रही है।

आकार, सामाजिक संरचना तथा संघर्ष के तरीकों में वर्तमान युद्ध-विरोधी आंदोलन राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार के परम्परागत शांति आंदोलन

की अपेक्षा बहुत व्यापक है। यह अधिक सगठित, अधिक सक्रिय तथा अधिक राजनीतिक है। अधिकाधिक कार्यवाहियाँ आयोजित होती हैं, युद्ध-विरोधी विराट जनसभाएँ, जुलूस, हथियारों की दौड़, बढ़ते हुए सैन्य बजट के विरुद्ध संगठित कार्यवाही, सैन्य अड्डों पर धरने, पश्चिमी योरोप में नए अमेरिकी मिसाइलों को लगाने के विरुद्ध निगरानी, युद्ध-विरोधी मशाल जुलूस आदि। युवा कम्युनिस्टों तथा सोशल-डेमोक्रेट, धार्मिक संगठनों व शांतिवादियों से लेकर 'पर्यावरणवादी' तथा अन्य तथाकथित वैकल्पिक आंदोलन जो सभी प्रकार की परम्परागत राजनीतिक पार्टियों व सार्वजनिक संगठनों के विरोधी हैं—ये सभी प्रकार की राजनीतिक शक्तियाँ, आंदोलन व जनता भाग ले रही हैं। एक सांकेतिक लक्षण यह है कि विभिन्न युवा संगठनों के द्वारा की जाने वाली युद्ध-विरोधी कार्यवाही तेज़ी के साथ सबंधित हो रही है और सीधे रूप में राजनीतिक बनती जा रही है।

सभी उम्र व पृष्ठभूमि के अधिकाधिक युवजन शांति आंदोलन से जुड़ रहे हैं। लियोनिद ब्रेझनेव ने इंगित किया कि "शांति को सुरक्षित करके हम न सिर्फ़ आज की जनता के लिए और न सिर्फ़ अपने बच्चों व पोती-पोतों के लिए कार्य कर रहे हैं बल्कि हम भविष्य की दर्जनों पीढ़ियों की खुशहाली के लिए कार्य कर रहे हैं··· युद्ध की तैयारियाँ नहीं जो जनगण के भौतिक व आध्यात्मिक सम्पदा का निरर्थक अपव्यय कर उनका सर्वनाश करती है बल्कि शांति की सुदृढ़ता ही भविष्य का संकेत सूत्र है।"[1]

प्रजातांत्रिक व इजारेदारी-विरोधी मोर्चे में विभिन्न युवा दलों के मध्य संयुक्त कार्यवाही के लिए संघर्ष में कम्युनिस्ट युवाओं के विभिन्न स्तरों में क्रांतिकारी वर्ग-चेतना के निर्माण को, शांति व सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष में युवाओं की अधिक एकजुटता को सबसे अधिक महत्त्व देते हैं। आणविक खतरे के विरुद्ध विभिन्न युवा दलों द्वारा संयुक्त कार्यवाही को आगे बढ़ाने में यह विशेष रूप से आवश्यक है। इस सम्बन्ध में कम्युनिस्ट युवाओं को ताप-नाभिकीय युद्ध के महाविनाशक परिणामों को, अंतर्राष्ट्रीय तनाव तथा हथियारों की दौड़ के वास्तविक कारणों को तथा अमेरिकी साम्राज्यवाद के रणनीतिक उद्देश्यों को समझाते हैं।

कम्युनिस्टों का यह एक अति आवश्यक कार्य है कि वे युद्ध-विरोधी आंदोलन की बढ़ोतरी में योगदान दें, इसके समस्त दस्तों में रचनात्मक सहयोग को निश्चित करें, इसके नारों को तैयार करने में नेतृत्व करें, तथा पश्चिमी प्रचारतंत्र की कपोल कहानियों व मनगढ़ंत घिसी-पिटी बातों, इसके कम्युनिस्ट-विरोधी हमले व

1. डोक्यूमेन्ट्स एण्ड रेजोल्यूशंस द 26वां, कांग्रेस ऑफ द कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ द सोवियत यूनियन, पृ० 25

अन्दर से युद्ध-विरोधी आंदोलन को नष्ट करने के प्रयासों का पर्दाफाश करें।[1] इस कार्य के सम्पादन में कम्युनिस्ट सहयोग की कला पर प्रभुत्व पा रहे हैं, कम्युनिस्ट-विरोधी पूर्वाग्रहों पर काबू पा रहे हैं तथा आणविक युद्ध के खतरे के विरुद्ध विश्व-व्यापी आंदोलन को एक नई प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

---

1. प्रावदा, 9 मई 1978

निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1985 को युवा वर्ष घोषित किया है। यह एक ऐसे निर्णय है जो सामाजिक व राजनीतिक जीवन में तथा सामाजिक प्रगति की प्राप्ति में युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई भूमिका को प्रतिबिंबित करता है। मानवजाति व नियति युवकों के हाथों में है।

युवा आंदोलन की सामयिक अवस्था को तीन प्रमुख कारक प्रभावित कर रहे हैं : पूँजीवाद के सामान्य संकट का बढ़ता; वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति की प्रगति तथा विश्व की क्रांतिकारी प्रक्रिया का बढ़ता हुआ प्रभाव। ये तीनों कारक आधुनिक युवा आंदोलन के अनेकों लक्षणों को निर्धारित करते हैं। एक लक्षण तो यह है कि युवजन अधिक परिपक्व सामाजिक कार्य कर रहे हैं तथा राजनीतिक संघर्ष के अधिक विचारणीय स्वरूपों में संलग्न हैं।

युवा श्रमिक इजारेदारी-विरोधी संघर्ष में अधिक सक्रिय हो रहे हैं, और हड़ताल की कार्यवाही और ट्रेड-यूनियन आंदोलन में बड़ी भूमिका निभा रहे हैं। युवकों के दूसरे हिस्सों, विशेषकर छात्रों पर उनका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। छात्र राजनीतिक दृष्टि से अधिक परिपक्व व सामाजिक जीवन की वास्तविकताओं की तरफ अधिक घनिष्ठता के साथ संबद्ध होते जा रहे हैं; छात्र-दल साम्राज्यवाद-विरोधी आधार पर तेजी से एकजुट होते जा रहे हैं। और उनकी सामूहिक कार्यवाहियाँ अधिक संगठित हैं। युवा-बुद्धिजीवी व वरिष्ठ श्रेणी के विद्यार्थी इजारेदारी-विरोधी आंदोलन में महती भूमिका निभा रहे हैं। विकासमान विश्व में प्रगतिशील युवा सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन हेतु, जातिवाद व रंगभेद-पृथकतावाद के विरुद्ध, निरंकुशताओं व प्रतिक्रियावादी सरकारों के विरुद्ध, एक नवीन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए, साम्राज्यवादी निर्भरता से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद करने हेतु और उपनिवेशवाद व नव-उपनिवेशवाद के अवशेषों का उन्मूलन करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

श्रमिक-वर्ग के संगठित संघर्ष में भाग लेने में अधिकाधिक युवजन तत्परता दिखा रहे हैं। युवक व युवतियाँ राजनीतिक रूप में स्वयं को शिक्षित करने में, वैज्ञानिक कम्युनिज्म में, और मार्क्सवाद-लेनिनवाद में अधिक रुचि ले रहे हैं।

शांति, सुरक्षा, तनाव-शैथिल्य व निरस्त्रीकरण के लिए विभिन्न राजनीतिक, दार्शनिक व धार्मिक दृष्टिकोणों के युवा संगठनों द्वारा अधिक व्यापक कार्यवाही हेतु आधारों को सुदृढ़ करना संघर्ष की इस नवीन अवस्था का एक विशेष लक्षण

है। निश्चय ही, इस सहयोग में संलग्न होते हुए युवा कम्युनिस्ट अपनी स्पष्ट सैद्धांतिक स्थितियों को सुरक्षित रखते हैं। युवा कम्युनिस्ट सीमों तथा युवा सोशल-डेमोक्रेटों, उदारवादियों, रैडिकलों और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप की अन्य *राजनीतिक प्रवृत्तियों के युवकों के मध्य सहयोग के लिए अब नई सम्भावनाएँ हैं।*

प्रगतिशील व प्रजातांत्रिक युवा संगठन विकसित हो रहे हैं और उनमें मार्क्सवादी युवा दलों का सम्मान व प्रभाव बढ़ रहा है। यह अग्रगामी अंतर्राष्ट्रीय प्रगतिशील संगठनों जैसे *'वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिक यूथ'* एवं *'इंटरनेशनल यूनियन ऑफ स्टूडेंट्स' की बढ़ती हुई गतिविधि से स्पष्ट है,* जो विश्व के युवकों व छात्रों को उनके मूल अधिकारों व हितों हेतु संघर्ष में एकजुट करते हैं। इन संगठनों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य जनता की मुक्ति व स्वतंत्रता, शांति, सुरक्षा, निरस्त्रीकरण तथा लोकतंत्र व सामाजिक प्रगति के लिए युवा पीढ़ी की संयुक्त कार्यवाही को सुदृढ़ करना है। इस संघर्ष में मार्क्सवादी-लेनिनवादी कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियाँ हरावल दस्ते हैं, जो युवा पीढ़ी के लिए, तथा सभी तरह की पृष्ठभूमियों के युवकों के मध्य अधिक व्यापक प्रभाव जमाने हेतु निरंतर संघर्षरत हैं।

युवकों के प्रति कम्युनिस्टों की नीति के मूल सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

—इजारेदारी-विरोधी आंदोलन तथा श्रमरत लोगों के हितों के लिए किए जाने वाले संघर्ष में प्रगतिशील व लोकतांत्रिक युवाओं को एक सहयोगी मित्र समझना; युवाओं को विश्वास दिलाना कि उनके मूल हितों व आवश्यकताओं की पूर्ति श्रमिक-वर्ग व सभी श्रमरत-जनों के साथ मिलकर संघर्ष से ही हो सकती है;

—युवाओं के विभिन्न हिस्सों के हितों व आवश्यकताओं और एक सामाजिक-जनसांख्यिक समूह के रूप में समूचे युवाओं के विशेष स्वरूप पर विचार करना, तथा युवा पीढ़ी के अत्यावश्यक अधिकारों व बुनियादी हितों के लिए संघर्ष करना;

—*युवाओं को एक वैज्ञानिक विश्व-दृष्टिकोण देना,* उन्हें क्रांतिकारी चेतना, समाजवादी विचारधारा और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद समझाना;

—प्रजातन्त्र व सामाजिक प्रगति तथा विश्वव्यापी समस्याओं, विशेषकर शांति की समस्याओं के समाधान के लिए संघर्ष में युवाओं को प्रेरित करना, तथा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार के स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय एकता व एकजुटता की आवश्यकता पर प्रगतिशील युवाओं को विश्वास दिलाना;

—सामाजिक-राजनीतिक युवा संगठनों की स्वतंत्र गतिविधि तथा संगठनात्मक स्वतंत्रता को व्यापक रूप में प्रेरित करना, कम्युनिस्ट युवा संगठनों को पार्टी की जुझारू आरक्षित शक्ति व सहायक के रूप में कम्युनिस्ट *पार्टी के अटल निर्देशन को सुनिश्चित करना, समर्थकर्ताओं की पीढ़ियों*

की वास्तविक एकता और निरंतरता को सुनिश्चित करता, तथा श्रमिक वर्ग व उसके राजनीतिक हरावल दस्ते की क्रांतिकारी परम्पराओं एवं अनुभव को युवजन आत्मसात करें ऐसा करना।

युवजनों को कम्युनिस्ट क्रांति द्वारा विश्व को रूपांतरित करने के कार्य की महत्ता समझा रहे हैं, वे युवकों व युवतियों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर आधारित वास्तविक वैज्ञानिक विश्व-दर्शन प्रदान करते हैं। वे विश्वव्यापी समस्याओं और उनके सम्बन्ध में ठोस कार्य करने की उनकी आकांक्षाओं के प्रति युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई रुचि को प्रोत्साहित करते हैं। साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में युवाओं की भागीदारी उनकी क्रांतिकारी क्षमता की द्योतक है।

जैसे-जैसे युवा क्रांतिकारी भावना में शिक्षित होते हैं वैसे-वैसे प्रत्येक देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ आंगिक रूप से सम्बद्ध वर्गीय स्थितियों से कम्युनिस्ट उन्हें मान्यता प्रदान करते हैं, तथा सपूर्ण प्रजातांत्रिक संघर्ष में विभिन्न युवा तबकों के स्थान को स्पष्टतः परिभाषित करते हैं। अपने अधिकारों के लिए, लोकतंत्र व समाजवाद के लिए संघर्ष में सफलता युवजन सिर्फ स्वयं के हरावल दस्ते-मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व में श्रमिक वर्ग के साथ एकता द्वारा ही पा सकते हैं। श्रमिक वर्ग तथा तमाम श्रमरत लोगों की पुरानी व नवीन पीढ़ियों के समान वर्ग-हित ही इस एकता के वस्तुगत आधार हैं। युवा पीढ़ी को श्रमिक वर्ग के संघर्ष व अनुभव की जुझारू क्रांतिकारी परंपराओं में शिक्षित करना क्रांतिकारी पीढ़ियों की एकता को सुनिश्चित, सुदृढ़ करता है तथा आगे बढ़ाता है।

कम्युनिस्टों का कहना है कि वर्तमान की युवा पीढ़ी के समक्ष समस्त राजनीतिक व आर्थिक समस्याएँ मूल सामाजिक परिवर्तन—समाजवाद व कम्युनिज्म द्वारा ही सफलतापूर्वक हल की जा सकती हैं। श्रमरत लोगों को गुलाम बनाए रखने के स्रोतों को समाप्त करके समाजवाद, सभी व्यक्तियों के लिए बेहतर-से-बेहतर आजीविका व सांस्कृतिक स्तर को, समाजवादी प्रजातंत्र को, सुनिश्चित करता है, तथा उन सभी आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करता है जिससे युवजन सहित प्रत्येक को काम, शिक्षा, एक शानदार लालन-पालन मिलेगा तथा इस तरह उनके व्यापक हितों व जरूरतों की पूर्ति होगी। एक समाजवादी समाज में युवजन यह दर्शाते हैं कि वे एक रचनात्मक शक्ति, एक नए जीवन के निर्माण-कार्यों में अग्रणी हैं।

एक नए समाज के निर्माण हेतु संघर्ष में युवा संगठनों के मूल रूप में वे युवा लीग हैं जो लेनिनवादी वैचारिक, राजनीतिक व संगठनात्मक सिद्धांतों पर बनी हैं, जो उद्देश्यों व कार्यों में कम्युनिस्ट, संरचना में स्वतंत्र, वर्गीय आधार तथा एक वर्ग-

की वास्तविक एकता और निरंतरता को सुनिश्चित करना, तथा श्रमिक वर्ग व उसके राजनीतिक हरावल दस्ते की क्रांतिकारी परम्पराओं एवं अनुभव को युवजन आत्मसात करें ऐसा करना।

युवजनों को कम्युनिस्ट क्रांति द्वारा विश्व को रूपांतरित करने के कार्य की महत्ता समझा रहे हैं, वे युवकों व युवतियों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद पर आधारित वास्तविक वैज्ञानिक विश्व-दर्शन प्रदान करते हैं। वे विश्वव्यापी समस्याओं और उनके सम्बन्ध में ठोस कार्य करने की उनकी आकांक्षाओं के प्रति युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई रुचि को प्रोत्साहित करते हैं। साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में युवाओं की भागीदारी उनकी क्रांतिकारी क्षमता की द्योतक है।

जैसे-जैसे युवा क्रांतिकारी भावना में शिक्षित होते हैं वैसे-वैसे प्रत्येक देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ आंगिक रूप से सम्बद्ध वर्गीय स्थितियों से कम्युनिस्ट उन्हें मान्यता प्रदान करते हैं, तथा सम्पूर्ण प्रजातांत्रिक संघर्ष में विभिन्न युवा तबकों के स्थान को स्पष्टतः परिभाषित करते हैं। अपने अधिकारों के लिए, लोकतंत्र व समाजवाद के लिए संघर्ष में सफलता युवजन सिर्फ स्वयं के हरावल दस्ते-मार्क्सवादी पार्टी के नेतृत्व में श्रमिक वर्ग के साथ एकता द्वारा ही पा सकते हैं। श्रमिक वर्ग तथा तमाम श्रमरत लोगों की पुरानी व नवीन पीढ़ियों के समान वर्ग-हित ही इस एकता के वस्तुगत आधार हैं। युवा पीढ़ी को श्रमिक वर्ग के संघर्ष व अनुभव की जुझारू क्रांतिकारी परंपराओं में शिक्षित करना क्रांतिकारी पीढ़ियों की एकता को सुनिश्चित, सुदृढ़ करता है तथा आगे बढ़ाता है।

कम्युनिस्टों का कहना है कि वर्तमान की युवा पीढ़ी के समक्ष समस्त राजनीतिक व आर्थिक समस्याएँ मूल सामाजिक परिवर्तन—समाजवाद व कम्युनिज्म द्वारा ही सफलतापूर्वक हल की जा सकती हैं। श्रमरत लोगों को गुलाम बनाए रखने के स्रोतों को समाप्त करके समाजवाद, सभी व्यक्तियों के लिए बेहतर-से-बेहतर आजीविका व सांस्कृतिक स्तर को, समाजवादी प्रजातंत्र को, सुनिश्चित करता है, तथा उन सभी आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करता है जिससे युवजन सहित प्रत्येक को काम, शिक्षा, एक शानदार लालन-पालन मिलेगा तथा इस तरह उनके व्यापक हितों व जरूरतों की पूर्ति होगी। एक समाजवादी समाज में युवजन यह दर्शाते हैं कि वे एक रचनात्मक शक्ति, एक नए जीवन के निर्माणकर्ताओं में अग्रणी हैं।

एक नए समाज के निर्माण हेतु संघर्ष में युवा संगठनों के मूल रूप में वे युवा लीग हैं जो लेनिनवादी वैचारिक, राजनीतिक व संगठनात्मक सिद्धांतों पर बनी हैं, जो उद्देश्यों व कार्यों में कम्युनिस्ट, संरचना में स्वतंत्र, वर्गीय आधार तथा एक वर्ग-

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों का विश्वास है कि युवकों की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा में सफलता का निर्णायक कारक युवा लीगों का निर्देशन होता है। यह निर्देशन समान सैद्धांतिक व राजनीतिक विचारों, उनके मार्क्सवादी विश्व-दर्शन तथा समान उद्देश्यों व कार्यक्रमों पर आधारित है। कम्युनिस्ट युवा लीग को अपनी सामाजिक भूमिका निभाने हेतु अर्थात् युवा पीढ़ी को पार्टी के चारों ओर कतारबन्द करने, उसकी सहायक व आरक्षित शक्ति बनने तथा पार्टी नीति को युवा तक पहुँचाने के लिए पार्टी का निर्देशन आवश्यक है।

कम्युनिस्ट युवा के मध्य कार्य के विशेष तरीके उपयोग में लाने हैं जिसमें उनकी उम्र की विशिष्टताओं को ध्यान में रखा जाता है। मूलतः ये हैं—आस्था शिक्षा व संगठनात्मक कार्य। युवकों पर पार्टी के सारे कार्य को, युवकों में विश्वास को इस माँग के साथ जोड़ना चाहिए कि उन्हें जो भी करना है सही ढंग से करें क्योंकि समान हित हेतु युवकों में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है।

युवा कम्युनिस्ट लीगों को कम्युनिस्ट उनकी कार्यप्रणाली को सुधारने में, उनके आंतरिक प्रजातंत्र को व्यापक बनाने तथा अनुशासन को मजबूत करने में प्रोत्साहित करते हैं। वे युवजनों को वैचारिक, राजनीतिक, श्रम-सम्बन्धी तथा नैतिक शिक्षा-सम्बन्धी समस्त समस्याओं को संगठनात्मक एकता के आधार पर सुलझाने की सीख देते हैं। कमियों, कमजोरियों व गलतियों की निर्भीक आलोचना व आत्मालोचना कम्युनिस्ट युवा संगठन के प्रत्येक कार्य को सुधारने का क्रांतिकारी तरीका है।

कम्युनिस्ट युवजनों को वास्तविक कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वे युवजनों में उनके चारों ओर की प्रत्येक वस्तु पर एक वर्गीय, राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने तथा क्रांतिकारी व्यवहार के साथ मार्क्सवादी-लेनिनवादी वैचारिक शिक्षा को जोड़ने की शिक्षा देने का प्रयत्न करते हैं। ज्ञान, आस्था व क्रांतिकारी गतिविधि, युवाओं की मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा के तीन आधार-स्तम्भ हैं।

युवजनों में मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण का विकास कम्युनिज्म-विरोध, अवसरवाद, पेटी-बुर्जुआ व राष्ट्रवादी प्रभावों के विरुद्ध, उन कोशिशों के विरुद्ध जो युवा पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के विरुद्ध भड़काती हैं व युवा लोगों को श्रमिक वर्ग के मुकाबले खड़ा करती हैं, एक समझौता रहित सैद्धांतिक संघर्ष को पूर्वनिर्धारित करता है।

युवजनों को विश्व कम्युनिस्ट व श्रमिक-वर्ग आंदोलन के जुझारू सहायक व [illegible] के रूप में मानते हुए कम्युनिस्ट उन्हें सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद की [illegible] में प्रशिक्षित करते हैं। व युवा आंदोलन के तमाम प्रजातांत्रिक व प्रगतिशील

तबक़ों की एकता हेतु, काम करते हैं, जिसे वे प्रजातंत्र व समाजवाद हेतु संघर्ष मे मुख्य घटक मानते हैं।

युवाओं के साथ काम करते हुए कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों ने जो विशाल ऐतिहासिक अनुभव संचित किया है उसका रचनात्मक रूप में उपयोग करना होगा, वर्तमान कार्यों के संदर्भ में इसकी शौर्य परम्पराओं को विकसित करना होगा, तथा इस प्रकार विश्व के क्रांतिकारी रूपांतरण के दौरान इसे समृद्ध व बहुगुणित करना होगा।

□□

तबकों की एकता हेतु काम करते हैं, जिसे वे प्रजातंत्र व समाजवाद हेतु संघर्ष में मुख्य घटक मानते हैं।

युवाओं के साथ काम करते हुए कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों ने जो विशाल ऐतिहासिक अनुभव संचित किया है उसका रचनात्मक रूप में उपयोग करना होगा, वर्तमान कार्यों के सदर्भ में इसकी शौर्य परम्पराओं को विकसित करना होगा, तथा इस प्रकार विश्व के क्रांतिकारी रूपांतरण के दौरान इसे समृद्ध व बहुगुणित करना होगा।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियों का विश्वास है कि युवकों की क्रांतिकारी, कम्युनिस्ट शिक्षा में सफलता का निर्णायक कारक युवा लोगों का निर्देशन होता है। यह निर्देशन समान सैद्धांतिक व राजनीतिक विचारों, उनके मार्क्सवादी विश्व-दर्शन तथा समान उद्देश्यों व कार्यक्रमों पर आधारित है। कम्युनिस्ट युवा लीग को अपनी सामाजिक भूमिका निभाने हेतु अर्थात् युवा पीढ़ी को पार्टी के चारों ओर कतारबन्द करने, उसकी सहायक व आरक्षित शक्ति बनने तथा पार्टी नीति को युवा तक पहुँचाने के लिए पार्टी का निर्देशन आवश्यक है।

कम्युनिस्ट युवा के मध्य कार्य के विशेष तरीके उपयोग में लाते हैं जिनसे उनकी उम्र की विशिष्टताओं को ध्यान में रखा जाता है। मूलतः ये हैं—अनवरत शिक्षा व संगठनात्मक कार्य। युवकों पर पार्टी के सारे कार्य को, युवकों में विश्वास को इस माँग के साथ जोड़ना चाहिए कि उन्हें जो भी करना है सही ढंग से करें क्योंकि समान हित हेतु युवकों में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की भावना प्रदान करने के लिए यह आवश्यक है।

युवा कम्युनिस्ट लोगों को कम्युनिस्ट उनकी कार्यप्रणाली को सुधारने में, उनके आंतरिक प्रजातंत्र को व्यापक बनाने तथा अनुशासन को मजबूत करने में प्रोत्साहित करते हैं। वे युवजनों को वैचारिक, राजनीतिक, श्रम-सम्बन्धी तथा नैतिक शिक्षा-सम्बन्धी समस्त समस्याओं को संगठनात्मक एकता के आधार पर सुलझाने की सीख देते हैं। कमियों, कमजोरियों व गलतियों की निर्भीक आलोचना व आत्मालोचना कम्युनिस्ट युवा संगठन के प्रत्येक कार्य को सुधारने का क्रांतिकारी तरीका है।

कम्युनिस्ट युवजनों को वास्तविक कम्युनिस्ट विश्व-दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। वे युवजनों में उनके चारों ओर की प्रत्येक वस्तु पर एक वर्गीय, राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने तथा क्रान्तिकारी व्यवहार के साथ मार्क्सवादी लेनिनवादी वैचारिक शिक्षा को जोड़ने की शिक्षा देने का प्रयत्न करते हैं। ज्ञान, आस्था व क्रांतिकारी गतिविधि, युवाओं की मार्क्सवादी-लेनिनवादी शिक्षा के तीन आधार-स्तम्भ हैं।

युवजनों में मार्क्सवादी विश्व-दृष्टिकोण का विकास कम्युनिस्ट विरोध अवसरवाद, पेटी-बुर्जुआ व राष्ट्रवादी प्रभावों के विरुद्ध, उन कोशिशों के विरुद्ध जो युवा पीढ़ी को पुरानी पीढ़ी के विरुद्ध भड़काती हैं व युवा लोगों को [illegible] सुधारने [illegible] है, एक समझौता रहित सैद्धांतिक संघर्ष को पूर्वनिर्धारित करना है।

युवजनों का विश्व कम्युनिस्ट व श्रमिक-वर्ग आंदोलन के [illegible] [illegible] [illegible] के रूप में मानते हुए कम्युनिस्ट उन्हें [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] करते हैं। व युवा आंदोलन के समान [illegible] व [illegible]

तबकों की एकता हेतु काम करते हैं, जिसे वे प्रजातंत्र व समाजवाद हेतु संघर्ष में मुख्य घटक मानते हैं।

युवाओं के साथ काम करते हुए कम्युनिस्ट व श्रमिक पार्टियों ने जो विशाल ऐतिहासिक अनुभव संचित किया है उसका रचनात्मक रूप में उपयोग करना होगा, वर्तमान कार्यों के संदर्भ में इसकी शौर्य परम्पराओं को विकसित करना होगा, तथा इस प्रकार विश्व के क्रांतिकारी रूपांतरण के दौरान इसे समृद्ध व बहुगुणित करना होगा।